प्रकाशक :
श्री सन्मति ज्ञानपीठ
लोहामंडी, आगरा

प्रथम पदार्पण
वि० सं० २०१६
मूल्य मात्र तीन रुपये पचास नये पैसे



मुद्रक :
श्रीकृष्ण भारद्वाज
मनोहर प्रिंटिंग प्रेस
ब्यावर

मेरे जीवन के निर्माता, मृदुहृदय, परमसन्त,
मरुधरा-मन्त्री स्थविर, पूज्यपाद तपोधन
स्वामीजी श्री हजारीमलजी महाराज
के
कर-कमलों में

मधुकर मुनि

प्रकाशक की ओर से . . . .



सन्मति ज्ञानपीठ के सुन्दर और चमकीले प्रकाशनो का समाज मे जो समादर हुआ है, जो प्रशंसा हो रही है, उस पर हमे अभिमान तो नही, परन्तु गहरा सन्तोष अवश्य है।

ज्ञानपीठ ने आज तक जो साहित्य सेवा की है, वह उदार एवं निष्पक्ष भाव से की है। यह सब श्रद्धेय उपाध्याय कविरत्न श्री अमरचन्द्रजी महाराज की उदात्त प्रेरणा और दिशा-दर्शन का ही सुफल है।

'जय-वाणी' के रूप मे एक नव्य एवं भव्य प्रकाशन प्रेमी पाठको के कर-कमलो मे समर्पित है। प्रकाशन कैसा है ? यह मै क्या कहूं ? पाठक स्वयं ही इसका निर्णय कर सकेगे।

'जय-वाणी' राजस्थान के एक महान् तपःपूत सन्त की अमर कृति है। भाषा कैसी है ? इसकी अपेक्षा उसमे भाव कैसे है ? इस पर यदि ध्यान दिया गया, तो निश्चित ही पाठक प्रस्तुत काव्य-सागर मे से चमकीले मोती पा सकेगे। त्याग और तपस्या के तथा विचार और विवेक के रत्न-कण पा सकेगे।

श्रद्धेय पूज्य श्री जयमलजी महाराज कौन थे, कहां के थे, कैसे थे ? इस सम्बन्ध मे प्रेमी पाठक उपाध्याय श्री जी महाराज की भूमिका को पढ़कर अपनी जिज्ञासा को शान्त कर सकेगे।

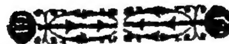
प्रस्तुत ग्रन्थ का सम्पादन, संकलन और आकलन पण्डित प्रवर श्री मिसरीमलजी महाराज 'मधुकर' ने किया है। राजस्थान के सन्तों में 'मधुकर' जी म० का अपना एक विशिष्ट स्थान है-विचार से भी और आचार से भी। प्रस्तुत सम्पादन मे आपके पाण्डित्य की छाप स्पष्ट है। आप स्वयं भी एक कवि है। कवि होकर काव्य का आकलन करना—सोने मे, सुगन्ध है। 'जय-वाणी का

यह सुन्दर सम्पादन, ज्ञानपीठ से प्रकाशित करते हुए मुझे महान् हर्ष है, कि क्षेत्र-पक्ष से राजस्थानी तथा भाव-पक्ष से विश्व सन्त की यह अमर कृति राजस्थान के लोगों के लिये ही नहीं, अपितु विश्व मानवता के लिए मंगलमय सिद्ध होगी !

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन मे श्रीमान् खींवराजजी चोरड़िया (नोखा-मद्रास) श्रीमान वचनमलजी सुराणा (कुचेरा-सिकंदराबाद) श्रीमान् बादरमलजी भुंरुट (नागौर-हाथरस) की ओर से क्रमशः ३१००) ५००) ५००) की सहायता मिली है, तदर्थ ज्ञानपीठ की ओर से उक्त बन्धु भूरि-भूरि धन्यवाद के पात्र हैं।

विजयादशमी
सं० २०१६

सोनाराम जैन
मन्त्री,
सन्मति ज्ञानपीठ, लोहामंडी आगरा



कवि और कविता : एक मूल्यांकन . . .



भारतीय संस्कृति का मूल केन्द्र है—सन्त जीवन। सन्त जीवन से बढ़ कर यहां पवित्र अन्य कौन वस्तु है? सन्त क्या है? विचार में आचार, और आचार में विचार। सन्त का जीवन विवेक और क्रिया का—सुन्दर, सरस और पावन संगम है। भारतीय जन-चेतना सन्त की भक्ति करती है, सन्त की पूजा करती है, सन्त का समादर करती है। क्यों? क्योंकि सन्त के तपःपूत जीवन से उसे प्रेरणा मिलती है, दिशा-दर्शन मिलता है। सन्त जीवन एक आलोक-स्तम्भ है, जिसके चारों ओर प्रकाश किरणें बिखर रही हैं। संसार अरण्यानी में भूले-भटके राही—उस आलोक को पाकर अपने गन्तव्य मार्ग का निर्णय करते हैं।

सन्त संस्कृति का प्रभाव बहु व्यापक है। काश्मीर से कन्या कुमारी अटक से कटक तक—भारत में सर्वत्र और सदा से सन्त जीवन का सौरभ फैलता रहा है। भारत का हर प्रान्त सन्त प्रेरणा से अनु-प्राणित रहा है। दक्षिण भारत के सतेज सन्त जीवन से कौन प्रभावित न होगा? गुजरात और महाराष्ट्र के सन्तो की ज्योति से कौन इन्कार करेगा? उत्तर-भारत और मध्य-भारत के सन्तों के अमर जीवन संगीत को कौन न सुनेगा? पंजाब के सन्तों की जीवन गाथा को किसने नहीं सुना?

और राजस्थान? वह तो एक प्रकार से सन्तो का देश ही है। रण-बांकुरे राजस्थान के वे अल-बेले मस्त सन्त जो अपनी जीवन ज्योति से जन-जन के मन को जागृत करते रहे,—कौन उन्हे भुला सकेगा? वह राजस्थान, जिस मे मीरा जन्मी थी, जिस मे उत्पन्न मीरा की स्वर-लहरी सम्पूर्ण भारत मे बिखर गई थी। सन्त दादू की वह उदात्त विचार धारा, जिस से राष्ट्र कवि रविन्द्र भी प्रभावित थे वीर राजस्थान के उन अध्यात्म वीर सन्तो की अमर देन चिर-नवीन है। राजस्थान अमर है। जब तक उसके सन्तो की वाणी का जादू-भरा स्वर उसके कण-कण मे मुखरित है। राजस्थान के अमर सन्तों ने भारतीय संस्कृति को अपनी राजस्थानी भाषा में जो विचार सम्पत्ति दी है, वह इतिहास मे अमर है। अमर रहेगी।

राजस्थान के उन्ही तेजस्वी एवं जीवन-संगीत के उद्‌गाता सन्तो मे से एक तपः-पूत अमर सन्त का परिचय हम इन पृष्ठों में देना चाहते है। जिसने उभरते

यौवन मे ब्रह्मचर्य के असि-धारा-व्रत को अङ्गीकार किया, कौटुम्बिक मोह को विश्व-प्रेम मे परिवर्तित कर दिया और जीवन के प्रत्येक क्षण को आत्म-संशोधन की प्रक्रिया मे व्यतीत करते हुए भी माता सरस्वती के मन्दिर मे अपनी श्रद्धा की एक सुरभित सुन्दर प्रसूनाञ्जलि समर्पित की। इस प्रसूनाञ्जलि से हमारा आशय उनकी प्रस्तुत रचना-संग्रह 'जयवाणी' से है। परन्तु पाठक-मधुकर इस प्रसूनाञ्जलि के पुण्य पराग का पान कर आप्यायित हो, इसके पहले ही उसके विनम्र सम्पर्क सन्त का संक्षिप्त जीवन परिचय देना अस्वाभविक न होगा।

आचार्य श्री जयमलजी महाराज ने अपने पुण्य-जन्म से मरुप्रदेश के 'लांबियाँ' ग्राम को अलंकृत किया था। इनके पिता का नाम 'मोहनदास' तथा माता का नाम 'महिमा' बाई था। एक संभ्रान्त परिवार की कन्या 'लक्ष्मी' के साथ बाईस वर्ष की अवस्था मे उनका विवाह हो गया था। गौना होने वाला था कि किसी कार्य-वश वे 'मेड़ता' पहुँचे। उन्हे पूज्य श्री 'भूधरजी' महाराज के उपदेश सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महाराज श्री के श्रीमुख से उन्होने सुदर्शन सेठ के ब्रह्मचर्य व्रत की अनन्य निष्ठा का संगीत सुना और फल स्वरूप वह वि० सं० १७८७ अगहन बदी दूज को दीक्षा लेकर साधु हो गये। अत्यन्त विस्मयावह था उनकी भावनाओ का वह परिवर्तन। एक ओर पत्नी के द्विरागमन की तैयारी और दूसरी ओर समस्त कुटुम्ब परिवार के नेह मोह से मुंह मोड़ कर मुनिमार्ग को स्वीकार कर लेना; परन्तु महापुरुप एवं सन्तो की जीवन धाराओं की गति-विधि का क्रम कभी भी एक-सा प्रवहमान दृष्टि गोचर नही होता है। फल स्वरूप श्री जयमलजी महाराज की इस भाव-धारा को भी हम प्रस्तुत सन्त-जीवन धारा से अपृथक रख कर ही देख रहे है और इसी कारण हमे उनका उक्त भाव परिवर्तन तनिक भी विस्मय-विमुग्ध नहीं कर रहा है। अस्तु

नव दीक्षित साधु श्री जयमलजी महाराज ने दीक्षा लेते ही अपने जीवन-संशोधन की तैयारी प्रारभ करदी। उन्होने सोलह वर्ष तक अविराम एकान्तर तप का आचरण किया, जिसमे एक दिन का उपवास, तो एक दिन आहार लेने का क्रम चलता रहा। इतना ही नहीं, वे अपने गुरु के स्वर्गारोहण के दिन से लेकर पचास वर्ष तक कभी भी लेट कर नहीं सोये। इस निरन्तर जागरूकता एवं कठोर साधना से न केवल उन्होने अपने अखण्ड ज्योतिर्मय आत्म-स्वरूप का विकास ही किया, अपितु आत्म-विकासी उपदेश एवं काव्य-रचना द्वारा जन-साधारण एवं साहित्य की भी अपूर्व सेवा की।

अपने जीवन के अन्तिम क्षणों का आचार्य प्रवर को पहले से ही आभास हो गया था। फलतः उन्होंने शाश्वत शान्ति लाभ की कामना से एक मास की निरन्तर समाधि (संथारा) स्वीकार की और वि० सं० १८५३ की वैशाख शुक्ला चतुर्दशी की पुण्य वेला में नश्वर शरीर का उत्सर्ग किया और मरुभूमि की उस धर्म प्राण जनता के सरस मानस को अपने वियोग से सहसा मरुभूमि-सा ही विरस बना दिया।

प्रस्तुत रचना, जिसका नाम जयवाणी है, इन्हीं आचार्य श्री जयमल्लजी महाराज की अनुपम कृति है। उसे (१) स्तुति, (२) सज्झाय, (३) उपदेशी पद तथा (४) चरित, चर्चा, दोहावली के रूप में चार खण्डों में विभक्त किया गया है।

'स्तुति' खण्ड में उन्होंने अपने आराध्य देवों के संस्तवन में अपनी भक्ति-भाव-भरित अनेकशः श्रद्धाञ्जलियां गुम्फित की हैं। 'सज्झाय' खण्ड में आत्म-स्वातन्त्र्य के मार्ग को प्रशस्त करने वाले अनेक गहन चिन्तनों को काव्यमयी भाषा में लिपिबद्ध किया गया है। इसी प्रकार 'उपदेशी पद' नामक खण्ड में अनेक आत्म-विकासी एवं मानवीय नैतिक धरातल को समुन्नत करने वाले उप-देश सहज-सुबोध शैली में ग्रथित किये गये हैं। और अन्तिम खण्ड में जिन महान आत्माओं के पावन चरितों को काव्यामृत से सिंचित एवं भावित किया गया है, उनके जीवन्त चित्र आत्मा को असत् से सत् की ओर, तमस् से ज्योति की ओर एवं मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने की अपूर्व क्षमता रखते हैं। इसी भांति इस खण्ड की चर्चा एवं दोहावली भी जीवन के अनेक उत्कर्ष-विधायक तत्त्वों से आपूर्ण हैं।

यहां संक्षेप में श्री जयमल्लजी महाराज की अमर वाणी के काव्य सौन्दर्य तथा उसकी मूलगत भावना के सम्बन्ध में प्रकाश डालना अनुपयुक्त न होगा।

पूज्य श्री जयमल्लजी महाराज का सन्त कवि हृदय श्री सीमंधर स्वामी (विदेह क्षेत्र के एक विद्यमान तीर्थङ्कर) का संस्तवन करता हुआ उनके पुण्य स्मरण पर बल देता है और एक स्थल पर कहता है:—

"राच रहा मिथ्यामत मांही,
ए रुले जीव चारूं गति मांही।
भूला ने आणे ठामी,
सुमरो श्री सीमंधर सामी॥"[1]

---

१. जयवाणी पृ० सं० १३ (८)

कवि का आशय है कि यह जीवात्मा अनादिकाल से संसार परिभ्रमण करता हुआ चारों गतियों के असह्य दुखों को भोग रहा है। दुःखों की ज्वाला में झुलसते रहने पर भी यह उसके मूल कारण की तह तक पहुँच नहीं पाता। फलतः मिथ्या मार्ग अपनाता रहता है और दुःखों की परम्परा उसका पिण्ड नहीं छोड़ती। कवि को जीवात्मा की इस स्थिति का यथार्थ परिचय है। यही कारण है कि वह सीमन्धर स्वामी के पुण्य स्मरण को उसके दुःखो के प्रतीकार का अमोघ साधन बतलाता है।

कवि, श्री सीमन्धर स्वामी को आत्म एवं पर पदार्थों के यथार्थ स्वरूप का बोध करने वाली दृष्टि का दान करने वाला निष्कलंक आत्मा मानता है और संसारी जीवात्मा की दुःख गाथा का मूल कारण उसकी अपनी आत्म-स्वरूप की विस्मृति मानता है। अपने आत्म स्वरूप का विस्मरण करने के कारण ही यह आत्मा पर पदार्थों से राग करता है, उनमे ममत्व बुद्धि रखता है, उन्हे सुख का कारण मानता है और अन्त में सुखी न होकर स्वयं सक्लिष्ट होता है।

कवि सम्यग्दृष्टि है। उसका तत्त्वदर्शन सम्यक् है और जीवात्मा से भी वह यही अपेक्षा रखता है कि वह भी आत्म एवं पर का सम्यक्दर्शन करे और फिर पर-संग से मुक्त होकर आत्मा के सहज सुख स्वरूप को प्राप्त करने की चेष्टा करे। अतः इस प्रकार की दृष्टि का लाभ दृष्टि-सम्पन्न आत्मा से ही मिल सकता है, अतः इसका श्री सीमंधर स्वामी का उक्त गुणगान वस्तुतः बड़ा ही अन्वर्थ है, जो स्वयं कवि की भी सम्यग्दृष्टि-सम्पन्नता को इंगित करता है।

एक स्थल पर कवि ने साधु के व्यक्तित्व का बडा सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। उनका शब्द चित्र देखिए:—[1]

"एक एक मुनिवर एहवाजी, बोले है अमृत वेण।
राग ने द्वेष केहसूं नहीजी, सकल जीवांरा सेण॥
साकर टाकर सम गिणेजी, सम गिणे धातु पाषाण।
तृण त्रिया सरखा गिणेजी, नहीं खुशामद काण॥
कोयक वंदत आयनेजी, कोयक निंदत आय।
कोयक छेदत कायनेजी, राग रोप न मन मांय॥

अर्थात् साधु अपने अन्य असामान्य गुणों के अतिरिक्त हित-मित एवं सुधोपम मधुर भाषी भी होता है। किसी भी प्राणी से राग-द्वेष नहीं करता है

---

१. जयवाणी पृ० सं० ३१ (३४, ३५, ३६)

और सब जीवों को समदृष्टि से देखता है। उसे मधुर तथा अमधुर रस में हर्ष-विषाद नहीं होता और सुवर्ण एवं पाषाण को भी वह समान दृष्टि से ही देखता है। चाहे कोई उसकी निन्दा करे, चाहे स्तुति करे तथा चाहे उसे किसी प्रकार की शारीरिक पीड़ा भी क्यों न पहुँचावे, वह अपने मन में तनिक भी राग-रोष नहीं करता है।

साधु के जीवन का भला इससे अधिक व्यावहारिक आदर्श और क्या हो सकता है।

उनकी श्रद्धा में परिग्रह के प्रति तनिक भी आसक्ति नहीं है। वह परिग्रह को कर्म बन्धन का कारण और संसार परिभ्रमण का बीज मानते हैं और मानते हैं कि इसके परित्याग के बिना यह आत्मा सदा सुखी नहीं हो सकता।

सन्तो के सामान्य परम्परा-गत मत के अनुरूप ही उनका भी मत है कि संसार के बड़े से बड़े संग्राम कनक एवं कामनी के कारण ही हुए है. कोई बिरला ही आत्म-जयी सन्त मोह-ममता को तोड़ कर इससे मुक्त रह सके हैं।

इसीलिये उन्होंने कहा है कि आज के युग मे बड़े से बड़ा योगी और यति भी, जो अपने को साधु कहलाने से गौरव एवं गर्व का अनुभव करता है इस परिग्रह-पिशाच के वशवर्ती होकर पता नहीं. कितने जघन्य अपराध करता है। स्वयं कवि के शब्दों मे ही उनका आशय देखिये:—[1]

"कर्मतणो बंध परिग्रहो ए, पटकावे ससार के ।
चारो ही गति मांही ए, त्याग्यां हुवे भव पार के ॥
कनक कामनी कारणे ए, हुवे घणा संग्राम के ।
संत केई बच गया ए, तिण राख्यो मन ठाम के ॥
बड़ा बडा जोगी जति ए, नाम धरावे साध के ।
इण धन रे कारणे ए, करे घणा अपराध के ॥"

कवि की दिवाली भी अलौकिक दिवाली है। उन्होंने 'दीवाली' शीर्षक रचना में उसका बड़ा ही भावपूर्ण चित्र अङ्कित किया है।

कवि का कथन है कि यदि दिवाली मनानी है तो दया रूपी दीपक मे सम्यक्त्व रूपी ज्योति को प्रज्वलित करना चाहिये (कर्माश्रव-निरोध) रूपी आवरण से उसे आवृत किया जाय। इस स्थिति मे आत्मा के साथ संबद्ध कर्म चक्र विगलित होगा और केवल ज्ञान का प्रकाश आलोकित हो उठेगा। दिवाली की

---

१. जयवाणी पृ० सं० ३७ (६२, ६६, ६९)

वास्तविकता इसी में है कि भीतर का अन्धतमस् उच्छिन्न हो और आत्मा में सम्यग्ज्ञान ज्योति प्रकाशमान हो।[१]

दिवाली के दिन किये जाने वाले बही-खाते की पूजा के स्थान पर वह धर्म पूजा, मकान की स्वच्छता के स्थान पर मन-शुद्धि तथा पारिवारिक-स्नेह के स्थान पर धर्म स्नेह को ही महत्त्व देते हैं। उनकी स्पष्टोक्ति देखिये:—[२]

"पर्व दिवाली ने दिने, पूजे बही लेखण ने दोत ।
ज्यूं तू धर्म न पूजले, दीपे अधिकी जोत ॥
पर्व दिवाली जाणने, उजवाले हवेली ने हाट ।
इण तूं मन उजवाल ले, बन्धे पुनां रा ठाट ॥
धन धान त्रिया बालक सजन, व्हाला लागे तोय ।
जैसो नेह कर धर्म सूं ज्यों मुगति तणा सुख होय ॥"

कवि ने क्षमा धर्म की महत्ता का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है। उन्होंने सच्चा शूरवीर उसे बतलाया है, जो किसी से भी रोष नहीं रखता है। उनकी श्रद्धा में सच्चा क्षमा-शील ही अनायास भवसागर से पार उतर सकता है। उनकी सुनिश्चित उक्ति सुनिए:—[३]

"रीस न राखे केह सूं, ते साचा सूरवीरो रे।
भव सागर हेलां तिरे, धरमी मन में धीरो रे ॥"

'यह मेला' शीर्षक रचना में कवि ने संसार और प्राणी के परिजन-स्वजनों के सम्बन्ध को एक अद्भुत मेले का रूपक दिया है। कवि की दृष्टि में यह संसारी आत्मा परदेशी है और उसका संसार परदेश है। जिस प्रकार पत्र मिलते ही परदेशी किसी भी बाधा विघ्न की चिन्ता न करके परदेश से चल पड़ता है। यही दशा कवि की दृष्टि में संसारी आत्मा के आयुष्य की समाप्ति पर एक भव से भवान्तर में जाने की है। जब आयुष्य क्षीण होता है तो इसे प्रत्येक परिस्थिति में प्राप्त पर्याय छोड़ देने के लिए विवश होना पड़ता है। प्रस्तुत तथ्य को कवि ने थोड़े ही शब्दों में बड़े सुन्दर ढंग से कह दिया है। कवि का कथन देखिये.—[४]

"परदेशी परदेश में किणसूं करे रे सनेह ।
आयां कागद उठ चले, आंधी गिणे नहीं मेह ॥"

---

१. जयवाणी पृ० सं० ५२ (१६, १७)। २. पृ० सं० ५२ (३४, ३५, ३६)
३ पृ० सं० ७२ (८४)। ४ पृ० सं० ११२ (५)।

'चेतन ! चेत' नामक रचना में एक स्थल पर जाति-वाद की स्पष्ट शब्दों में भर्त्सना करते हुए कहा है कि जो आत्मा उच्च-कुल में जन्म लेने पर भी जघन्य आचरण करता है, उसे उच्च-कुलीन नहीं कहा जा सकता है। साथ ही जो आत्मा नीच कुल में जन्म लेने पर भी उच्च आचरण करता है, उसे उच्च-कुलीन ही माना जाना चाहिए। केवल ऊंच तथा नीच कुल में जन्म लेने से आत्मा ऊंचा अथवा नीचा नहीं कहलाता।
कवि की विवेक-वाणी सुनिए:—[1]

"ऊचे कुल आय ऊपना रे,
एतो हुआ रहे वड भींचो रे।
माठा करतव लम्पटी अति घणा,
ते तो लक्षण कहीजे नीचो रे॥
नीचे कुल आय ऊपना,
पिण ज्ञान विवेक शुद्ध धारो रे।
तिका नीचा ही ऊचा कह्या,
सुद्ध समकित पामी सारो रे॥"

'मूरख-पच्चीसी' मे कवि ने संसार-मूढ मानव को आत्म हित साधन का बड़ा ही दिव्य सन्देश दिया है। उन्होने कहा है—"रे जडात्मन्! तुझे इस संसार मे अत्यन्त जागरूक एवं सावधान रहकर आत्म-कल्याण की साधना मे संलग्न रहना चाहिए। क्योंकि जब काल झपट कर तुझे ले चलेगा, उस समय तेरे सगे स्नेही, पुत्र-पौत्र, पिता-काका, माता, बन्धु-बान्धव एवं स्नेही सब देखते ही रह जायंगे—कोई भी तुझे संरक्षण नहीं दे सकेगा। फिर तू क्यों इन सबमे आत्मीय बुद्धि रखकर आत्म-हित-साधन से विमुख हो रहा है?" कवि के शब्दो मे ही उनका मङ्गलमय सन्देश सुनिए। वह कहते हैं:—[2]

"सगा सनेही बेटा पोतरा,
काका बाप ने माय।
बंधव त्रिया रे देखता रहे,
जब काल झपट ले जाय॥"

इसलिए कवि की संबोधना है कि आत्मन्! जब तक तेरी इन्द्रियां शिथिल नहीं हुई है, तेरे शरीर मे जरा ने आकर बसेरा नही किया है और रोग

---

१ जयवाणी पृ० सं० १३० (६, १०)। २. पृ० सं० १४० (३)।

ने भी उसे अपना घर नहीं बनाया है. तू धर्माचरण में संलग्न हो जा। न किसी की निंदा कर और न अन्य किसी प्रकार की व्यर्थ की चर्चा मे ही भाग ले। आत्मन् तू सबको आत्मवत् देख। इतना ही नही, यदि इस बात का ध्यान है कि तुझे दूसरे जन्म में दुःखो की ज्वाला मे न झुलसना पड़े तो तू किसी से भी राग-द्वेप मत कर। कवि की श्रेयोमय संबोधना सुनिए:—

" जिहां लग पांचू इन्द्रिय रे पर पड़ी,
जरा न व्यापी रे आय।
देह मांहि रे रोग न फेलियो,
तिहां लग धर्म सभाय॥
निंदा विकथा रे मत कर पारकी,
आप सांभो रे देख।
जो तूं पर-भव सों डरतो रहे,
तो किण सूं मत कर द्वेष॥[1]

कवि ने चरित-वर्णना मे अत्यन्त सजीव संगीत-प्रधान काव्यात्मक शैली को अपनाया है। इस प्रकार की चरित-गाथाओ मे कतिपय स्थल तो बहुत ही मार्मिक बन पड़े है।

भृगु पुरोहित के चरिताङ्कन मे जब भृगु पुरोहित अपनी समृद्धि छोड़कर मुनि-दीक्षा के लिए उद्यत होता है तो राजा उसकी सम्पत्ति के अपहरण के लिए प्रस्तुत होता है। इस अवसर पर रानी कमलावती की संबोधना नितान्त मर्मस्पर्शिनी है। वह कहती है—राजन ब्राह्मण के द्वारा परित्यक्त सम्पत्ति को तुम स्वीकार न करो। राजा का भाग्य बड़ा मोटा होता है। उच्छिष्ट आहार की इच्छा केवल कौवा और कुत्ता ही करता है। तुम्हें कौवा और कुत्ते की वृति स्वीकार करना शोभन नही देता। फिर पूर्व मे संकल्प पूर्वक दान दी गई ऋद्धि को वापिस लेना भी तो लज्जास्पद है! सम्पूर्ण विश्व की विभूति से भी पापिनी तृष्णा उपशान्त नहीं हो सकती है। फिर जब एक दिन इस सम्पूर्ण वैभव को छोड़कर यहां से चलना ही है तो तुम ऐसी असत् वांछा क्यो करते हो?" रानी कहती है—"राजन् हमारी समझ से एक वीतराग-धर्म की शरण ही हमारा त्राण और कल्याण कर सकती है।" कवि की काव्यमयी वाणी सुनिए—

---

१. जयवाणी पृ० सं० १४१–१४२ (१८, १६)।

"सांभल महाराजा, ब्राह्मण छांडी हो,
रिध मती आदरो।
राजा का मोटा भाग,
वमिया आहार की हो,
वांछा कुण करे?
करे छे,
कूतरो ने काग ॥सां०॥

काग ने कुत्ता सरीखा,
किम हुवो.
नहीं प्रसंसवा जोग।
भृगु पुरोहित ऋध तज नीसर्यो,
थे जाणो आसी म्हारे भोग ॥सां०॥

संकल्प कियो पाछो किम लीजिए,
सांभलजो महाराज।
दान दियो थे पेला हाथ सूं,
पाछो लेतां नहीं आवे लाज ॥सां०॥

जग सगला रो हो धन भेलो करी,
घाले थांरा राज रे मांय।
तो पण तृष्णा हो राजाजी पापणी.
कदे तृप्ति नहीं थाय ॥सां०॥

एक दिन मरणो हो राजाजी यदा तदा,
छोड़ो नी काम विशेष।
बीजो तो तारण जग मे को नहीं,
तारे जिणजी रो धर्म एक ॥सां०॥"[१]

आगे चल कर रानी स्वयं कहती है—राजन् तोते को आप भले ही रत्न-जडित पिंजड़े मे बन्द कर दें; परन्तु वह उसे बन्धन ही समझता है। यही दशा मेरी भी है। आपकी यह इन्द्रोपम राज्य-विभूति भी मेरे लिए बन्धनमय ही है और मुझे एक क्षण के लिए भी इसमे रति एवं आनन्द की उपलब्धि नहीं हुई। अब राजन्। इस व्यावहारिक स्नेह-बन्धन को तोड़ने के लिए और उससे सदा के लिए अबद्ध रहने के लिए मैं विरक्त होकर संयम को स्वीकार कर रही हूँ।

---

१. *जयवाणी पृ० सं० १६३ (६-१०)।*

आप भी शूर-वीर बनकर इसी मार्ग को अंङ्गीकार कीजिए। रानी का सुचिन्तित निवेदन सुनिए वह कहती है: —

"रत्नजड़ित हो राजाजी पिंजरो,
सुवो तो जाणे है फंद।
इसड़ी पण हूँ थांरां राज मे,
रति न पाऊं आणद॥
स्नेह रूपिया तांतां तोड़ने,
और बंधन सूं रहसूं दूर।
विरक्त थई ने संजम मैं ग्रहूँ,
थे भी पण होय जाओ सूर॥"[1]

भगवान् नेमिनाथ के चरिताङ्कन मे कवि ने बड़ी हृदय-द्रावक करुणा की धारा प्रवाहित की है। भगवान् नेमिनाथ जब अपने पाणि-ग्रहण को जाते समय बन्दी पशुओं का करुण क्रन्दन सुनते है तो उनका हृदय करुणा से आप्लावित हो जाता है और वह कह उठते है:—[2]

" परणीजण मे पापज मोटो,
जीव हिंसा से सहज खोटो।
ए तो दीसे परतख तोटो,
तो लेऊं दयाधर्म रो ओटो॥"

वह तुरन्त बन्दी पशुओं को मुक्त कर देते है और स्वयं भव-भोगो से विरक्त होकर मुक्ति श्री को वरण करने की तैयारी करने लगते है।

बन्दी पशु-पक्षियो के मुक्त हो जाने पर भगवान नेमीश्वर के लिए वे जिस आत्मीयता के साथ आशिष् देते है, कवि ने इसका बडा ही हृदयग्राही चित्रण किया है। पशु-पक्षियो की आशिष् सुनिए.—[3]

" गगन जातां जीव देवे आसीस के,
पशु ने पंखिया जगदीश।
जादव! हिवे चिरंजीव जो,
बलिहारी तुम बाप ने माय के,
पुत्र रतन जिन जनमियो।

---

१. जयवाणी पृ० सं० १६४ (१५, १६)। २. पृ सं० २२६ (२)।
३. पृ० सं० २२६-२२७ (ढाल-१८)।

स्वामी ! थे मारिया, अम्ह तणा काज के,
तीन भवन रो पामजो राज के-
शील अखंडित पालजो ॥"

नेमीश्वर के दीक्षा लेते ही राजुल के जीवनाकाश में शोक के मेघ छा जाते हैं। उसके मनमें भगवान् नेमि के दर्शन की तीव्र उत्कण्ठा जाग्रत हो उठती है और वह उन तक अपना उपालंभ भेजने तथा उनका पत्र लाने के लिए, देखिए- किस प्रकार अपनी सखियों को फुसलाती है—

"तरसत अखियां हुई द्रुम-पखियां !
जाय मिलो पिवसूं सखियां !
यदुनाथजी रे हाथ री ल्यावे कोई पतियां,
नेमनाथजी-दीनानाथजी ॥
जिणकूं ओलंभो एतो जाय कहणो,
थे तज राजुल किम भये जतिया ?
जाकूं दूंगी जरावरो गजरो,
कानन कूं चूनी मोतिया ॥
अंगुरी कू मूंदड़ी, ओढण कूं फमड़ी,
पेरण कूं रेशमी धोतिया ।
महल अटारी, भए कटारी,
चंद -किरण तनूं दाभतिया ॥"[1]

जब राजुल की माता उसे आश्वस्त करती है तो वह उत्तर मे जो कुछ कहती है वह उसकी दृढ नेमि-निष्ठा एवं महनीय शील का द्योतक है। कवि की वाणी मे राजुल की उक्ति सुनिए—[2]

"किन के शरणे जाऊं, नेम बिना किनके शरणे जाऊं ।
इण जग मांय नहीं कोई मेरो, 'ताकि मैज' कहाऊं ॥ नेम० ॥
मात पिता सुण सखी महेल्यां, लिख कर दूत पठाऊं ।
किण गुन्हे मोय तजी पियाजी मै भी संदेशो पाऊं ॥ नेम० ॥
मै तो पल एक संग न छोडूं, छोड कहो किहां जाऊं ।
अब टुक धीरप-रथ हांको, चालो मैं भी थांरे लार आऊं ॥ नेम० ॥"

---

1. जयवाणी पृ० सं० २२६-२३० (ढाल-२३)
2. जयवाणी पृ० सं० २३१ (ढाल-२६)

राजुल सर्वात्मना भगवान की अनुगामनि होना चाहती है। अतः वह अपनी माता से निवेदन करती है किवह उसके सम्बन्ध में किसी प्रकार का दुख न करे। वह अपनी माता से कहती है:—[1]

"अरि मेरा दुख मत कर जननी।
म्है जाऊंगी गिरनार।
दीक्षा लेऊगी भव तरणी।।
अरि मात-पिता सुण सखी सहेली।
करो क्षमास जननी।
अब रहणे की नांय भई,
मैं करू श्याम-मिलणी।।"

इसी प्रकार मेघ-कुमार की चरित-वर्णना मे, विशेषतः उनकी दीक्षा कालीन वर्णना मे कवि-वाणी बड़ी ही हृदय-द्राविणी हो उठी है। एक ओर मेघ-कुमार नवयुवा दीक्षा होने के लिए पालकी पर सवार होते है तो दूसरी ओर उनकी माता एवं आठों नवयुवती-पत्नियां करुणा विलाप करती है। पर सम्यग्-दृष्टि मेघ कुमार उसी भांति निश्चल भाव से घर से बाहर निकलते है, जिस प्रकार एक शूरवीर समराङ्गण के लिए निष्कम्प होकर निकलता है। नगर की कुल-बधुएं उनके इस विराग भाव पर नाना कल्पनाएं करती है। कवि ने इस दृश्य का अत्यन्त सजीव शैली में चित्रण किया है। देखिए, कवि ने लिखा है-[2]

"मोटी बणाई इक शीविका रे,
मांहे बैठो छे मेघकुमार रे।
माता रो हिवड़ो फाटे अति घणो रे,
विल विल कर रही आठो नार रे।।
जोयजो कायर रो हियो थरहरे रे।।
संयम लेवा घरसूं नीसर्यो रे,
जिम रण मांहे निकसे सूर वीर रे।
वाजित्र वाजे शब्द सुहावणा रे,
कायर इण वेला होवे दलगीर रे।।
कोईक कामण मुखसूं इम कहे रे,
दीसे नान्हड़ियो सुकमाल रे।
कुटुम्ब कबीलो किणविध छोड़ियो रे,
किणविध तोड़ियो माया जाल रे।।

---

१. जयवाणी पृ०सं० २३१ (ढाल-२७)। २. पृ०सं० ३७६ (ढाल-१०)

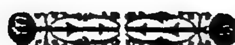
एक एक कहे थारी जाऊं एहनी रे,
　　　　इण वैरागे छोड्यो घर-सूत रे ।
जोवन वय में सुन्दर परहरी रे,
　　　　राजा 'श्रेणिक-धारिणी' केरो पूत रे ।।
　　　　जोड्जो समकित नो रस परगम्यो रे ।।"

इस प्रकार 'जयवाणी' की सम्पूर्ण रचनाएं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र एवं उसके प्रत्येक पक्ष को उन्नत, विकसित एवं मङ्गलमय करने की पुण्य प्रेरणा प्रदान करती हैं। श्री जयमलजी महाराज ने राजस्थान में लोक-प्रिय अनेक राग-रागनियों एवं छन्दों में इन रचनाओं को ग्रथित करके जन-सामान्य का बड़ा कल्याण किया है। काव्य के भावपक्ष एवं कलापक्ष-दोनों दृष्टियों से इस संग्रह का बड़ा मूल्य है। आशा है, राजस्थानी साहित्य के क्षेत्र में 'जयवाणी' एक अपना विशिष्ट स्थान ग्रहण करेगी और उसकी रचनाओं का समुचित मूल्याङ्कन होगा।

हम यहां पंडितरत्न मुनिश्री मिश्रीमलजी 'मधुकर' को हार्दिक साधुवाद दिये बिना नहीं रह सकते, जो 'जयवाणी' के रचियता श्री जयमलजी महाराज की ही शिष्य परम्परा के हैं और जिन्होंने उनकी बिखरी हुई रचनाओं को एकत्र संयोजित करके पाठकों के करतलगत 'जयवाणी' का सुन्दर रूप दिया। हम आशा करते हैं कि वह इसी प्रकार की अन्य महनीय रचानाओं का भी सम्पादन करके उन्हें प्रकाश में लावेंगे और साधु समाज के सन्मुख श्रुत-सेवा का एक अनुकरणीय एवं अभिनन्दनीय आदर्श उपस्थित करेंगे।

विजयादशमी
२०१६

—उपाध्याय अमर मुनि



अन्तर्दर्शन . . .

●

प्रस्तुत पुस्तक 'जय-वाणी' स्वर्गीय आचार्य-वर श्री जयमल्लजी महाराज की रचनाओ का संग्रह है । आचार्यश्रीजी की रचनाओं को एक संकलन मे प्रकाशित करने की आवश्यकता थी । प्रस्तुत चयन मे उस आवश्यकता की पूर्ति की गई है ।

आचार्यश्रीजी अपने समय के एक परम-पुनीत संत पुरुष थे । उनके जीवन के कण कण से वैराग्य-रस की धारा बहती थी ।

आचार्यश्रीजी का जन्म राजस्थान की मरु-धरा मे हुआ था । आज बीसवी सदी है । कुछ पीछे की ओर आइये । सत्रहवी सदी के उत्तरार्द्ध तक पहुँचिए । आचार्यश्रीजी के जन्म का वही समय है । श्री आनन्दघनजी जैसे योगीराज, श्री देवचन्द्रजी जैसे पण्डित पुरुष और श्री यशोविजयजी जैसे उद्भट विद्वान् भी लगभग उसी समय की देन हैं ।

आचार्यश्रीजी का जन्म 'लांबियां' गांव मे हुआ था । जोधपुर राज्य के अन्तर्गत, मेड़ता से जैतारण की ओर जाने वाले राज-पथ पर यह गांव बसा हुआ है । अपनी पुरातन प्रभा से प्रभासित यह लांबियां गांव आज भी उस पथ से आने जाने वाले पथिको के लिये विश्राम-स्थल बना हुआ है ।

वे बीसा ओसवाल थे । गोत्र उनका समदड़िया महता था । मोहनदासजी पिता और महिमादेवीजी उनकी माता थी । उनके एक अग्रज भ्राता भी थे, जिनका नाम रिड़मलजी था । बावीस वर्ष की अवस्था मे वे विवाह-सूत्र मे भी बंध गए थे । उनकी धर्मपत्नी का नाम लक्ष्मीदेवी था ।*

एक बार व्यापार के सिलसिले मे वे अपने साथी सहयोगियो के साथ मेड़ता गए । वहां उस समय स्थानकवासी जैन-समाज के अन्तर्गत आचार्य श्री

पूज्य जयमल्ल गुणमाला के द्वि० स० में, आचार्यश्रीजी की जन्म तिथि सं० १७६५ की आषाढ शुक्ला त्रयोदशी, और उनकी विवाह तिथि स० १७८८ की ज्येष्ठ शुक्ला नवमी सूचित की गई है ।

धर्मदासजी महाराज की शाखा के प्रशासक पूज्य-प्रवर श्री भूधरजी महाराज विराज रहे थे। मेड़ता पहुंचने पर उन्हें भी पूज्यश्री भूधरजी महाराज के दर्शन व उनके प्रवचन सुनने का सु-अवसर मिल गया। संवत् १७८७ के वर्ष की कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी की यह बात है। उस दिन श्री भूधरजी महाराज के प्रवचन में ब्रह्मचर्य व्रत की सुदृढता पर सेठ सुदर्शन के जीवन का प्रसंग चल रहा था। उनके दिल पर पूज्यश्री के प्रवचन का प्रभाव बहुत गहरा पड़ा। संभवतः वे प्रथम बार ही मुनिराजों की धर्म-सभा मे पहुंचे होंगे? फिर भी उनके हृदय मे संयम ग्रहण करने की भावना प्रबल रूप से जागृत हो गई थी। इसीलिये तो उन्होने वहीं बैठे बैठे आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार कर लिया था। ब्रह्मचर्य व्रत की अंगीकृति के साथ साथ उन्होंने संयम ग्रहण किये बिना मेड़ता से बाहर न निकलने की प्रतिज्ञा को भी अपना लिया था। अंततो-गत्वा हुआ भी यही। संयम लेकर ही वे अपने गुरु महाराज के साथ मेडता से बाहर निकले थे। सं० १७८७ की मार्गशीर्ष कृष्णा द्वितीया के दिन *उन्होंने श्रमण-जीवन में प्रवेश किया था। विवाह के षट् मासो के बाद ही वे श्रमण बन गए थे।

उस समय की मारवाड़ी प्रथा के अनुसार विवाह के बाद श्वशुरालय मे समागता पत्नी कुछ दिनो के बाद तुरन्त पीहर चली जाती थी। उस समय यह भी एक प्रथा थी कि शादी के बाद आने वाले प्रथम श्रावण व भाद्रपद मे श्वश्रू और वधू साथ साथ नहीं रह सकती थी। शायद अभी भी यह प्रथा कहीं कहीं पर चल रही है। हां, तो विवाह के बाद कुछ दिनो तक श्वशुरालय मे रहकर लक्ष्मी देवी अपने पीहर चली गई थी। उसका पुनरागमन होने ही वाला था कि इसी बीच जयमल्लजी साधु हो गए। पति के गृह-त्याग कर देने पर लक्ष्मीदेवी ने भी संयम ग्रहण कर लिया।

यद्यपि जयमल्लजी के प्रति उनके माता-पिता व अग्रज भ्राता के अंतःकरण मे अत्यधिक ममता थी परन्तु उनकी दृढ़ता पर उनको उन्हे संयम लेने की अनुमति देनी ही पड़ी।

अपनी कुशाग्र-बुद्धि के कारण अतीव अल्प समय मे ही उन्होने श्रमण-सूत्र याद कर लिया था। इसलिये सात दिनो के बाद ही उनकी बडी दीक्षा 'बिकरणिया' गांव के बहिरवस्थित वट वृक्ष के नीचे हो गई।

श्रमण-जीवन मे प्रवेश करते ही आचार्यश्रीजी ने एकान्तर तप की

---

*पूज्य जयमल्ल गुणमाला द्वि० सं० के अनुसार सं० १७८८ की मार्गशीर्ष कृष्णा द्वितीया।

आराधना प्रारम्भ कर दी थी। जब तक पूज्यश्री भूधरजी महाराज विराजमान रहे, उनकी वह साधना निराबाध गति से निरंतर चलती रही। आपकी दीक्षा से सोलह वर्ष बाद पूज्यश्री भूधरजी महाराज दिवंगत हुए थे।

मेड़ता-रोड़ से बिहार कर मेड़ता पधारते समय मार्ग में तृषा-परीषह के कारण वे इस भौतिक देह से अलग हुए थे। उस समय पूज्यश्री भूधरजी महाराज के पांच उपवास की तपस्या थी।

अपने गुरु महाराज के स्वर्गवास के बाद आचार्यश्रीजी ने लेटकर निद्रा लेने का परित्याग कर दिया था। पूरे ५० वर्ष तक उन्होने लेटकर निद्रा नहीं ली। अपने जीवन के अंत तक वे इस नियम पर आरूढ बने रहे।

आचार्यश्रीजी का स्वर्गवास नागौर में हुआ था। सं० १८५३ वें वर्ष की वैशाख-शुक्ला चतुर्दशी उनकी स्वर्गवास तिथि थी। आपको ३१ दिनों का संथारा आया था। शारीरिक अस्वस्थता के कारण अपने जीवन के अन्तिम वर्षों मे आप नागौर ही विराजमान रहे थे। संवत् १८ सौ के ४० वे वर्ष मे आप नागौर पधार गए थे।*

आचार्य श्रीजी के वर्षावास कहाँ, कब हुए—

सोजत—सं १७८६, १७९६, १८०३, १८०५, १८१६, १८३२।
जालोर—सं० १७९०
दिल्ली—सं० १७९१
मेड़ता—सं० १७९२, १७९८, १८०२, १८०४, १८०७, १८२४, १८२७।
जोधपुर—सं० १७९३, १७९५, १७९७, १८००, १८०१, १८१०, १८१६, १८२०, १८२६, १८२९, १८३४, १८३६।
किशनगढ—सं० १७९९, १८१५, १८२१, १८३०, १८३८।
बोड़ावड़—सं० १८०८। जैतारण—सं० १८०९।
पीपाड़—सं० १८११, १८३५। भीलवाड़ा—सं० १८१२।
उदयपुर—सं० १८१३। अमर रायपुर—सं० १८१४।
बीकानेर—सं० १८१७, १८२३। जयपुर—सं० १८१८।
शाहपुरा—सं० १८३१, १८३९।
पाली—सं० १८३३, १८३७।
नागौर—सं० १७९४, १८०६, १८२२, १८२५, १८२८, १८४० से १८५२ तक (स्थिरवास के कारण)

[पूज्य जयमल गुणमाला द्वि० सं० के अनुसार]

राजस्थान के अतिरिक्त दिल्ली, आगरा, पंजाब व मालवा की ओर भी आचार्यश्रीजी ने यात्रा की थी। बीकानेर पहुँच कर सबसे पहले आपही ने वहां स्थानकवासी समाज के सत्त्व को अंकुरित और पल्लवित किया था।

पूज्यश्री रघुनाथजी म० श्री जेतसीजी म० श्री कुशलजी म० आचार्यश्रीजी के गुरु भ्राता थे। श्री कुशलजी म० आपके छोटे गुरु-भ्राता थे।

आचार्यश्रीजी के अनेक शिष्य थे। आचार्य-पद का उत्तराधिकार आपके योग्यतम प्रमुख शिष्य मुनिश्री राजचंद्रजी को मिला था। अपने जीवन-काल में स्वयं आचार्यश्रीजी ने उन्हें आचार्य-पद से विभूषित कर दिया था। आगे भी यह आचार्य परम्परा लंबे समय तक चलती रही।*

आपके प्रभावशाली महान् व्यक्तित्व के कारण आपकी आख्या पर ही आपकी सम्प्रदाय का नाम-करण हुआ और इसलिये उक्त सम्प्रदाय का नाम 'जयमल्ल सम्प्रदाय' आज तक प्रचलित है।

आचार्यों के अतिरिक्त अनेक सुयोग्य संत इस सम्प्रदाय में हुए हैं जिनकी गौरव-गाथा आज भी सुदूर-व्यापिनी बनी हुई है।

उत्तरोत्तर होने वाले आचार्यश्रीजी के उत्तराधिकारी और सम्प्रदाय के सुयोग्य सन्तों के सबल स्कंधों पर समारूढ इस सम्प्रदाय ने स्थानकवासी समाज में यत्र तत्र सर्वत्र बहुत अच्छा गौरव प्राप्त किया। अट्ठारहवीं सदी से लेकर बीसवीं सदी के नोवे वर्ष के प्रारम्भ काल तक बहुत अच्छे रूप मे इस सम्प्रदाय का अस्तित्व बना रहा। इस सदी के नौवे वर्ष मे जब सादड़ी मे सम्मेलन हुआ तो अन्य सम्प्रदायो के साथ इस सम्प्रदाय ने भी श्रमण-संघ मे मिलकर अपने अस्तित्व को अमर कर दिया।

हां, तो प्रस्तुत संग्रह मे उन्हीं आचार्यश्रीजी की रचनाओं का सकलन किया गया है। उनकी सारी रचनाएं मारवाड़ी भाषा मे है। उन्होने असीमित पद्य लिखे है। उनके पद्यो में जैनधर्म से अनुस्यूत अनेक विषयो के अवगाहन के साथ नीति, रीती तथा अनेक आख्यानो का भी चित्रण किया गया है। संसार की अस्थिरता और वैराग्य-भावना आचार्यश्रीजी के खास विषय रहे हैं।

प्रस्तुत संकलन मे उनकी सारी रचनाओ का संग्रह हो गया हो, ऐसी बात नहीं है। मै समझता हूं, अब भी उनकी ऐसी बहुत-सी रचनाएं होंगी, जिनको

आचार्यश्री के क्रमशः उत्तराधिकारी—१. पूज्य श्री रायचदजी म० २. पूज्य श्री आसकरणजी म० ३. पू० श्री शबलदासजी म० ४. पू० श्री हीराचंदजी म० ५. पु० श्री किस्तूरचंदजी म० ६. पू० श्री भीकमचंदजी म० ७. पू० श्री कानमलजी म.

प्रकाश में लाने के लिये इधर उधर बिखरे पड़े हुए पन्ने संभालने पड़ेंगे। मुझे जितनी सामग्री मिली, उसीके आधार पर यह संग्रह तैयार किया गया है।

मुझे याद है, मेरे स्वर्गीय श्रद्धेय पूज्य गुरुवर श्री जोरावरमल्लजी महाराज भी आचार्यश्रीजी की रचनाओ का संग्रह करना चाहते थे, परन्तु दूसरी अनेक जिम्मेदारियो के कारण इस ओर समय देने मे उन्हें सदा बाधाएं ही आती रही। इस सम्प्रदाय के एक और दूसरे विद्वान् मुनिराज श्री चैनमल्लजी महाराज थे। उनके अंतःकरण मे भी यह लगन थी। उन्होने इस ओर कुछ प्रयास भी किया था, परन्तु वे अल्प अवस्था मे ही दिवंगत हो गए थे, इसलिये उनकी भावना भी पूर्ण न हो सकी। उनकी भावनाओ का मूर्त रूप यह संकलन अब पाठकों के कर-कमलो में है।

आचार्यश्रीजी की रचनाओ मे जीवन को समुन्नत करने वाला वैराग्य-मय आध्यात्मिक संदेश मिलता है। संघर्षमय इस जीवन में इतस्ततः गोते खाने वाले जन-समुदाय के लिये उनकी रचनाओं का यह चयन मार्ग-प्रदर्शन कर सकेगा, ऐसी आशा है।

विषय के अनुसार वर्गीकरण कर प्रस्तुत संकलन स्तुति, सज्झाय, उपदेशी पद और चरित-चर्चा-दोहावली इन चार विभागों मे विभक्त कर दिया गया है।

यद्यपि जय-वाणी मे संगृहित रचनाओं के चयन मे मुझे करीब तीन वर्ष लग गए, फिर भी जो सामग्री मिली उससे मुझे संतोष है।

आचार्यश्रीजी की अन्यान्य बिखरी हुई रचनाएं भी अनेक सन्तो के पास व ज्ञान-भंडारो मे मिल सकती है, परन्तु इस संकलन मे पीपाड़, कुचेरा और ब्यावर के ज्ञान-भंडारो मे उपलब्ध सामग्री का ही उपयोग हो पाया है। मैं उन ज्ञान-भंडारो का तथा उनके अधिकारियो का पूर्ण आभारी हूँ।

मरु-धरा के मंत्री श्रीयुत श्रद्धेय पूज्यवर श्री हजारीमल्लजी महाराज व सेवा-भावी पण्डित मुनिश्री ब्रजलालजी महाराज का मै पूर्ण कृतज्ञ हूँ, जिनकी असीम कृपा के कारण ही मै इस कार्य को सानन्द समाप्त कर सका हूं।

जैन-समाज के धुरंधर विद्वान् विशद विचारक कविवर श्रीयुत श्रद्धेय अमरचंदजी महाराज ने इस पुस्तक पर जो भूमिका लिखने की महती कृपा की है, वह मेरे लिये सदा संस्मरण की बात रहेगी।

श्रीयुत पंडित शोभाचन्द्रजी भारिल्ल से भी मुझे समय-समय पर अच्छा परामर्श मिलता रहा है। प्रस्तुत संकलन उनका भी वड़ा आभार मानता है।

जय-वाणी सन्मति ज्ञानपीठ से प्रकाशित हो रही है यह भी एक सोने में सुगंध है।

श्रीमान सेठ खींवराजजी सा. चोरड़िया (नोखा-मद्रास) की ओर से साहित्य-साधना की ओर अग्रसर होने के लिये मुझे सदा बलवती प्रेरणा मिलती रही है। श्रीयुत चोरड़ियाजी एक उदार-हृदय मनस्वी सज्जन हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरु महाराज के वे अंतेवासी श्रावक है। उनके हृदय में पूज्य गुरु महाराज के प्रति अपार श्रद्धा है। इस पुस्तक के प्रकाशन में उनका पूर्णतया सहयोग है।

छद्मस्थ होने के नाते प्रस्तुत-सम्पादन में त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। प्रेमी पाठक सुधार कर पढेंगे ऐसी शुभाशा के साथ विराम—

जैन स्थानक
पीपलिया बाजार, ब्यावर
शारदीया-पूर्णिमा
सं० २०१६

मधुकर मुनि



* विषय-सूची *

卐

चरित, चर्चा, दोहावली १८३–५:

जय–वाणी

(१)

स्तुति

(१)

❀ चउवीसी स्तवन ❀

[तर्ज—ते गुरु मिच्छामि दुक्कडं]

१— रे जीव ! जिनवर सुमरिये
सुमरयां जय जयकार ।
इण भव में सुख सम्पदा
पामे भवनो पार ॥

२— ऋषभ अजित संभव नमुं
अभिनन्दन अभिराम ।
सुमति पद्म सुपासजी
पहुँता शिवपुर ठाम ॥

३— चन्द्रप्रभ जिन आठमा
सुविधि शीतलनाथ ।
श्रेयांस जिन अग्यारमां
वासुपूज्य विख्यात ॥

४— विमल अनन्त धर्मनाथजी
सोलसमा श्री शान्त ।
कुंथू अर मल्लीनाथजी
कीधो भवनो अन्त ॥

५— मुनि सुव्रत जिन वीसमां
नेमी अरिट्ठनेम ।
पास जिनेश्वर वीरजी
पहुँता शिवपुर क्षेम ॥

६— ए चउवीसी जिनवर तणा
ध्यावे हितकर नाम ।
रिख 'जयमल्लजी' इम वीनवे
पामे अविचल धाम ॥

———

(२)

❀ शान्ति जिन स्तवन ❀

१— नगर हथिनापुर अति रे भलो
ज्यां जनम्यां तीर्थङ्कर त्रिभुवन तिलो।
राह प्ररूप्यो जैन खरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

२— सर्वार्थ सिद्ध थकी रे चवी
तब देश नगरमां शान्ति हुई।
शान्तिजी नाम दियो सखरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

३— 'विश्वसेन' पिता 'अचिरा' माया
जेणे चउदे सुपना मोटा पाया।
जनम्या तीर्थङ्कर अमिय झरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

४— छपन कुमारिका उल्लास घणो
जेणे जनमोच्छव कियो कुमर तणो।
चोसठ इन्द्र आवि कलश भरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

५— भणावि है बहोत्तर कला
जेणे सहस चौसठ परणी महिला।
छ खण्ड साध्या इणीय परो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

६— सहस पिचत्तर वर्ष कया
चक्रवर्ति पणे–घरवास रया।
पछे मिटाय दियो सगलो ही झगड़ो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

७— एक सहस पुरुष साथे शिक्षा,
श्री जिनवरजी लीनी दीक्षा।
पछे सुरनर आवि ने पाय पड़ो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

८— प्रभु ये मोह जाल सभी कापी
चतुर्विध संघ तिरथ थापी ।
चोथो दुखम सुखम आरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

९— बासठ सहस मुनिराज थया
वली सहस नव्यासी हुई अज्जिया ।
प्रभु तारो ने वली आप तरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१०—दोय लाख नेवु सहस श्रावक गुणी
त्रण लाख तयांसी सहस श्राविका सुणी ।
और चतुर्विध संघ खरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

११—चार हजार ओहीनाणी जती
वली त्रणशे हुवा विपुल-मती ।
नेवु गणधरनो पाप हरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१२—चार हजार त्रणशे रे कह्या
मुनि केवल लहीने मुगति गया ।
छः हजार मुनि वैक्रिय-धरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१३—चौतीस सो वादी भारी
वली आठसौ चौदह पूरवधारी ।
आठ करम सु जाइ लड़ो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१४—नव पदवी मोटी रे कही
जेणे एकण भवमाँ छए लही ।
ऐसो भरियो पुण्य घड़ो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१५—पा पा लाख कुमर साध पणे
वलि अध लाख वरस रह्या राज पणे ।

एक लाख वरसनो सर्व धड़ो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१६—चालीस धनुष ऊंची रे देही
वलि हेमवरणी उपमा रे कही ।
दीठे दिल दरियाव ठरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१७—जो नाम धरावो श्रावक यति
तो अनाचार सेवो रे मति ।
पर भव सेती कांईक डरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१८—त्रिविधे त्रिविधे जीव मति रे हणो
ए उपदेश छै जिनराज तणो ।
मार्ग बताव्यो शुद्ध खरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१९—ओ जीव राय ने रंक थयो
वलि नरक निगोदमां बहू रे रह्यो ।
रड़वड़ियो जेम गेड़ि दड़ो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

२०—चार गतिनां रे दुख कह्यां
जीवे अनंति अनंति बार लह्यां ।
पची रह्यो जिम तेल वड़ो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

२१—श्रद्धा सहित तुमे तप तपो,
भव्य जीवो सो तुमे जाप जपो ।
मार्ग मिल्यो छै निपट खरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

२२—संथारो एक मास तणो,
सम्मेत शिखर सिद्ध ठाम भणो ।
नवसौ मुनीशुं मुगति वरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

२३—मृग लंछन नेति ध्यान रमां,
श्री शान्ति जिनेश्वर मुगति गया।
पद्धे मेट दियो सब जन्म मरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

२४—तुम नाम लिया सब काज सरे,
तुम नामे मुगति महल मले।
तुम नामे सुभ भंडार भरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

२५—ऋषि 'जयमलजी' आ विनति कही
प्रभु तोरा गुणनो पार नहीं।
मुज भवभवनां दुख दूर हरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

---

(३)

❀ पार्श्वनाथजी का स्तवन ❀

१— बनारसी नगरी नामे,
अश्वसेन राजा वसे तिणठामे।
वामा तस घर पटराणी,
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

२— दशम दिवलोक थी चव आया
जद माता चवद सुपन पाया।
गर्भ उपनो उत्तम प्राणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

३— वद पोस दशम के दिन जाया
जद चोसठ इन्द्र मिली आया।
मेरु शिखर महिमा कर आंणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

४— छप्पन कुमारियां हुलास घणो
जद जनम कारज कियो कुंमर तणो।

अशुचि टाल गई ठिकाणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

५— न्यात मिली जीमण कीधो,
मिल पास कुमर नामज दीधो ।
नाग तणो लंछण जाणी,
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

६— वधे जिम अधिकी चन्द्रकला,
शुभ लछण पडिया देहे सगला ।
रूड़ी रेखा पग पांणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

७— कला चतुराई अधिकी घणी
घर मांहि थकां तिहुँ नाण धणी ।
गुण घणा रतनां खाणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

८— पांचे अगनी कमठे साझी,
देखण भीड़ मिली जाझी ।
नाग ने काढ्यो काठतांणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

९— तीस वर्ष गृह वास रह्या,
जद लोकांतिक सुर आय कह्या ।
बरसी दान दियो जाणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

१०—देवां आई महिमा कीधी,
वद पोस इग्यारस दीक्षा लीधी ।
तीन से संग हुआ गुण खांणी,
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

११—दिवस तयांसी छद्‌मस्थ रह्या,
वदि चेत चोथ केवल लह्या ।
चारूं कर्म कियां हाणी,
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

१२—गणधर आठ, सोले सहस मुणी
अड़तीस सहस आरजियां रे सुणी।
फंद छोड दिया आफांणी
श्री पास भजो पुरुपादानी ॥

१३—एक लाख चौसठ सेस श्रावक सुणी
तीन लाख सताईस सेस श्राविका सुणी।
एक सहस हुवा केवल नाणी
श्री पास भजो पुरुपादानी ॥

१४—चवदेसे हुआ ओही नाण जती
साढ़ा तेरेसे हुआ ज्यांरे विपुल मती।
इग्यारेसौ हुआ वेकराणी,
श्री पास भजो पुरुपादानी ॥

१५—छसो हुआ वादी भारी
साढ़ा तीन सौ हुआ पूरवधारी।
तज दीनी खांचा तांणी
श्री पास भजो पुरुपादानी ॥

१६—सीतर वर्ष दीक्षा पाली
शुद्ध दया धर्म ने उजवाली।
कर्म किया सहूँ धूड धांणी
श्री पास भजो पुरुपादानी ॥

१७ एक मास तणो अणसण लीधो
समेत शिखर ऊपर कीधो।
ध्याया शुभ शुकल ध्याणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

१८—श्रावण सुद अष्टमी सिद्धो
जद देव आय महोछव कीधो।
तेतीस संग हुआ निरवाणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

१९—जसो कीर्ति नाम बांध्यो पेली
श्री पार्श्वनाथ तणी महिमा फेली।

बहुमुख कहे दादो पासांणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

२०—रिख "जयमलजी" कहे कोई तप तपे
श्री पास तणो शुद्ध नाम जपे ।
ज्यांरा कर्म कट जावे आफांणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

———

(४)

❀ बीस वीहरमानों का स्तवन ❀

१— 'सीमंधर' 'युगमन्दिर' स्वामी
'बाहुजी' 'सुबाहुजी' हितकामी ।
'सुजात' 'स्वयं प्रभु' ईशो,
श्री विहरमान वन्दू वीसो ॥

२— 'ऋषभानन्दन' 'अनन्तवीर्य' मोटा
श्री 'सूर्यप्रभूजी' रा लो ओटा ।
'विशाल' भणी नमाऊं शीशो
श्री विहरमान वन्दू वीसो ॥

३— 'वज्रधर' 'चन्द्रानन्दो'
'चन्द्रबाहुजी' ने वांद्याँ आनन्दो ।
'भुजंग' जीत्या राग ने रीसो
श्री विहरमान वन्दू वीसो ॥

४— 'ईश्वर' ने 'नेमिप्रभू' ध्यावो
श्री 'वीरसेणजी' रा गुण गावो ।
'महाभद्र' नमूं निश दीसो
श्री विहरमान वन्दू वीसो ॥

५— 'देव जशाजी' 'अनन्तवीरो'
विचरे महाविदेह क्षेत्र मे धीरो ।
ज्यांने वांद्याँ हिवड़ो हीसो
श्री विहरमान वन्दू वीसो ॥

६— पांचसो धनुष देही माहू
चौरासी लाख पूरबनो आयू।
अतिशय जिनजीरा चौतीसो
श्री विहरमान वन्दू वीसो ॥

७— चार चार तीर्थङ्कर एक मेरु भारी
ज्यांरो साध साधवियाँ रो परिवारो।
मुक्ति जासी आठूं कर्म पीसो
श्री विहरमान वन्दू वीसो ॥

८— श्री विहरमान वीसूं ई जाणी
ज्यांरो भजन करो उत्तम प्राणी।
जिम पूरो मनरी जगीसो
श्री विहरमान वन्दू वीसो ॥

९— शहर 'मेड़ते' शुभ गामो,
ऋषि "जयमलजी" कीधा गुण ग्रामो।
समत अठारे चौवीसो,
श्री विहरमान वन्दू वीसो ॥

---

(५)

❀ बीस विहरमानों का स्तवन ❀

विहरमान वीस नमूं ॥ टेर ॥

१— सीमंधरजी ने सुमरंतां, युग-मन्दिर देव।
बाहुजी स्वामी तीसरा, सुबाहुजी नी सेव ॥ विह० ॥

२— सुजात स्वामी पांचमां, स्वयं-प्रभ जाण।
ऋषभानंदन सातमां, अनंतवीरजी बखाण ॥ विह० ॥

३— सूरप्रभ नवमां नमूं, दशमां श्री विशाल।
बज्रंधर चंद्रानन, हूँ वंदू त्रिकाल ॥ विह० ॥

४— चंद्रबाहुजी स्वामी तेरमां, चवदमां श्री भुजंग।
ईश्वर नेमिप्रभ नमूं, राता धर्म-सुरंग ॥ विह० ॥

५ – वीरसेण प्रभुजी सत्तरमां, महाभद्रजी जाण।
देवयशा उगणीसमां, अजित वीरजी बखाण ॥ विह० ॥

६— जयवंता है जिनवरू, महाविदेह क्षेत्र मझार।
रिख 'जयमलजी' इम बीनवे उतारो भव-पार ॥ विह० ॥

---

(६)

❀ श्री सीमंधरजी का स्तवन ❀

१— पुरी 'पुखलावती' विजय कही,
पुंडरिकणी नामे नगरी लही।
जिहां जिनजी उतपति पामी
सुमरो श्री 'सीमंधर' स्वामी ॥

२— श्रेयांस पिता रुखमणी माया
तिण चउदे सुपना मोटा पाया।
जिण जनम्यो पुत्र मुगती गामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी ॥

३— घर त्यागी ने वैराग्य लियो
इन्द्रां दीक्षा महोत्सव कियो।
गया ठिकाणे सिरनामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी ॥

४— देही पांचसे धनुप तणी
हेमवरण उपमा घणी।
सहस आठ लक्षण नामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी ॥

५— हुवो हुवे हुसी रे सही
जिणजी सूं छानी बातां नही।
सर्वज्ञ हुवा केवल पामी
सुमरो श्री सीमन्धर स्वामी ॥

६— जस महिमां थांरी अतही घणी
केतली कहूं त्रिभुवन धणी।

नाथ हुवा मोटा नामी
सुमरो श्री सीमन्धर स्वामी ॥

७— एक-मना हुई सुद्ध भजे
कारने कलिया दूर तजे ।
हुवे मोक्ष तणा झट कामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी ॥

८— राच रह्या मिथ्यामत मांही,
ए रुले जीव चारूं गति मांही ।
भूला ने आणे ठामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी ॥

९— मोक्ष तणा जो सुख चाहो
तो तपस्या करी ल्योनी लाहो ।
पांचूई इन्द्रिय दामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी ॥

१०—ए मानव भव दुरलभ लाधो
तुम दयाधर्म सुध आराधो ।
मुगती आवे ज्यूं तुम सामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी ॥

११—तुम नामे दुःख दोहग टले
तुम नामे मुगती सुख मिले ।
टल जाय नरक तणी घामी
सुमरो श्री सीमधर स्वामी ॥

१२—कदाच संसार मांही रहे
तो उत्तम कुल मे जनम लहै ।
ऋद्ध वृद्ध बहु धन धामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी ॥

१३—चौरासी लाख पूरब आयू,
वृषभ लंछण पड्यो देह साहू ।
मोटा प्रभु अन्तरजामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी ॥

१४—चौतीस अतिसय पेंतिस वाणी,
चऊं दिश मे मुख ही से जाणी।
ऊंची अति पदवी प्रभुजी पामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी॥

१५—जिनजी रा वचन हिया में धरो
सुद्ध मारग है सरल खरो।
मिथ्या मत ने द्यो वामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी॥

१६—जघन्य साधु हुवे सो कोड़ी
दश लाख जघन्य केवलि जोडी।
झाली मोटानी झामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी॥

१७—हिंसा धर्म करी हुवो गहलो,
अजूं वहै धुरदिन पहलो।
दो हिव दुक्कड़ मिच्छामि
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी॥

१८—आड़ा नदियां पहाड़ घणा
जाणूं वचन सुणूं जिनराज तणा।
छै थांरी छतर छाया हामी
सुमरो श्री सीमन्धर स्वामी॥

१९—महाविदेह क्षेत्र सारो
रहै सदा जिहां चौथो आरो।
जिहां घणा जीव शिवगामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी॥

२०—रिख "जयमलजी" विनती एम कहे
कोई थांरी सरधा मांही रहै।
भव भवनी टल जाय खामी
सुमरो श्री सीमंधर स्वामी॥

———

(७)

ॐ बडी साधु-वंदना ॐ

१— नमूं अनंत चोवीसी, ऋषभादिक महावीर।
आरज क्षेत्र मां घाली, धर्म नी शीर॥

२— महा अतुल बली नर, शूर वीर ने धीर।
तीरथ प्रवर्तावी, पहुँचा भव जल तीर॥

३— सीमंधर प्रमुख, जघन्य तीर्थंकर वीस।
छे अढी द्वीप मां, जयवंता जगदीश॥

४— एक सौ ने सत्तर, उत्कृष्ट पदे जगीश।
धन्य म्होटा प्रभुजी, तेहने नमाऊं शीश॥

५— केवल दोय कोड़ी, उत्कृष्टा नव कोड़।
मुनि दोय सहस कोड़ी, उत्कृष्टा नव सहस कोड़॥

६— विचरे विदेहे, म्होटा तपसी घोर।
भावे करी वंदू, टाले भव नी खोड़॥

७— चोवीसे जिन नां, सगला ही गणधार।
चौदेसे ने बावन, ते प्रणमूं सुखकार॥

८— जिन शासन नायक, धन्य श्री वीर जिनंद।
गौतमादिक गणधर, वर्ताओ आनंद॥

९— श्री ऋषभ देवना, भरतादिक सौ पूत।
वैराग्य मन आणी, संयम लियो अद्भूत॥

१०—केवल उपजाव्यूं कर करणी करतूत।
जिनमत दीपावी, सगला मोक्ष पहूंत॥

११—श्री भरतेश्वर ना, हुआ पटोधर आठ।
आदित्य जसादिक, पहुँत्या शिवपुर वाट॥

१२—श्री जिन अंतर ना, हुआ पाट असंख।
मुनि मुक्ति पहुँत्या, टालि कर्म नो वंक॥

१३—धन्य 'कपिल' मुनिवर, नमि नमूं अणगार।

१४--मुनिवल हरि केशी,' 'चित्त' मुनीश्वर सार।
शुद्ध संयम पाली, पाम्या भव नो पार॥
१५—'वलि' 'इखुकार' राजा, घर 'कमलावती' नार।
'भग्गू' ने 'जसा' तेहना दोय 'कुमार'॥
१६—छयें छती ऋध छांडी, लीधो संजम भार।
इण अल्प काल मां, पाम्या मोक्ष दुवार॥
१७—'वलि संयति' राजा, हिरण-आहिड़े जाय।
मुनिवर 'गर्दभाली' आण्यो मारग ठाय॥
१८—चारित्र लेई ने, भेटया गुरु ना पाय।
'क्षत्री' राज ऋषीश्वर, चर्चा करीं चितलाय॥
१९—वलि दशे चक्रवर्ती, राज्य रमणी शुद्धि छोड।
दशे मुक्ति पहुंत्या, कुल ने शोभा चहोड़॥
२०—इण अवसर्पिणी मां, आठ 'राम' गया मोक्ष।
'बलभद्र' मुनीश्वर, गया पंचमे देवलोक॥
२१—'दशार्णभद्र' राजा, वीर वांद्या धरि मान।
पछि इन्द्र हटायो, दियो छकाय अभयदान॥
२२—'करकंडू' प्रमुख, चारे प्रत्येक बुद्ध।
मुनि मुक्ति पहुंत्या, जीत्या महाजुद्ध॥
२३—धन्य म्होटा मुनिवर, 'मृगापुत्र' जगीश।
मुनिवर 'अनाथी' जीत्या राग ने रीश॥
२४—वलि 'समुद्रपाल' मुनि, 'राजमती' 'रहनेम,।
'केशी' ने 'गौतम' पाम्या शिवपुर क्षेम॥
२५—धन्य 'विजयघोष' मुनि, 'जयघोष' वलि जाण।
श्री 'गर्गाचार्य' पहुँत्या छे निर्वाण॥
२६--श्री उत्तराध्ययन माँ, जिनवर कर्या बखान।
शुद्ध मन से ध्यावो, मन मे धीरज आण॥
२७—वलि 'खंदक' संन्यासी, राख्यो गौतम-स्नेह।
महावीर समीपे, पंच महाव्रत लेह॥
२८--तप कठिण करीने, झौसी आपणी देह।
गया अच्युत देव लोके, चवि लेसी भव-छेह॥

२९—वलि 'ऋपभदत्त' मुनि, सेठ 'सुदर्शन' सार ।
'शिवराज' ऋपीश्वर, धन्य 'गांगेय' अणगार ॥

३०—शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार ।
ये चार मुनिवर पहुँत्या मोक्ष मंझार ॥

३१—भगवंत नी माता, धन्य धन्य सती 'देवा नंदा' ।
वली सती 'जयंती', छोड दिया घर फंदा ॥

३२—सती मुगति पहुँत्या, वलि ते वीर नी नंद ।
महासती 'सुदर्शना' घणी सतियों ना वृंद ॥

३३—वलि 'कार्तिक' सेठे पड़िमा वही शूर वीर ।
जीम्यो मोरां ऊपर तापस वलती खीर ॥

३४—पछी चारित्र लीधूं, मित्र एक सहस आठ धीर ।
मरी हुओ शक्रेन्द्र, च्यवि लेसे भवतीर ॥

३५—वलि राय 'उदायन', दियो भाणजा ने राज ।
पछी चारित्र लेईने सार्या आतम काज ॥

३६—'गंगदत्त' मुनि 'आनंद', तारण तरण जहाज ।
मुनि 'कौशल' 'रोहो' दियो घणा ने साज ॥

३७—धन्य 'सुनक्षत्र' मुनिवर, सर्वानुभूति अणगार ।
आराधक हुई ने, गया देव लोक मझार ॥

३८—चवि मुगते जासी, वलि 'सिंह' मुनीश्वर सार ।
बीजा पण मुनिवर, भगवती मां अधिकार ॥

३९—'श्रेणिक' नो बेटो, म्होटो मुनिवर 'मेघ' ।
तजी आठ अंतेउर, आण्यो मन संवेग ॥

४०—वीर पै व्रत लेई ने, बांधी तप नी तेग ।
गयो विजय विमाने, चवि लेसे शिव वेग ॥

४१—धन्य 'थावच्चा पुत्र', तजी बत्तीसो नार ।
तेनी साथे निकल्या, पुरुप एक हजार ॥

४२—शुकदेव संन्यासी, एक सहस्र शिष्य लार ।
पांचसो से 'शेलक' लीधो संजम भार ॥

४३—सब सहस्र अढ़ाई, घणा जीवों ने तार ।
पुंडरिक गिरि ऊपर, कियो पादोपगमन संथार ॥

४४—आराधक हुई ने, कीधो खेवो पार ।
हुआ मोटा मुनिवर, नाम लियां निस्तार ॥

४५—धन्य 'जिन पाल' मुनिवर, दोय 'धन्ना' हुआ साध ।
गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जासे आराध ॥

४६—श्री 'मल्लीनाथ'जी ना छह मित्र, 'महाबल' प्रमुख मुनिराय ।
सर्वे मुक्ति सिधाव्या, म्होटी पदवी पाय ॥

४७—वलि 'जितशत्रु' राजा, 'सुबुद्धि नामे' प्रधान ।
पोते चारित्र लई ने, पाम्या मोक्ष निधान ॥

४८—धन्य 'तेतली' मुनिवर, दियो छकाय अभयदान ।
'पोटिला' प्रतिबोध्या, पाम्या केवल ज्ञान ॥

४९—धन्य पांचे 'पांडव', तजी 'द्रौपदी' नार ।
थेवर नी पासे, लीधो संयम भार ॥

५०—श्री नेम वंदन नो, एहवो अभिग्रह कीध ।
मास मास खमण तप, शत्रुंजय जई सिद्ध ॥

५१—'धर्मघोष' तणा शिष्य, 'धर्मरुचि' अणगार ।
कीड़ियो नी करूणा, आणी दया अपार ॥

५२—कड़वा तूंबा नो, कीधो सगलो आहार ।
सर्वार्थ सिद्ध पहुंत्या, चविलेसे भव पार ॥

५३—वलि 'पुंडरिक' राजा, कुंडरिक' डिगियो जाण ।
पोते चारित्र लेई ने, न घाली धर्म मां हाण ॥

५४—सर्वार्थ सिध पहुंत्या, चविलेसे निर्वाण ।
श्री ज्ञाता सूत्र मां, जिनवर कर्या बखाण ॥

५५—'गौतमादिक' कुंवर, सगा अठारे भ्रात ।
सब 'अंधक वन्हि' सुत, धारणी ज्यांरी मात ॥

५६—तजी आठ अंतेउर, काढी दीक्षा नी वात ।
चारित्र लई ने, कीधो मुक्ति नो साथ ॥

५७—श्री 'अनीकसेनादिक', छये सहोदर भाय ।
वसुदेव ना नंदन देवकी ज्यांरी मांय ॥

५८—भद्दिलपुर नगरी, नाग गाथावई जाण।
सुलसा घर वधिया, सांभली नेमिनी वाण॥

५६—तजी बत्तीस बत्तीस अंतेउर, नीकल्या छिटकाय।
नलकूबर समाना, भेट्या श्री नेमिना पाय॥

६०—करि छठ छठ पारणा, मन में वैराग्य लाय।
एक मास संथारे, मुक्ति विराज्या जाय॥

६१—वलि 'दारुक' 'मारण', 'सुमुख' 'दुमुख' मुनिराय।
वलि कुंवर 'अनाधृष्ट', गया मुक्ति गढ़ मांय॥

६२—वसुदेव ना नंदन, धन्य धन्य 'गजसुकुमाल'।
रूपे अति सुन्दर, कलावंत वय वाल॥

६३—श्री नेमि समीपे, छोड्यो मोह जंजाल।
भिक्षुनी पड़िमा, गया मसाण महाकाल॥

६४—देखी 'सोमल' कोप्यो, मस्तक बांधी पाल।
खेरा ना खीरा, शिर धरिया असराल॥

६५—मुनि नजर न खंडी, मेटी मन नी झाल।
परीषह सही ने, मुक्ति गया तत्काल॥

६६—धन्य 'जाली' मयाली', 'उवयाली' आदिक साध।
'सांब' ने 'प्रद्युम्न', 'अनिरुध' साधु अगाध॥

६७—वलि 'सत्यनेमि' 'दृढनेमि', करणी कीधी निर्बाध।
दशे मुक्ति पहुँत्या, जिनवर वचन आराध॥

६८—धन्य 'अर्जुनमाली', कियो कदाग्रह दूर।
वीर पे व्रत लई ने, सत्यवादी हुआ सूर॥

६९—करी छठ छठ पारणा, क्षमा करी भरपूर।
छह मासां मांही, कर्म किया चकचूर॥

७०—कुंवर 'अइमुत्ते', दीठा गौतम स्वाम।
सुणि वीरनी वाणी, कीधो उत्तम काम॥

७१—चारित्र लेईने, पहुंत्या शिवपुर ठाम।
धुर आदि 'मकाई', अंत 'अलक्ष' मुनि नाम॥

७२—वलि 'कृष्ण' रायनी, 'अग्र महीपी' आठ ।
'पुत्र वहू' दोय, संच्या पुण्य ना ठाठ ॥

७३—जादव कुल सतियां, टाल्यो दुख उचाट ।
पहुँती शिवपुर मां, ऐ छे सूत्र नो पाठ ॥

७४—श्रेणिक नी राणी, 'काली' आदिक दश जाण ।
दशे पुत्र वियोगे, सांभली वीर नी वाण ॥

७५—'चंदनबाला' पे, संयम लेई हुई जाण ।
तप करी देह झोसी, पहुंती छे निर्वाण ॥

७६—'नंदादिक' तेरह, श्रेणिक नृप नी नार ।
सगली चंदनबाला पे लीधो संयम भार ॥

७७—एक मास संथारे, पहुंती मुक्ति मंझार ।
ए नेऊं जणा नो, अंतगड मां अधिकार ॥

७८—श्रेणिक ना बेटा, 'जाली' आदिक तेवीस ।
वीर पे व्रत लेई ने, पाल्यो विसवावीस ॥

७९—तप कठिन करीने, पूरी मन जगीश ।
देवलोके पहुंत्या, मोक्ष जासे तजी रीश ॥

८०—काकंदी नो 'धन्नो', तजी बतीसो नार ।
महावीर समीपे, लीधो संयम भार ॥

८१—करी छठ छठ पारणा, आयंबिल उज्झित आहार ।
श्री वीर बखाण्यो, धन्न धन्नो अणगार ॥

८२—एक मास संथारे, सर्वार्थ सिद्ध पहुंत ।
महाविदेह क्षेत्र मां, करसे भवनो अंत ॥

८३—धन्ना नी रीते, हुआ नवे संत ।
श्री 'अणुत्तरोववाई' मां, भाखि गया भगवंत ॥

८४—'सुबाहु' प्रमुख, पांच पांच सौ नार ।
तजी वीर पे लीधा, पांच महाव्रत सार ॥

८५—चारित्र लेईने, पाल्या निरतिचार ।
देवलोके पहुँत्या, सुखविपाके अधिकार ॥

८६—श्रेणिक ना पोता, 'पौमादिक' हुआ दश ।
वीर पे व्रत लेई ने, काढ्यो देहनो कस ॥

८७—संयम आराधी, देवलोक मां जई वस ।
महाविदेह क्षेत्र मां, मोक्ष जासे लई जस ॥

८८—बलभद्र ना नंदन, 'निषधादिक' हुआ बार ।
तजी पचास अंतउरी, त्याग दियो संसार ॥

८९—सहु नेमि समीपे, चार महाव्रत लीध ।
सर्वार्थसिद्ध पहुँत्या, होसे विदेह सिद्ध ॥

९०—'धन्नो' ने 'शालिभद्र', मुनीश्वरो नी जोड़ ।
नारी ना बंधन, तत्क्षण नाख्या तोड़ ॥

९१—घर कुटुम्ब कबीलो, धन कंचन नी कोड़ ।
मास मास खमण तप, टाल से भवनी खोड़ ॥

९२—श्री 'सुधर्म' स्वामी ना शिष्य, धन्य धन्य 'जंबू' स्वाम ।
तजी आठ अंतउरी, मात पिता धन धाम ॥

९३—'प्रभवादिक' तारी, पहुँत्या शिवपुर ठाम ।
सूत्र प्रवर्तावी, जग मां राख्यूं नाम ॥

९४—धन्य 'ढंढण' मुनिवर, कृष्ण राय ना नंद ।
शुद्ध अभिग्रह पाली, टाल दियो भव-फंद ॥

९५—वलि 'खंदक' ऋषिनी, देह उतारी खाल ।
परीषह सहीने, भव फेरा दिया टाल ॥

९६—वलि 'खंदक' ऋषिना, हुआ पांच सौ शीस ।
घाणी मां पील्या, मुक्ति गया तज रीष ॥

९७—'संभूतिविजय' शिष्य, 'भद्रबाहु' मुनिराय ।
चौदहपूर्व धारी, 'चन्द्रगुप्त' आण्यो ठाय ॥

९८—वलि 'आर्द्रकुंवर' मुनि, 'स्थूलभद्र' 'नंदिषेण' ।
'अरणक' 'अइमुत्तो', मुनीश्वरो नी श्रेण ॥

९९—चौवीसे जिन ना, मुनिवर संख्या अठावीस लाख ।
ऊपर सहस अड़तालीस, सूत्र परंपरा भाख ॥

१००-कोई उत्तम वांचो, मोढे जयणा राख ।
उघाड़े मुख बोल्यां, पाप लगे इम भाख ॥

१०१-धन्य 'मरुदेवी' माता, ध्यायो निर्मल ध्यान ।
गज होदे पायो, निर्मल केवलज्ञान ॥

१०२-धन्य आदीश्वरनी पुत्री, 'ब्राह्मी' 'सुन्दरी' दोय ।
चारित्र लेईने, मुक्ति गई सिद्ध होय ॥

१०३-चौवीसे जिननी, बडी शिष्यणी चौवीस ।
सती मुगते पहुँत्या, पूरी मन जगीस ॥

१०४-चौवीसे जिनना, सर्व साधवी सार ।
अड़तालीस लाख ने आठ से सत्तर हजार ॥

१०५-चेड़ानी पुत्री, राखी धर्म नी प्रीत ।
'राजिमती' 'विजया,' 'मृगावती' सुविनीत ॥

१०६-'पद्मावती' मयण रेहा,' 'द्रोपदी' 'दमयंती' 'सीत' ।
इत्यादिक सतियां, गई जमारो जीत ॥

१०७-चौवीसे जिनना, साधु साधवी सार ।
गया मोक्ष देवलोके हृदय राखो धार ॥

१०८-इण अढी द्वीप मां, घरड़ा तपसी बाल ।
शुद्ध पंच महाव्रत पाली, नमो नमो त्रिकाल ॥

१०९-इण यतियों सतियो ना, लीजे नित प्रति नाम ।
शुद्ध मनथी ध्यावो, एह तिरण नो ठाम ॥

११०-इण यतियो सतियो सूं, राखो उज्वल भाव ।
इम कहे ऋषि 'जयमल' एह तिरण नो दाव ॥

१११-संवत अठारे ने वर्ष साते सिरदार ।
शहर 'जालोर' मांहि, एह कह्यो अधिकार ॥

———

卐 चार मंगल 卐

प्रथम-मंगलम्

[अरिहन्ता-मंगलम्]

दोहा—

१— अरिहंत सिद्ध साधु नमुं, सकल जीव सुख-कार ।
भव्य जीव उपकार हित. भणसूं मंगल चार ॥
२— प्रथम मंगल अरिहंत नो, दूजो सिद्ध मंगलीक ।
तीजो मंगल साधु नो, चोथो दया-धर्म ठीक ॥

ढाल

[१]

१— मंगल पहिलो अरिहंत नो ए, भावसूं भणो नरनार तो ।
विघन दूरे टले ए, पामिए भव-जल पार तो ॥
अरिहंत मोटको ए ॥
[मंगल मोटको ए]
२— सद्गति नो दातार तो—
विघन-निवारणो ए, तीन भुवन में सार तो ॥
चौतीस अतिशय सूं परवर्या ए—

३४ अतिशय

३— 'वधे न नख रोम असोभताए' 'लेप न लागे डीले' जास तो ।
'लोही ने मांस ऊजलाए' 'सुगंध ज्यांरा श्वास उच्छ्वास' तो ॥
४— "आहार नीहार करतां थकांए, नग्न पणा तणी सोय तो ।
चर्म चक्षु नो धणी ए, नजरे देख न सके कोय तो" ॥
५— 'चक्र' 'छत्र' 'चामर ढुरे' ए, 'स्फटिक सिंहासन सज्ज' तो ।
"आगे पताका चले ए सहस, सुं अधिक है धज्ज" तो ॥

६— 'अशोक वृक्ष छाया करे ए' जिहां जिहां रहे जिन राज तो।
पुष्प-फल पत्रे सहीए, घट पताका सर्व साज तो॥
७— मुख दीसे छे चारों दिसाए, लागी है जग-मग जोत तो।
भामंडल' दीपतो ए, जाणे के सूरज उद्योत तो॥
८— बारह गुणकर दीपता ए, मोटा प्रतिहारज आठ तो।
'कांटा ऊंधा पड़े ए' चालतां सब होवे वाट तो॥
६— 'छहु ऋतु हुवे साता कारणीए, जोजन मांडल ने मांय तो।
'शीतल बायरे करीए, कचरो कांकर दूर कराय तो'॥
१०—'भीणे मेह फुंवांरा करे ए, रज रेणु देवे दाट तो'।
'जोजन प्रमाणे मांडले ए, पुष्प-ढिग लगे गह घाट तो'॥
११—'छांडवा शब्दादिक उपशमे ए', भला जिहां प्रगट थाय तो।
परिषदा बेशे जिहांए, अशोक वृक्ष सुख-दाय तो॥
१२—'वाणी है जोजन-गामिनी ए,' घृत वलि दूधनी वात तो।
पीयां तृपती हुवे ए, त्यूं-भविक सुण मगन हुय जात तो॥
१३—'भाषा बडी अर्द्धमागधी ए', अक्षर मेल दे संध तो।
संशय कोई ना रहे ए, बोलतॉ उठे प्रच्छंद तो॥
१४—आरज अनारज दुपद चोपदा ए, मृग पशु पक्षिने साप तो।
सकल ने हित्त करे ए, सुणियां सुं टल जाये पाप तो॥
१५—सुर वैमानिक ज्योतिषी ए, भवनपति व्यंतर जोध तो।
'पूर्व वैर जागे नही ए', टल जाय विग्रह विरोध तो॥
१६ -सिंह ने बकरी भेला रहे ए, न उपजे वैर ने वाढ तो।
पर वादी आवी नमे ए, गले अहंकार्यां रा गाढ तो॥
१७—तीन से तेसठ पाखंडी ए, आय नमे प्रभुजीना पाय तो।
कदाच जो करड़ो हुवे ए तो खिष्ट हुय घर जाय तो॥
१८—'तीड फाको उदर कातरो ए, मार मिरगी नहीं थाय तो।
सो सो ही कोस मे ए, जिहॉ जिहॉ विचरे जिनराय तो॥
१६ -'स्वचक्र' ने 'पर-चक्र' नो ए. देश भणी भय नांहि तो।
'वर्षा ऊणी' 'अधिकी' नहीं ए सो सो ही कोस ने मांहि तो॥
२०—'दुर्भिक्ष' दुकाल पड़े नही ए, जिहां जिहां रहे जिनराय तो।
'नवा रोग न ऊपजे' ए, आगला जूना रोग जाय तो॥

३५ वाणी

२१—पेंतीस गुण वाणी तणा ए, उच्च स्वर करे है वखाण तो ।
भ्रम विना भाषा कही ए, सरस मधुर मीठ वाण तो ॥

२२—राग रहित भाषा ऊचरे ए, भवियण ने हितकार तो ।
चमत्कार चित ऊपजे ए, गंभीर स्वर अतिसार तो ॥

२३—दोष कोई काढी ना सके ए, अमिलतो न कहे विरुद्ध तो ।
यथा योग्य मिलतो कहे ए, वचन अपेक्षाए शुद्ध तो ॥

२४—व्याख्यान नहीं सुस्त उतावलो ए, मधु सताव कहंत तो ।
मर्म मोसो ना कहे ए, लज्जा ए शरम रहंत तो ॥

२५—बाल ने वृद्ध समझे सहु ए, मीठी है अमृत वाण तो ।
भविक चेते घणा ए, हुवे ते भव तणा जाण तो ॥

२६—इत्यादिक वाणी तणा ए, पेंतीस नो प्रमाण तो ।
पूरव पुण्य प्रभावथी ए, उदय हुई छे इह आण तो ॥

तीन गढ

२७—देवता आय तिगढो रचे ए, अरिहंत-महिमा ने काज तो ।
बाजे देव दुंदुभि ए, समवसरण तणो साज तो ॥

२८—पहलो प्राकार रूपा तणो ए, सोवन कोशीशा सुरंग तो ।
चारों पोलां भली ए, तोरण मणि मांहि चंग तो ॥

२९—पावड्या गढ पहला तणा ए, दश हजार प्रमाण तो ।
सोवन में गढ दूसरो ए, रत्न ना कांगरा जाण तो ॥

३०—रतनां तणो गढ तीसरो ए, मणिमय कोशिशा सार तो ।
पोलां चारों शोभती ए पावड़या पांच पांच हजार तो ॥

३१—साधिक तेतीस धनुषनी ए, भीतियां चौड़ी है जोय तो ।
तेरस धनुष तणो ए, गढ़ गढ़ आंतरो होय तो ॥

३२—पहला ने रे ऊंचा पणे ए, हाथ हाथ प्रमाण तो ।
पचास धनुष लांबा कह्या ए, पावड़िया रत्न मय जाण तो ॥

३३—गढ़ मां भींत ऊंची कही ए, पचिस य धनुस प्रमाण तो ।
सरवाले कोश अढी तणो ए, ऊंचो दीपे जिम भाण तो ॥

३४—श्रावक ने श्राविका भला ए, तीजा विमानिक देव तो ।
ईशान कोण बेसने ए सारे सारे प्रभुजी नी सेव तो ॥
३५—वले ये वैमानिक देवता ए, साधुने साधवी सार तो ।
अग्नि कोण बेसने ए, निरखंत प्रभुनो दीदार तो ॥
३६—भवनपति व्यंतर ज्योतिषी ए, देवांगना तीनो ही तास तो ।
नैरूत्य कोण बेसने ए, सुणत है वाणी उल्लास तो ॥
३७—एही देव तीनां तणी ए, देवियां तीनों ही जाण तो ।
वायव्य कोण बेसने ए, सुणे सुणे प्रभुनो वखाण तो ॥
३८—चारों ही जातना देवता ए, चारों ही देवियां जाण तो ।
चतुर्विध संघ कह्या ए, बारह प्रसदा तणो मान तो ॥
३९—त्रि-गढ़े बैठा जिन उपदिशे ए, भवियण ने हितकार तो ।
भविक जन सांभले ए, हृदय धरे नव तत्व सार तो ॥
४०—मुख दीसे रे चारो दिशा ए, न होवे केहने पूठ तो ।
कोई काम-भर्यो मानवी ए, वाणी छोडी न सके ऊठ तो ॥
४१—दर्शन दीठां जिनंदनो ए, टल जाये भव तणी खोड़ तो ।
देवता पासे रहे ए, थोड़ा तो ही एक कोड़ तो ॥
४२—स्फटिक सिंहासन बेसने ए, जिनवर दे उपदेश तो ।
भविक चेते घणा ए, छांडिने सकल कलेस तो ॥
४३—जिन तणो नाम लियां थकां ए, कट जाय पाप अद्‌भूत तो ।
ज्यांरो मेल उतारसी ए, किण मायड़ी जायो पूत तो ॥
४४—गुण अरिहंत ना अति घणा ए, किम कहूँ जीभड़ी एक तो ।
पूरा कही ना सके ए, मिलें जीभ अनेक तो ॥
४५—अनन्त-बली अरिहंतजी ए, समता-रस भरपूर तो ।
ए भाव आयां थकां ए, दारिद्र होय जावे दूर तो ॥
४६—देव इसड़ो दूजो नहीं ए, इण स्वर्ग मृत्यु पाताल तो ।
जिको सूधे मन ध्यावसी ए, ज्यांरे बरते सदा मंगल माल तो ॥
४७—एक सो ने सित्तर जिनवरू ए, उत्कृष्टे पदे थाय तो ।
बीस जघन्य हुवे ए, इण अढीद्वीप ने मांय तो ॥
४८—अनन्त चौवीसी इसड़ी हुवे ए, सुरनर सारत सेव तो ।
जस महिमा घणी ए, मोटा हैं देवाधिदेव तो ॥

४६—अनन्त चौबीसी इसड़ी हुई ए, होवे होसी आगे ही अनंत तो ।
मुक्ति सिधावसी ए, कर्म तणो कर अंत तो ॥
५०—चार कर्म बाकी रह्या ए, गलीय जेवड़ी जेम तो ।
पण मुक्त सिधावसी ए, ऋषि 'जयमलजी' कहे एम तो ॥

---

* द्वितीयं-मंगलम् *

[सिद्धा-मंगलम्]

दोहा—

१— दूजो मंगल मन शुद्धे, समरूं सिद्ध भगवंत ।
आठो कर्म खपाय के, कीधो भवनो अंत ॥
२— अनंत सिद्ध आगे हुवा, ढालि कर्म नो छोत ।
अनंत आगे होवसी, मिलसी ज्योति मे ज्योत ॥

ढाल

[२]

[राग—आदर जीव क्षमा-गुण आदर]

१— बीजो मंगल शुद्ध मन ध्याइये, मुक्ति तणा दातारजी ।
जे भव्य जीव हृदय मे धरसी, ज्यांरो खेवो पारजी ॥
बीजो मंगल सिद्ध नमो नित ॥
२— चौदह राज तणे छे ऊपर, सिद्ध शिला तिहां ठामजी ।
गुण-निष्पन्न ए ज्यारां ज्ञानी, भाख्या सूत्र मे बारह नामजी ॥
३ — लाख पेतालिस जोजन पुहुली. विच दल जोजन आठजी ।
माखी री पांख सुं छेहड़े पतली, समा छत्र रे घाटजी ॥
४—सर्वार्थ सिद्ध से बारह जोजन, शिला ऊंची जाणजी ।
ऊपर गाऊ ने छट्ठे भागे, सिद्ध तणी अवगाहणजी ॥
५— सदाकाल शाश्वतो थानक, शिला ऊजली जाणजी ।
अर्जुन सोवन मे घणी, दीपती जिनवर किया बखाणजी ॥

६— मनुष्य तणे भाव वरणी करने, आठों कर्म खपायजी ।
अनंत सिद्ध तो मुक्ति पहोंता, अनंत जासी बहु जायजी ॥

७— तीर्थ अतीर्थादिक बहु सिद्धा, तेहना पन्द्रह भेदजी ।
अनन्त सुखों मे विराज्या, जनम मरण नहि खेदजी ॥

८— दग्ध बीज जिम धरती ब्हायां, नहि मेले अंकूरजी ।
तिम हीज सिद्धजी, जन्म मरण री करदी उत्पत्ति दूरजी ॥

९— आठ गुणां कर सिद्ध विराज्या, अथवा गुण इकतीसजी ।
अतुल सुखो में विराज्या, जीत्या राग ने रीसजी ॥

१०—अठारा जातरा भोजन जीम्यां, मानव तृपतो थायजी ।
तिमहीज सिद्ध सदा रहे तृपता, ऊणारत नहीं कांयजी ॥

११—तीनों ही काल ना देव तणा सुख, अधिक घणा अथागजी ।
एकण सिद्ध तणा रे सुख ने, नावे अनंत में भागजी ॥

१२—जिम कोई भील वस्तु–गुण, भाखे न्याती लां खबर नकांयजी ।
तिम सिद्धों ना सुख नी उपमा, नहीं तीन लोक रे मांयजी ॥

१३—जघन मधम ने उत्कृष्टी, मनुष्य तणी अवगाहणाजी ।
तिण थी सिद्ध तणी अवगाहणा, तीजे भागे जाणजी ॥

१४—ज्योति स्वरूपी ज्योति विराजे, निरंजन निराकारजी ।
एसी वस्तु नही कोई दूजी, तीन लोक मे सारजी ॥

१५—जन्म मरण ने रोग शोक नही, नहीं गुण ठाणो जोगजी ।
केवल ज्ञान ने केवल दर्शन, केवल दोय उपयोगजी ॥

१६—बीजो मंगल सिद्धों ने सहुँ, वांदो बारंबारजी ।
एसी स्तुति कहे ऋषि 'जयमलजी', जो चाहो सुख सारजी ॥



* तृतीयं-मंगलम् *

[साहू-मंगलम्]

दोहा—

१— तीजो मंगल साधु नो, साधे आतम काज ।
शुद्ध सम्यक्त्व श्रद्धहे, धन धन ते मुनिराज ॥
२— अथिर जगत ने जाण ने, छोड्यो कुटुम्ब ने वित्त ।
उत्तम मंगल साधुनो, ते सुणजो इक चित्त ॥

ढाल

[३]

[रागः—वीर वखाणी राणी चेलणा]

१— पांच महाव्रत पालवेजी, पाले है पंचाचार ।
पांच समिते समिता रहे जी तीनों ही गुप्ति दयाल ॥
२— मुनि तणो मंगल तीसरोजी, भाव सूं वांदो नरनार ।
मन संवेग आणनेजी, छोडी ने अथिर संसार ॥
३— मोह माया सहु परिहरेजी, विचरे है आरज खेत ।
दया-मारग दीपावताजी, सकल जीवों पर हेत ॥ मुनि० ॥
४— पीहर छे छकायना जी, रखे जीव आतम जेम ।
बुरो न वांछे ते केहनोजी, चाहे छे कुशल क्षेम ॥ मुनि० ॥
५— सगपण सहु य संसार ना जी, काम भोग ने संयोग ।
सहु छिटकाय ने नीसर्याजी, जाणी ने मोटको रोग ॥ मुनि० ॥
६— काम ने भोग संसारनाजी, जाण्या छे जहर समान ।
फल किंपाक नी ऊपमाजी, त्यागी ने दियो अभय दान ॥ मुनि० ॥
७— वाणी सुण भगवंतनी जी, आव्यो वैराग्य मन जोर ।
नारी नो नेह सांकल जिसोजी, तटके से नाख्यो तोड़ ॥ मुनि० ॥
८— धन माल मंदिर मालियाजी, निबिड़ सज्जन तणो नेह ।
छत्ती ऋद्धि छिटकायनेजी, खंखर कीधी देह ॥ मुनि० ॥
९— बाबू तणा भय टालनेजी, ऐसा है, माई तणा पूत ।
ज्ञान आचार मे ऊजलाजी दीसता काकड़ा-भूत ॥ मुनि० ॥

१०—परीषह उपसर्ग ऊपन्यांजी, नाणे मन उद्वेग ।
कर्म कठिन दल भांजवाजी, बांधी छे तप तणी तेग ॥ मुनि० ॥

११—*बारह कुल तणी गोचरीजी, *इकबीस जाति नो पाण ।
तके नहीं आटा ने टीमलाती, चतुर अवसर तणा जाण ॥ मुनि० ॥

१२—गोचरी गउ तणी परेजी, दोष बयालीस टाल ।
पांच टाले मांडला तणाजी, षट् काया रा प्रतिपाल ॥ मुनि० ॥

१३—जिन मार्ग मे अनुरताजी, अरस ने विरस आहार ।
तक तक घर जावे नहींजी, तप कियो न करे जहार ॥ मुनि० ॥

१४—चउत्थ छट्ठादिक तप करेजी, मास अने रे छम्मास ।
यश कीर्ति अर्थे नहीजी, एक मुक्ति तणी आस ॥ मुनि० ॥

१५—आयंबिल ने आतापनाजी, छोड मद मच्छर जाल ।
भावे है बारह भावनाजी, सफल गमावे काल ॥ मुनि० ॥

१६—देह ने जाणे देवालणीजी, काढ़े तप रूपियो माल ।
खरी आज्ञा पाले जिन-राज री जी, मारग मे रहे लाल ॥ मुनि० ॥

१७—केह नो बुरो नहीं चिंतवे जी, जाणे है पर तणी पीर ।
वचन कथन खमे लोकनाजी, समुद्र जिसा गंभीर ॥ मुनि० ॥

१८—बारमी पड़िमा भिक्खू तणीजी, जाय मसाण नी ओट ।
ऊपज्या उपसर्ग सहू सहेजी, खेले है कालसूं चोट ॥ मुनि० ॥

१९—आयंबिलवर्द्धमान तप करेजी, तप तणा बहु भेद ।
कनकावली रतनावलीजी, लागी है मुक्ति उमेद ॥ मुनि० ॥

२०—लब्धि अट्ठावीस उपजेजी, तपस्या तणे परताप ।
ध्यान धरे काउसग्ग करेजी. करे जिनजी तणो जाप ॥ मुनि० ॥

२१—दशविध जति-धर्म आदरेजी, संयम सतरे ही भेद ।
चरण करण विधिसु वहेजी, काढ़े है कर्मो नी खेद ॥ मुनि० ॥

२२—तेतीस टाले 'आशातना' जी, इकबीस 'शबला' जी दोप ।
बीस 'असमाधि' परिहरेजी, सूरत रहे ज्यांरी मोक्ष ॥ मुनि० ॥

२३—करुणा दया तणा सागरूजी, दियो रे छ कायां ने अभयदान ।
लिपे नहीं संसार सूं जी मोटा है ज्वाज्वल्य मान ॥ मुनि० ॥

---

* आचारांग द्वि० श्रु० स्कंध अ० १ उ० २

* आचा० द्वि० श्रु० स्कंध अ० १ उ० ७-८

२४—माहणो माहणो जीवने जी, ऐसो है ज्यांरो उपदेश ।
हेतु युक्ति कर पर तणीजी, घाले है दया नी रेश ॥ मुनि० ॥

२५—सदा ही काल ऊंचो रहेजी, कमल नो फूल जल मांहि ।
तिम साधु ऊंचा रहेजी, लिप्त संसार मे नांहि ॥ मुनि० ॥

२६—[1]नव पाले [2]नव परिहरेजी, [3]नव तणी करत है हाण ।
[4]नव नामां चित्त मे धरेजी, ऐसा है चतुर सुजाण ॥ मुनि० ॥

२७—गुण सत्ताइस दीपताजी, पाले है निरतिचार ।
भवि जीवां रा तारकाजी, कर दियो खेवो पार ॥ मुनि० ॥

२८—चर्चा ने वाद पड्यां थकांजी, नहिं करे आलस जेज ।
पाखंड्यां रा मद गालदेजी, ऐसो ही बरते तप तेज ॥ मुनि० ॥

२९—करे उपकार भव्य जीवनोजी, ज्ञान पिटारो खोल ।
विकथा लवार करे नहीजी, बोले है गिणिया बोल ॥ मुनि० ॥

३०—शिष्य शिष्यणी नो संग्रह करेजी, पूछे सगलां नी सार ।
शिष्य विनीत इसा मिल्याजी, निर्वाहे गच्छ तणो भार ॥ मुनि० ॥

३१—बोल ने चर्चा हिय मे धरेजी, सूत्र अर्थ तणा जाण ।
परिषद मांहे निःशंकसूंजी, विधी सूं करे व्याख्यान ॥ मुनि० ॥

३२—देवे सूत्र तणी वाचनाजी, शंका न राखे कोय ।
पच्चीस गुण ज्यांरा परवर्याजी, चोथे पद उवज्झाय ॥ मुनि० ॥

३३—हुवे हुवे ने वली हुसीजी, द्वीप अढी मांहे साधु ।
गुण सत्ताईस सोभताजी, सफल जन्म जिण लाधु ॥ मुनि० ॥

३४—एक एक मुनिवर एहवाजी, बोले है अमृत वेण ।
राग ने द्वेष केह सूं नहीजी, सकल जीवां रा सेण ॥ मुनि० ॥

३५—साकर टाकर सम गिणेजी, सम गिणे धातु पाषाण ।
तृण त्रिया सरखा गिणेजी, नहीं खुशामद काण ॥ मुनि० ॥

३६—कोयक वंदत आयनेजी कोयक निंदत आय ।
कोयक छेदत कायनेजी, राग रोष न मन मांय ॥ मुनि० ॥

३७—पहले पहर सज्झाय करेजी, बीजे पहर करे ध्यान ।
तीजे पहर करे गोचरीजी, ना करे जीवांनो हान ॥ मुनि० ॥

---

१. नव ब्रह्मचर्य गुप्ति । २. नव नियाणा । ३. नव नो कषायं ।
४. नव तत्व या नव पद ।

३८—एक एक मुनिवर एहवाजी, सूत्र मे कहिये निरत्त ।
संकल्प आथमिया पछेजी, उगियां पछे विरत्त ॥ मुनि० ॥
३९—सगला मुनि नही सारखाजी, गरढा तपसी ने बाल ।
अवसर देखी ने गोचरीजी, ऊठे है कालो काल ॥ मुनि० ॥
४०—चाले नहीं उतावलाजी, निदू पण अन्न पात ।
चालतां बात करे नहींजी, पाले है प्रवचन मात ॥ मुनि० ॥
४१—साधु है जघन्य मज्झमियाजी, कोइक उत्कृष्टा जाण ।
समकित व्रत खंडे नहीजी, पामसी पद निर्वाण ॥ मुनि० ॥
४२—तीजो है मंगल साधुनोजी, विनय करो अनुकूल ।
सात प्रकारे जिन कह्योजी विनय शासन रो मूल ॥ मुनि० ॥
४३—त्रिविध छकायं हणवा तणाजी, सूंस किया नव कोटि ।
तिरिया तिरे तिरसी घणाजी, ज्ञान दया तणी ओट ॥ मुनि० ॥
४४—मुनि तणो मगल मोटकोजी, सुणो भणो धर प्रेम ।
ऋषि जयमलजी इम कहेजी, बरते कुशल ने खेम ॥ मुनि० ॥



* चतुर्थं–मंगलम् *

(केवली-पन्नत्तो धम्मो मंगलम्)

दोहा—

१— चोथो मंगल चित धरो, जो चाहो शिव-शर्म ।
समकित सहित समाचरो, केवली भाषित धर्म ॥
२— केवली धर्म इस्यो कह्यो, आवे भव्य ने दाय ।
त्रिविध त्रिविध धर्म कारणे, माहणो जीव छकाय ॥

ढाल

(४)

(राग—देशी—हिवे आश्चर्य थयो ए)

१— चोथो मंगल धर्म नो ए, धर्म दयामय जाण ।
केवली इम कह्यो ए, न करो छकाय नी हाण ॥

२— धर्म आराधिये ए, धर्म ना चार प्रकार ।
ज्ञानी देवां इम कह्यो ए, दान शियल तप भाव ॥ धर्म० ॥

३— पांच महाव्रत आदरो ए, पालो पंचाचार ।
बारे भेदे तप करो ए, श्रद्धा सेठी धार ॥ धर्म० ॥

४— विरत करो श्रावक तणी ए, आदरो समकित सार ।
नव तत्व चित्त धरो ए, जो उतर्यां चाहो पार ॥ धर्म० ॥

५— अणगार ने आगार नो ए, धर्म तणा दोय भेद ।
शुद्ध करणी करो ए, राखो मुक्ति-उम्मेद ॥ धर्म० ॥

१—अहिंसा (दया)

६— देव गुरु धर्म कारणे ए, मत हणो छह काय ।
बोध छे दोहलो ए, इम कह्यो जिनराय ॥ धर्म० ॥

७— अंग उपांग छेद मे ए, मूल निश्चय व्यवहार ।
कोई जीव हणवो नहीं ए, ज्ञान तणो ए सार ॥ धर्म० ॥

८— सूत्र कुरान पुराण मे ए, कह्यो दया धर्म सार ।
सांचे मन श्रद्धहो ए, ज्यूं पामो भव--पार ॥ धर्म० ॥

९— न हुवो न हुए न होसे वली ए, जैन सरीखो माग ।
भीखो कह्यो केवली ए, ऊंडो घणो अथाग ॥ धर्म० ॥

१०—देवल प्रतिमा कारणे ए, पृथ्वी हणे ते नहिं शुद्ध ।
केवली इम कह्यो ए, विवेक विकल मंद बुद्ध ॥ धर्म० ॥

११—कायरां रा हिया पड़े ए, मार्ग कठिन करूर ।
भाख्यो श्री केवली ए, इम श्रद्धसी कोइक सूर ॥ धर्म० ॥

१२—द्वीप समुद्र पल्य सागरू ए, संख्य असंख्य अनंत ।
पाला पुद्गल तणी ए, श्रद्धा राखो मति मंत ॥ धर्म० ॥

१३—पुण्य योगे नर--भव लह्यो ए, सुणवो लह्यो सुलभ्य ।
केवलियां इम कह्यो ए, श्रद्धा परम दुर्लभ्य ॥ धर्म० ॥

१४—छकाय री रक्षा करो ए, मेटो मन रो भर्म ।
आतम ने ऊधरो ए, धर्म तणो ए मर्म ॥ धर्म० ॥

१५—धर्म धर्म सहू को कहे ए, धर्म नो नाम छे मीठ ।
दया धर्म आदरो ए, कर्म हुवे छीट छीट के ॥ धर्म० ॥

१६—दया थकी दोलत हुवे ए, सीझे सगला काम ।
दशमे अंगे कह्या ए, साठ दया तणा नाम ॥ धर्म० ॥

१७—सेठ सेनापति मंत्रवी ए, वडा वडा भूपाल के ।
दया ज्यांरे दिल बसी ए, छोड्यो मोह जंजाल के ॥ धर्म० ॥

१८—मग्न हुय रया ज्ञान मे ए, समता-रस रह्या झूल के ।
दयारे कारणे ए, मरणो करे कबूल के ॥ धर्म० ॥

१९—'गजसुकुमार' मुनिवरू ए, राख्यो दया सूं नेह के ।
छकाय ने कारणे ए, त्याग दीधी छे देह के ॥ धर्म० ॥

२०—क्षमा-धर्म विचारने ए, टाल्या आतम-दोष के ।
देही पाछे पडी ए, पहली पहुँता मोक्ष के ॥ धर्म० ॥

२१—कटुक तूंबो भक्षण कियो ए, आण्यो दया रस सार के ।
देही त्यागन कियो ए, धर्मरूचि' अणगार के ॥ धर्म० ॥

२२—बडा बडा मुनिवर हुवा ए, एक जठे अनेक के ।
हिंसा नही आदरी ए, राखी धर्म री टेक के ॥ धर्म० ॥

२३—जोर जबर कोई नहिं चले ए, नही चले केह नो द्वेष के ।
जी जी मुख ऊचरे ए, दया तणा फल पेख के ॥ धर्म० ॥

२४—डाकण शाकण भूतडा ए, यक्ष राक्षस महाघोर के ।
दयावन्त ऊनरे ए, केहनो न चाले जोर के ॥ धर्म० ॥

२५—इन्द्र नरेन्द्र ने ज्योतिषी ए, रहे ज्यूं किंकर भूत के ।
सुर नर सेवा करे ए, दया-धर्म ना सूत के ॥ धर्म० ॥

२६—गज भव सुसलो राखियो ए, श्रेणिक घर अवतार के ।
मेघ अभिधान दियो ए, कर दीधो खेवो पार के ॥ धर्म० ॥

२७—नेम कुंवर तोरण चढ्या ए, ओपता असमान के ।
दया ने कारणे ए, पाछी वाली जान के ॥ धर्म० ॥

२—सत्य

२८—सत वचन शुद्ध बोलिये ए, सतसूं टल जाये दोष के ।
साता सुख ऊपजे ए, सत्य सूं पावे मोक्ष के ॥ धर्म० ॥

२९—सतवंतां री वांता फले ए, सत्य सूं रीझे राय के ।
स्वर्ग मे संचरे ए, सत्य मुक्ति ले जाय के ॥ धर्म० ॥

३०—साचा रा सयण हुवे घणा ए, साचा रे न बंधे वैर के ।
छल छिद्र नहीं हुवे ए, साच सूं उतरे जहर के ॥ धर्म० ॥

३१—साहब रीझे साच सूं ए, साच सूं पण्डित रीझ के ।
गोलो ठंडो पड़े ए, साच सूं उतरे धीज के ॥ धर्म० ॥

३२—शिष्य सुगुरु राजी हुवे ए, इण साच तणो परताप के ।
अलगो परिहरो ए, झूठ वचन महा पाप के ॥ धर्म० ॥

३३—तिण कारण इण सत्त सूं ए राखो अधिको रंग के ।
लाभ कह्यो घणो ए, ज्ञानी दश मे अंग के ॥ धर्म० ॥

३४—कर्म कटक दल मोड़वा ए, झाली सत शमशेर के ।
देवी ने देवता ए, सत्य सूं हुय जावे भेर के ॥ धर्म० ॥

३५—'अरणक' ने 'कामदेव' ने ए, देवता दुःख दीधो आय के ।
धर्म छोडन तणो ए, मुख सूं न काढ्यो वाय के ॥ धर्म० ॥

३६—इत्यादिक मानव घणा ए, राखी अपणी लाज के ।
कष्ट सह्या घणा ए, सत्य वचन के काज के ॥ धर्म० ॥

३—अस्तेय

३७—अण दीधो कोई ले तिणो ए, तिण मे बतायो पाप के ।
अदत्त ने परिहरो ए, देवो मुगत री छाप के ॥ धर्म० ॥

३८—'अंबड़'रा शिष्य सातसे ए, राख्यो अचौर्य सूं नेह के ।
उनाला रा जल विना ए, त्याग दीधी है देह के ॥ धर्म० ॥

३६—अन्न पाणी मिलवा तणो ए, नही देख्यो कोई सूल के ।
अदत्त ने कारणे ए, मरणो कर्यो कबूल के ॥ धर्म० ॥

४०—सूत्र सिद्धान्त मे इम कह्यो ए, पांच प्रकार अदत्त के ।
जाणी ने परिहरो ए, शूरवीर मतिमंत के ॥ धर्म० ॥

४—ब्रह्मचर्य

४१—चोथो व्रत छे मोटको ए, तेहनी छे नव वाड़ के ।
कठिन कह्यो केवली ए, दुक्कर दुक्कर कार के ॥ धर्म० ॥

४२—कायर सेती किम पले ए, मन्न रहे किम ठाम के ।
व्रत छे दोहिलो ए, शूरां हंदो काम के ॥ धर्म० ॥

४३—त्यागी वैरागी हुवे ए, संवेगी महाघोर के।
तिकाई शुद्ध पालसी ए, चोथो महाव्रत घोर के॥ धर्म०॥

४४—यह व्रत छे मोटको ए, तिण मे पड़ जावे चूक के।
तो टिकणो दोहिलो ए, हुय जावे टूक टूक के॥ धर्म०॥

४५—मर्यादा सूं पालजो ए, इण व्रत मे नही चाले चूक के।
थोड़ो ही पग आथड़े ए, तो मूंडो जावे सूक के॥ धर्म०॥

४६—पड्या पड्या ने पड़ गया ए, हुय गया चकनाचूर के।
व्रत शुद्ध पालसी ए, सत्यवादी कोई शूर के॥ धर्म०॥

४७—वाड सहित शुद्ध पालसी ए, न पड़े वातुक पेच के।
वाड़ ने लोपसी ए, तो होसी गुरदा पेच के॥ धर्म०॥

४८—इण व्रत सूं पडियां पछे ए, कारी न लागे काय के।
कदा च जो पाछो मंडे ए, नवा देव न नवी माय के॥ धर्म०॥

४९—नर नारी आगे हुवा ए व्रत पाल्यो खगधार के।
कष्ट पड़ियां थकां ए, कर दीधो खेवो पार के॥ धर्म०॥

५०—कष्ट पड़ियां कायम रह्यो ए, दृढ़ 'सुदर्शन' सेठ के।
राणी 'अभया' भणी ए, खाण न दीधी फेट के॥ धर्म०॥

५१—शूली देणो मांडियो ए, राजा कोप्यो आप के।
शूली सिंहासन थयो ए, शील तणो प्रताप के॥ धर्म०॥

५२—'राजमती' मोटी सती ए राख्यो व्रत सू प्रेम के।
हेतु दृष्टान्त सूं ए, दृढ़ राख्यो 'रहनेम' के॥ धर्म०॥

५३—'विजय' सेठ 'विजया' सती ए शुक्ल कृष्ण पक्ष मार के।
सूंस प्रगट हुवे ए, व्रत पाल्यो खड्ग धार के॥ धर्म०॥

५४—'मयण रेहा' ने 'नागिला' ए, 'चंदना' 'सीता' 'द्रौपदा' नार के।
कष्ट मे दृढ़ रही ए, जस फेल्यो संसार के॥ धर्म०॥

५५—बडा बडा जोगी जति ए, बीजाई नर नार के।
शील व्रत पालने ए, पाम्या भव नो पार के॥ धर्म०॥

५६—शील जिणे शुद्ध पालियो ए, समता रस भर पूर के।
पाम्या सुख शाश्वता ए, दुख सहू गया दूर के॥ धर्म०॥

५७—देव दानव ने गंधवा ए, बीजाई सुर राय के।
ब्रह्मचारी तणा ए सगलाई प्रणमे पाय के॥ धर्म०॥

५८—मोटा ब्रह्मचारी तणा ए, रोंठा व्रत ना सूत के ।
मंत्र मूठ नवि चले ए, न लागे डाकण भूत के ॥ धर्म० ॥
५९—पाणी अगनी ने जहर नो ए, जोर न चाले कोय के ।
हाथी सूधो हुवे ए, सिंह बकरी सम होय के ॥ धर्म० ॥
६०—गुण ब्रह्मचर्य तणा घणा ए, पूरा कह्या नहीं जाय के ।
बत्तीसे उपमा ए, दशमा अंग रे मांय के ॥ धर्म० ॥

५—अपरिग्रह

६१—परिग्रह व्रत पांचमो ए, तिण रा छे *तीन भेद के ।
परिग्रह परिहरो ए, राखो मुक्ति उम्मेद के ॥ धर्म० ॥
६२—कर्म तणो बंध परिग्रहो ए, पटकावे संसार के ।
चारो ही गति मांही ए, त्याग्यां हुवे भव पार के ॥धर्म० ॥
६३—पाप अठारे जिन कह्या ए, तिण मे परिग्रह मोटो दाख के ।
इण सूं छूटां विनां ए, ओ जाय न सके मोक्ष के ॥ धर्म० ॥
६४—इसा परिग्रह के कारणे ए, देश विदेशों जाय के ।
जिके धन मानवी ए, छती दिये छिटकाय के ॥ धर्म० ॥
६५—साधुपणो जिन आदर्यो ए, तीन करण तीन जोग के ।
परिग्रह परिहर्यो ए, जाण ने मोटको रोग के ॥ धर्म० ॥
६६—कनक कामिनि कारणे ए, हुवे घणा संग्राम के ।
संत केई बच गया ए, तिण राख्यो मन ठाम के ॥ धर्म० ॥
६७—परिग्रह नी ममता थकी ए, तोड़े जूनी प्रीत के ।
तजि ने केई नीकल्यां ए, गया जमारो जीत के ॥ धर्म० ॥
६८—भक्त संन्यासी सेवड़ा ए, लग्या परिग्रह री लार के ।
विटल हुवा घणा ए, गया जमारो हार के ॥ धर्म० ॥
६९—बडा बडा जोगी जति ए, नाम धरावे साध के ।
इण धन रे कारणे ए, करे घणा अपराध के ॥ धर्म० ॥
७०—परिग्रह रे वश मानवी ए, तिणां ऊपर लो नेह के ।
बाहला सज्जन भणी ए, तडके तोडे नेह के ॥ धर्म० ॥
७१—धन तणी मूर्छा थकी ए, देवे छे जीव जलाय के ।
कामण ने टूमणा ए, देवे गर्भ गलाय के ॥ धर्म० ॥

* सचित्त, अचित्त और मिश्र परिग्रह ।

७२—डोरा डांडा राखड़ी ए, जंत्र मंत्र जाडा जोड़ के ।
परिग्रह रे कारणे ए, करे घणा ओ कोड़ के ॥ धर्म० ॥

७३—वैद्यिक ज्योतिप निमित्त ने ए, भाखे परिग्रह के काज के ।
जिके तज नीकल्या ए, धन मोटा मुनिराज के ॥ धर्म० ॥

७४—इण परिग्रह के कारणे ए, देवे ऊंधा टेर के ।
शस्त्र खाई मरे ए, पड़ेज ऊंडी वेर के ॥ धर्म० ॥

७५—इण परिग्रह रे कारणे ए, राजा न्हांखे दंड के ।
लागे ठठा चोरटा ए, मार करे शतखंड के ॥ धर्म० ॥

७६—इण परिग्रह रे कारणे ए, जागे आधी रात के ।
दगो खेले घणो ए, ओ घाले व्हालारी घात के ॥ धर्म० ॥

७७—इण परिग्रह रे कारणे ए, लड़े फौजां मे जाय के ।
अमोलक देहने ए, वैरी न्हांखे ढाय के ॥ धर्म० ॥

७८—'काली' आदिक दश बांधवा ए, हार हाथी रे हेत के ।
चेड़े इण राजवी ए, राख्या दशों ही खेत के ॥ धर्म० ॥

७९—'चेड़ा' ने कोणिक तणी ए, सूत्र सिद्धांत मे साख के ।
मुआ धन कारणे ए, एक कोड़ असी लाख के ॥ धर्म० ॥

८०—लक्ष्मण राम कृष्णजी ए बीजा राय अभंग के ।
परिग्रह के कारणे ए, किया जोरावर जंग के ॥ धर्म० ॥

८१—भाव घटावे वस्तु रो ए, तोल ऊपरे तान के ।
तिके नर बूडसी ए, होसी घणा हैरान के ॥ धर्म० ॥

८२—इण परिग्रह रे कारणे ए, वांढी डोढी खाय के ।
कोइक इसड़ो मिले ए, सेसुंदा ही गिल जाय के ॥ धर्म० ॥

८३—इण परिग्रह रे कारणे ए, चाडी खावे कूड़ के ।
भूठा भगड़ा करे ए, जाय पुकारूं दूर के ॥ धर्म० ॥

८४—इण परिग्रह रे कारणे ए, न हुवे धर्म नी हूंस के ।
ममता राखे घणी ए, काढे कूड़ा सूंस के ॥ धर्म० ॥

८५—मेलूं मेलूं करतो थको ए, करे सवार री सांझ के ।
धन रा लोभिया ए, सूंस वरत देवे भांज के ॥ धर्म० ॥

८६—धन कारण सभा करे ए, परनी खावे सूंक के ।
पाने कोई ना पड़े ए, तो पर देवे फूंक के ॥ धर्म० ॥

८७—खोटा खत बणायने ए, खोसे पर नो माल के ।
इण धन रे कारणे ए, भव भव खोटा हवाल के ॥ धर्म० ॥

८८—कूड़ा तोला मापला ए, ताकड़ी अंतर काण के ।
इण धन रे कारणे ए भांजे राजारी डाण के ॥ धर्म० ॥

८९—छींपा तेली तेरमा ए, भड़-भूंजा लोहार के ।
इत्यादिक लोभथी ए, ज्यांसू विणज व्यवहार के ॥ धर्म० ॥

९०—मान वसे वेचे घणा ए, पन्द्रह कर्मादान के ।
लोभ के कारणे ए, विणजे सुलियां धान के ॥ धर्म० ॥

९१—सात व्यसन सेवे घणा ए, इण परिग्रह के काज के ।
न्याती सजनां तणी ए, कांई न राखे लाज के ॥ धर्म० ॥

९२—इण परिग्रह के कारणे ए, पेट जमारे जोग के ।
गले घाले मरे ए, घणा निकाले सोग के ॥ धर्म० ॥

९३—परिग्रह मे अवगुण घणा ए, पूरा कह्या नहीं जाय के ।
चतुर केई सीखजो ए, तीन मनोरथ मांय के ॥ धर्म० ॥

९४—परिग्रह रा प्रसंग थी ए, भव भव मे दुःख शूल के ।
ज्ञानी देवां इम कह्यो ए, परिग्रह अनर्थ रो मूल के ॥ धर्म० ॥

९५—एहवो परिग्रह जाणने ए, ज्ञानी कर दीधो दूर के ।
शुद्ध साधु हुवे ए, समता-रस भरपूर के ॥ धर्म० ॥

९६—भंड उपगरण ने पातरा ए, गिणती सूं अधिका होय के ।
ज्ञानी परिग्रह कह्यो ए, मुर्छा मत करो कोय के ॥ धर्म० ॥

६–रात्रि–भोजन–विरमण

९७—छट्ठो व्रत रयणी तणो ए, भोजन रो परिहार के ।
करो कोई मानवी ए, खेवो हुय जावे पार के ॥ धर्म० ॥

९८—सांझ पड़यां भोजन करे ए, तथा आथमते सूर के ।
केवलियां इम कह्यो ए, साधुपणा सूं दूर के ॥ धर्म० ॥

९९—भूख तृपाथी पीड़िया ए, जीवड़ो नीकल जायके ।
पाणी रयणी मझे ए, नही घाले मुख मांय के ॥ धर्म० ॥

१००–रात्री-भोजन करतां थकां ए मकड़ी कुलातरो खाय के ।
गलित कोढ़ उपजे ए, गलरस थी भर जाय के ॥ धर्म० ॥

१०१-रात्रि भोजन करतां थकां ए, मन माने खाय के ।
*विरत कांई नहीं ए, मरने दुर्गति जाय के ॥ धर्म० ॥

१०२-*रात्रि भोजन करतां थकां ए, दया रहे नहीं काय के ।
न्हानां केई जीवड़ा ए, तिण री खबर न पाय के ॥ धर्म० ॥

१०३-आठ पहर दिन रात रा ए, विरत न कीधां काय के ।
सदा चरतो रहे ए, ढांढां ज्यो दिन जाय के ॥ धर्म० ॥

१०४-कागादिक पत्ती बहु ए, रात रा चुगण न जाय के ।
आंधो जीमण रात नो ए, भला माणस किम खाय के ॥ धर्म० ॥

१०५-जैन शिव मे इम कह्यो ए, रात्रि भोजन मांही दोष के ।
जाणी ने परिहरो ए, जिम पामो थे मोत्त के ॥ धर्म० ॥

१०६-पांच महाव्रत एहवा ए, मोत्त तणा दातार के ।
पालो शुद्ध भाव सूं ए, होवे ज्यूं खेवो पार के ॥ धर्म० ॥

१०७-तीन करण शुद्ध भाव सूं ए, मत हणजो कोई जीव के ।
धर्म तंत परख ने ए, दो समकित नी नींव के ॥ धर्म० ॥

१०८-तिरिया तिरे तिरसी घणा ए, इण दया धर्मनी ओट ।
ऋषि 'जयमलजी' इम कहे ए, इण मे न चले खोट के ॥ धर्म० ॥

कलश [दोहा]

१— देव गुरु अरु धर्म की, श्रद्धा राखो ठीक ।
मुक्ति-नगर मे जावतां, मोटो ए मंगलीक ॥

२— मंगल नाम चारो कह्या, भणो सुणो चित्तलाय ।
मंगल एह आराधियां, मुक्ति-सुखों मे जाय ॥



---

* *नान्हा केई जीवड़ा ए मुखसूं नाखे चाय के ।*

* *रात्रि भोजन करतां थकांए, जूं माछर पड़ जाय के ।*
कीड़ी ने कुंथुवा ए, रात रा खवर न काय के ॥ धर्म० ॥

जय–वाणी

(२)

सज्झाय

(२)

❀ कागदियो ❀

(सीमन्धर जिन स्तवन)

कागदियो लिख भेजुं हो संगू को नहीं ।। ध्रुव ।।

१— पूरब 'पुखलावती' विजय मे जनमियाजी,
नगरी 'पुण्डरीकणी' नाम ।
राजरिद्ध छोडी हो संजम आदर्योजी
श्री सीमन्धर स्वाम........ ।। का० ।।

२— चौतिस अतिशय हो प्रभुजी परवर्याजी
वाणी रा गुण पैंतीस ।
एक सहस आठ लक्षण धणीजी
प्रभुजी जीत्या राग ने रीस ।। का० ।।

३—जघन्य दश लाख हुआ थांरे केवली
कांई साधु हुआ सो करोड़ ।
तीन लोकना हो साहिब थे धणी
थांरां चरण वांदण रो कोड़ ।। का० ।।

४— तीन तो ज्ञान हुता घर मे थकांजी
दीक्षा लीधां चोथो थाय ।
केवल उपनो हो सर्वज्ञानी थयाजी,
थांरे दर्शन री मुझ चाय ।। का० ।।

५— बारे गुणे करी प्रभुजी दीपताजी,
मोटा प्रतिहारज आठ ।
दोष अठारे हो माहिलो को नही
प्रभु संच्या पुण्य रा ठाट ।। का० ।।

६— सतरमा जिन ने वारे जनमिया
कांई मुनि सुव्रत वारे दीक्षा लीध ।
'उदय' 'पेढाल' हुसी जिन आठमाजी
बीचे थासोजी तुम सिद्ध ।। का० ।।

७— दूर दिसावर जेहनो पिऊ वसेजी
ते नार सुहागण कहाय ।

महाविदेह में धणिय विराजियाजी
तिके निरधणिया किम थाय ॥ का० ॥

८— आड़ा डूंगर ने नदियां वन घणाजी
बीचे विकट विद्याधर ग्राम ।
वाणी सुनवाने हो आय सकूं नही
यांही लेसु तमारो नाम ॥ का० ॥

९— कुबुद्धि कदाग्रही भरत मांहि घणाजी
कांई अपछन्दा अवनीत ।
एक आधार प्रभु मुझ मोटको
थांरे सूतरनी परतीत ॥ का० ॥

१०—भरतक्षेत्र मे हो प्रभुजी हूं वसूं
पुखलावती में जिनराय ।
कोइक दिन प्रभुजी सूं मिलवा तणी
म्हारे दीसे छै अन्तराय ॥ का० ॥

११—क्रोड़ा कोमां रो हो प्रभुजी आन्तरोजी
मै आऊं केम हजूर ।
रिख 'जयमलजी' करे थांसू वीनती
म्हारी वन्दना उगन्ते सूर ॥ का० ॥

---

(२)

❀ इरियावही नी सज्झाय ❀

१— भवियण इरियावही पड़िकमिये, रूड़ो धर्म हिय में धरिये ।
प्राणी पर भव सेती डरिये, जाणी जरा तो सम्वर करिये ॥ ध्रुव ॥

२— अरिहन्त सिद्ध आचारज मोटा, उवज्झाय सगला साधो ।
ए पांचां ने प्रणमी करीने, समकित खरी आराधो ॥ भवि० ॥

३— इरियावही साचे मन गुण ने, सरदहणा मे रेणो ।
अपना पाप उतारण हेते, मिच्छामि दुक्कड़ं देणो ॥ भवि० ॥

४— पाणी मांय तिरायो पातर, 'अयवंते' रिख रायो ।
इरियावही गुण काउसग करने, दीधा पाप उड़ायो ॥ भवि० ॥

५— इरियावही पडिकमणो करतां. मत आणो मन खेदो ।
कहतां मिच्छामि दुकड़ं लागे, भिन भिन सुणजो भेदो ॥ भवि० ॥

६— 'कर्म-भूमि' ना पनरे लेखा, तीस 'अकर्मी' लेख ।
छप्पन होय 'अंतरद्वीप' ना सर्व एक सो ने एक' ॥ भवि० ॥

७— 'अपर्यापत' 'पर्यापत' करतां नरना 'दोय से दोय' ।
'असन्नी' नरना अपर्यापता, 'एक सौ ने एक होय' ॥ भवि० ॥

८— 'भवनपति' 'व्यंतर' ने 'जोतषी', भेद 'विमाणिक' पावे ।
सुर वर ते मिलने सगला, नाम 'निनाणू' आवे ॥ भवि० ॥

९— अपर्यापता पर्यापता करतां, 'एक सौ ने अठाणु' ।
'तीन सो ने तीन' लारला मेल्यां, 'पांच से एक' जाणु ॥ भवि० ॥

१०—इण रीते अपर्यापता पर्यापता, 'सात नरक' ना लेवा ।
'पांच से ने पनरे' उपरे. एवा जीव कहेवा ॥ भवि० ॥

११—'पृथ्वी' 'अप' तेऊ' ने 'वायु', 'वनस्पति' ने 'विगला' ।
'पांच से तियालीस' ऊपर, जीव थया छै सगला ॥ भवि० ॥

१२—'जलचर' 'थलचर' 'उरपर 'भुजपर', पांचमां 'खेचर' आया ।
'पांच से ने त्रेसट' ऊपर, सर्व जीव घड़े लगाया ॥ भवि० ॥

१३—'अभिहया' ने आद देई ने, 'ववरोविया' तक लीजे ।
'पांच हजार' ने ' छ से' ऊपर, 'तीस' मिच्छामि दुक्कड़ं दीजे ॥भवि०॥

१४—'राग' 'द्वेष' वस जीव हणे छे, प्राणी एहले 'साठ' ।
'इग्यारे हजार दोय से' ऊपर. वली मेलीजे 'साठ' ॥ भवि० ॥

१५—'करण' 'करावण' ने 'अनुमोदन', एह ने त्रिगुणा लेणा ।
'तेतीस हजार सात से असी', मिच्छामि दुक्कडं देणा ॥ भवि० ॥

१६—एक भेद ने तिगुणा करतां. 'मन' 'वचन' ने 'काया' ।
'एक लाख ने एक हजार, तीन से चालीस' आया ॥ भवि० ॥

१७—'अतीत' 'अनागत ने 'वर्तमान', हण्या हणे ने हणसी ।
'तीन लाख ने च्यार हजार. वीस' ऊपरे भणसी ॥ भवि० ॥

१८—'अरिहंतादि पांच' पदांनी, 'आतम' नी वलि साख ।
'सहस चोवीस एक सो वीस, धुर अठारे लाख' ॥ भवि० ॥

१६—सांभल ने ए कथा परंपरा, सज्झाय करी तिण ठाणे ।
पछे तो निश्चय री वातां, ज्ञानी देव ही जाणे ॥ भवि० ॥

२०—उपयोग सहित इरियावही गुण ने, सरधणा में आसी ।
कहै रिख 'जयमलजी' सुणो नरनारी, अमरापुर मे जासी ॥ भवि० ॥

---

(३)

❀ चौसठ सतियों की सज्झाय ❀

१— नाम पणे ज्ञानी कथिया,
जिके मुगति गई चौसठ सतियां ।
बीजी पण सुणजो एक चित्ती
समरूं मन हरषे मोटि सती ॥

२— पूरबे बांधी शाता,
एहवी श्री 'ऋषभ' तणी माता ।
'मोरा देवी' सुखे खुखे शिवपुर पहुँती ॥समरूं॥

३— संजम पामी सुख चेनी,
'ब्राह्मी' ने 'सुन्दर' दोय बेनी,
जिण वयणे ए अनुराग रती ॥ समरूं ॥

४— तीर्थङ्करो नी बड़ी सिखणी
धुर 'ब्रामी' छेली 'चंदणा' भिखुणी
दीपायो जेणे जैन मती ॥ समरूं ॥

५— 'पद्मावती' 'गोरी' 'गंधारी',
'लक्खणा' 'सुसम' हरि नारी
'सत्यभामा' ने 'जाम्बवती' ॥ समरूं ॥

६— 'अग्रमहिषी अठ कृष्ण तणी.'
वलि 'पुत्र वहू' हुई दोय जणी
छिटकाय दिवी है ऋद्धि छती ॥ समरूं ॥

७— 'काली' आदिक दश राणी,
सांभल ने वीर तणी वाणी
देही खंकर करली मुगत गती ॥ समरूं ॥

८— 'नंदादिक' तेरे हुई वीजी
ज्यांरी धर्म मांहे भीजांणी भीजी
संजम ले इन्द्रिय वश करती ॥ समरूं ॥

९— 'तेविस' श्रेणिकनी भज्जा
चंदनबाला पे थई अज्जा
मुक्ति गई सब कर्म हती ॥ समरूं ॥

१०—'भग्गू' घर 'जसा' घरणी
'कमलावती' आतम उद्धरणी
प्रतिबोध्यो 'इखुकार' पती ॥ समरूं ॥

११—संजम लीधो धर्म प्रेमी,
जिण डिगतो राख्यो 'रह नेमी'
जगमे जस लीधो 'राजमती' ॥ समरूं ॥

१२—छोड़ दिया सब घर फंदा
श्री वीर तणी माता 'देवा नंदा'
पाली समिति सब गुपती ॥ समरूं ॥

१३—'चंदणा' कष्ट सह्या रे घणा
भावे कर बाकुला उड़द तणा
प्रतिलाभ्या जेणे वीर जती ॥ समरूं ॥

१४—प्रथम थानक नी दाता
पाली शुद्ध प्रवचन माता
प्रश्न पूछिया जिण जयवंती ॥ समरूं ॥

१५—बेटी सहसानिक राय तणी,
राणी 'मृगावती' नणंद भणी
'जयंती' कर्म जीत करी फती ॥ समरूं ॥

१६—नारद आया नहीं ऊठि जरे,
'द्रोपदी' ने ले गयो समुद्र परे ।
मरजाद न मूकी मतिवंती ॥ समरूं ॥

१७—छठ छठ पारणो कीधो
पांणी मांही घोली अन्न लीधो ।
सील पाल्यो द्रुपदी सती ॥ समरूं ॥

१८—रावण पकड़ ले गयो लंका
जब लोकां में पड गई शंका ।
धीज उतारी 'सीता' सतवंती ॥ समरू' ॥

१९—अगनकुंड जलराशि कियो
सीता पिण तन रो साच दियो
संजम लेई देवलोक जती ॥ समरू' ॥

२०—गुरणीनी शुद्ध पाली शिक्षा
संगलेई मांगी घर घर भिक्षा ।
पिण गर्व न राख्यो गुणवन्ती ॥ समरू' ॥

२१—गुरणी सीख कठिन दीधी
सिखणी सांभल खमता कीधी
केवल पामी 'मृगावती' ॥ समरू' ॥

२२—'पद्मावती' ने 'मयण-रेहा',
दाखूं सतियां ना गुण केहा
कष्ट पड्यां राख्यो शील अती ॥ समरू' ॥

२३—'विजय' सेठ नारी 'विजया'
जिणे शील पाल्यो एकणमिजिया ।
संजम लेई हुवा सुव्रती ॥ समरू' ॥

२४—'प्रियदर्शना' वीर तणी बेटी,
व्रत लीधा मिथ्या मत मेटी
संजम ले देवलोक गती ॥ समरू' ॥

२५—तेतली घर 'पोटिला' नारी
प्रियु सूं उपकार कियो भारी
सरधायो जिणे मारग धर्म तती ॥ समरू' ॥

२६—नल राजा वन में मूकी
ते कष्ट पड्यां सूं नहीं चूकी ।
दीक्षा लीधी 'दमयंती' ॥ समरू' ॥

२७—पवनकुमर 'अंजना' परणी
जिणे कलंक लागो पाछली करणी
शील पाल्यो पर चूकी न रती ॥ समरू' ॥

२८—शीले कर अंजना धुर साची,
जिणरी कीरत जुग मे वाची ।
जायो जिणे 'हनुमत्' वीर जती ॥ समरू ॥

२९—बंधविये वेहरखा आप्या,
शंका पड्यां कन्ते कर काप्या ।
नवां कर आया 'कलावती' ॥ समरू ॥

३०—काचे तार सूं जल काढ्यो
चंपापुरी 'सुभद्रा' जस चाढ्यो ।
परशंसे परजा भूमिपती ॥ समरू ॥

३१—'जंबू' नी कही 'आठे नारी',
मारग पामी सुध तंत सारी ।
सांभल जम्बूनी आठ कथी ॥ समरू ॥

३२—तीर्थंकर पदवी पासी,
भव एक करी ने मुगति जासी ।
शुद्ध पाक विहरायो 'रेवन्ती' ॥ समरू ॥

३३—'चेलणा' राणी अने 'ज्येष्ठा'
श्रुत धर्म तणी रही शुद्ध चेष्टा ।
'शिवा' 'सुज्येष्ठा' 'प्रभावती' ॥ समरू ॥

३४—'सुभद्रा', शालिभद्रनी बहिन सती,
पारख्या कीधी 'धन्ने' परती ।
चित्त चूक न बोली मुख चलती ॥ समरू ॥

३५—राय हरिचंदनी 'तारा' राणी,
मोल लेइ ने ब्राह्मण घर आंणी ।
पिण राख्यो शील डिगी न रत्ती ॥ समरू ॥

३६—'कौशल्या' दशरथ नी कान्ता,
महिमा घर राम तणी माता ।
संसार सराई शीलवती ॥ समरू ॥

३७—लंका सुख छोडी व्रत लीधो,
करणी कर करम दूरे कीधो ।
'मंदोदरी' शील सदा सुगति ॥ समरू ॥

३८—क्यारू' मर विषया रस गीधा,
सनी कब्जे करी पेई में दीधा ।
सरम राखी निज 'शीलवती' ॥ समरू' ॥

३९—इत्यादिक सतियां मोटी,
जिण तज दीधी सरधा खोटी ।
केई मुक्ते जासी कर्म हती ॥ समरू' ॥

४०—लाख सेंतालिस सर्व कही,
वलि आठसहस सात मोरे लही ।
चोवीसे नी सतियां हुई इति ॥ समरू' ॥

४१—केतली एक तो सूत्र मे चाली,
केतली एक कथा मांहि सु'घाली ।
पछे ज्ञानी वदे सोई तहत्ती ॥ समरू' ॥

४२—इम सतियां रा गुण जाणी,
वाचो सरधा उत्तम प्राणी ।
ऋषि 'जयमलजी' कहे आंणो धर्म रत्ती ॥समरू'॥

———

(४)

❀ ब्रह्मचर्य विषयक स्तवन ❀

विरला इसड़ा ब्रह्मचारी रे ।
तेतो नेणे न निरखे नारी रे ॥ ध्रुव ॥

१— समकित ने चोखो आराधे, पंच महाव्रत धारी रे ।
क्रोध मान माया लोभ ने त्यागी, शील पाले नव वाड़ी रे ॥

२— भाषा वचन विचारी ने बोले, करे छकायां नी सारी रे ।
भगवन्त जाप जपे जयणां सु', लाहो ले छे भारी रे ॥

३—जाव जीव शील निर्मल पाले, भांगो न लगावे कारी रे ।
काछ वाच होय निःकलंकी, आप तिरे पर तारी रे ॥

४— मोटा संवेगी ने त्यागी, तपसी पारम पारी रे ।
सुश्रूषा न करे देही री, सिनांन घटार मठारी रे ॥

५— देवादिक उपसर्ग ऊपाप्यां सूं, विल विल न करे हारी रे ।
मूंढ़ा मांहे थी गाल न काढे, खमेज समता भारी रे ॥
६— समता भावे शीलज पाले, कुबुद्धि संग निवारी रे ।
आराधीजे मोख रो मारग, करमां ने परजारी रे ॥
७— मुहादाई ने मुहाजीवी ले, निदूंपण आहारी रे ।
निर्जरा हेते करे तपस्या, फिर फिर न करे हारी रे ॥
८— मांहो मांहे थलावे न भांतो, न करे तोड़ा फाड़ी रे ।
मोटा जोध मोह मे वासी, तेहने दे विड़ारी रे ॥
९— आगे आगे रे बोत ड़िगाया, ए कांमणी कामण गारी रे ।
ऋषि 'जयमलजी' कहे इण ने त्यागी, ज्यांरी जाऊं वलिहारी रे ॥

---

(५)

❀ दीवाली ❀

१— दिवाली दिन आवियो, राखो धर्म सूं सीर ।
'गोतम' केवल पामिया, मुगत गया 'महावीर' ॥
२— भजन करो भगवत रो, गणधर 'गोतम' स्वाम ।
तिरण तारण जग परगम्या, लो नित्य प्रत्ये नाम ॥
३— दिवाली रो दिन बड़ो, जाड़ा मत करो पाप ।
निद्रा विकथा परिहरो, करो जिनजी रो जाप ॥
४— सामायिक पोसा करो, पडिक्कमणो दोय काल ।
इम आतम ने ऊधरो, झूठी मत करो झिकाल ॥
५— 'नवमल्ली' ने 'नवलच्छी', देश अठारे ना राय ।
श्री वीर समीपे आय ने, दीधा पोसा ठाय ॥
६— काती वद अम्मावसे, टाली आतम दोष ।
भवजीवां ने तार ने, श्री वीर विराज्या मोख ॥
७— देव देवी तिहां आविया, लागी जगमग जोत ।
वले विशेषे बहु हुवो, रतना तणो उद्योत ॥
८— 'देव-श्रमण' प्रतिबोधवा, गयाज 'गोतम' स्वाम ।
'वीर' मोक्ष गया जांण ने, पाछा आया तिण धाम ॥

९— मोक्ष नगर ना दायकू, भगवंत श्री महावीर ।
जेहने मुख आगल हुवा, गोतम स्वाम वजीर ॥

१०—मोटा जिण शासन धणी, पहुंता शिवपुर ठाम ।
गोतम लब्धी तणा धणी, राख्यो जग मे नाम ॥

११—तिण कारण मंगलिक दिन मोटा साहनो न्हाल ।
आरंभ समारंभ छोडने, निरमल शीलज पाल ॥

१२—बार बार मानुष जनम, पामसी नहीं रे गिंवार ।
डोरा डडा राखड़ी, जंत्र तंत्र निवार ॥

१३—झाड़ा झपाटा मत करो, मत करो छकायां री घात ।
च्यारू ई जाप जपो भला, मोटी दिवाली नी रात ॥

१४—'काया रूप करो 'देहरो' ज्ञान रूपी 'जिन देव' ।
जश महिमा शंख झालरी, करो सेवा नित मेव ॥

१५—धीरज मन करो धूपणो, तप अगरज खेव ।
श्रद्धा पुष्प चढायने, इम पूजो जिन देव ॥

१६—दया रूपी दिवलो करो, संवेग रूपणी वाट ।
समगत ज्योत उजवाल ले, मिथ्या अंधारो जाय फाट ॥

१७—संवर रूपी करो ढांकणो, ज्ञान रूपियो तेल ।
आठूं ही कर्म परजाल ने, दो रे अन्धारो ठेल ॥

१८—काया हाट उजवाल ले, ज्ञान वस्तु मांहे सार ।
भवि जीव ग्राहक विणज ने, नफो पर उपकार ॥

१९—अंवली गत संसारनी, धन लिछमी रे काज ।
डिचकारी करतां थकां, ठे ठे कूटे छाज ॥

२०—डिचकारो करतां थकां, [1]धाव पाछो घिर जाय ।
लिछमी इम करतां थकां, किम पैसे घर मांय ॥

२१—भाषा श्री जिनराजनी, मुख उगाड़े मत गाय ।
जयणा करजो जुगत सूं, ज्यों शिवपुर में जाय ॥

२२—भजन करो भगवंत रो, ज्यों थांरा सुधरे काज ।
काल अनन्ते दोहिलो, अवसर लाधो आज ॥

---

१ पशु

२३—हिंसा सूं देव राजी हुवे. इसड़े भरोसे मत भूल ।
साचे मन नवकार गुण, इसा चढावो फूल ॥
२४—दुःख किणने देणो नहीं, प्रवचन शुद्ध दढाय ।
ज्ञान दर्शन चारित्र भला, ए तूं आखा चढाय ॥
२५—श्री सीमंधर आदि दे, जघन्य तीर्थङ्कर वीस ।
अढी द्वीप मे प्रगट्या, जयवन्ता जगदीश ॥
२६—लीपण धोलण मांडणे, जीवां रा करो रे जतन्न ।
भव भमतां दुलहो लह्यो, मानव भव रतन्न ॥
२७—कहे दिवाली दिन मोटको. बांधे पापां रा पूर ।
इम करतां रे प्राणिया, शिवपुर रहेला रे दूर ॥
२८—काया रूपी हवेलियां, तपस्या करने रेल ।
[1]सूंस वरत कर मांण्डणो, विनय भाव वर वेल ॥
२९— क्षमा रूप खाजा करो, वैराग्य घृतज पूर ।
उपशम मोवण घालने, मदवो मोतीचूर ॥
३०—भाव दिवाली इम करो, उतरयां चाहो पार ।
जप तप किरिया भाव सूं, लाहो लोनी लार ॥
३१—दिवाली दिन जाणने, धन पूजे घर मांय ।
इम तूं धर्म ने पूज ले, ज्यो अमरापुर में जाय ॥
३२—राखे रूप चवदश दिने, गहणा कपड़ां री चूंप ।
ज्यो चूंप राख धर्मसूं, दीपे अधिको रूप ॥
३३—परब दिवाली जाण ने, तिलकज काढ़े सार ।
ए जैनधर्म तिलक समो, आदरयां खेवो पार ॥
३४—पर्व दिवाली ने दिने, पूजे वही लेखण ने दोत ।
ज्यूं तू धर्म ने पूजले, दीपे अधिको जोत ॥
३५—पर्व दिवाली जाण ने, उजवाले हवेली ने हाट ।
इम तूं व्रत उजवाल ले, बन्धे पुनांरा ठाट ॥
३६—धन धान त्रिया बालक सजन, व्हाला लागे तोय ।
जैसो नेह कर धर्म सूं ज्यों मुगति तणा सुख होय ॥

१ सोगन, व्रत. प्रत्याख्यान

३७—जाग्यां थकां उतावला, बहुली मत लो रात ।
कोई अभंजती जागसी, तो करसी छकायां री घात ॥

३८—ध्यान सभाय तवन गुणो, गुणो बोल ने चाल ।
ओ दिन छै देवां तणो, तू देवालो मत घाल ॥

३९—परब दिवाली जाण ने, सारी पासा मत कूट ।
धर्म ध्यान करो भलो, ओ तूं नफो ले लूंट ॥

४०—चैत सुदी तेरस दिने, जन्म्या श्री महावीर ।
काती वद अमावस दिने, गौतम केवल धीर ॥

४१—मनुष्य जनम छै दोहिलो, पाम्यो आरज खेत ।
जोग मिल्यो साधु तणो, राख धर्म सूं हेत ॥

४२—सेवा करो सुगुरां तणी, गयो धन पाछो घेर ।
दोय घड़ी शुद्ध भाव सूं, नोकरवाली फेर ॥

४३ - अंग उपांग ग्रन्थ छेद मे, जीव दया परधान ।
ऋषि 'जयमलजी' इम कहे, ऐसी दिवाली तूं मान ॥

---

(६)

❀ चन्द्रगुप्त राजा के सोलह सपने ❀

दोहे—

१— पाटली पुर नामे नगर, 'चन्द्रगुप्त' तिहां राय ।
सोलह सपना देखिया, पक्खी पोपह मांय ॥

२— तिण काले ने तिण समे पंच सयां परिवार ।
'भद्रबाहू' समोसर्या, पाटली बाग मझार ॥

३— 'चन्द्रगुप्त' वन्दन गयो, बैठी परिषदा आय ।
मुनिवर दे धर्म देशना, सगलां ने हित लाय ॥

४— चन्द्रगुप्त कहे कर जोडने, सांभलजो मुनिराय ।
मैं सोले सपना देखिया, ज्यांरा अर्थ दीजो सुणाय ॥

५— वलता मुनिवर इम कहे, सांभल तूं राजान ।
सोले सुपनां रा अरथ, एक चित्त राखो ध्यान ॥

प्रारम्भ

(१)

१— दीठो सुपनो पेलड़ो, 'भागी कल्पवृक्ष' डालो रे ।
राजा संजम लेसी नहीं, दुःखमी पांचमे कालो रे ॥
२— चन्द्रगुप्त राजा सुणो, कहे भद्रबाहु स्वामी रे ।
चवदे पूरबना धणी, तीन ज्ञान अभिरामी रे ॥

(२)

३— 'सूरज अकाले आथम्यो', जेहनो ए फल जोयो रे ।
जाया पंचम कालना, ज्यांने केवलज्ञान न होयो रे ॥चंद्र०॥

(३)

४— तीजे 'चन्द्रमा चालनी', तिणरो ए फल आमी रे ।
समाचारी जुई जुई, बारोत्या धर्म थासी रे ॥चंद्र०॥

(४)

५— 'भूत भूतणी दीठा नाचता, चोथे सुपने राय जोसी रे ।
कुगुरु कुदेव कुधर्मनी, घणी मानता होसी रे ॥चंद्र०॥

(५)

६— 'नाग दीठो बारे फुणो, पांचमे सुपने भाली रे ।
कितराइक वरसां पछे, पडसी बारे काली रे ॥चंद्र०॥

(६)

७— 'देव विमाण वल्यो' छठे, तिणरो सुणो राय भेदो रे ।
जंघा विद्या चारणी, जासी लब्धि बिछेदो रे ॥चंद्र०॥

(७)

८— 'ऊगो उकरड़ी मध्ये, सातमे कमल' विमासी रे ।
च्यारु ई वर्णां मध्ये, वाण्यां जिनधर्मी थासी रे ॥चंद्र०॥
९— हेतु कथा ने चौपाई, तवन सभाय ने जोडी रे ।
इण मे घणा प्रतिबोधसी, सूतरनी रुचि रेसी थोडी रे ॥चंद्र॥
१०— एको न होसी सऊवांणियाँ, जुदा जुदा मत थापी रे ।
खांच करसी आपो आपणी, करसी थाप उथापी रे ॥चंद्र०॥

(८)

११— दीठो सुपनो आठमो, 'आगिया नो चमत्कारो' रे ।
अल्प उद्योत जिनधर्म रो, बहुत मिथ्यात अंधारो रे ॥चंद्र०॥

१२— तपस्या धर्म वखाणतो, राग कर होसी भेला रे।
इम करतां अजाणसी, छती अछती होसी हेला रे॥ चंद्र०॥

१३— हिंसा धर्म प्रकाश ने, साधां सु भिड़कासी रे।
वलि तीर्थङ्कर ना साधु थी, निकली निन्हव थासी रे॥चंद्र०॥

१४— क्रियाडंबर दिखाय ने, पोते साधु कहवासी रे।
आगियानां चमत्कार ज्यूं, होय होय ने बुझ जासी रे॥चंद्र०॥

(६)

१५— 'समुद्र सूको तीनूं दिशा, दक्षिण डोलो पानी रे'।
तीन दिसे धर्म विछेदसी, दक्षिण दिशा धर्म जाणी रे॥चंद्र०॥

१६— जिहां जिहां पंच कल्याणका, तिहां तिहां धर्म नी हांणो रे।
नवमा सुपना रो अर्थ होसी, इसा एनांणो रे।चंद्र०॥

(१०)

१७— 'सोना री थाली मध्ये, कूतरो दीठो खातो खीरो रे'।
दशमा सुपना रो अरथ सुण, तूं राय सधीगे रे॥चंद्र०॥

१८— ऊंच तणी लिछमी तिका, नीच तणे घर जासी रे।
बधसी चुगल ने चोरटा, साहुकार सिधासी रे॥चंद्र०॥

(११)

१९— 'हाथी ऊपर बांदरो', सुपने इग्यारमे दीठो रे।
म्लेच्छ राजा ऊंचा हुसी, असल क्षत्री रेसी हेठो रे॥चंद्र०॥

२०— क्षत्री कुलना ऊपना, कहे पृथ्वीपति नाथो रे।
सोई म्लेच्छां आगले, रहसी जोड्यां हाथो रे॥चंद्र०॥

(१२)

२१— सपनो सुण नृप बारमो, 'समुद्र लोपी छे कारो रे'।
कोई छोरू गुरू मावितरी, नही गिणे लाज लिगोरो रे॥चंद्र०॥

२२— विनय भाव थोड़ो हुसी, मच्छर वधसी ज्यादा रे।
छोरू गुरू मा-बापनी, मूक देसी मर्यादा रे।चंद्र०॥

२३— आपणी इच्छा से चालसी, छांदे गुरू ना थोड़ा रे।
लज्जा रहित अभिमानिया, किरिया करतूत मे कोरा रे॥चंद्र०॥

२४— क्षत्री लांच ग्राही हुसी, वचन कही नट जासी रे।
दगा दगी घणा खेलसी, विश्वास घाती थासी रे॥चंद्र०॥

२५— कितराइक साधु साधवी, द्रव्ये लेसी भेपो रे ।
आज्ञा थोड़ी मानसी, सीख दियां करसी धेपो रे ॥चंद्र०॥

२६— आकुल व्याकुल वांछसी, गुरवादिक नी घातो रे ।
शिष्य अविनीत इसा हुसी, गलियार गधानी जातो रे ॥चंद्र०॥

(१३)

२७— महारथ जुत्या वाछड़ा बालुड़ा धर्म थासी रे ।
कदाचित् बूढा करे तो, परमाद में पड़ जासी रे ॥चंद्र०॥

२८— बालक बहु घर छोडसी, आंणि वैराग भावो रे ।
लज्जा संजम पालसी, बूढा द्वेप स्वभावो रे ॥चंद्र०॥

२९— सहु सरल नही बालका, धेटा नहीं सब बूढ़ा रे ।
समचे ही ए भाव छै, अर्थ विचारो ऊंडा रे ॥चंद्र०॥

(१४)

३०— 'रतन भांखा' दीठा चवदमे, तिण सुपना रो ए जोरो रे ।
भरतक्षेत्र ना चारो संघमे रे, हेत मिलाप होसी थोड़ो रे ॥चंद्र०॥

३१— कलह कराडंबर करा, असमाधिक रा विषेको रे ।
ऊँधाकड़ा निरबुद्धिया करसी, धाका धेको रे ॥चंद्र०॥

३२— वैराग्य भाव थोड़ो हुसी, द्रव्य लिङ्गी भेप धारो रे ।
भली सीख देतां थकां, करसी क्रोध अपारो रे ॥चंद्र०॥

३३— करसी प्रशंसा आपरी, कपट वचन बहु गेरी रे ।
आचारी साधां तणा, उलटा होसी वेरी रे ॥चंद्र०॥

३४— सूधो पंथ प्ररूपसी, तिणसूं मच्छर भावो रे ।
निंदक बहु साधां तणां, होसी द्वेष स्वभावो रे ॥चंद्र०॥

३५— एक एक जीवड़ा एहवा, घाले घणाने शंका रे ।
भेद घलावे साधां मध्ये, करमांरे वश वका रे ॥चंद्र०॥

(१५)

३६— 'रायकंवर चढियो पाडिये' सुपने पनरमे देख्यो रे ।
गज जिम जिन धर्म छोड़ने, और धर्म विषेखो रे ॥चंद्र०॥

३७— न्याय मार्ग थोड़ो हुसी, नीची गमसी वातो रे ।
कुबुद्धि घणां मानीजसी, लांच ग्राही पर घातो रे ॥चंद्र०॥

(१६)

३८— 'विगर मावथ हाथी लड़े' सुपने सोलमे एहो रे ।
कितराइक वर्षां पछे, मांग्या न होसी मेहो रे ॥चंद्र०॥

३९— अकाले विरखा हुसी, काले वर्षसी थोड़ो रे ।
वाटां घणी जोवावसी, तिणसूं अन्नरो तोड़ो रे ॥चंद्र०॥

४०— बेटा गुरू माचीत नी, करसी भगती थोड़ी रे ।
माइत वात करतां थकां, लेसी बीच में तोड़ी रे ॥चंद्र०॥

४१— भायां भायां माहो मांहि मे, थोड़ो होसी हेतो रे ।
घणी लड़ाई ने ईसका, वधसी इण भरत खेतो रे ॥चंद्र०॥

४२— काण कूरब थोड़ा हुसी, ओछो होसी तोलो रे ।
घणां झगड़ा राड़ां करी, आंणसी ऊंचो बोलो रे ॥चंद्र०॥

४३— न्याय मारग नही गमे, नीची वात सुहायो रे ।
कुबुद्धी घणा मानवी, थोड़ो गमसी न्यायो रे ॥चंद्र०॥

४४— पांचमा आराना राजवी, होसी विग्रह चारो रे ।
वचन कही फिर जावसी, एहवो जाण विचारो रे ॥चंद्र०॥

४५— दुःखमी आराना राजवी, घणां होसी अहंकारी रे ।
हाथी घोड़ा रथ छोड़ने, करसी ऊंठा तणी असवारी रे ॥चंद्र०॥

४६— अरथ सुपना सोले तणां कह्या अर्थ भद्रबाहु स्वामी रे ।
जिन भाख्यो न हुवे अन्यथा, सुण राजा हितकामी रे ॥चंद्र०॥

४७— एहवा वयण सुणी करी, राय जोड़ी बेहुं हाथो रे ।
वैराग भाव आणी कहे, सरध्या मैं किरपा नाथो रे ॥चंद्र०॥

४८— धन्य करणी साधां तणी, वयणे अमृत वरसे रे ।
जेहनो दर्शन देखतां, घणां प्राणिया तरसे रे ॥चंद्र०॥

४९— राज थापी निज पुत्र ने, हूं लेसूं संयम भारो रे ।
वलता सतगुरू इम कहे, मत करो ढील लिगारो रे ॥चंद्र०॥

५०— बेटा ने राज वेसाण ने, चन्द्रगुप्त राजानो रे ।
छता भोग छिटकाय ने दियो छकायां अभयदानो रे ॥चंद्र०॥

५१— चोखो चारित्र पाल ने, सुर पदवी लही सारो रे ।
जिन मार्ग आराधने, करसी खेवो पारो रे ॥चंद्र०॥

५२— अथिर माया संसार नी, आप कह्यो जिनरायो रे ।
दयाधर्म सुध पालने, अमरा पदमें जायो रे ।।चंद्र०।।

५३— ए सोले सुपना सुणी करी, सिंह जेम पराक्रम करसी रे ।
जिनजी रा वचन आराधसी, ते शिव रमणी ने वरसी रे ।।चंद्र०।।

५४— व्यवहार सूत्रनी चूलिका मध्ये, भद्रबाहु कियो विचारो रे।
तिण अनुसारे माफक, रिख 'जयमलजी' करि जोडो रे।।चंद्र०।।

---

(७)

❁ धर्म महिमा ❁

दोहे—

१— देव, गुरु ने धर्मनी, सरधा राखो ठीक ।
मुक्ति मार्ग मे जावतां, मोटो एह मंगलीक ।।

२— मंगल नाम कहिये घणां, ए संसार ने मांय ।
मोटो मंगल धर्म है, मुक्ति नगर ले जाय ।।

प्रारम्भ

१— धम्मो मंगल महिग्ग नीलो, धर्मे नवनिध होय ।
धर्मे दुःख दोहग टले, रोग सोग नहीं कोय ।।

२— धर्म धर्म बहुला करे, धर्म तणा बहु भेद ।
एक रुलावे संसार में, एक मुक्ति उमेद ।।

३— 'चक्रवर्ती दशे' हुआ, धर्म तणे परताप ।
आरंभ परिग्रहो त्यागने, मोख विराज्या आप ।।

४— 'आदेशरजी' एड़ी कही, 'भरतादिक' सो भाय ।
धर्म तणे परभाव सूं, मुगत विराज्या जाय ।।

५— 'दशार्णभद्र' राय रिद्धतणों, अभिमान कीधो आप ।
'इन्द्र' ने पगे लगावियो, धर्म तणों परताप ।।

६— 'परदेशी' नृप पापियो, अविनीत ने अभिमान ।
इण धर्म तणे प्रसदथी, लह्यो 'सूर्याभ' विमान ।।

७— 'अनाथी' 'नमिराय' नी, वेदना गई है दूर ।
जिणवरजी ए धर्म थी, सत्यवादी हुआ सूर ॥

८— 'अर्जुनमाली' बहु कियो, नरमार्यां नो पाप ।
मोक्ष विराज्या जाय ने, धर्म तणो परताप ॥

९— इण अवसर्पिणी काल मे आठ हुआ छै 'राम' ।
श्री जिनजीना धर्मथी, पाम्या अविचल ठाम ॥

१०— 'नंदन' रो जीव डेडको, राखी समगतनी टेव ।
जिण धर्मना प्रसंगथी हुओ 'दर्दुर' देव ॥

११— नरनारी बहुला हुआ, रंक राव ने सूर ।
धर्म तणे प्रसादथी दुख दालिद्र जावे दूर ॥

१२— आदि अनादी जीवड़ो, पाई दुःखाँरी खान ।
दयाधर्म छै एहवो, पहुंचावे निर्वाण ॥

१३— वीश बोल आराधतां, टाले कर्मनी छोत ।
उत्कृष्टो रस ऊपजे, बांधे तीर्थङ्कर गोत ॥

१४— अनन्तज्ञान तणां धणी, सहु जीवां सुखदाय ।
गोत्र तीर्थङ्कर बांधसी; 'अरिहन्तना' गुण गाय ॥

१५— आठोंई कर्म खपाय ने, पहुँता अविचल ठाम ।
गोत्र तीर्थङ्कर बांधसी; 'सिद्धां' रा कर गुण ग्राम ॥

१६— पांच समिति तीन गुप्ति ए, आठों ही 'प्रवचन' माय ।
साचे मन आराधने, तीर्थङ्कर गोत्र उपाय ॥

१७— दुर्गत पडतां जीव ने, 'सद्गुरू' राखे सदाय ।
आचारना गुण आगला, गुरू ना गुण दीपाय ॥

१८— 'प्रव्रज्या' 'सूत्र' 'वय' तिहु, थीवर तणा बहु भेद ।
गुण गाओ साचे मने, राखो मुगत उमेद ॥

१९— चउत्थ छठादिक तप करे, रस तणो परिहार ।
गुण गाओ 'तपसी' तणा, होवे ज्युं खेवो पार ॥

२०— दुलहो मानव भव लह्यो सूत्र सिद्धान्त नो जोग ।
रात दिवस देवो करो, ज्ञान उपदेश प्रयोग ॥

२१— देव गुरू धर्म सरधना, तजदो मोह जंजाल ।
जो थांरे तिरणे हुवे, तो समगत निर्मली पाल ॥

२२— नाण दर्शन चारित्र तणों मन वचन न काय ।
लोक व्यवहार वलि सातमो, विनय मार्ग दीपाय ॥

२३— सांज सवारे बिहु टंका, पडिकमणो शुद्ध ठाय ।
गोत्र तीर्थंकर बांधसी, सदाज सुखिया थाय ॥

२४— मननी थिरता राख ने, ध्यान शुकलजी ध्याय ।
उतकृष्टो रस ऊपजे. तो तीर्थंकर पद थाय ॥

२५— अणसण तप पहिलो कह्यो, छेलो विउसग्ग जाण ।
बारे भेदे तपस्या करो, ज्यो पहुंचो निर्वाण ॥

२६— तन धन जोबन कारमो, न करो कोई गुमान ।
गोत्र तीर्थंकर बांधसी, दोरे सुपात्र दान ॥

२७— वेयावच दश प्रकारनी, करजो चित्त लगाय ।
कांइयक रसायण ऊपजे, दुःख दालिद्र दूरे जाय ॥

२८— मनुष्य जमारो पायने, कजियो राखो कांय ।
चार तीर्थ सर्व जीव ने, सुख शाता उपजाय ॥

२९— ज्ञान विना ए जीवड़ो, रड़वड़ियो संसार ।
जो थांरे तिरणो हुवे. ज्ञान अपूर्व धार ॥

३०— रस त्यागो तपस्या करो, जिसी होवे सगत ।
टालो अविनय अशातना, सूत्रनी करो भगत ॥

३१— मिथ्यात मार्ग उथाप ने, समकित मारग थाप ।
गोत्र तीर्थङ्कर बांधसी, कटसी सगलो पाप ॥

३२— साचे मन आराधसी, खुलसी ज्ञान की जोत ।
वीसूंही बोलज सेवतां, बांधे तीर्थङ्कर गोत ॥

३३— दानशील तप भावना, शिवपुर मारग चार ।
साचे मन आराधतां पामीजै भव पार ॥

३४— दान तणे परभावथी, पाम्यो 'सुबाहु' मान ।
सुमुख' ने भव साधु ने दीधो उत्तम दान ॥

३५— गवाल तणे भव साधुने, दीधो खीर नो दान ।
'शालिभद्र' नामे हुवो, 'श्रेणिक' दीधो मान ॥

३६— दीधा उड़दना बाकला, वीर ने 'चन्दनबाल' ।
वृष्टि हुई सोवन तणी, वरत्या मंगल माल ॥

३७— शास्त्र मांही इम कह्यो, दश प्रकारनो दान ।
सगला मांही बखाणियो, अभयदान परधान ॥
३८— 'जम्बू' कुंवर शील पालियो, छत्ता भोग संजोग ।
आठ रमणी प्रतिबोध ने छोड्यो संसारनो भोग ॥
३९— 'विजय' सेठ 'विजया' सती, सेठ 'सुदर्शन' सार ।
आपणी आतमा उद्धरी, शील तणो उपकार ॥
४०— 'राजमती' ने 'चंदना', 'द्रोपदी' ने वलि 'सीत' ।
जस फेल्यो संसार मे शील तणी परतीत ॥
४१— चेड़ानी साते सती, वीर वखाणी आप ।
जती सती नो जस घणो, शील तणे परताप ॥
४२— वेले बेले पारणो, आंबिल उज्झित आहार ।
वीर जिणन्द वखाणियो, धन धन्नो' अणगार ॥
४३— 'खंदक' मुनिवर आपणी, तपकर गाली देह ।
अच्युत देवलोके ऊपना, चव लेसी भव छेह ॥
४४— कोड़ भवांना संचिया, कटे कर्मों ना पाप ।
लब्धी अठाविस ऊपजे, तपस्या तणे परताप ॥
४५— भावना भावतां 'भरतजी' 'कंपिल' ब्राह्मण जाण ।
केवलज्ञान उपाय ने, पहुँता छै निर्वाण ॥
४६— हाथी तणे होदे चढ़ी, ऋषभ वांदण ने जाय ।
भाव थकी मुगती गई, धन 'मोरा' देवी माय ॥
४७— 'खंदक' ऋषि ने 'ढूंढण' मुनि, 'उदाई' 'गजसुखमाल' ।
छेड़े भाई भावना, मुगत गया ततकाल ॥
४८— ए चारूं मंगलीक छै, उत्तम चारूं ही जाण ।
चारां तणो सरणो करो ज्यो पहुंचो निर्वाण ॥

※ कलश ※

१— ए मगल आराधिने, अनन्त जीव मुगते गया ।
जाय ने अनन्ता जावसी, सूत्र कथा मे इम कह्या ॥
२— अठारे से पिचडोतरे वर्षे, काति शुद नवमी तणे ।
पूज्य 'बुधरजी' गुरु प्रसादे रिख 'जयमलजी' इण पर भणे ॥

(८)

❀ चौवीस दंडक नी सज्झाय ❀

१— भगवन्त भाखे गोयमा रे लाल,
'गति आगति' नो विचार हो भविक जन ।
श्री जिनधर्म बाहिरे रे लाल,
जीव रुल्यो अनन्ती वार हो भविक जन ॥

२— पहिलो दंड़क 'नरक' नो रे लाल,
'भवनपति दश' जोय हो भविक जन ।
'पांच कह्या थावर' तणा रे लाल,
ए गिणती मे सोले होय हो भविक जन ॥

३— 'वि' 'ति' 'चोइन्द्री' जीवड़ा रे लाल,
तिर्यञ्च ने नर ठीक हो भविक जन ।
'वाण व्यन्तर' ने 'जोतिषी' रे लाल,
चौविशमा 'विमाणीक' हो भविक जन ॥

४— छऊं ही नरकां तणी रे लाल,
आगत गत दोय जाण हो भविक जन ।
सातमी री दोय आगती रे लाल,
गति एको परमाण हो भविक जन ॥

५— 'भवणवई' 'व्यन्तर' 'जोतिषी' रे लाल,
पहिलो दूजो देवलोक हो भविक जन ।
आगत कही दोनों तणी रे लाल,
गत पांचो नो थोक हो भविक जन ॥

६— पृथवी पाणी वनस्पति रे लाल,
चवने दशमे जाय हो भविक जन ।
नरक टले तेविसां तणो रे लाल,
इणमे उपजे आय हो भविक जन ॥

७— तेऊ ने वाऊ तणी रे लाल,
आगत कही दश हो भविक जन ।
गत कही नवां तणी रे लाल,
ए जीव रुल्यो परवस होय हो भविक जन ॥

८— बि. ति. चोइन्द्री जीवनो रे लाल,
दश आगत ने गत हो भविक जन ।
तिर्यंच नी चोवीस कही रे लाल,
गत आगत कही संत हो भविक जन ॥

९— चौवीसे गत मनुष्यनी रे लाल,
बाविस मांहे थी थाय हो भविक जन ।
भगवन्त ना धर्म बाहिरा रे लाल,
जीवड़ो एम भमाय, हो भविक जन ॥

१०—तीजा सूं ले आठमा लगे रे लाल,
गति आगति कही दोय हो भविक जन ।
नव मांथी ले स्वार्थ सिद्ध थी रे लाल,
एक मनुष्य हिज होय हो भविक जन ॥

११—दंडक चोवीसां ऊपरे रे लाल,
भाव कह्या सूत्र जोय हो भविक जन ।
ऋषि 'जयमलजी' जोड़ इम कहे रे लाल,
गर्व न करजो कोय हो भविक जन ॥

---

(६)

दृढ–सम्यक्त्व

(तर्ज—ते गुरु मेरे उर बसो)

१— दृढ समकिती नर थोड़ला, इम भाख्यो जिनराय ।
दृढ समकित पाले तिके, वेगा शिवपुर जाय ॥ दृढ० ॥

२— सर सर कमल न नीपजे, वन वन चंदन न होय ।
घर घर सम्पति न पाइये, जन जन पंडित न कोय ॥ दृढ० ॥

३— हीरां की हूँडी नहीं, नहीं सूरां रा ग्राम ।
सिंहां का टोला नहीं, साध नहीं ठाम ठाम ॥ दृढ० ॥

४— सहू राजा न्यायी नहीं, केई राखे मरजाद ॥
सुगंध नहीं सहू फूल में, फल फल और सवाद ॥ दृढ० ॥

५— पुरुष सहू सूरा नहीं, सती नहीं सहू नार ।
क्षमावंत मुनि सहू नहीं जुदो जुदो आचार ॥ दृढ० ॥

६— समकितवंत कहिये घणा, मरम जाणे छे कोय ।
कुल-रूढ़ि भुरगी पछे, लोह-वाणिया जोय ॥ दृढ० ॥

७— एक लाख उनसठ सहस, वीर ना श्रावक कहाय ।
लाख इग्यारे इगसठ सहस, गोशाला ना सुणाय ॥ दृढ० ॥

८— कुल जैनी कोडां हता, साधां ने मांने न कोय ।
खोड़ काढे वर्तमान में, समकित किणविध होय ॥ दृढ० ॥

९— कुगुरां का वेहकाविया, हणे धरम-हित प्राण ।
जल थल भंगी परवतां, भटकत फिरे अजाण ॥ दृढ० ॥

१०—नाचे कूदे मोक्ष मांग के, आरंभ करे अनेक ।
जैन नहीं ओ फैन है, आणो हिये विवेक ॥ दृढ० ॥

११—पाप अठारे नवि परिहरे, पढे पाठ ने अर्थ ।
ज्यां में ज्ञान जाणो मति, नही छे वे निर्ग्रन्थ ॥ दृढ० ॥

१२—पर ने परचावे घणूं, पोते पाले नांहि ।
कुण मांने ज्यां की बातड़ी, मूढ पड़े फंद मांहि ॥ दृढ ॥

१३—आचारी शुद्ध आहारी भला, सत्यवादी विनीत ।
ते शुद्ध धर्मज भाखसी, जोवो सूत्र नचीत ॥ दृढ० ॥

१४—[1]तीजे सुपने चंद्रमा, दीठो चालनी रूप ।
टोला साधां का जूजुवा, साचो धरम-सरूप ॥ दृढ० ॥

१५—भगवती मे जूजुवा, क्यूं हिक बोल मे फेर ।
निन्हव सहु ने ऊथपे, ऐसो करे अंधेर ॥ दृढ० ॥

१६—'सूयगडंग' तेरमे (अ)ध्ययने, आगूंच भाख्यो एह ।
जिण साधां पे धरम लही, निन्हव होवे तेह ॥ दृढ० ॥

१७—मंद भाग्य करम के उदय, अहंकार के वसि जोर ।
सीखवियां दाखे छिद्र, गुरू ने कहे कठोर ॥ दृढ० ॥

१८—'गोष्ठमहिल' नी परे, गुरुनी प्ररूपणा छोड ।
अहंकारी आपणे मने, झूठी करसी झोड़ ॥ दृढ० ॥

---

[1] चंद्रगुप्त राजा का तीसरा सपना

१८—क्रोधी सूं अलगा रहे, सज्जन नहीं आवे नेरा रे ।
रीसे धम धम तो रहे, क्रोधी करे कांजर बेरा रे ॥ क्षमा० ॥

१९—हिंसा धरमी सूं राता रहे, ज्यां के जाडा पापो रे ।
साधु देखी रीसां बले, ते खोवे आपरो आपो रे ॥ क्षमा० ॥

२०—तामस तपियो नर इसो, आंख मिरच जिम आंजी रे ।
क्रोध विणासे तप सही, दूध विणासे कांजी रे ॥ क्षमा० ॥

२१—तप जप कोड़ पूरब तणो, क्रोधी खिण मे खोवे रे ।
क्षमा कियां गुण यश बढ़े, तिको पंथ विरला जोवे रे ॥ क्षमा० ॥

२२—अणहुॅता अवगुण कहे, गुण सह्न देवे ठेलो रे ।
आछा फल किम ऊतरे, क्रोधी विप री बेलो रे ॥ क्षमा० ॥

२३—क्रोधी कोरा वैरां बले, घट जावे कुल लाजे रे ।
कोई खेदो मत करो ईसको, ओछा जीवन काजे रे ॥ क्षमा० ॥

२४—एक घर मे क्रोधी हुवे, सघलां ने तल तलावे रे ।
जिण घर मे क्रोधी घणा, ज्यांरो दुख किम जावे रे ॥ क्षमा० ॥

२५—पंडित नर क्रोधे चढ्यो, कहिये बाल अज्ञानी रे ।
नीच चंडाल री ओपमा, दीधी केवलज्ञानी रे ॥ क्षमा० ॥

२६—कूंजड़ा जिम लड़ बोकरे, नीच घरां का चागा रे ।
किसा मनुष्य मे मनुष्य छे, ते पहियाँ कहीजे नागा रे ॥ क्षमा० ॥

२७—रीस कटारी ले मरे, पासी लेई छुरी खावे रे ।
केई कुवे बावड़ी पड़े, केई परदेसां जावे रे ॥ क्षमा० ॥

२८—घणा अधीरा आखता, रीस थी ऊठे धूंधी रे ।
आप बले औरां ने बाले, अकल तिणा री ऊंधी रे ॥ क्षमा० ॥

२९—जाणे दुख सूं छूट सूं, मूढ मरे विप खायो रे ।
आगे ही अधिका होवसी, तिणरी खबर न कायो रे ॥ क्षमा० ॥

३०—कोई हुवे भूत भूतणी, आयो उलटो भंडावे रे ।
मुख मे दिरावे खासडा, भूंडी तरे कढावे रे ॥ क्षमा० ॥

३१—ज्यूं क्रोध रूपी भूतज चढ्यां, कंपे डरावणी देहो रे ।
लाल आंख त्रिसूलो चढ़े, बके परवस तेहो रे ॥ क्षमा० ॥

३२—रीस कियां गुण को नहीं, राखजो आपणी लाजो रे ।
रीस थकी रोता फिरे, नहीं सरे कोई काजो रे ॥ क्षमा० ॥

३३—क्रोध कियां नरके पड़े, जिहां तो दुःख अपारो रे ।
छेदन भेदन वेदना, तिहां नहीं किण रो सारो रे ॥ क्षमा० ॥

३४—घर छोडी केई लड़े, भावे गृही ज्यूं बोले रे ।
भेख लजावे लोक में, वधे कठांसू तोले रे ॥ क्षमा० ॥

३५—केई साध ने साधवी, देवे दुरासी ने गालो रे ।
सरम मोसा दाखे रीस थी, बोले आल पंपालो रे ॥ क्षमा० ॥

३६—भेख लेई भोला थका, करे कजिया ने कारा रे ।
काण न राखे लोकरी, ते साधु नहीं ठगारा रे ॥ क्षमा० ॥

३७—जोम मांहे मावे नहीं, क्रोध अंध विकरालो रे ।
न गिणे वडां रो कायदो, ते साधु नहीं चंडालो रे ॥ क्षमा० ॥

३८—केई वडां सूं वेढा वहे, सरस आहार ने हेतो रे ।
गुरू सूं विण गुदरे नहीं, लड़ काढे पाधरे खेतो रे ॥ क्षमा० ॥

३९—वस्त्र आहार काजे कजिया करे, वले नाम धरावे साधो रे ।
रमना रा लोलुपी थका, अजेस वरते असमाधो रे ॥ क्षमा० ॥

४०—केई देखतां चाले आछी तरे, अण देखतां चाल ऊंधी रे ।
केवल ज्ञानी इम कह्यो, इणरी क्रिया कपट बूंदी रे ॥ क्षमा० ॥

४१—अवगुण काढ़े पार का हेता हेत न जांणे रे ।
परपूठे हलकी करे, ज्यांरो विश्वास कोई न आणे रे ॥ क्षमा० ॥

४२—कोई बात कांई समचे कहे, क्रोधी आप मे खांचे रे ।
तकतो ने बकतो रहे, चोर तणी पर राचे रे ॥ क्षमा० ॥

४३—बाप बेटा दोनूं लड़ पड़े, गालम गाल्यां आवे रे ।
रीस थकी सूझे नहीं, उल्टी मांम गमावे रे ॥ क्षमा० ॥

४४—माय बेटा न कूटती, ले लकड़ी ने दौड़े रे ।
क्रोध सूं पीड़ जां नहीं, नान्हा चूट पांसु तोडे रे ॥ क्षमा० ॥

४५—भाई दुख दायी हुवे, अणख ईसको आणे रे ।
क्रोध मान माया लोभे भर्या, आप आपरी ताणे रे ॥ क्षमा० ॥

४६—बूढा ते लड़तां थकां लक्षण छोरा नां थायो रे ।
नान्हा पण क्षमा करे, ते वडा माणस कहवायो रे ॥ क्षमा० ॥

४७—सासु बहु ते लड़ पड़े, चुट्टा माहो माहिं झाले रे ।
लाज लोपी लोकां तनी, हमे कहो कुण पाले रे ॥ क्षमा० ॥

४८--नणंद भोजायां, बहनड़ी, लड़े देवराणी जेठाणी रे ।
पड़दा ऊघाड़े रीस थी, न गिणे सगपण सहनांणी रे ॥ क्षमा० ॥

४९—राड़ बढ़े बुरी गारसूं, वास ग्राम भंडीजे रे ।
गम खाऊ गुण आगला, ज्यांकी लोक मे शोभा कहीजे रे ॥क्षमा०॥

५०—ठाम ठाम झगड़ा करे, बोले रीस रा भरिया रे ।
स्युं सुख पावे बापड़ा, क्रोध-जाल मे कलिया रे ॥ क्षमा० ॥

५१—खिण तोला मासो खिणे, वादी बडो विरोधी रे ।
पूरो किणसूं न ऊतरे, निपगो निपट क्रोधी रे ॥ क्षमा० ॥

५२—टाटी ते टूटी पड़े, भीत सहेसी भारो रे ।
ओछा कुल रा नहीं खम सके, खमेस भारी सारो रे ॥ क्षमा० ॥

५३—मजो गमावे क्रोध सूं, जावे नरक दुवारो रे ।
सूलां के रे साथ सूं, ऊपर गुरजां की मारो रे ॥ क्षमा० ॥

५४--क्रोधी सूं क्रोधी मिले, उल्टा उल्टा करम बंधावे रे ।
क्रोधी सूं क्षमा करे, तो वेर विघन टलि जावे रे ॥ क्षमा० ॥

५५—कलहो लगावे पर घरे, ते पापी दुख पासी रे ।
कलहो मिटावे पारको, ते सासता सुख थासी रे ॥ क्षमा० ॥

५६—अधीरा नर ऊछले, बके क्रोध अंध अपारो रे ।
वचन काढ़े अविचारियो, पछे पिछतावे बारंबारो रे ॥ क्षमा० ॥

५७—क्रोधी कुछ कुढ ने मरे, अकल गमावे आछी रे ।
भूंडो दीसे लोक मे, नहीं लेवे तोही पाछी रे ॥ क्षमा० ॥

५८—निज अवगुण सूझे नही, पर ने लगावे दागो रे ।
सीख दियां उलटो पड़े, आवे लागो लागो रे ॥ क्षमा० ॥

५९—सीख दियां ऊंधी माने, लागो किसो संतापो रे ।
वतलांया विलगे घणो, जांणे कोप्यो कालो सांपो रे ॥ क्षमा० ॥

६०—अणहूता अवगुण कहे आल देवे कोई कूरो रे ।
पर ने संतावे द्वेष थी, दुष्टी क्रोध में पूरो रे ॥ क्षमा० ॥

६१--भूंडी भूंडी बोले गालियां, लाज आणे नहीं कांई रे ।
लोक कहे ए माटिया, नितकी करे लड़ाई रे ॥ क्षमा० ॥

६२—छाया पड़ जावे डील रे, कुढ कुढ ने होवे कालो रे ।
यूं ही अनाड़ी लड़ पड़े, घाले रांधी हांडी कालो रे ॥ क्षमा० ॥

६३—कालो मूंडो क्रोधी तणो, न गिणे सेण सगाई रे ।
कांगा ज्यूं कजिया करे, मुख सोभा देवे गमाई रे ॥ क्षमा० ॥
६४—रीस वसे कजिया करे, तोड़े जूनि प्रीतो रे ।
हेत मिलाप गिणे नहीं, नहीं राखे कोई रीतो रे ॥ क्षमा० ॥
६५—कौडी कारण लड़ पड़े, तोड़े तिण सूं प्रीतो रे ।
रुपैये राड़ करे नहीं, ए उत्तमां की रीतो रे ॥ क्षमा० ॥
६६—मार कूट वाथां पड़े, देवे नरक री साई रे ।
ज्ञानी कहे ए मूरखा, यूं ही करे छोराई रे ॥ क्षमा० ॥
६७—धिग धिग क्रोधी जीवने, लड़तां लाज न आवे रे ।
वरजे तिण ने वेरी गिणे, कुढ कुढ रोस उठावे रे ॥ क्षमा० ॥
६८—क्रोधी जावे नरक मे, सिंह सरप होवे नीचो रे ।
जिहां जाइं तिहां पर जले, मरेज भूंडी मीचो रे ॥ क्षमा० ॥
६९—तप जप युद्ध सब सोहिलो, पिण सभाव मरणो दोरो रे ।
पर ने परचावे घणो, आपो रमीजे ते थोरो रे ॥ क्षमा० ॥
७०—भूंडी भूंडी सहू ओपमा, दीधी क्रोधी नर ने रे ।
थोड़े कह्यां समझे घणो, सुख लो क्षमा करने रे ॥ क्षमा० ॥
७१—आछी आछी सब ओपमा, क्षमावंत ने दीधी रे ।
अनंत गुण छै एह मे, गाढा चतुरां लीधी रे ॥ क्षमा० ॥
७२—रीस बसे मोटो मुनि धर्म ध्यान थी चूको रे ।
'प्रसन्नचंद्र' मुनि तिण समे, मन सूं जूंझण ढूको रे ॥क्षमा०॥
७३—'गजसुकुमार' कीवी क्षमा, तुरत फल लह्यो आछो रे ।
'सोमल' पापी दुर्मती, लही दुर्मति की लाछो रे ॥ क्षमा० ॥
७४—'खंधक' कुंवर, मोटो मुनि, क्षमा कीधी भारी रे ।
मन मांहे रोस आणी नहीं, देहनी खाल उतारी रे ॥ क्षमा० ॥
७५—'खंधक' रिसी ना शिष्य पांच से, महा बुद्धिवंता तापी रे ।
ज्यां ने घाणी मे पीलिया, ब्राह्मण 'पालक' पापी रे ॥ क्षमा० ॥
७६—रीस हुती खंधक ऋषि सूं, पांच सौ पील्या साथे रे ।
तिणां मुनि क्षमा आदरी, उण बांध्या करम माथे रे ॥ क्षमा० ॥
७७—क्रोध ने अलगो टालिये, अकल हिया मे आणो रे
क्षमा करी सुख लो खरो, आच्छो मिलियो टाणो रे ॥ क्षमा० ॥

७८—क्रोध सगलां मे छे सही, किण मे घणो किण मे थोड़ो रे ।
रीस हिया मे न राखसी, ते आगे ही होसी सोरो रे ॥ क्षमा० ॥

७९—केई समाई पोसा मे लड़े, भिड़े करमां रो खेचो रे ।
साहमों लजावे सांगने, कासूं धरम इणने भेद्यो रे ॥ क्षमा० ॥

८०—क्रोध करीने हारियो, मनुष्य जमारो सारो रे ।
गम खावो अकल विचारने, जिम महिमा वधे अपारो रे ॥क्षमा०॥

८१—रीस होवे घणा कालरी, मत राखो, दीर्घ क्रोधो रे ।
चौमासी आवे जरां, सगलासुं खमावो सूधो रे ॥ क्षमा० ॥

८२—दोस किसो सतगुरू तणो, कहेज साची बातो रे ।
भारी करमा नहीं भेदिया, ज्यांरे घणी हिया मे घातो रे ॥क्षमा०॥

८३—रोस चढियो उतार दे, पाछो मारे माणो रे ।
ते नर ज्ञानी जाण ज्यो, ज्यांरा जिनवर किया बखाणो रे ॥क्षमा०॥

८४—रीस न राखे केह सूं, ते साचा सूरबीरो रे ।
भव सागर हेलां तिरे, धरसी मन मे धीरो रे ॥ क्षमा० ॥

८५—क्षमा करसी ते जीत सी 'क्रोधी जासी हारी रे ।
सिखामण सतगुरू तणी, सेंठी राखो धारी रे ॥ क्षमा० ॥

८६—एक सिखामण सांभली, काढो हिया रो सालो रे ।
उपशम अमृत रस पीवो, होवो निरभय निहालो रे ॥ क्षमा० ॥

८७—भिन्न भिन्न वाणी सांभली, हलु करमां होसी राजी रे ।
क्रोध कदाग्रह छोडसी, रहसी तिणांरी वाजी रे ॥ क्षमा० ॥

८८—साधु क्षमा धर्म दाखवे, सूत्र तणे अनुसारे रे ।
पाले जिके अल्पमी, तिरे जिके हिज तारे रे ॥ क्षमा० ॥

८९—इम जाणी क्रोध निवारिये, राखो क्षमासु प्रेमो रे ।
सेवा करो सतगुरू तणी, रिख 'जयमलजी' कहे एमो रे ॥क्षमा०॥

---

(११)

❀ पन्द्रह परमाधर्मी देव ❀

[रागः—कोयलो पर्वत धूंधलो रे लाल]

१— परमाधर्मी देवता रे लाल,
ज्यां की पनरे जात हो-भविक जन ।
मार देवे पापी जीवने रे लाल,
करे अनन्ती घात हो-भविक जन ।
नरक तणा दुख दोहिला रे लाल ॥

२— 'आमे' देवता कोप करी रे लाल,
हण ने उछाले आकाश हो-भ० ज० ।
पड़तां ने भेले त्रिशूल सूं रे लाल,
देवे पापी ने त्रास हो भ० ज० ॥नरक०॥

३— 'आमरसे' देवता कोपियो रे लाल,
कुटका करे तिल मात हो भ० ज० ।
कलकलता ऊना करी रे लाल,
पकड़ी पापी ने खवात हो भ० ज० ॥नरक०॥

४— 'सामे' देवता कोप सूं रे लाल,
कर धरे करिखांत हो भ० ज० ।
पेट फाड़े ऊभो राखने रे लाल,
काढे पापी री आंत हो भ० ज० ॥नरक०॥

५— 'शबले' देवता ऊतावलो रे लाल,
नाड़ी कूसे ले हाथ हो भ० ज० ।
मार पछाड़े तड़फड़े रे लाल,
वलि चपेटा लात हो भ० ज० ॥नरक०॥

६— 'सद्दे' देवता रीस सूं रे लाल,
शस्त्र खड्गविस्तार हो भ० ज० ।
छेदे भेदे शरीर ने रे लाल,
देवे पापी ने मार हो भ० ज० ॥नरक०॥

७— 'विसद्दे' देवता कोप सूं रे लाल,
असुर करूर हो भ० ज० ।

मुद्गर ग्रही लोहनो रे लाल,
भांजि करे चकचूर हो भ० ज० ॥नरक०॥

८— 'काले' देवता कोपियो रे लाल,
पकड़ कुंभी मे घाल हो भ० ज० ।
अगनी लगावे आकरी रे लाल,
करे अताती लाल हो भ० ज० ॥नरक०॥

९— 'महाकाले' देवता कोप सूं रे लाल,
मांस काटी सूलां-सेक हो भ० ज० ।
खवावे पापी जीवने रे लाल,
जल जल तो विशेष हो भ० ज० ॥नरक०॥

१०—'असि' देवता रीस सूं रे लाल,
खड्ग आयुध ले हाथ हो भ० ज० ।
बटका करीने विखेर दे रे लाल,
करे पापी की घात हो भ० ज० ॥नरक०॥

११—'पत्ते' देवता कोपियो रे लाल,
पान जिसा शस्त्र बणाय हो भ० ज० ।
भाला सूं नांखे ऊपरे रे लाल,
छिन्न छिन्न करे काय हो भ० ज० ॥नरक०॥

१२—'धणुकुंभे' देवता कोप करी रे लाल,
धनुस चढाई ले तीर हो भ० ज० ।
वावे वाणज खांचने रे लाल,
वींधे पापी को शरीर हो भ० ज० ॥नरक०॥

१३—'वालु' देवता कोप सूं रे लाल,
करेज ताती भाड़ हो भ० ज० ।
भड़तो करे पापी जीवनो रे लाल,
ऊपर लगावे खार हो भ० ज० ॥नरक०॥

१४—'वैतरणी' देवता कोपियो रे लाल,
वैक्रिय वैतरणी वणाय हो भ० ज० ।
दुर्गन्ध घणी झाल नीकले रे लाल,
नाखे पापी ने मांय हो भ० ज० ॥नरक०॥

१५—'खरसरे' देवता कोप करी रे लाल,
करे सिलाती खामार हो भ० ज० ।

घीसे पापी रा पग बांधने रे लाल.
नांखे ले दूसार हो भ० ज० ॥नरक०॥

१६—'महाघोसे' देवता कोपियो रे लाल.
कूटी घाले कुंभी मांय हो भ० ज० ।
न्हासण ने सेरी नहीं रे लाल.
मार देवे यम राय हो भ० ज० ॥नरक०॥

१७—ऐसा दुखां सूं डरपने रे लाल.
कीजो धरम सूं प्रेम हो भ० ज० ।
सत शील दया आदरो रे लाल,
रिख 'जयमलजी' कहे एम हो भ० ज० ॥नरक०॥

---

(१२)

*गौतम-पृच्छा

(राग—ढोला रामत ने परी छोडने)

१— गौतम सामी पूछा करे,
सूत्र भगवती मांय हो ।
स्वामी ! प्रत्येक मास रो बाल को,
नरक किसी विध जाय हो ॥
सामी अर्ज करूं थांसू विनती ॥

२— वीर कहे राय ने घरे,
कोई राणी रा गर्भ मांय हो ।
गौतम ! बालक आइने,
उपनो दोय महिना रो थाय हो ॥
गौतम ! वीर कहे गौतम सुनो ॥

३— उण बालक रा तात ऊपरे,
फोजां मारण धाय हो ।
गोतम ! माता ने चिंता घणी,
जब गर्भ मे वैक्रिय वणाय हो ॥गो० वीर०॥

---

* *भगवती शतक १ उद्देशक ७*

४— सेना काढ ने युद्ध करे,
फोजां बोहली होय हो।
गौतम ¡ जीत करे मायतां तणी,
तीव्र प्रणामे जोय हो ॥ गौ० वीर० ॥
५— आर्त्त रौद्र ध्यान थी,
मरने नरके जाय हो।
गौतम ! प्रत्येक मास रो बालको,
बसतो गर्भ के मांय हो ॥ गौ० वीर० ॥
६— वले गौतम पूछा करे,
बालक गर्भ के मांय हो।
सामी ! प्रत्येक मास रो मर करी,
देव लोके किम जाय हो ॥ सा० अर्ज० ॥
७— बलता वीरजी इम कहे,
धर्म कथा सुणे माय हो।
गौतम ? सुणने वैराग ऊपजे,
हिवड़े हर्षित थाय हो ॥ गौ० वीर० ॥
८— जैसा प्रणाम माता तणा,
तेसा गर्भ रा होय हो।
गौतम ! तेहनो मन ते धर्म सूं,
सरधले इम जोय हो ॥ गौ० वीर० ॥
९— इतरा में जो चव करी,
गर्भ मांहे करे काल हो।
गौतम ! देव लोके जाय ऊपजे,
पामे सुख रसाल हो ॥ गौ० वीर ॥
१०—इम जाणी धरम कीजिये,
राखो ऊजल प्रणाम हो।
भविजन पोसह पड़िकमणा करो,
पामों अविचल ठाम हो ॥ सा० अ० ॥
११—जोड़ करी छे जुगत सूं
सांभल जो चित्त लाय हो।
रिख 'जयमलजी' इम कहे
राखो धर्म री चाय हो ॥ भ० वीर० ॥

———

(१८)

*गौतम-पृच्छा

दोहा—

१— गौतम साम पूछा करे, सूत्र भगवती मांय ।
तीनूं ही इन्द्रां तणी, ते सुणज्यो चित्त लाय ॥

[राग:—सामी म्हारा राजा ने धरम सुणावजो]

१— हाथ जोड़ी गौतम कहे,
नांमी वीर ने सीस हो सामी० ।
दोनूं इन्द्रज मोटका,
शक्र ने वली ईश हो सामी० ॥

२— हूं अरज करूं थांसू वीनती,
दोनूं ही देवलोग हो सामी० ।
ऊंचा नीचा किम अछे,
कह्यो हथेली नो जोग हो सामी० ॥
गौतम उपगारी इम उपदिसे ॥

३— दोनूं ही इन्द्रां के हुवे,
माहो मांही मेलाप हो सामी० ।
हां, गौतम ! मेलो हुवे,
कहे जिणेसर आप हो ॥ गौ० उ० ॥

(प्र०) ४— पहिला देवलोक को धणी,
ईशान पे जाय चलाय हो सामी० ।
आदर के अण आदरे,
पैसे दोढी मांय हो ? ॥सा० हू अरज०॥

(उ०) ५— वीर कहे आदर दियां,
बिण आदर नहीं जाय हो गोयम० ।
'ईशो' शक्रनी दोढ़ियां,
विना कह्यां धस जाय हो ।
गोतम पुण्याई ईसा की घणी ॥

---

* भगवती ३-१ ।

६— इमहीज वेसण बुलावणो
गमे आवण ने जांण हो गो०।
ल्होड़ बडाई मूहवी,
राखे बडां की कांण हो ॥ गो० पु० ॥

(प्र०) ७— विनयवंत गौतम कहे,
दोनूं इन्द्र अभिराम हो सामी०।
मांहो माहि मिसलत तणो,
आण पड़े कोई काम हो ? ॥सा० हू०॥

(उ०) ८— हां, गौतम! वेहूँ इन्द्र ने,
आपस मांहे काम हो ॥ गौतम ॥
ईशो उत्तर नो धणी,
सक्को दक्षिण नो ठाम हो ॥गौ० उ०॥

(प्र०) ९— वले गौतम कहे वीर ने,
दोनूं सुरां का राय हो सामी०।
आपस मांहे किण कारणे
झगड़ो ही पड जाय हो ? ॥सा० हू०॥

(उ०) १०—दोनूं ही इन्द्रां तणी,
तृण मात्र फेर थाय हो, ॥ गोयम ॥
एतो एकण की हद तणा
द्वीप असंख्य दब जाय हो ॥गो० उ०॥

(प्र०) ११—एह दोनूं ही मोटका,
होवे आपस मे राड़ हो सामी०।
वाद विवाद पड़यां थकां,
कौण छोडावण हार हो ॥ सा० हू० ॥

१२—झगड़ो मेटण मन करे,
सनत्कुमार इन्द्र आय हो ॥ गोतम ॥
मा सक्का मा ईसा तुमे
चुप झगड़ो मिट जाय हो ॥गो० पु०॥

१३—सनत्कुमार ए समकिती,
इत्यादिक पावे बोल हो सामी०।
वीर कहे छऊ भला,
जाव चरम नी टोल हो ॥ गौ० उ० ॥

(प्र०) १४—वलि गौतम पूछे वीर ने,
विनय करी शुभ विध हो सामी० ।
तीजे सुर इन्द्र पूर्वे,
कैसी पुन्याई कीध हो ॥ सा० हू० ॥
(उ०) १५—घणा साधु ने साधवी,
श्रावक श्राविका सार हो गौतम ।
माता सुख पथ्य को
हितनो वांछण हार हो ॥ गौ० उ० ॥
(प्र०) १६—कहे गौतम आयु कितो,
चवने जासी केत हो सामी० ।
(उ०) वीर कहे सागर सात को,
चव जासी महाविदेह खेत हो ॥गौ० उ०॥
१७—इम जाणी ने चेतजो,
कीजो धरम रसाल हो गौतम ।
रिख 'जयमलजी' इम कहे
पामो सुख रसाल हो ॥ गौ० उ० ॥

---

(१४)

❀ पाप-फल ❀

[रागः—चित्तोड़ी राजा रे]

१— सुंसाड़ा करंता रे,
सुर शेष धरंता रे,
दश दिन का भूखा रे,
खावण ने ढूका रे,
कूकारे पाड़े-कहे देव छोडावजो रे ॥
२— सांभल बहु आया रे,
दोड़ी ने धाया रे,
दांतों सूं काटे रे,
बेर आगला बाढे रे,
कुण काढ़े-ए नर बलवंत इसो रे ॥

३— मोटा वलवंता रे,
मन जोम धरंता रे,
किण सूं नही डरता रे,
आडा हि जखड़ता रे,
कहिता कुण मांसू करे बराबरी रे ॥

४— ऐसा अहकारी रे,
हुआ पाप सूं भारी रे,
नीचा जाय वैठा रे,
परवश किया सेंठा रे,
अति धेठा ए दीसे दीन दयामणा रे ॥

५— बिल बिल करंता रे,
देव देख हसंता रे,
पूछे छे गबरां रे,
अबे कंई खबरां रे,
वले करसी तूं पाप एसो आंधो वही रे ॥

६— अब के दो छोडी रे,
बोले बे कर जोड़ी रे,
हूँ धरम सूं भासूं रे,
नरके नहीं आसूं रे,
थांरो उपगार वले नहीं विसरसूं रे ॥

७— तड़की देव बोल्या रे,
चुपको रहे भोल्या रे,
नर-भव ते पायो रे,
पिण आले गमायो रे,
धायो रोटां को जब बीसर गयो रे ॥

८— अलगो नही मूकां रे,
जलती मे फूंकां रे,
बखतावर सगारे,
जाणे आण विलगारे,
घणी रे मनुहरां मूसल मुदगरां रे ॥

९— हा हा मुख जंपे रे,
थर थर ने कंपे रे,
न्हासी जो जावे रे,
पिण जावण न पावे रे,
हा हा मैं हिंसा रे पाप कैसा किया रे ॥

१०— आंसूडा झरता रे,
घणी रीवां करता रे,
भाला सूं भेदे रे,
तरवार सूं छेदे रे,
केई मार पचावे कुंभी मांहे घाल ने रे ॥

११— जीव मार्या हितियारे रे,
पाप लागा लारे रे,
झूठ बहुला बोल्या रे,
मरम पारखा खोल्या रे,
कीधा बले खोटा कर्मज चीकणा रे ॥

१२— देव कहे किण भरमायो रे,
तूं किण विध आयो रे,
मानव भव पायो रे,
मूरख यूंही गमायो रे,
नर भव लाधो धर्म करि सक्यो नहीं रे ॥

१३— कुगुरां भरमायो रे,
अधर्म पापे आयो रे,
द्वेष धरमी सूं धरता रे,
निंदा अछती करता रे,
सतगुरां रा वचन हिये नहीं भणिया रे ॥

१४— पछतावो करंतां रे,
मन खेद धरंतां रे,
कदि छूटका थावां रे,
नरभव अमें पावां रे,
कहे मनुष्य जनम लही सफलो करां रे ॥

१५— एहवा नरक दुखां सूं डरसी रे,
करणी धरम की करसी रे,
साधां की सेवा रे,
जिण सूं शिव सुख लेवा रे,
तिण सूं रिख 'जयमलजी' कहे धरम ने आदरो रे ॥

---

(१५)

❀ पाप-परिणाम ❀

[राग:—इम धन्नो धण ने परचावे]

१— धरम के हेते करे जीव की हांण,
ते होसी आंधा न काणा रे ।
फिर फिर मांगसी घर घर दाण,
बेचसी इंधण-छाणा रे ॥

२— पाप तणा फल देखो रे प्राणी,
पाप सब दुख होई रे ।
हीणा दीणा दीसे दुमना,
सार न पूछे कोई रे ॥ पाप० ॥

३— होय जावे वले बेहरा ने बोला,
गूंगा मूगा बड़का बोला रे ।
लूला टूटा फेरत डोला,
कूबड़ा ढूबड़ा भोला रे ॥ पाप० ॥

४— देही मे निकले फुणगल फोड़ा,
मार जाये नान्हा छोरा रे ।
दिन निकले घणा ज्यांका दोरा,
लांछण काढ़े कोरा रे ॥ पाप० ॥

५— होय जावे दारिद्री दोभागी,
जूं लीखां रहे लागी रे ।
नहीं मिले कपड़ा ने माथे पागी,
विपत हिंसा की लागी रे ॥ पाप० ॥

६— पूर्वे पूरी दया नहीं पाली,
नारी मिली कंकाली रे ।
नाक मे नहीं मिले पहिरण वाली,
जीमण ने नहीं मिले थाली रे ॥ पाप० ॥
७— इण भव परभव सूं नहीं डरती,
बोल घुरका करती रे ।
वात वात मांहे लड़ती,
आ कुवे बावड़ी पड़ती रे ॥ पाप० ॥
८— नारी आंख्यां काढ़े राती,
परतख वाले छाती रे ।
अरु वरु थे देखो वाती,
मरने दुर्गती जाती रे ॥ पाप० ॥
९— मरि जाये पिता ने माता,
पुत्र त्रिया राता रे ।
मरि मरि पावे नीची जातां,
अनंत संसारी थाता रे ॥ पाप० ॥
१०—इम जांणी ने दया पालो,
हिंसा जीवां की टालो रे ।
हिंसा सूं दुर्गति में जासी,
दया सूं शिव पद पासी रे ॥ पाप० ॥
११—किण रा काका ने किण री काकी,
मूल न जाणो बाकी रे ।
जो स्वारथ पूगे नहीं जांको,
तो सगला ही जावे थाकी रे ॥ पाप० ॥
१२—किण री बेटी ने किण रा बेटा,
जीवन चेतो घेठा रे ।
करि रह्यो घणा सट्टा पट्टा,
ले रह्यो काल लपेटा रे ॥ पाप० ॥
१३—बेहती वेला मे धरम कीजो,
दान सुपातर दीजो रे ।
रिख 'जयमलजी' कहे मति खीजो,
लाहो सुकृत नो लीजो रे ॥ पाप० ॥

---

(१६)

❀ न सा जाई न सा जोणी ❀

दोहा—

१— आदि अनादि जीवड़ो, भमियो चऊं गति मांय।
अरहट घटिका नी परे, भरि आवे रीती जाय ॥

२— पृथिवी, पाणी, अग्नि में, वायु वनस्पति काय।
तस रा भेद अनेक छे, ते सुणजो चित लाय ॥

(१)

(राग—आवे काल लपेटा लेतो)

१— विकलेन्द्रिय की बहु जातो रे,
न्यारा न्यारा भेद कहातो।
पांचे जात रा तिरजंचो रे,
ज्यां रो न्यारो न्यारो संचो ॥

२— मनुष्य तणा बहु भेदो रे,
सांभल जो धरि उमेदो।
जीव कुण कुण जातां पांमी रे,
किसड़ा धराया नामी ॥

३— न सा जाई न सा जोणी रे,
इत्यादिक सूत्र मांहे आणी।
श्री जिनराज-धर्म नही कीनो रे,
तिण नव नवा सांगज लीना ॥

४— एतो मेणा थोरी ने भीलो रे,
चोर मेर उघाड़े डीलो।
वावरी कोली भंगी मेवसिया रे,
आहेड़ी मांस रा रसिया ॥

५— पासीगर ने ठगवाजी रे,
चीड़ीमार मुल्ला ने काजी रे।
जटिया खटीक ने कसाई रे,
तुरक डूम तेली ने ताई ॥

६— धोबी सवणीगर न्यारा रे,
नाई नीलगर पीनारा ।
सकलीगर गांछा ने घोसी रे,
कल्लाल तरमां मोची ॥

७— रेबारी कावर ने बारी रे,
गूजर दरजिया ने बाजारी ।
कीरतन्या गांम करासी रे,
हुओ कीर कुंजरो घासी ॥

८— मसाणिया ने कारटिया रे,
वले जट वणे तं जटिया ।
कुंभार सिरावा सोनारो रे,
हुवो नायक भार-लदारो ॥

९— एतो सोदागर शंचारा रे,
खारोल लखारा कचारा ।
जट जाट सीखी कायथ रे,
चारण भोजक ने नायत ॥

१०— वले वेश्या दूती ने दाई रे,
भाटण देवी महमाई ।
केई कूड़ा बोला कपटी रे,
पर-दारा काछ लंपटी ॥

११— कुव्यसनी ने वले चुगलो रे,
तुरक मुसलमान ने सुगलो ।
एतो मेघवाल बेजारा रे,
ओड सिलावट चेजारा ॥

१२— वणकर जुलावा ने सैदो रे,
दीबान फकीर ने कैदो ।
गतराड़ा कांगा जलाल्या रे
बले भांड भंगेरा ने काल्या ॥

१३—नट गोड़िया ने गवार्या रे,
एतो बहीभाट पंवार्या ।
डबगर डूंम डाहर ने भरवा रे,
कबहीक भाट जीभका सरवा ॥

१४— हुवो बाजीगर रावलिया रे,
मद्य मांस खावण ने हिलिया।
गायन-कंचनियां अखारा रे,
मालजाद्यां मीतुख पंखारा॥

१५— रांधण भटियारा कठियारा रे,
भरावा कसारा ठंठारा ।
मढिया ने बिणजारा रे,
वले नायक भार-लदारा ॥

१६— एतो मणिहार ने पसारी रे,
रूवटिया चबीणा-दारी ।
तुनारा छपारा कासड़िया रे,
रैतवसीदार वसडिया ॥

१७— रंगरेज छींपा ने लोहारो रे,
माली दरजी ने सूथारो ।
भट भाट भोपा ने भरड़ा रे,
गरूवा ढेढां रां गुरड़ा ॥

१८— चंडाल भंगी ने भंगी रे,
हुवो सुमति-भंग कुसंगी ।
नीचा सूं ही नीची जातो रे,
सुणतां ही अचरज थातो॥

१९— सांसी कांजर सरगरा ने ढाढी रे,
इत्यादिक जातां काढी ।
जगदीश भणी शीष न नाम्या रे,
जब नीच खोलियो पाम्या ॥

२०— ब्राह्मण क्षत्रिय ने वांण्या रे,
शूद्र वर्ण चारे ही आण्या।
जीव व्यास पुरोहित हुवो रे,
जोसी विप्र वेदियो जुवो ॥

२१— हुवो हाकिम ने हुजदारो रे,
वले दफतर खान-लटानो ।
वले वाकानेश अमीनो रे,
हलकारो दरोगो कीनो ॥

२२— कारकून ने कोटवालो रे,
फोजदार ने देश-रुखालो ।
वगसी हुवो दीवाणो रे,
इम खान-सामा पिण जाणो ॥

२३— हुवो दोढ़ीदार सिकदारो रे,
चाकर हमाल कहारो ।
महावत हुवो वले सांणी रे,
चरवादार चोपदार जातां ए जांणी ॥

२४— कदे होय गयो राय हजूरी रे,
कचीटवियो करे मजूरी ।
उमराव हुवो सिरदारो रे,
खवास ने सेज-वरदारो ॥

२५— कव होय गयो मोटो ठाकर रे,
कव होय गयो गरीवो चाकर ।
नाजर खोजा ने खवासी रे,
राणी धाय वड़ायण दासी ॥

२६— नर खांपा खोचा खरड़ा रे,
कर दंड लगाया करड़ा ।
चोदरी कायथ पटवारी रे,
मापायत सादा चारी ॥

२७— डांडी राहगिरी धड़वाई रे,
शाह नगर-सेठ पदवी पाई ।
सायर कोटवाली लीधी रे,
हुवो प्यादो चाकरी कीधी ॥

२८— हुवो हुँडीवाल मुकारी रे,
जोखम लीवी करड़ी छाती ।
कदे मांडी दुकानां कोठी रे,
हुवो पोटलियो लदे पोठी ॥

२९— कदे च्यारे किराणा भरिया रे,
एतो जहाज समुद्रे खड़िया ।
हुवो बजाज सरापी रे,
धुर बोहरा पूंजी आपी ॥

३०— कोठार भंडार खजांनी रे,
राय सूं वातां कीवी छांनी।
जंवरी दलाल कयाली रे,
हुँडी दलाल जोखम माली॥

३१— कंदोई ने हटवाण्यां रे,
खेती करसण विधि जांण्या।
ए छत्तीसे ही कारखाना रे,
लोकां–प्रसिद्ध नहीं छाना॥

३२— रांधण पीसण पणिहारी रे,
वेदगी गीतेरण नारी।
जीव काया ना साजो रे,
करणी सूं सुधरे काजो॥

३३— जीव ऊंचे ऊंचे कुल में आयो रे,
काण कुरव बहु पायो।
हुवो महाराजा राव राणो रे,
केई कोटां खजाणो भराणो॥

३४— जीव लाखां दल मेला रे,
गढ कोटां रा मोरचा भेल्या
इम मीर अमीर पातिसाई रे,
जीव बार अनंती पाई॥

३५— धरम-सरधा प्रतीत न आई रे,
तो गरज सरी नही कांई।
कदे हुवो गिजेद्र साहो रे,
कदे हुवो पोटलीराहो॥

३६— महिना रोजगार गहगाटे रे,
कदे रह्यो रोटियां साटे।
कदे जोम मे बांकी गर्दन होवे रे,
कदे झुलक झुलक मुख जोवे॥

३७— हुवो दिलगीर कदे ही राजी रे,
संसार की माया चेरबाजी।
कदे हुवो भूपति भारी रे,
कदे वणीमग रांक भिखारी॥

३८— कभी महाराजा की राणी रे,
कव ढोयो पर घर पाणी ।
कवहीक हुई सेठाणी रे,
कदि होय गई मेहतराणी ॥

३९— कदे लाखां हजारां नर जीमे रे,
जीभ करे चभोला घी मे ।
कब हीक नहीं मिल्यो लुखो रे,
बले तुच्छ धान ते सूको ॥

४०— हुवो बाप निर्धन बेटो भारी रे,
इम पीढ्यां दर पीढ्यां विचारी ।
भारी गेहणा ने तुररा टांग्या रे,
कदे घर घर दाणां मांग्या ॥

४१— कब हुई हजारां गायां रे,
कब छाछ ने पर घर जायां ।
जीव बहोतर कला भणायो रे,
कदे ठठो मींडो नहीं आयो ॥

४२— कदे रूप चंद्रमा सो मूंडो रे,
कदे दोठां ही लागे भूंडो ।
कदे देव आनुपूर्वी आवे सांमी रे,
कदे हुवो नरक रो कामी ॥

४३— जीव आंधो हुवो कदे बोलो रे,
आंख मे फूलो डंबकडोलो ।
हुवो बांगो मुंगो ने गूंगो रे,
कदे डंबक डील हुरदंगो ॥

४४— हुवो रोग पांम ने खसरो रे,
जीव दुःख सह्यो परवश रो ।
कदे पेट आफरो बोजो रे ॥
कंपण वाय डील रे सोजो ॥

४५— कदे खाधां जटे नहीं आहारो रे,
हुवो फेरो वारंवारो ।
अजीर्ण वाय ओकारी रे,
हुवो अरस ने नासूर भारी ॥

४६— कदे मस्तक-शूल उहेगो रे,
कांन सले नयणां वेगो ।
आतक रोग पेट-शूलो रे,
हुवो मुख नो रोग अतूलो ॥

४७— इत्यादिक रोग ना बहु भेदो रे,
भव भव में पाम्यो खेदो ।
एहवा दुख बिपाक सूं डरसी रे,
जिके शुद्ध धरम आदरसी ॥

४८— शिव जैन तणा लिया भेखो रे,
तेहना भेद अनेको ।
सिनासी भगत घर-भोगी रे,
कालबेल्या जंगम जोगी ॥

४९— आयस कनफड़ा गलसेला रे,
पढिया पिंडानाथ शिव—चेला ।
गुदड़ भगत कबीर दादुपंथी रे,
गले पहरी जरजर-कंथी ॥

५०— नीरंजनी रामानंदी रे,
काशी - गुर गंगावंदी ।
तालियां पीटी मृदंग बजाया रे,
लेई लेई ने भेख लजाया ॥

५१— दरियाशा ने रामसनेही रे,
खेड़ापे-भेख लिया केई ।
तापस गुसांई नाम धराया रे,
समकित भेद नहीं पाया ॥

५२— यज्ञ होम किया जप ध्यानो रे,
किरिया काती-महासिनानो ।
हुवो जोग्यां तणी जमातो रे,
घणा जावं तीरथ-जातो ॥

५३— गंगा गया काशी केदारो रे,
प्रयाग पुष्कर ने हरद्वारो ।
द्वारिका ने जगनाथो रे,
बदरीनाथ हिमालय-गलातो ॥

५४— जीव अड़सठ तीरथ भेट्या रे,
पिण मन रा शल्य नहीं मेट्या।
जो जीवदया नहीं पाली रे,
तो यूंही भम्यो चकवाली ॥

५५— ए शिव रा भेखज जाणो रे,
सुणजो जैन तणा प्रमाणो।
श्रीपूज्य दिगम्बर पंड्या रे,
ज्यां के माथे रहे जल-जंड्या ॥

५६— करे उच्छाह पग-मंडा रे,
चऊं संघ मिलत है तंडा।
वधाईदार वधाई पावे रे,
हरसे करी पूज बधावे ॥

५७— नाम यति महातमा सामी रे,
घर रहित केई कामी।
किण ही ओघो मुखपती भाली रे,
केई द्रव्य राखे केई खाली ॥

५८— ए द्रव्ये जैनधर्म पायो रे,
भाव विना सिद्ध न कायो।
एतो भेख लेई ने पाले रे,
तिके जिन मारग उजवाले ॥

५६— केई कुल जैन रा तीरथ जाणी रे,
हिंसा करी धर्म मन आणी।
आबू शत्रुञ्जय गिरनारो रे,
चोथो समेतशिखर विचारो ॥

६०— अष्टापद गिर ने भेट्यो रे,
अंतर मिथ्यात न मेट्यो।
मांहिलो नहीं जाण्यो मर्मो रे,
तिण ने असल न आयो धर्मो ॥

६१— कदे पायो सुर अवतारो रे,
जिहां नाटक ना धुंकारो।
मुख आगल ऊभी रहे देवी रे,
तत्ता थई थई नाटक करेवी ॥

६२— देव शय्या सिंहासन जाणो रे,
जाणे ऊगा दशोदिशा भाणो।
गढ़ कोट मेहलायत अंगणाई रे,
पल्य सागर की थित पाई ॥

६३— पिण शुद्धो ज्ञान न आयो रे,
तो सुर-भव यूंही गमायो ।
ज्योतिषी ने भवनपती रे,
व्यंतर हुवो बार अनंती ॥

६४— व्यंतर नीचो पद पायो रे,
लागे लुगायां ने जायो ।
देई मंत्र ने झाड़ा रे,
गेलायाँ करे पवाड़ा ॥

६५— पकड़ी खासड़ा मुख घाले रे,
पिण देव को जोर न चाले।
एतो देव हुवो बलधारी रे,
तेहनी मनुष्यां इज्जत पारी ॥

६६— कोई देव रत्न ले जावे चोरी रे,
पछे इन्द्र वज्र मारे जोरी ।
ते तो छमासां केरी रीवो रे,
पाम्यो बार अनंती ए जीवो ॥

६७— भमी तिर्यञ्च रे भव आयो रे,
ऊंच नीच जाताँ ए पायो ।
ऊंच हाथी घोड़ॉ री जातो रे,
घणा मेवा मलीदा खातो ॥

६८— बहे कौतल फोजां आगे रे,
ज्यांरे पासे घणा नर लागे ।
ज्यां के गाम हजाराँ रा पटा रे,
लारे पुण्य संच्या गहगटा ॥

६९— नीच मे कूकर कागो रे,
खर भडसूरा अथागो ।
एह तिरजंच की गति पामी रे,
रुलियो अनंती बार भव भामी ॥

७०— पछे नरक तणी गति लाधी रे,
पापी जीव मारां वहु खाधी ।
माता मांहे अधिकी अधिकी रे,
वहु मारां पड़े विधि विधि की ॥

७१— तीनां तांई परमाधामी रे,
च्यारां में आहमी साहमी ।
पड़ी पल्य सागर की मारो रे,
थोड़ी तोही दश हजारो ॥

७२— ए च्यारे ही गति भूरी रे,
सुख दुख पाम्या भरपूरी ।
पुन्य रा फल लागा मीठा रे,
पाप रा फल दुष्ट अनीठा ।

७३— पुढवी-पाणी, तेऊ वायो रे,
वनसपति जुदे दाणे आयो ।
एक एक काय रे मांयो रे,
सरणी असंख्याती जायो ॥

७४— वनसपती मे काल अनंतो रे,
आप भाख गया भगवंतो ।
इम भमियो आदि अनादि रे,
नरभव जोगवाई लाधी ॥

७५— इम जाणी धरम आराधी रे,
अनंता शिव गति लाधी ।
गया जाय अनंता जासी रे,
सासता शिव सुख पासी ॥

७६— कदाच शिवसुख मे नहीं जावे रे,
तोही संसार रा सुख पावे ।
देवसूं चवी अवतार लीधो रे,
जिणरे आगे संच्यो धन सीधो ॥

७७— महल भूहरा बाग बारी रे,
मिले पशु चाकर धन भारी ।
मित्री न्यातीला हितकारी रे,
ऊंच गोत्र वर्णन भारी ॥

७८— रोग रहित परवड़ी वुद्धो रे,
विनीत यशोबल शुद्धो ।
उदय आसी ए दश बानां रे,
चाल्या सूत्र मे नहीं छाना ॥

७६— जाव जीव अंतराय नहीं आवे रे,
शिव सुख सासता पावे ।
राखे शुद्ध व्रत दृढ सारो रे,
ज्यांरे वरते जय जय कारो ॥

८०— हिवड़ाँ जाय अनन्ता जासी रे,
मुक्ति रा सुख अनन्ता पासी ।
ए रिख 'जयमलजी' री सुण वाणी रे,
कोई चेतो उत्तम प्राणी ॥

---

(१७)

❀ साधु चर्या ❀

(राग—अधर्मी अविनीत)

१— घर तजि लीवी दीख,
जेह ने एवी सीख ।
वीर जिनवर कहीए,
पंडिते सरधहीए ।

२— शुद्धा साधु निर्गन्थ,
चाले मुगती ने पंथ ।
सीख सतगुरु तणी ए,
खप राखे घणी ए ।

३— संयम शुद्ध आतम ने थाप,
पचख्या अठारे पाप ।
अनाचीर्ण टालता ए,
निर्ग्रन्थ षट्काय पालता ए ।

४— 'औद्देशिक' आदेय,
'मोल' रो लियो न लेय।
'नित्य-पिंड' जाणियो ए,
'माहमो' आणियो ए।

५— 'जीमे नहीं राते भात',
धोवे नहीं पग ने हाथ।
गंध कसवोही सही ए,
फूल-माला पहिरे नहीं ए।

६— न लेवे वींजणे वाय,
स्निग्ध वासी न रखाय।
भाजन गृही थको ए,
जीम्यां होवे व्रत-धको ए।

७— राज-पिंड शुक्रकार,
एहवे न लेवे आहार।
मर्दन नही करे ए,
दांतण परिहरे ए।

८— गृही ने न पूछे साता सुख,
आरीसादिक मे मुख।
साधु ने नहीं जोवणो ए,
सावधान होवणो ए।

६— न रमे पासा सार,
जूवे जीपण हार।
शिर छत्र नहीं धरे ए,
वैद्यक रो परिहरे ए।

१०— पावड़ी ने पेजार,
पहिरे नही पगां मझार।
अग्नि आरंभ सहीए,
दीवो करे नही ए।

११— शय्यातर-पिंड न खाय,
मांचादिक नही वेसाय।
घर गृही तणे ए,
बैसे नही सुपने ए।

१२— पीठी न करावे अंग,
गृही-वेयावच-संग।
करे करावे नहीं ए,
जात न जणावे सही ए।

१३— मिश्र पानी न वहराय,
गृही के शरणे नहीं जाय।
रोग मे पीड़ियो ए,
परीषह भीड़ियो ए।

१४— मूल आदो शूरण - कंद,
इक्षु — खंड प्रचंड।
लशुन मूला वली ए,
फल बीज पुष्फ-फली ए।

१५— सेंचल सैंधव जाण,
आगर रो परमाण।
समुद्र-खार जाणियो ए,
कालो लूण आणियो ए।

१६ - एह लवण तणी छे जात,
असंख जीव साक्षात।
धूप न खेवे मुणी ए,
वमन न करे गुणी ए।

१७— गला हेठला केश,
कक्षादिक गुह्य प्रदेश।
ते संवारे नही ए,
विरेचन लेवे नही ए।

१८— अंजन न घाले आंख,
मसी न लगावे दांत।
शुश्रूषा देह तणी ए,
वरजी शासन के धणी ए।

१९— पहिरे नही हीर ने चीर,
शोभा न करे शरीर।
बठार मठारिया ए,
श्री वीर जिन वारिया ए।

२०— ए सूत्र मे बावन बोल,
टाले साधु अमोल।
खप करे धणी ए,
पहुँचे शिवपुर भणी ए।

२१— ए बावन बोल प्रमाण,
निर्ग्रन्थ निश्चय जाण।
संयम मे रक्त घणा ए,
हलवा उपगरण तणा ए।

२२— पंच आस्रव ने ढांक,
मन मे नहीं राखे वांक।
छकायां रक्षा करे ए,
पंचेन्द्रिय संवरे ए।

२३— पंच समिति समेत,
पाले मुक्ति ने हेत।
तीने गुप्ति गोपवे ए,
पर ने नहीं कोपवे ए।

२४— टाले चार कषाय,
ममता मोह मिटाय।
उपसर्ग आव्यां नहीं चलेए,
काम-राग नहीं कले ए।

२५— छेद भेद टोला मांय,
पाड़े नहीं मुनिराय।
पक्षपात नहीं करे ए,
निंदा परिहरे ए।

२६— बड़ाँ रो विनय विवेक,
राखे नरमाई विशेष।
अहंकार तजे ए,
मृषा थकी सही लजे ए।

२७— पारका मरम ने मोस,
दाखे नहीं करि रोस।
जूना छिद्र सही ए,
ते ऊघाड़े नहीं ए।

२८— सरस दोषी लो आहार,
वांछे नहीं अणगार।
रस-लंपट पणो ए,
संयोग न मेलणो ए।

२९— न करे बहु हास्य लबाल,
कलहो घणू काल।
उखेलो मती करो ए,
दंभ ने कदागरो ए।

३०— न रहे साधां सूं दुष्ट,
तजे गृही सूं गुष्ट (गोष्ठी)।
कानापानी नहीं करे ए,
दोष अन्याय सूं डरे ए।

३१— गीतेरण रा गीत,
न करे नारी सूं प्रीत।
ख्याल तमासा जोवे नही ए,
कुतुहल तजे सही ए।

३२— न बोले करड़ी वाण,
परिहरे खांचाताण।
सुखदाई भाषा कहे ए,
पर ने नहीं कहे ए।

३३— उपजे पर ने संताप,
एहवी भाषा न बोले आप।
कर्कश मिश्र न दाखवे ए,

३४— न करे गृही ना काम,
खुशामदी नहीं ताम।
आवो जावो न बोलवे ए,
पर गुण नहीं ओलवे ए।

३५— सरल सभाव विशाल,
आतापन ले कालो काल।
वरसाले आतम दमे ए,
परीषह सहू खमे ए।

३६— ब्रह्मचर्य पाले नव वार,
संयम सतरे प्रकार।
वारह भेदे तप करे ए,
भव भव पातिक झरे ए।

३७— पाले पंच आचार,
वरजे विकथा चार।
पर अवगुण नही गहे ए,
शुद्ध मारग वहे ए।
कर्म आठे दहे ए॥

३८— निर्मोही नीराग,
कनक कामिनी रो त्याग।
छोडी रिद्ध छती ए,
संवेगी शुद्ध यती ए।
पाप न लगावे रती ए॥

३६— नहीं देवे पर ने दुख,
किण री न राखे रूख।
शत्रु ने मित्र सम गिणे ए,
देशना निरवद भणे ए।
षट जीवां ने नही हणे ए॥

४०— मोहनीय कर्म चडाल,
संत दे तेहने टाल।
राग-द्वेष परिहरे ए,
सब दुख क्षय करे ए।
मुक्ति रमणी वरे ए॥

४१— दु:कर करणी करेय,
परिषह सर्व सहेय।
केई देवता थया ए,
केइक मुगते गया ए।
सुख सासता लह्या ए॥

४२— तप संयम शुद्ध धार,
पूर्व कर्म करे छार।
शिव रमणी वरी ए,
छकाय रक्षा करी ए।
खम दम सम धरी ए॥

४३— दशवैकालिक अध्ययन जान,
तीजे भाख गया भगवान।
जोड़ 'जैतसी' तणी ए
कांइक 'जयमलजी' भणी ए।

---

(१८)

❁ पाप-पुण्य-फल ❁

[राग:—तुझ विन घड़ी]

१— एक चढे छे पालखी रे, बोहला चाले छे जी लार।
एकण रे सिर पोटली जी, परां नहीं पेंजार रे।
रे प्राणी पाप पुण्य फल जोय॥

२— एकण ने तुस ढोकला जी, पूरा पेट न थाय।
एकण रे रहे लाडवाजी, बैठा भाखे के मांय॥रे प्रा० पा०॥

३— एकज बैठा पालखी जी, लारे नाठा जी जाय।
जाय ने हेठा ऊतरे जी, दुडबड़िया दिराय॥रे प्रा० पा०॥

४— एक एक नर बोल्यां थकां जी, सुणने उपजे रीस।
एकण रे आंख फरूकड़े जी, हाजर हुवे दशवीस॥रे प्रा० पा०॥

५— एक एक मानव एहवा जी, रोग सोग नहीं थाय ।
एकीकाँ का डील को जी, टसको कद्दे न जाय ॥रे प्रा० पा०॥

६— एकण एकण के धन मोकलो जी, कह्यो कठा लग जाय ।
एक एक निर्धन एहवा जी, उधारो ही न मिलाय ॥रे प्रा० पा०॥

७— एक एक बत्तीसे अंग भण्या जी कहे ठामो जी ठाम ।
एकण के पूरा नहीं चढे जी, छकायां का नाम ॥रे प्रा० पा०॥

८— एकण रे बेटा घणा जी, घर अन को संकोच ।
एकण रे घर में घणी जी, तो एक बेटा कोई सोच ॥रे प्रा० पा०॥

९— एक नर ने नारी मिली जी, हसती बोले जी वेण ।
एकीकां ने इसड़ी मिली जी, दीठां वले ज नेण ॥रे प्रा० पा०॥

१०— एक घर घोड़ा गज घणा जी, रथ पायक विस्तार ।
मोटा मन्दिर मालिया जी, धन कण कंचन सार ॥रे प्रा० पा०॥

११— बे बांधव साथे जण्या जी, फेर घणो तिण मांय ।
एक पेट दुखे भरे जी, एक गिजंदर शाह ॥रे प्रा० पा०॥

१२— एक नर ते घोड़े चढ़े जी, एक नर पालो जी जाय ।
एक नर बैसे पालखी जी, एक चांपे छे पाय ॥रे प्रा० पा०॥

१३— एक घर नार गुणवंती जी, हसती बोले जी बोल ।
कलहगारी एकण घरेजी, चढियो रहे त्रिशूल ॥रे प्रा० पा०॥

१४— एक घर भोजन नवनवा जी, पूर्व पुण्य भरपूर ।
एक घर तुसका ढोकला जी, ते पिण न मिले पूर ॥रे प्रा० पा०॥

१५— राज ! न कीजे रूसणो जी, देव न दीजे रे गाल ।
जो कर बाह्या दोकड़ाजी, तो किम लूणे साल ॥ रे प्रा० पा० ॥

१६— पात्र कुपात्र आंतरो जी, जुवो जुवो करो रे बिचार ।
शालभद्र सुख भोगवे जी, पात्र तणे अधिकार ॥रे प्रा० पा०॥

१७— आण न खंडे जेह तणी जी, ढमके ढोले रे निसाण ।
खमा मुख सुं ऊचरे जी, दान तणे परमाण ॥रे प्रा० पा०॥

१८— पाप करणी सुं दुख पड़े जी, धरम करणी सुं सुख ।
करे जिसा फल भोगवे जी, रहे न किण री रुख ॥रे प्रा० पा०॥

१९— इम संसार ने देखने जी, भलो करो सहु कोय ।
तिण सुं रिख 'जयमलजी' कहे जी, लीजो पाप पुण्य फल जोय रे प्रा. पा.

(१६)

❀ श्री कृष्णजी नी ऋद्धि ❀

१— वाविसमा श्री 'नेम' जिनंद ए।
छोड़ दिया ते संसार ना फंद ए॥
२— तिणहिज काल समातणी वात ए।
सांभल चेतियां पाप क्षय जात ए॥
३— "द्वारिका" नगरी तणो विस्तार ए।
केतो सूत्र केतो परंपरा धार ए॥
४— अड़तालीस कोस मे लांबी ते जाण जो ए।
छत्तीस कोस मे पहुली पिछाण जो ए॥
५— सोना रो कोट ने रतनां रा कांगरा ए।
हेठे तो चोड़ा वलि उपर सांकरा ए॥
६— सतरे गज ऊंचा बारे गज नीव मे ए।
आठ गज चोड़ाई मे विचली सीव मे ए॥
७— एक हाथ कांगरा लांबा ऊंचा मठा।
अर्द्ध हाथ चोड़ाई मे सहुं कह्या सांमठा॥
८— आठ गज खाई चोड़ी ने ऊंडी कही।
बुर्ज फिरणी घणी सोभती छै सही॥
६— साठ तो कोड़ घर कोट मझार ए।
कोड़ बहोत्तर घर कोट रे बार ए॥
१०— बिरखा हुई दिन तीन मझार ए।
सोनैया वर्षी ने भरिया भंडार ए॥
११— लोकां रा पुन्य दीसे घणा पूर ए।
खावण ने अनाप मुंडे दीसे नूर ए॥
१२— वैश्रमण देवता एह रचना करी।
प्रत्यक्ष जाणिये देवतानी पुरी॥
१३— छिन्नु हजार आवास श्री कृष्ण ना ए।
इकवीस भोमिया ऊंचा आकास मां ए॥

१४-- चोपन हजार आवास बलदेव रा ।
भोम अठारे ऊंचा रह्या ऊपरा ॥

१५— बहोत्तर हजार आवास वसुदेव ना ।
दश भोमिया कह्या दसे दसारना ॥

१६— आठ भोमिया सहु राजा रा सोभता ए ।
महल सत भोमिया औरां रा ओपता ए ॥

१७— जाणी हसी सांमु आवे एहवा ।
रूप रंग कोरणी फावती जेहवा ॥

१८— वर्णन कहां लग कीजे घर तणा ।
देश परदेश ना देख रींजे घणा ॥

१९— पुण्यवंत लोकना इसा आवास ए ।
सरल सन्तोष दातार गुण तासए ॥

२०— राज करे श्री कृष्ण मुरार ए ।
दुश्मन भोमिया गया सहु हार ए ।

२१— वरस चालीस मंडलीक राजा रह्या ।
वरस चवदे फिरी देश ते साजिया ॥

२२— पुण्य प्रभाव ऋद्धि पामिया आध ए !
त्यारा मूंडा कने कुण कुण साध ए ॥

२३— 'समुद्र विजय' आदि दशे दसार ए ।
लोपे नही कोई किशन नी कार ए ॥

२४— बलदेव आददे पांच महावीर ए ।
भंजनहार धणां तणि पीर ए ॥

२५— कुमर कह्या वलि साढ़े तीन कोड़ ए ।
'परजुन' कंवर सगलां मांहीं जोर ए ॥

२६— संब प्रमुख दमतां कह्या दोहिला ए ।
साठ हजार दुर्दन्त छै एतला ए ॥

२७— 'महासेन' आदि बलवंत छै एतला ए ।
छप्पन हजार कह्या रिण पारका ए ॥

२८— वीर इकवीस हजार छै वांकड़ा।
'वीरसेणादि' वेरयां दल भांजणा॥

२६— 'उग्रसेन' आद दे सोल हजार ए।
मोटका राजा छै तेहना वार ए॥

३०— 'रूकमणी' आददे सहस बत्तीस ए।
राणिया हर्षधर पूरे जगीस ए॥

३१— एक एक ने दोय दोय वारांगना।
छिनु हजार गिणती करी आमना॥

३२— एतला रूप श्री कृष्ण वैक्रिय करी।
सुख संसार ना भोगवे श्री हरी॥

३३— वेश्या ना सहस अनेक प्रकार ए।
'अनङ्गसेना' सहुनो सरदार ए॥

३४— राय ईश्वर तलवरादिक अति घणा।
चरण श्री कृष्णना सेवे छै बहु जणा॥

३५— साठ हजार बेटा श्री कृष्ण ने।
सहस चालीस बेटी कही तेह ने॥

३६— लाख पच्चास पोता कह्या परपरा।
सुन्दर सोभता मोटकी जोत रा॥

३७— सगलां रा अधिपति श्री कृष्ण महाराज ए।
अनड़ नमाया सारया सब काज ए॥

३८— हाथी घोडा रथ सोभता सांवठा।
बयालिस बयालिस लाख छै एकठा॥

३६— कोड अडतालिस परवडा।
सामने कामने तुरत हाजर खड़ा॥

४०— पदवी वासुदेव नी मोटकी ना धणी।
नवमा नारायण वात तेहनी घणी॥

४१— कृष्ण 'बलभद्र' नी जोड़ी छै दीपती।
चन्द्र ने सूरज ज्यूं जगत मे सोहती॥

४२— द्वारामती तणो पूनम चंद ए।
धर्म दीपावतो नरां नो इंद ए॥

४३— धरम दलाली करी घणां ने तारिया।
दीक्षा दिराय ने पार उतारिया॥

४४— हिंसा में धर्म हिरदे नहीं आंणता।
दया मे धरम ते साचो कर जाणता॥

४५— समकित दृढ़ तीर्थङ्कर पद लही।
मोक्ष विराजसी सिद्ध होसी सही॥

४६— पिण उणवार मे नहीं कोई भोमियो।
इणां सूं तेग बांधे जिको जनमियो॥

४७— गालिया मान बांका सर कर दिया।
पाय लगाय सेवग अपणा किया॥

४८— महाबलवंत कालीनाग ने नाथियो।
कंस ने मार जरासिन्ध पछाड़ियो॥

४९— एहवा सूर जगत अवदीत ए।
तीन सो साठ संग्राम किया जीत ए॥

५०— सोवनी नगरी सूत्रनी साख ए।
ते पण बल जल हूय गई राख ए॥

५१— किसनजी रो मन हुओ दिलगीर ए।
कोई दिसे नहीं भांजणहार पीड़ ए॥

५२— जोड़ जादवां तणी सोहती सूल ए।
देखतां देखतां हुय गई धूल ए॥

५३— गाढ ने जोम हुँ तो घट मांय ए।
ऋद्धि थोड़ा मे गई विललाय है॥

५४— एहवो जाणने चेते नहीं लिगार ए।
त्यां नरां ने पड़ो तीन धिक्कार ए॥

५५— एहवो जांण धर्मपाल सुध गति गया।
त्यां नरां ने धन धन जग मे कह्या॥

५६— एह संसार प्रत्यक्ष असार ए।
केहना मात पिता सुत भार्य ए॥
५७— स्वारथ देख मिले सहु आय ए।
स्वारथ चूकियां देवे छिटकाय ए॥
५८— एकलो आयो ने एकलो जावसी।
नहीं चेत्यां तिके घणुं पछतावसी॥
५९— एहवो जाण निरग्रन्थ गुरु धारिये।
कुगुरु, कुदेव, कुधर्म निवारिये॥
६०— मोह कषाय ने छोडी काया कसो।
निडर नगरी मोक्ष मांहे बसो॥
६१— सासता सुखां सू राखजो प्रेम ए।
सदावरते जठे कुशल ने क्षेम ए॥
६२— निर्मल भावथी कीजो नित नेम ए।
रिख 'जयमलजी' कहे एम ए॥
६३— साधु दयाधर्म कहे तिके भली।
चेतजो वेग ने पूरजो मन रली॥

———

(२०)

❀ 'भविष्यत् काल के तीर्थङ्कर' ❀

१— प्रथम महाराज 'श्रेणिक' तणो जीव ए,
हुसी 'पदमनाभ' तीर्थङ्कर अतीव ए।
वीर नो पीतरियो 'सुपास' ए,
हुसी 'सूरदेव' दूसरो भास ए॥
२— हुसी 'सुपास' करी करतूत ए,
तीजो 'उदय' 'कोणिक' तणो पूत ए।
मारयो ठग जिणे पोसारे मांय ए,
आवती चौवीसी मे तीजो जिनराय ए॥

३— 'स्वयं प्रभु' चोथो जिनेश्वर जाणिये ए,
'पोटिल' तणो हिज जीव वखाणिये ए।
'सर्वानुभूति' अभिराम ए,
होसी 'दृढायु' इसो कोई नाम ए ॥

४— 'कीर्ति' जीव नामे इम दाखियो ए,
छठो जिनेश्वर 'देवश्रुत' भाखियो ए ।
सातमो जीव 'शंख' श्रावक तणो ए,
हुसीय जिन 'उदय' नामे जस अति घणो ए ॥

५— 'आणंद' नामे कोई उत्तम प्राणियो ए,
'पेढाल' नाम जिन हुसी अष्टम वखाणियो ए।
हुसीय 'सुनन्द' कोई जीव चेड़ानन्द ए,
'पोटिल' नाम ए नवमो जिनंद ए ॥

६— 'शत कीर्ति' नामा हुसी दशमो जिणू,
'शतक' जीव महादेव मोटो गिणू ।
इग्यारमो 'सुव्रत' जिन हुसी 'देवकी' तणो,
बारमो 'अमम' 'कृष्ण' जीव ए भणो ॥

७— 'निकपाय' तेरमो जीव 'बलदेव' ए,
हुसीय जिणन्द करसी सुर सेव ए ।
माय बलभद्रनी राणी ते 'रोहणी' ए,
चवदमो 'निष्पुलाक' जिन हुसी सोहणी ए ॥

८— 'निर्ममनाथ' जिनेश्वर पनरमो ए,
'सुलसानो' जीव हुसी जब शुभ नमो ए।
सोलमो 'चित्रगुप्त' जिन 'रेवती' हुसी,
सत्तरमो 'समाधि' 'मंगल' जीव शुभमति ॥

९ – अठारमो 'संबर' 'सयत्न' जीव जिन हुसी,
साँभलने भवजीव हुयजो खुशी ।
'दीपायन' जीव 'जशोधर' उगणीशमो,
'विजय' कोई जीव जिन हुसी वीसमो ॥

१०— इक्कवीसमो 'विजय' जिन जीव 'नारद' तणो,
बावीसमो 'देव' जिण 'अंबड़' नो गिणो ।

सज्झाय-भविष्यत् काल के तीर्थङ्कर

तेवीससो 'अमर' जीव 'अनन्तवीर्य' नमो,
स्वामी 'बुध' जीव हुसी 'भद्र' चोवीसमो ॥

११— एह आवती चोवीसी नाम ए,
दाखिआ भगवन्त आगूंच नाम ए।
शाखिया केइक प्रसिद्ध केई अप्रसिद्ध कया,
उत्तम प्राणि तहत्ति कर सरदया ॥

१२— एमी जाणने दयाधर्म पालजो,
शंका कंखा ने कुगत टालजो।
सूत्र 'समवायंग' मांहे निचोड़ए,
तिण अनुसारे रिख 'जयमलजी' कीनी जोड़ ए॥



जय–वाणी

(३)

उपदेशी पद

(१)

❀ पंचम आरा ❀

१— पहिले पद अरिहन्त जाणी,
ज्यांरो भजन करो भवियण प्राणी ।
ज्यांरा नाम थकी जय जय कारो
पूरो सुख नहीं पंचमे आरो ॥

२— हिवड़ां तो जीव पचे रे घणो,
कोई पार नहीं रे दुखां तणों ।
तेरे तिण गाटी लागे लारो ॥ पूरो० ॥

३— नित उठ गांवड़ा जावे,
वलि मस्तक भार उठाई लावे ।
नींठ नींठ पेट भरे जीवां रो ॥ पूरो० ॥

४— देश विदेशां मे नित्य भमे,
वलि आलस सेती दिन गमे ।
वलि आमि ने सामी झंपा मारो ॥ पूरो० ॥

५— किणहि कने विणज मांही तोटो,
इम जाणी ने दुःख लागो मोटो ।
वलि रात दिवस छल बल पाड़ो ॥ पूरो० ॥

६— किणहि कने विणज में नफो घणो,
पिण सोच लागो रे एक पूत तणो ।
पुत्र होसी तो नाम रेसी लारो ॥ पूरो० ॥

७— पुत्र तणो तो सुख फलियो,
पिण पाड़ोसी खोटो मिलियो ।
और लेणायत लागे लारो ॥ पूरो० ॥

८— माता तो पुत्र घणा जावे,
नारी आयां पीछे न्यारा हुय जावे ।
एक एक रे नहीं सारो ॥ पूरो० ॥

९— पाड़ोसी री दिश नीकी,
पिण घर मे नारी काली कीकी ।
वा रात दिवस छाती बारो ॥ पूरो० ॥

१०— नारी मिली पुण्य जोग,
गिण देही ने आण घेरयो रोग।
फोड़ा फुणकला छलबल आरो ॥ पूरो० ॥

११— देही मे सर्व शाता पाई,
पिण घर मे पुत्रियां घणी जाई।
तिण री तो चिन्ता घणी लारो ॥ पूरो० ॥

१२— संसार मे दुःख छे रे घणां,
केई राजकाल ने धन तणां।
एक एक लागा लारो ॥ पूरो० ॥

१३— एहवो जाणी ने धर्म करो,
वलि समता मन मांही धरो।
रिख 'जयमलजी' कहे सुख सारो ॥ पूरो० ॥

---

(२)

❀ यह मेला ❀

१— हटवाड़े मेलो जिसो, जग में जाणो रे एह।
बहुली रे प्रीतज बांधने, तोड़ज जाय सनेह ॥

२— के चाल्या के चालसी, केई चालण हार।
रात दिवस वहे वाटडी, चेते नहीं रे लिगार ॥

३— कुटुम्ब कारण कर्म बांधने, पड़ियो नरकां मे जाय।
एकलड़ो दुःख भोगवे, कुण स्यावे छुड़ाय ॥

४— स्वारथ केरा सहु सगा, राखे हेत सनेह।
विण स्वारथ वाहला जिके, तुरत दिखावे छेह ॥

५— परदेशी परदेश मे, किण सु करे रे सनेह।
आयां कागद उठ चले, आंधी गिणे नहीं मेह ॥

६— काल अजाणक ले चले, ना गिणे वार कुवार।
अवसर वार न अटकले, कर जावे खून अपार ॥

७— दुखिया देखी वालहा, मिलिया बहुला रे लोग ।
देखतां रा जीव उठ चले, नहीं कोई राखवा जोग ॥

८— वाहला विना एको घड़ी, सरतो नही रे लिगार ।
वरस विचे केई वह गया, पाछा नहीं समाचार ॥

९— काची कायो रो किसो गारबो, जतन करतां रे जाय ।
उणीहारो भूले गया, नहीं मिलिया रे आय ॥

१०— किम दुख पावे रे मानवी, सूतो मोहनी रे नींद ।
काल खड़ो थारे बारणे, जिम तोरण आयो वींद ॥

११— वडा वडेरा चल गया, तूं भी चालण हार ।
क्यूं वूड़े रे वापड़ा, कर कर टेंगार ॥

१२— मात पिता घर हाटनो, ममता दुःख दाय ।
मूरख मांड़े मोहनी, अन्ते छोड़ी ने जाय ॥

१३— खरची हुवे तो खाइये, नहीं तर मरिये भूख ।
जिन धर्म भाता बाहिरो, सहे भव भव मे दूप ॥

१४— वट पाड़ा छे मोचना, पाखंडी अनेक ।
ज्यांरा डिगाया मत डिगो, धारो शुद्ध विवेक ॥

१५— कई हिंसा मे धर्म कहे, कई कहे साधु नांहि ।
आपतो उलटे पंथ पड्या, नाखे अवरां ने मांहि ॥

१६— थिर सुख चाहो जो तुमे, सेवो साधु निर्ग्रन्थ ।
पाप अठारे परिहरो, लीजो मुगत नो पंथ ॥

१७— काचो सगपण कुटुंब नो, सिल सिल विखर जाय ।
साचो मेलो धर्म नो, अविचल मेलो थाय ॥

१८— मांस खाय मदिरा पिये, परनारी संग जाय ।
ते नर ढोलां बाजतां, पड़े नरक रे मांय ॥

१९— माया सहू जग कारमी, साचो श्री जिनधर्म ।
रिख 'जयमलजी' इम कहे, मेटो मिथ्यात भर्म ॥

———

(३)

❀ विरक्ति पद ❀

गज घोडा देख भुलाणो रे ॥ ध्रुव ॥

देव दानव ने चक्री हलधर,
ब्रह्मा विष्णु बखाणो रे ।

१— 'सनत्कुमार' पिण चोथो चक्री,
जाणे ऊगियो भांणो रे ।
देवता रूप देखण ने आयो,
पिण रोग थई कुमलाणो रे ॥ गज० ॥

२— 'संभूम' नामे आठमो चक्री,
नर नो इन्द्र कहाणो रे ।
सातमो खण्ड चल्यो साधन ने,
पाणी मे डुबकाणो रे ॥ गज० ॥

३— लंका सो कोट समुद्र सी खाई,
सो 'रावण' गर्वाणो रे ।
कामी 'सीता' आप हर लायो,
'लक्ष्मण' हाथ मराणो रे ॥ गज० ॥

४— 'ब्रह्मदत्त' नामे बारमो चक्री,
पूरब कीध नियाणो रे ।
'चित्त' तणो उपदेश न मान्यो,
सातमी नरक पड़ाणो रे ॥ गज० ॥

५— सात से नार नो पिउ 'पद्मोत्तर',
अधिको मगज भराणो रे ।
'द्रौपदी' चोर कुकर्म सूं मंडियो,
त्रिया भेष कराणो रे ॥ गज० ॥

६— 'जरासन्ध' त्रिखण्ड नो भुक्ता,
ऋद्धि देखी गर्वाणो रे ।
'कृष्णजी' सूं सामो मंडियो,
तण मे खेह मिलाणो रे ॥ गज० ॥

७— कोठा भरिया खोड़ा भरिया,
अन्न बहु भेलो कराणो रे ।
छिन मे छोड गयो पर भव मे,
साथ न चलियो दाणो रे ॥ गज० ॥

८— रात दिवस तूं धन ने काजे,
कर रयो वेजो ने ताणो रे ।
जाड़ा पाप करी ने प्राणी,
पेट भरी ने अण खाणो रे ॥ गज० ॥

९— एक दिवस तो आगे ने पाछे,
है सगलां ने जाणो रे ।
न्यात जात सगलां के विच मे,
कालज लेसी ताणो रे ॥ गज० ॥

१०— ऐसो काल जोरावर जाणी,
मन मे समता आणो रे ।
ऐसी सीख दे ऋषि 'जयमलजी',
पायो नर भव टाणो रे ॥ गज० ॥

---

(४)

❀ मिनख-जमारो ❀

प्राणी कब ठाकुर फुरमायो रे ॥ ध्रुव० ॥

१— नरक निगोद में भमतां रे प्राणी,
मानव नो भव पायो रे ।
निडर थई ने छाकियो चाले,
फाटे रोटां रो धायो रे ॥ प्राणी० ॥

२— ऊंधो मुख दश मास गर्भ मे,
लटक रह्यो जर मांयो रे ।
अब तो बहु अछनायां मांडी,
दोनों बखत मे नहायो रे ॥ प्राणी० ॥

३— जो कोई खेल तमसो मंडियो,
तुरत देखण न जायो रे ।
धर्म कथा सुणवानी वेला,
पेठो रहे घर मांयो रे ॥ प्राणी० ॥

४— मोटी एक इग्यारस आई,
कन्दमूल फल खायो रे ।
मेवा दूध सीरो ने मावो,
एकलड़ो गटकायो रे ॥ प्राणी० ॥

५— जाय तूंही करम करण ने,
परनारी घर मायो रे ।
पंचां में सतगुरू ने मूंढे,
सूंस लेतां सरमायो रे ॥ प्राणी० ॥

६— एकर मिनख जमारो पायो,
पूरब जोग कमायो रे ।
हिंसा मांहे धर्म परूपे,
कुगुरां रो भरमायो रे ॥ प्राणी० ॥

७— पच रह्यो तू दिन ने राते,
संसार रूप सरमायो रे ।
हित तणी कोई सीख देवे तो,
क्रोध करे घर मायो रे ॥ प्राणी० ॥

८— आपणो पेट भरण के ताई,
पर घर नांखे ढायो रे ।
परपूठे तो वरतज वाढे,
मूंडे करे नरमायो रे ॥ प्राणी० ॥

९— जिण सेती तूं आंटज राखे,
जेहने घर घर मांई रे ।
पाप्यां रो तूं पखज खांचे,
सो माठी करे कमाई रे ॥ प्राणी० ॥

१०— कब एक तूं तो रांकज हूवो,
कभी हुवो मोटो रायो रे ।

जाड़ा पाप करने रे प्राणी,
उपजे छकाय मांयो रे ॥ प्राणी० ॥
११— मरती वेला दही ने मिश्री,
घाले मूंड़ा मांयो रे ।
रिख 'जयमलजी' कहे सूंम करावे,
तो रोवे के सरमायो रे ॥ प्राणी० ॥

---

(५)

❀ शिक्षा पद ❀

दुनिया में बहुत दगाई रे ॥ ध्रुव० ॥

१— जेहना हुक्म कथन नहीं लोपे,
जिणनोईज गायो गाई रे ।
जिण घर नों तूं टुकड़ो खावे,
सो घर नाखे ढाई रे ॥ दुनि० ॥
२— थोड़े गुन्हे आपकी पगड़ी,
अपणे हाथ बंगाई रे ।
पेला ने धन पात्र देखी,
लांबा खड़ां लगाई रे ॥ दुनि० ॥
३— मुंडे तो बहु मीठा बोले,
मन राखे कपटाई रे ।
दाव पड़्यां तो घर पेलां नो,
नाखे झट झपटाई रे ॥ दुनि० ॥
४— अपणा लोभ लालच के तांई,
न गिणे सेण सगाई रे ।
बाप मुंड़े तो भणे नाकारो,
बेटा पे लेहे मंगाई रे ॥ दुनि० ॥
५— आरंभ पाप करण के तांई,
आखी रात जगाई रे ।
नाम भजन सामायिक वेला,
बेठो खाई बगाई रे ॥ दुनि० ॥

६— नाटक गीत तमाशो देखण,
तुरत हरक सूं जाई रे ।
धर्म कथा साधां रे दर्शन,
जातां पग लड़खड़ाई रे ॥ दुनि० ॥
७— मन मे समता भाव न आणे,
साधां रे दर्शन आई रे ।
रिख 'जयमलजी' कहे नरभव पामी,
कहा सिद्धि ते पाई रे ॥ दुनि० ॥

---

(६)

❀ कलि-युगी लोक ❀

कल-जुग रो लोक ठगारो रे ॥ ध्रुव ॥

१— पापनी वातां वल्लभ लागे, धरम लागे खारो रे ।
अपणां बोल उपर के तांई, तुरत लगावे पाड़ो रे ॥कल०
२— थोडी सी कोई सीख देवे तो, मांडे कजियो तो कारो रे ।
मूंढ़ा मांसू माठो बोले, न गिणे थारो ने म्हारो रे ॥कल०
३— जीती तो कोई विरला जासी, दुःखम पंचम आरो रे ।
धर्म तणो लवलेश न माने एतो हुय रयो ऊँठ नगारो रे ॥कल०
४— आखो घर कर देवे खाली, जे कोई चाढ़े धगारो रे ।
परमार्थ धर्म के तांई, न हुवे सेण सगा रो रे ।।कल०
५— जो मिले खाण पहरण के तांई, तो घणी बजावे वाहरो रे ।
दान शियल तप भावना भाई लाहो न लीयो लारो रे ॥कल०
६— लालच लोभ सगा के तांई, भाई पुत्र नो भाड़ो रे ।
इतरा ना बंधण मे पड़ियो, न करे दयाधर्म सारो रे ॥कल०
७— पर ना दूषण छिद्र हुवे तो, हिरदे राखे धारो रे ।
धर्म कथा ज्ञाननी वातां, ते घाले विसारो रे ॥कल०
८— पापारभ नो आलस नांणे, विणज करे छे दगा रो रे ।
ज्ञान नी चर्चा धर्म करण ने, उद्यम नही है लिगारो रे ॥कल०
९— अहंकार पर नोकर राखे, वातां साटे विगाड़ो रे ।
ऋषि 'जयमलजी' कहे इसडा प्राणी, किम पावे भवपारो रे॥कल०

(७)

प्राणी !

प्राणी किम कर साहिब रीजे रे ॥ ध्रुव ॥

१— दया तणो मारग शुद्ध दाखे
तिण सूं तूं न पतीजे रे ।
असत भाषी ने हीण आचारी,
ते गुरु आयां रींझे रे ॥प्राणी०॥

२— विकथा तने वल्लभ लागे,
धर्म कथा सुण खीजे रे ।
हिंसा कर कर हुवे तूं राजी,
किसी सीख तोय दीजे रे ॥प्राणी०॥

३— [1]वासां मांहे करवो पाणी,
ऊनो ऊनो कर पीजे रे ।
साधु देवे सखरी सिखामण,
तब तूं तिण सूं खीजे रे ॥प्राणी०॥

४— संसार ना कारा कजिया मे,
त्यां तूं आ घोलीजे रे ।
सामायिक वखाण सुणवानो,
ए कोई काम न सीजे रे ॥प्राणी०॥

५— जब कोई दे आछी सिखामण,
तब तूं तिण सूं खीजे रे ।
पाप करी ने हुय रयो राजी,
तिण मांहे तो रींझे रे ॥प्राणी०॥

६— रुधिर नो कोई खरड्यो कपड़ो,
रुधिर सूं केम धोईजे रे ।
हिंसा कर हुवे जीव मेलो,
वले हिंसा धर्म करीजे रे ॥प्राणी०॥

७— परणी सूं तो प्रीतज नांही,
पर रमणी सूं रमीजे रे ।

---

१ उपवास

छोड़ दीनी घरकांनी लज्जा,
धवलां री शरम गमीजे रे ।।प्राणी०।।

८— वाद विवाद विषय में रातो,
क्षण क्षण आऊ छीजे रे ।
एहवो जाण कहे रिख 'जयमलजी',
इन्द्रियां ने रे दमीजे रे ।।प्राणी०।।

---

(८)

❀ यह जग सपना ❀

प्राणी ! ए जग सपनो लाधो रे ।। ध्रुव ।।

१— नरक निगोद मे भमता रे प्राणी,
मानव नो भव लाधो रे ।
जो थारी उतपत देखे तो,
तू है दुखां रो दाधो रे ।। प्राणी० ।।

२— ज्ञानी — देव न कही सके,
जीवड़ा थारी आदो रे ।
लोभी भूत हुवो रे प्राणी,
करमां वसे समाधो रे ।। प्राणी० ।।

३— ऊंधो - मुख दश मास गर्भ मे,
अशुचि तणो पिण्ड बाधो रे ।
नीसरियो जब दुख विसरियो,
मूक दीनी मरजादो रे ।। प्राणी० ।।

४— सुकृत वस धन मिलियो,
बहु जणा मिल खाधो रे ।
नारयां तो ते बहुली सेवी,
ए काम रूपियो कादो रे ।। प्राणी० ।।

५— ठग पाखण्डी बहुला सेव्या,
वन्धियो घणां सूं वादो रे ।
भूला ने शुद्ध मारग आणे,
इसो सन्त न मिल्यो साधो रे ।। प्राणी० ।।

६— छत्तीसे तूं राग मे भीनो,
हाथे ताली ने नादो रे।
अन्तर गरज मरे ना कांई,
ज्यों कण रहित तुस मादो रे॥ प्राणी०॥

७— कब हुवो तूं रांक भिखारी,
कब हुवो राय-जादो रे।
कबहु ते पातशाही पाई,
कब हुवो शाह-जादो रे॥ प्राणी०॥

८— कबहु तूं मूला मे उपनो,
कबहुक हुओ आदो रे।
कबहिक कोल ऊंदर हुवो,
तोड़ तोड़ मिनक्यां खादो रे॥ प्राणी०॥

९— कबहु कठियारी रोगी,
तन में वह रही राधो रे।
कबहु देही मे कीड़ा पड़िया,
प्राणी तूं छै विपत रो दाधो रे॥ प्राणी०॥

१०— कब हुवो रंगो चंगो,
पायो मीठो सादो रे।
कब ही डील निरोगो पायो,
कब वालां तणी असमाधो रे॥ प्राणी०॥

११— बार बार सतगुरू समझावे,
ऊंचे दे दे सादो रे।
रिख 'जयमलजी' कहे कपट ने छोड़ो,
ल्यो भुगत रमणी ने साधो रे॥ प्राणी०॥

———

(६)

❀ शिक्षा-पद ❀

१— मत कर जीवड़ा रे म्हारो म्हारो,
जोय ने विमासी कुछ नहीं थारो।
भोला चेत सके तो चेते रे,
दुर्लभ मनुज जनम धर्म ठिकाणे एत रे॥

२— खबर न कांई दयाधर्म तणी।
धन मेलवारी खप राखे घणी॥
खप राखे घणी धन मेलवरी,
सोतो इहां ही ज रह गया।
चक्रवरत राजा सेठ सेनापति,
कोडी एक न ले गया॥

३— पाप तणा फल परतख देखलो।
प्राणी जासी परभव एकलो॥
एकलो जासी परभव
जेहवा कीधा पाप ए।
चार गत ने दुःख सहेला
कुण बेटो कुण बाप ए॥

४— दुःख सह्या छै नरक तिर्यञ्च तणा।
तो पिण जीवड़ा रे धेठा अति घणा॥
धेठापणो मत कर भाई,
आउ धन ए अथिर छे।
चेत चेत रे तूं प्राणी,
नहीं होवे पिछतावो पछे॥

५— जोबन वय मे रे जीव चेत्यो नहीं।
जरा राक्षसी आय दोली भई॥
आय भई दोली जरा राक्षसी,
अब तो जोर चले नहीं।
श्री जिनराज रो धर्म,
सरण ए साचो सही॥

६— सजन कुटुम्ब ए स्वारथ का सगा ।
मरण विरिया रे तब रोवण लगा ॥
इहलोक कारण सगा सम्बन्धी
परभव की चिन्ता नहीं ।
मोह जाल में मरण पामे
थिर वासो केहने नहीं ॥

७— ना कुण लायो ना कुण ने दियो ।
मरण वेलां रे मिलने लूंटियो ॥
लूंटियो मिलने मरण अवसर,
महाकर्म छै मोहणी ।
एह संसार नो फंद जांणी,
जैन धर्म कीजो तुम भणी ॥

८— मोक्ष तणा सुख पामे ते सही ।
देवलोक मे संका सांसो नहीं ॥
मोक्ष देव लोक मे नहीज सांसो सांसो,
निहचे ए फल लागसी ।
एह संसार में नर नारी,
धर्म ठिकाणे लागसी ॥

९— पाप देखने रे कोई भूलो मती ।
एकवीस सहस वर्ष लग रहसी जिन-मती ॥
एकवीस सहस वर्ष लगे शासन,
बर्तसी श्री जिन तणो ।
साधु साधवी उपदेश देशी,
धर्म शीयल दया तणो ॥

१०— बोली महिमा रे जिनवर धर्म री ।
तो पिण पाखंड चालसी अति घणो ॥
घणो माने छै पाखंड मत,
मिथ्यात्वी केड़े पड्या ।
हिंसा मांहे धर्म परूपे,
कुगुरां रे पाने पड़्या ॥

११— कुगुरू तो कालो नागज सरिखा ।
अहो भव जीवां करजो परिखा ॥
पारखा कीजो जिन धर्म केरी,
पछे धर्मज पकड़ो ।
एह कुगुरू,सुगुरू रा जोड़ न लागे,
रतन चिंतामणि कांकरो ॥

१२— साध साधवी सगला सरखा ।
वेसण वली रे साजी नावका ॥
साजी नाव साधजो बेसे,
घणा जे नर नार ए ॥
देव गुरू नी सरधा नांही,
पामें नहीं भव पार ए ॥

१३— जिण धर्म केरी राखे आसता ।
मोक्ष तणा सुख पामे सासता ॥
सासता सुख छै मोक्ष केरा,
पार नहीं छे तेह तणा ।
कहे रिख 'जयमलजी' दु:खम आरे
थोड़ा मांहे नफा घणा ॥

---

(१०)

❀ वैराग्य पद ❀

१— मम करो काया माया कारमीजी,
जीव जलि करी क्षार रे ।
अन्तर ज्ञान देखो तुम्हे विणसतां,
कंई है वार रे ॥

२— जिम रहे पंथी सराय मे जी,
ह्यो तिम वासे ही आय रे ।
ज्यों ए कुटुम्बी आवि मिल्याजी,
दिशो दिशी उठ जाय रे ॥

३— प्रथम पोहर गिण घालियाजी,
धन हजारों ने लाख ।
इतरा में हंस चलतो रह्योजी,
पोहरे बीजे हुई राख ॥

४— सूतो है घणो नचिन्तसूंजी,
धन जोबन तणो गाढ़ ।
लेई ने चोर चलतो रह्योजी,
देवे देवालो काढ ॥

५— मात पिता सुत कामिनीजी,
हाट हवेली ने माल ।
सगलाई झिलता मेलने जी,
एकलो जासी तूं चाल ॥

६— आण तो डूंगर सूं घणीजी,
पगतल वही रह्यो काल ।
भोग संजोग संसार ना जी,
जाणजो सर्व जंजाल ॥

७— डाभ अणी जल जेहवो जी,
आगिया नो चमत्कार ।
तेहवो ए धन आउखोजी,
बीजली नो झबकार ॥

८— हाठ हवेली धन मेलवाजी,
घणा करे कजिया ने झोड ।
कर्म बांधे जीव एकलोजी,
धणी हुय जावे कोई ओर ॥

९— ए हिज जीव राजा हुवो जी,
ए हिज हुवो फकीर ।
कबहू चढ्यो हस्तिन पालखीजी,
कभी आण्यो मस्तके नीर ॥

१०— कब हुवो रंक मजूरियो जी,
कबहू सहल करे बाग ।

कर्म वसे सुख दुःख नी जी,
चहर बाजी रही लाग ॥
११— कबहु दातार लाखां तणो जी,
कब खाधो टुकड़ो मांग ।
भमत भमत संसार मे जी,
कीधा नव नव सांग ॥
१२— सप्त धात रोगाकुलोजी,
काचो माटी तणो भंड़ ।
एहवी देह मानव तणी जी,
ते पिण जावणी धंड़ ॥
१३— सही विधंससे देहड़ी जी,
राचे जीव कारमी आस ।
नींव देवें ऊंडी अति घणी जी,
अथिर मानव तणो वास ॥
१४— हरख घणे रे परणियोजी,
छोड़ मायो तणो मोड़ ।
सूतो है रति न चिंतड़ो जी,
प्रात हुवे कछु और ॥
१५— बेटा बेटी रे पोतां थकीजी,
करे छै लाड़ ने कोड़ ।
काल झपेटियो आयने जी,
जासी अब ऊभा छोड़ ॥
१६— कारमी माया संसार नी जी,
कारमी जग तणी प्रीत ।
एहने केड़ लागी करी जी,
कांय तू होवे फजीत ॥
१७— गया जावे जासी घणाजी,
नरक निगोद रे माय ।
ममता माया मे पच रह्याजी,
राखे छे सतगुरु नाय ॥

१८— मोह नी जाल मांहे पड्याजी,
सुख नहीं लवलेस ।
इम जाणी तुम प्राणियाजी,
राख दयाधर्म — रेस ॥

१९— 'संभूम' चक्रवर्त आठमोजी,
सात खंड तणी चाय ।
उभा ही देव देखता राणाजी,
डूब गयो जल माय ॥

२०— मोटकी ऋद्ध तणो धणीजी,
चक्री 'सनत - कुमार' ॥
तेहणी देह विणसी गई जी,
कर्म थी एहवी हार ॥

२१— चक्रवर्त 'ब्रह्मदत्त' बारमोजी,
समजायो 'चित' आय ।
कोई वल्लभ लागो नहींजी,
सातमी नरक मे जाय ॥

२२— दुष्ट 'रावण' हतो एहवो जी,
बीस धनुप ऊंची देह ।
'राम' 'लक्ष्मण' दोनु आयनेजी,
मार मेली दियो खेह ॥

२३— पदवी है प्रति - वासुदेवनी जी,
जोरावर 'जरासंध' ।
आण पनोति ढोली फिरीजी,
कृष्ण काटि दियो कंध ॥

२४— त्रिखण्ड नो स्वामी 'कृष्णजी' ए
मोटका जादवराय ।
पुण्य क्षय हुआे रह्या एकलाजी
कोसंबी वन रे मांय ॥

२५— राजा सेनापति मन्त्रवीजी,
बहु लड़या दल मेल ।
काल जोरावर सर्वनाजी,
दिया मोरचा भेल ॥

२६— इत्यादिक राजा बहुजी,
वृद्ध करे विप तणी वेल।
काम ने भोग संसार ना जी,
गया अधूरा ही मेल॥
२७— काम न भोग नरनार ना जी,
जाणे छे फल किंपाक।
इण भव पर भव दुख हुवे जी,
उघड़े कड़वा सा आक॥
२८— सेठ सेनापति मन्त्रवी जी,
वीजाई सगला लोक।
काल मांहे सहु खप गया जी,
अक्षय रह्यो नहीं कोय॥
२९— सुर पहिला रे दूजा तणे जी,
चवने एकन्द्रिय थाय।
आठमा कल्प थकी चवीजी,
उपजे हय गय मांय॥
३०— सद्गति जावतां जीवने जी,
कड़वा कर्म विपाक।
चारूं ही गत मांहि भम्योजी,
जेम कुंभार नो चाक॥
३१— आठ कर्म मांही राजवीजी,
मोटो है मोहनी कर्म।
एहने पातलो पाडजोजी,
ज्यों रहे तुम तणी शर्म॥
३२— 'कालियादि' दश बन्धवाजी,
कीधी चेड़ा थकी तांण।
चेडे नृपति दशां भणीजी,
मारया है एक एक बाण॥
३३— मोह मिथ्यात्व ने छोड़ने,
मेट मन तणो भर्म।
ऋषि 'जयमलजी' इण पर कहेजी,
ज्यो उपजे सुख पर्म॥

(११)

❀ चेतन ! चेत ❀

चेतन चेतो रे मिनख जमारो पायो रे ॥ ध्रुव ॥

१— सूत्र सिद्धांतनी रहस्य सूं रे,
ए तो सतगुरु दे उपदेशो रे ।
सुध समकित आदरो रे थांरा,
कट जाय कर्म कलेसो रे ॥चेतन०॥

२— मोटी पदवी पाय ने,
परमाद मे मत पड़जो रे ।
मिथ्या मत ने छोड़ने,
शुद्ध दयाधर्म आदरजो रे ॥चेतन०॥

३— देव गुरु ने धर्म री तुमे,
खरी आसता आणो रे ।
उत्तम आरज क्षेत्र नो,
थांने नीठ मिलियो छै टाणो रे ॥चे०॥

४— इण जम्बुद्वीपना भरत मे
कह्या देश बत्तीस हजारो रे ।
आर्य साढ़ा पचवीस छै,
जठे जांणे धर्म सारो रे ॥चेतन०॥

५— जोग मिल्यो साधां तणो,
वले लह्यो नीरोगो डीलो रे ।
तो किरिया करतूत नी,
भूल न करणी ढीलो रे ॥चेतन०॥

६— वचन जाणो वीतरागना,
शुद्ध हिया मे न घाल्या रे ।
भूल्या नरभव पाय ने,
ए तो ठालि होय कर चाल्या रे ॥चे०॥

७— समता संवर ना कियो,
जिण मिनख जमारो पायो रे।
पेठ करतां सेठ नी तिके,
हाथ घसतां जायो रे ॥चेतन०॥

८— द्वेष धरे धर्मी थकी,
पाप करण ने आगा रे ।
न्हाय धोय चंगा रहे ज्यां ने
पहिरयां हि कहिजे नागा रे ॥चेतन०॥

९— ऊंचे कुल आय ऊपनारे,
एतो हुआ रहे वड भींचो रे।
माठा करतब लम्पटी अति घणा
ने तो लत्तण कहीजे नीचो रे ॥चेतन०॥

१०— नीचे कुल आय ऊपना,
पिण ज्ञान विवेक शुद्ध धारो रे।
तिका नीचा ही ऊंचा कह्या,
सुद्ध समकित पामी सारो रे ॥चेतन०॥

११— ऊंचे कुल 'ब्रह्मदत्त' हुवो,
नीचे कुल 'हरिकेसी' रे ।
ऊ, डूबो ऊ, तिर गयो,
जोईजो करणी री रेसी रे ॥चेतन०॥

१२— नरक निगोदे मे जीवड़ो ए तो,
रुलियो आदि अनादि रे ।
तुमे मिनख जनम लेही चेतजो,
ज्यूं वलि रहे थांरी बाधी रे ॥चेतन०॥

१३— वोर कुल्यां मांहि ऊपनो,
तो ने खाय मुंडा थी थूक्यो रे।
हीवे मरोड़ राखे घणी,
तू जाय छै अवर चुक्यो रे ॥चेतन०॥

१४— रतन चिंतामणि धर्म छै,
थे पायो मनुष्य जमारो रे ।

नव घाटी में निकल्या,
तो थुंइ अहिले मति हारो रे ॥चेतन०॥

१५— देव दानव ने गंधवा,
एतो चक्रवर्त वासुदेव बलिया रे।
थिर संसार में कोई नां रह्यो,
इण काल सकल ने गिटिया रे ॥चेतन०॥

१६— इण अथिर जीतव रे कारणे,
थे मति दो नींवज ऊंडी रे।
ममता सूं दुरगति गयां,
थांरे घणी वणेला भूंडी रे ॥चेतन०॥

१७— पहिले पोहर मीठा हुता,
दूजे पहर आलमालो रे।
परभव नी खरची करो,
ऐ तो ले छे लपेटा कालो रे ॥चेतन०॥

१८— आज काल धर्म आदरां,
वले परंपरा इम जाणी रे।
आयु घटती जाय छे,
जिम अंजली नो पाणी रे ॥चेतन॥०

१९— ठीकाणो नासण तणो,
थांने निद्रा नहिं छै जोगो रे।
तीन अणी लारे लागी थांने,
जरा मरण ने रोगो रे ॥चेतन०॥

२०— घणूं भमाड़े जीव ने ए तो,
तीन से तेसठ मतो रे।
एहनी संगति वर्जजो,
तुमे सेवो गुरु निग्रंथो रे ॥चेतन०॥

२१— नव तत्व हिरदे धारजो
तुमे सीखो बोल ने चालो रे।
हीन दिल राखो मती,
समकित में रहिजो लालो रे ॥चेतन०॥

२२— समता आण ने छोड़ दो—
तुमे माया ममता ने मारणो रे।
ऋषि 'जयमलजी' इम कहे,
थारे ए जीत्यां ना डाणो रे ।।चेतन०।।

---

(१२)

❀ जीव-चेतावनी ❀

१— जीवा चेतो रे, दे मुनिवर उपदेश,
राखो सरधा धरम री जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, परखो देव गुरू ने धर्म,
मेटो माया भरम री, जीवा चेतो रे।।

२— जीवा चेतो रे मनुष्य जमारो पाय,
परमाद मे पड़जो मती, जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे जरा रोग ले आय,
सेठा रहिजो शूरा सती, जीवा चेतो रे।।

३— जीवा चेतो रे, वासो वसियो आय,
जीव वटाऊ पावणोजी, जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, घट दे जीव चल जाय,
साथ न हुवे केहनो, जीवा चेतो रे।।

४— जीवा चेतो रे, काया री मुरछा मती आण,
मत कर एहनी चाकरी, जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, छोड़ जासी निज प्राण,
ढ़ेरी करदे राख री, जीवा चेतो रे।।

५— जीवा चेतो रे, जब चेतन घट मांय,
तब लग इन्द्रियां साबती, जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, जीहां लग रोग न सोग,
राखजो सरधा साबती, जीवा चेतो रे।।

६— जीवा चेतो रे, सतगुरू नी ए सीख,
ओ अवसर मत्ति चूकजो, जीवा चेतो रे।

जीवा चेतो रे, पर निंदा परनार,
तिण नेड़ा मति ढूकजो, जीवा चेतो रे ॥

७— जीवा चेतो रे, पलटे मगा ने मेण,
पलटे धन संच्यो हाथरो, जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, बंधव त्रिया ने पूत,
न पलटे धर्म जगनाथ रो, जीवा चेतो रे ॥

८— जीवा चेतो रे, करजे तूं करतूत,
मनुष्य तणो भव पाय ने, जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, मत दो नरक रा सूत,
पर नि चुगली खायने, जीवा चेतो रे ॥

९— जीवा चेतो रे, आथ न आवे साथ,
नारी संपदा गहरी, जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, सगली पाछे रहि जाय,
छाड़ जाणी निज देहरी, जीवा चेतो रे ॥

१०— जीवा चेतो रे हाथी हिंडोला ने खाट,
इहां का इहां रहेसी सही-जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, पछे हूवेला उचाट,
कहेस्यो किण हि कह्यो नहीं जीवा चेतो रे ॥

११— जीवा चेतो रे, जब लग स्वारथ होय,
तब लग मुख जी जी करे, जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, स्वारथ सरियां जोय
सांम्हो दीठां लड़ पड़े, जीवा चेतो रे ॥

१२— जीवा चेतो रे, ए संसार स्वरूप,
देखी ने प्रती बुझज्यो- जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, काम, भोग, मोह, कूप,
तिण मांहे मती मुरझज्यो, जीवा चेतो रे ॥

१३— जीवा चेतो रे, साधु पणो लो सार,
काम, भोग, त्यागन करो, जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, श्रावग ना व्रत बार
सिव रमणी वेगी वरो, जीवा चेतो रे ॥

१४— जीवा चेतो रे, अल्प आउखो जाण,
तन, धन, जोवन, अथिर छै जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, पालो जिनवर आण,
पछतावो नहीं हूवे पछे जीवा चेतो रे॥

१५— जीवा चेतो रे, रुल्यो अनंतो काल,
आद अनाद रो प्राणियो जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, रह्यो अज्ञानी बाल,
समकित रेस न जाणियो, जीवा चेतो रे॥

१६— जीवा चेतो रे, पाम्यो वार अनन्त,
आयु पल सागर तणो, जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, कोई साधु मिल्यो नहीं संत,
भव सागर रुलियो घणो, जीवा चेतो रे॥

१७— जीवा चेतो रे, इत्यादिक उपदेश,
जाव शब्द मे जाणजो, जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, रिख 'जयमलजी' कहे रेस,
दया भाव दिल आणजो, जीवा चेतो रे॥

———

(१३)

❀ वैराग्य–पद ❀

१— रात दिवस ते माया मेली, कर कर देही दोरी रे।
जोड़ जोड़ धरती मे गाडी, तो ही कहे माया थोड़ी रे॥

२— थेल्यां लेकर पीदे घाली, जुवे छे, कोडी कोडी रे।
जब तो ने जम को तेड़ो आयो, सब धन चाल्यो छोड़ी रे॥तोही०॥

३— रात दिवस तूं तप तप मूवो, तप ऊठी थारी भोडी रे।
पाड़ोसी नो धन देखी ने तूं, तड़फे होड़ा–होड़ी रे॥तोही०॥

४— पेला को धन देखि ने आ, तूं चुगल ने चोरी रे।
अतिसार हुवो अंतकाले पिण, छूट गई थारी मोरी रे॥तोही०॥

५— पाय करीने कुटुम्ब कबीलो, तूं पोखे छोरा छोरी रे।
अन्तकाल आडो कोई ना आवे आन पड़े जब दोरी रे॥तोही०॥

६— ऊभो रहने आप कराया, हाट हवेली ने ओरी रे।
जमी-दोट गड कोट कराया, गया पलक में छोड़ी रे ॥तोही०॥

७— हाथी भी मिल्या घोड़ा भी मिल्या, रथ पायक नी कोड़ी रे।
पिण पर वश पड़ियां जोर न लागे, जिम दबी सांप नी ठोडी रे ॥तोही०॥

८— रे जीव ते धन दोहरो पायो, माथे ढोय ढोय ओडी रे।
चोर राजा न्याती ले खासी, तब मन मे करे झकोड़ी रे ॥तोही०॥

६— रे मानव क्षण धन रे कारण, पिंजरे चाढे न घोड़ी रे।
बांध ऊचो लटकावे जब, टांगां होय जावे खोड़ी रे ॥तोही०॥

१०—दान भोग विन धनज रांच्यो, खेती विणज में पाई रे।
अन्तकाल मे कुटुम्ब कबीलो, लगा झगड़ ने जोई रे ॥तोही०॥

११—धन कारण खोड़ा मे घाले, नाके चूंपा तोड़ी रे।
बांधी ने ऊंचो लटकावे, जब करे हेला ने शोरी रे ॥तोही०॥

१२—धन कारण लागे चोरटा, मेंणा, मेतर, ने थोरी रे।
देवे, जहर, धतूरो फासी नाखे माथो नोड़ी रे ॥तोही०॥

१३—जब थारी काल आन घांटी पकड़ी, आन पड़ी जब दोड़ी रे।
मन थारो गयो माया मे, गरज सरे नहीं थोड़ी रे ॥तोही०॥

१४—भेला मिली सजन ले चाल्या, सीड़ी मांय जोड़ी रे।
विचलो वासो विचमें ले रायो, गावड़ हुवे छै दोरी रे ॥तोही०॥

१५—नानी जोय वाटकड़ी घाली, हांडी लीदी फोड़ी रे।
मुंगो मुंगो, खांपण घाल्यो, फाड़े छेली कोड़ी रे ॥तोही०॥

१६—ले जाई लक्कड़ मे दीधो, हुवो घर रो धोरी रे।
घास फूस छाणा देई ने, फूंक दियो जिम होली रे ॥तोही०॥

१७—लकड़ी तणा घोचा देईने, ए देही हूंती गोरी रे।
बाला, सजन संगाते हूंता, जिण पहिली सीखा फोडी रे ॥तोही०॥

१८—मूरख नर तूं माया रांची, निश दिन दौडी दौडी रे।
तनिक कनक री चूंका हूती, सो काढ़ी दांत मरोरी रे ॥तोही०॥

१६--शोक करी ने खूणे बेठी, मात त्रियादिक तोरी रे।
संच्यो धन जब बहुलो देखी, पछे दे पग छोड़ी रे ॥तोही०॥

२०—खबर पड्यां रावले रोके, माथो करदे मोड़ी रे।
ए माया बहु हवाल घलावे, तो ही दुनिया भोली रे ॥तोही०॥

२१—पाप ने देखे, पुण्य ने देखे, धन मिलण नी कोड़ी रे।
ऋषि 'जयमलजी' इम कहे, सन्तां दीधी छे छोडी रे ॥तोही०॥

---

(१४)

❀ नींद पच्चीसी ❀

१— थांने सद्‌गुरु दे छे सीखड़ी,
जागो जागो हो कोई भव जीव के।
निद्रा प्रमाद ने वश पड़ी,
जीव देवे छै नरक री नींव ॥

२— नींदड़ली वेरण हुय रही,
इण सरीखो हो भूंडो नहीं कोय के।
मूल तो मिले नारकी,
गति माठी मे कोई फेर न जोय ॥

३— निद्रा, निद्रा-निद्रा, परचला,
प्रचला-प्रचला, थिणद्धी जाण के।
पांचू निद्रा पापणी,
ले जावे है दुर्गति मांही ताण के ॥

४— कुण चवदे पूर्वधारी साधुजी केवली—
जिम हो देता प्रतिबोध के।
इण निद्रा परताप सूं मरने,
गया हो नरक निगोद के।

५— ए तो पांच निद्रा मांही पापणी—
थिणद्धी ओ मोटी कहिवाय के।
अर्द्ध वासुदेव नो बल कह्यो,
प्राणी ने दुर्गति ले जाय के ॥

६— पांचू प्रमादे प्राणियां,
निद्रा मे हो हुय रया लाल के।
रुल्या, रुले, रुलसी घणा,
इण पाड्या हो कुण कुण हवाल के॥

७— 'श्री' राणी माता तणो 'पूस नंदी',
हो भगलो वड़ भीच के।
'देवदत्ता' निद्रा वसे,
सासू ने हो मारी कुमीच के॥

८— एतो राय 'उदाई' मोटको,
पोसो कीधो रे साधां रे पाय के।
साधु रूप ठग आयने,
गला मांहे तोती गयो वाय के॥

९— खाय पीय सुई रहे, अन पाणी हो-
मन गम तो लाध के।
उत्तराध्ययन में मत्तरमे, श्री जिनजी हो-
कह्यो पापी माध के॥

१०— तज संसार ने नीकल्या,
आदरियो है जिण मारग जोग के।
इण हिज निद्रा ने वसे,
सुपना मे सेवे काम भोग के॥

११— इण निद्रा ने वश प्राणियो,
इम जाणी ने बहुली छै रात के।
एतलो जाण ने ढल गयो एतो,
घाले हो पडिक्कमणानी घात के॥

१२— परदेशां जाय मानवी,
आवत जावत हो वहि रह्यो वाट के।
इण हिज निद्रा ने वशे,
पासी-गरहो जावे गलो काट के॥

१३— धन माल घर मे हुतो,
राखतो हो बहू जोसने गाढ़ के।
निद्रा ने वश चोर ले गया,
पछे दियो हो देवालो काढ़ के॥

१४— एतो जोध जवान था एहवा,
जिण सेती हो नहीं सकता जूंज के।
निद्रा में सूतां थकां,
कर दीधा हो ज्यांने खाड़ा बूज के॥
१५— किण हिं सुं डरता नहीं,
एतो हुता ओ जोरावरी जोध के।
मारी ने गाड़ दिया ज्यांरी,
हाड़कियां नहीं सकिया सोध के॥
१६— साधु श्रावक ने हेलो दियो,
ऊंघालू ने कहे तूं ऊठ के।
कहे मोने तो ऊंघ आई नहीं,
ओ तो बोले हो उघाड़ो झूठ के॥
१७— सांझे' 'सेलग' सूई रह्यो,
जेहनो हो 'पंथक' सीस के।
खमावतां निद्रा वसे,
शिष्य ऊपर हो खोटी करी रीस के॥
१८— निद्रा मे सूतां थकां,
नही आवे हो ज्याने रूड़ो ध्यान के।
चार ज्ञान तांई लग रई,
अटकायो हो इण केवल ज्ञान के॥
१९— निद्रा मांहे सूतां थको,
अन पानी हो उपवासां मांहि खाय के।
बक ऊठे विच विच करे,
बोल्यां री खबर न पड़े काय के॥
२०— निद्रा ने वस मानवी,
घणा करे घुरराटा ने घोर के।
छाती हाथ आयां थकां,
कर ऊठे हो बहु हेला ने सोर के॥
२१— ठग वेरी मेरा चोरटा,
ए तो पावे हो नवी मायनो दूध के।
निद्रा वश मानव भणी,
ले जावे हो वले मांचा–सूध के॥

२२— पांचे निद्रा ने वसे ए तो,
उपजे हो भव भव मांहे खोड़ के ।
संसार नो जो बंध पड़े,
उतकृष्टो हो तो तेतीस कोड़ा कोड़ के ॥

२३— ए घणा निद्रालु जीवड़ा,
सुवण ना हो वेढ़ंग के ।
के नर नारी कुशीलिया,
निद्रावश हो करे शीलनो भंग के ॥

२४— निद्रावश सुण ना सके,
धर्म कथा हो चरचा नो ज्ञान के ।
इण पापण घेरयां पछे,
नहीं चाले हो सज्झाय ने ध्यान के ॥

२५— इण निद्रा मे अवगुण घणा,
ए तो पूरा हो कही सकिये केम के ।
इण छूंटा शिव सुख हुवे,
ऋषि 'जयमलजी' कहे सिखावण एम के ॥

———

(१५)

❁ मूरख-पच्चीसी ❁

१— रतन चितामण नरभव पायने,
चित्त राखीजो रे ठाम ।
निद्रा विकथा रे आलस छोडने,
लो भगवंत रो रे नाम ॥

२— मूर्ख जीवड़ा रे गाफल मत रहे,
मन मे राख विचार ।
जप, तप, किरिया रे चोखी आदरो,
लाहोजी लीजो रे लार ॥

३— सगा सनेही बेटा पोतरा,
काका बाप ने माय ।
बंधव त्रिया रे देखता रहे,
जब काल झपट ले जाय ॥

४— डाभ अणी जल बिन्दुओ,
जेहवो सन्ध्या नो वान ।
अथिर ज जाणो रे थांरो आउखो
जिम पाको पीपल पान ॥

५— घड़ियाला नी पर जिम बाजे,
घड़ी तिम तिम घटेज आव ।
काल अजाण्यो रे तोने घेरसी,
पर कांई धर्म उपाव ॥

६— सोवण वेला रे इम चिंतव कियो
सवारे देसूं रे नीव ।
राती समे रे हंस चालतो रह्यो
सूतां थकां रो रे जीव ॥

७— जोबन जावे रे घणो उतावलो,
जिसो नदी नो वेग ।
अथिर जाणो रे आउखो
लिण मे घणा रे उद्वेग ॥

८— घणा मिल्या छै रे बेटा पोतरा,
हाट हवेली ने गोख ।
मोती माणक धन पायो घणो
करणी बिन सहू फोक ॥

९— ए धन मारो रे हूँ धन तणो,
तूं इसड़ी राखे रे आस ।
अंतकाल मे रे थारो को नहीं,
तूं मत ले गले मे रे फास ॥

१०— अनर्थे धन भेलो कियो,
अंहकारे उड़ जाय ।
किण करणी रे सद्गति संचरे,
तो ने इसड़ी खबर न काय ॥

११— माता पितादिक कुटुम्ब न कारण,
तूं घणो केवले कूड़ ।
जब तक स्वार्थ तब लग ताहरा,
दुःख मे जासी दूर ॥

१२— को नहीं ताहरो रे तूं नहीं केहनो,
किण सूं मांडे रे नेह ।
अन्तकाल मे रे को केहनो नहीं,
छोड़ जासी रे देह ॥

१३— व्रत न कीधो रे भोला आखड़ी,
चरतो जावे दिन रात ।
पाप उदे रे आयां बेठां घसे,
माखी नी परे हाथ ॥

१४— ढील न कीजे रे भोला धर्मनी,
खरची लेनी रे लार ।
देही मांही थी वेगो काढले,
तप, जप, संजम, सार ॥

१५— देही हेली थांरी जोजरी,
पांडु रहेला रे केश ।
जोवन चटकां दिया जाय छै,
तूं राख धर्मनी रेस ॥

१६— सड़ण, पड़ण विधंसण देहणी,
तिणरी किसड़ी रे आस ।
खिण एक मांही रे जासी विगड़ी,
जिम पाणी मांहे पतास ॥

१७— आरंभ सारंभ कजिया छोडने,
सारो जीवन रो रे काज ।
काल अनंतरे मिलणो दोहिलो
अवसर लाधो रे आज ॥

१८— जिहां लग पांचू इन्द्रिय रे पर वड़ी,
जरा न व्यापी रे आय ।
देह मांहे रे रोग न फेलियो,
तिहां लग धर्म संभाय ॥

१६— निंदा विकथा रे मत कर पारकी,
आप सांमो रे देख ।
जो तूं परभव सों डरतो रहे,
तो किण सूं मत कर द्वेष ॥

२०— देव गुरु धर्मज परखने,
समगत लेनी रे सार ।
नव तत्व हिरदे मांही रे धार ले,
खेवो हुवे जिम पार ॥

२१— सूंस व्रत लेई ना सके,
तो भी सरधा सेठी राख ।
'कृष्ण' 'श्रेणिक' नी परे,
कटसी कर्म विपाक ॥

२२— ले सके तो ले साधु पणो,
नहिंतर श्रावक–व्रत धर्म ।
आले मनुष्य जमारो खोयना,
जिम रहेला थारी रे शर्म ॥

२३— साचेई जो कांई ना सजे तो,
गुणवन्त रा गुण गाय ।
कांइक रसायण इसड़ी नीपजे,
तो दरिद्र दूर पलाय ॥

२४— जन्म मरण दुःख पाम्या गर्भ मां
नरक निगोद ना जाण ।
ए दुःख याद कर रे जीवड़ा,
हण मत किणरा रे प्राण ॥

२५— ममता छोड़ी रे समता आदरो,
जो उतरयां चाहो रे पार ।
रिख 'जयमलजी' तिण कारण कहे,
वरते जय जयकार ॥

—— ——

(१६)

❀ पर्यटन-सप्तविंशतिका ❀

१— कदे हुवो गिजन्दर सादो रे,
कदे हुओ पोटलियो वोहरो रे।
महिना रो रोजगार गह-घाटो रे,
कदे रणो रोस्यां रे साटो रे॥

२— जामे गर्दन बांकी होवे रे,
कवु झुलक, झुलक मुख जोवे रे।
हुवो दलगीर कदे राजी रे,
ए संसारनी चेर बाजी रे॥

३— जीव आंधो हुवो कदे बोलो रे,
आय फूटो डंवक-डोलो रे।
हुवो वांगो मूंगो ने गूंगो रे,
डंबक डील हुर-धंगो रे॥

४— हुवो रोग पांव ने खुसरो रे,
जीव दुःख सह्यो परवश रो रे।
कदे भूपति हुवो भारी रे,
कदे वण मंक रांक भिखारी रे॥

५— कदे लाख हजार नर जीमे रे,
जीव करे चबोला घी मे रे।
कबहु टुकड़ो न मिले लूखो रे,
वलि तूं छते धान भूखो रे॥

६— हुवो बाप निर्धन बेटो भारी रे,
इम पीढ्यां दर पीढ्यां विचारी रे।
भारी गहणा ने तुरा टांग्या रे,
कदे घर घर दाणा मांग्या रे॥

७— कबहू दूजे हजारां गायां रे,
कदे छाछ ने पर घर जायो रे।
जीव बहोत्तर कला बनायो रे,
कदे ठठो मींडो नहिं आयो रे॥

८— कदे रूप चन्द्रमा सो भूंडो रे,
कदे दीठांई लागे भूंडो रे।
कदे देवपूर्वी आवे सामी रे,
कबहू हुवो नरक रो गामी रे॥

९— कब हुवो हाकम हुजदारो रे,
बलि दफतर खान लटारो रे।
एतो बांकां ने अमीनो रे,
हेतधर दरोगो कीनो रे।

१०— कारकोन कोटवालो रे,
फोजदार ने देश रुखालो रे।
बकसी हुवो दीवानो रे,
इम खानसमा पण जावो रे॥

११— कब हुवो मोटो ठाकुर रे,
जीव कदे हुवो चाकर रे।
चोधरी कायथ पटवारी रे,
माया जाल सदाचारी रे॥

१२— नर खांपा खांचा कोई खरला रे,
करे डण्ड करड़ा करड़ा रे।
दाणी राहगीर धड़वाई रे,
साह नगर शेठ पदवी पाई रे॥

१३— शायर कोटवाली लीधी रे,
हूय प्यादे चाकरी कीधी रे।
बजाज हुवो शराफी रे,
दुर्व्यवहारे पूंजी आपी रे॥

१४— कोठार भंडार खजानी रे,
राय सूं वातां करे छानी रे।
जीव ऊंचो कुल आयो रे,
तिण कारण कुरब बहु पायो रे॥

१५— हुवो महाराज राव राणो रे,
केई कोड़ां खजानो भराणो रे।
जीव लाखां कोडां दल मेल्या रे,
गढ़ कोट मोर्चा भेल्या रे॥

१६— मीर अमीर पातसाही रे,
जीव वार अनन्ता पाई रे।
धर्म री सरधा प्रतीत न आई रे।
पिण गरज सरी नहीं कांई रे॥

१७— इम जाणी ने करणी वरसी रे,
ते शिव रमणी ने वरसी रे।
कदाच जो मुगत न जासी रे,
तो संसार रा सुख पासी रे॥

१८— तिरिया तिरे वहु तिरसी रे,
केई भवसागर ही फिरसी रे।
शुद्ध सरधा वरतज धारो रे,
सदा वरते जयकारो रे॥

१९— कदे पाम्यो सुर अवतारो रे,
नाटिक रो धूंकारो रे।
मुख आगे ऊभी रहे देवी रे,
करती नित थता थेई रे॥

२०— देव सेज्जा सिंहासण जाणो रे,
ज्योत ऊगां दह दिश भाणो रे।
गढ़ कोट महल अंगणाई रे,
स्थिति पल सागर री पाई रे॥

२१— पिण सूधो ज्ञान न पायो रे,
सुर नो भव यो ही गमायो रे।
जोतपी ने भवणपती रे,
व्यन्तर हुवो वार अनन्ती रे॥

२२— केई रतन देवतां रा चोरे रे,
पछे इन्द्र वज्र मारे जोरे रे।
ते तो छै महिना री करे रीवो रे।
पाम्यो वार अनन्ती जीवो रे॥

२३— भमतो तिर्यञ्च ने भव आयो रे,
ऊच नीच जात पायो रे।
ऊंची हाथी घोड़ा नी जातो रे,
घणा मेवा मलीदा खातो रे॥

२४— नीची में कूकड़ कागो रे,
खर भण्ड़सूरादि अथागो रे।
एह तिर्यञ्च नी गत पामी रे,
रुलियो अनन्ती भव भामी रे॥

२५— पछे नरक तणी गत लाधी रे,
पाम्या मार बहु खाधी रे।
सातां में इधकी इधकी रे,
बहु मार पड़े विध विध की रे॥

२६— तीन तांई परमाधामी रे,
चार नरकां मार आमी सामी रे।
पडे पल सागर री मारो रे,
थोड़ी तो बरस दस हजारो रे॥

२७— ए चारूं गत में बुरी रे,
सुख दुख पाम्या पूरी रे।
पुन्य रा फल लागे मीठा रे,
पाप रा फल दुष्ट अनीठा रे॥

२८— इम भमियो आद अनादि रे,
नरभव मे जोगवाई लाधी रे।
इम सांभल धर्म अराधी रे,
अनन्ताई शिव गत लाधी रे॥

२९— हिवड़ां जाय अनन्ता जासी रे,
सासता शिव सुख पासी रे।
रिख 'जयमलजी' कहे नि सुणी वाणी रे,
कहे चेतो उत्तम प्राणी रे॥

---

(१७)

❀ उपदेश-तीसी ❀

१— क्या नर पापी ले गयो रे, क्या धर्म गयो खोय ।
जगमा रही वासावली प्राणी, तूं अरू वरू ले जोय ॥

२— ऊंचा महल चुणाविया रे, कर कर लोकां सूं होड़ ।
आउखो आण लपेटियो रे प्राणी, जाय पलक में छोड़ ॥

३— महल म्हारा हूं महल नो रे, इसड़ी हूंती आस ।
आ देही ने छोड़ चल्यो रे, दे डाकणी परास ॥

४— हाट हवेली मेलड़ा रे, कीना होड़ा होड़ ।
जमा पाप तूं संचने रे प्राणी, जाय पलक में छोड़ ॥

५— आण जिणरी वर्तती रे, हाथी बंधता बार ।
पीछे पुन्य पूरा हुवा रे प्राणी, न मिले अन्न उधार ॥

६— हुंडियां ज्यां री हालती रे, रहता गहरा ठाठ ।
पाछला पुन्य पूरा हुवा रे प्राणी, जब कोड़या मांगे हाट ॥

७— तायफा नचावता रे, करता हजारां रीफ ।
एक दिन इसड़ो अवियो रे प्राणी, करे रोट्यां री आजीज ॥

८— झीणा कपड़ा पहिरसी रे, गहणा भरती भार ।
पुण्य संचो पूरो हुवो रे प्राणी, तब घर घरनी पणिहार ॥

६— धन पात्र हुता घणा रे, करता मनरी लहेर ।
एक दिन इसड़ो आवियो रे, अंदाता हुवो वेर ॥

१०—घणाज बेटा पोतरा रे, राजी हुता देख ।
आयुषो आण लपेटियो रे प्राणी, रह गयो एका एक ॥

११—न्याति गोत्ति सज्जन थी रे, भरियो रहतो दुवार ।
इक दिन ऐसो आवियो रे प्राणी, सूना हो गया द्वार ॥

१२—हृष्ट पुष्ट देही हुती रे, छकता जोवन मांय ।
रोग आण लपेटियो रे प्राणी, सूता जंगल मे जाय ॥

१३—चोका दे दे जीमता रे, पाणी सेती न्हाय ।
सांकड़े आण लपेटियो रे प्राणी, जिम तिम लिया खाय ॥

१४—मोती कड़ाज पहिरता रे, जामा जरकस पाग।
घासा लेने नांखिया रे प्राणी, दई न सक्यो दाग॥

१५—बेटा बहु विनय करे रे, लुल लुल पाये लाग।
जिके बतलाया बोले नहीं प्राणी, इसा उगड़िया भाग॥

१६—किसां रो खमतो नहीं रे, इसडो बांध्यो तोल।
जिणने छोटा ही खीजावता रे प्राणी, पाछो न सके बोल॥

१७—लाखां ने हजारां तणी रे, जोखम ले तो मोल।
तेहिज निर्धन हुय गया रे प्राणी, फिरता डावा डोल॥

१८—राती मूाती देही हुंती रे, जीमण बैठो आय।
आउखो आण लपेटियो रे, न सक्यो रोट्यां खाय॥

१९—रात समे चिंतवियो रे, सवारे देसुं नींव।
इम करतां निकल गयो रे प्राणी, सूतां रो ही जीव॥

२०—छींट रो मोल चुकाय ने रे, मापी हाथ हाथ पसार।
इतरा मे आयो आउखो रे प्राणी, न सक्यो कपड़ो फाड़॥

२१—रुच रुच भोजन जीमियो रे, ताजो मावो सेर।
सांझे डील सूलो चालियो रे प्राणी, दीधा है डोला फेर॥

२२—सवारे चूड़ो पेरसूं रे, नवा आकोटां नी जोड़।
इम चिंतवतां विघ्न व्यापियो रे प्राणी, आगलो नाख्यो फोड़॥

२३—इत्यादिक विघन घणा रे, छेदन, भेदन, ताड़।
इणहीज धरती ऊपरे रे प्राणी, तूं मुवो अनन्ती वार॥

२४—नरक तिर्यच मे दुःख कह्या रे, ते शास्त्र मांही बात।
इण भव वेहला वचेरे प्राणी, लेखो हाथो हाथ॥

२५—अगन वरण सूगां करी रे, साढ़ा तीन करोड़।
तिण सुं अठ गुण सही वेदना रे प्राणी, गर्भ मे सह्या दुःख घोर॥

२६—जनमतां कोड़ गुणी रे, मरतां कोड़ा कोड़।
इण जग मांहे देखजो रे प्राणी, जनम जनम रो जोड़॥

२७—एहीज जीव राजा हुवो रे, रङ्क अनन्ती वार।
एहवो जाणी चेते नहीं रे, तिण ने तीन धिकार॥

२८—जाडा पा। किया घणा रे, परणी चांदृया खाय।
सरके एकन्द्री ऊपज्यो रे, पगां तले चिग हुयो जाय॥

२६—मुंडा मांही ती धूकियो रे, पीरयो घट्टी मांय।
ऊखल मांही मूसल थी कूटियो रे, नाख्यो घाड़या में घाय॥

३०—इण जग मांहे मोटा मुनि वरू रे, साचा मिलिया सेण।
भिन भिन कहने भाव सुणाविया रे, रिख 'जयमलजी' कहे एम॥

---

(१८)

❀ उपदेश-बत्तीसी ❀

भवि जीवां करणी हो कीजो चित्त निर्मली॥ ध्रुव॥

१— आदि जिनेश्वर वीनवूं, गणधर लागूं पाय।
मन वच काया वस करो, छोड़ो चार कपाय॥ भव०॥

२— मनुप जनम अति दोहलो, सूत्तर सुणवो सार।
सतगुरु सरधा दोहिली, उत्तम कुल अवतार॥ भव०॥

३— मोह मिथ्यातरी नींद में, सूतो हे काल अनाद।
जनम मरण युग पूरियो, ज्ञान विनां नही याद॥ भव०॥

४— सिकियो तूं इण संसार में, ज्यूं भड़ भूंज्यारी भाड़।
निर्गन्थ गुरु हेला देवे, अब तो आंख उघाड़॥ भव०॥

५— नरक तणां दुःख दोहिला, सुणतां मन कंपाय।
पाप कर्म इकठा किया, मार अनन्ती खाय॥ भव०॥

६— चंद सूरज मुख दीसे नहीं, दीसे घोर अंधार।
नासत ने शरणो नहीं, ज्यां देखे जिहां मार॥ भव०॥

७— आंधो भोजन रात रो, करता ए शंके नाय।
गोबर भिष्टा तेहने, चांपे मुंडा मांय॥ भव०॥

८— परमाधामी देवता, ज्यांरी पनरा जात।
मारे देव इक जीव ने, करे अनन्ती घात॥ भव०॥

६— अर्थानर्थ धर्म कारणे, जल ढोल्या बिन ज्ञान।
बाह्य शुचि बहुली करी; मांय तो मेल अज्ञान॥ भव०॥

१०—वैतरणी लोही राधनी, तिणरो तीखो नीर।
तिण में डुबावे तेहने, छिन छिन होय शरीर ॥ भव० ॥

११—ढांढा ज्यूं चरता सदा, नहीं गिणी तिथि वार।
पान फूल रूंख छेदतां, नहीं आणी दया लिगार ॥ भव० ॥

१२—वृक्ष तिहां कूड़सामली, तिणरी बेसावे छाय।
पान पड़े तरवार सा, टूक टूक हुय जाय ॥ भव० ॥

१३—धंधा में खुचियो रह्यो, जुतियो घर ने भार।
लोह तणा रथ जोतियो रे, धरती धुके अंगार ॥ भव० ॥

१४—परनी छाती दाहा देवे, वित्त चोरया बहु वार।
धन खाधो सहु कुटुम्बिया, सही एकलो मार ॥ भव० ॥

१५—हाथ पांव छेदन करे, नाखे अंग मरोड़।
इहां किणी ओले ऊबरे, उहां नहीं किणरो जोर ॥ भव० ॥

१६—रंग रातो मातो फिरे, पर – नारी के संग।
अगन वरण लोह पूतली, चेड़े तिणरे अंग ॥ भव० ॥

१७—पाप कर्म बहुला किया, एह कर कर मन रो जोस।
बोले परमाधामी देवता, किसो हमारो दोस ॥ भव० ॥

१८—क्षण जीतव सुख कारणे, सागर पल री सहे मार।
विन भुगत्यां छूटे नही, अरज करे बारंबार ॥ भव० ॥

१९—क्रोध, मान, माया, लोभ में, छकियो तूं अन्याय।
साधु श्रावक देखि बलतो, देतो धर्म अन्तराय ॥ भव० ॥

२०—जीव हणी धर्म जाणियो, सेविया कुगुरू कुदेव।
निर्ग्रन्थ गुरु सेव्या नहीं, ताणी कुल की टेव ॥ भव० ॥

२१—कपट करी धन मेलियो, चाड़ी चुगली खाय।
अभक्ष भख्या जीव हण्या, नहीं पाली छकाय ॥ भव० ॥

२२—गया, मुआ ने झुरिया घणा, पाले ले पाछली राव।
छेद्यो भेद्यो मरे नहीं, पारा ज्यूं मिल जाव ॥ भव० ॥

२३—नरक दुखां सूं थर रया, चेत्या चतुर सुजाण।
निरलोभी गुरु सेवने, पाम्या परम कल्याण ॥ भव० ॥

२४—कोई क जीव जावे दिवलोक मे, जिहां पिण सुख विलास।
नाटक नाचे नव नवा, रतन जड़ित आवास ॥ भव० ॥

२५—सदा उद्योतज हुय रह्यो, वाजित्र ना झणकार।
देवियां हाथ जोडी करी, बोले जय जय कार ॥ भव० ॥

२६—माथे मुकुट विराजतो, काने कुंडल हिये हार।
गहना गांठा नित नवा, नव रंग वस्तर सार ॥ भव० ॥

२७—सोधी सगाई धर्मनी, हिलमिल वात करन्त।
कैसी पुण्याई छै आपणी, मिलिया साध महन्त ॥ भव० ॥

२८—इम जाणि ने सेवो सतगुरु, पाखण्ड मत निवार।
सुध समगत हियड़े धरो, जिम पामो भव पार ॥ भव० ॥

२९—जेता दुःख दीशे तिके, पाप तणे परमाण।
जेता सुख दीसे तिके, धर्म तणां फल जाण ॥ भव० ॥

३०—पंच महाव्रत साधुना, श्रावक ना व्रत वार।
यह धर्म सेवो जिन कह्यो, जिम खुले सिद्ध गत बार ॥ भव० ॥

३१—राग द्वेष झट मूक दो, छोड़ो विषय कषाय।
पांच इन्द्रियां वश करो, जिम मुगत विराजो जाय ॥ भव० ॥

३२—कूड़ कपट, द्वेष वर्ग ने, छोड़े चतुर सुजाण।
रिख 'जयमलजी' इण पर ऊचरे, ज्यूं मिल जावे निरवाण ॥ भव० ॥

---

(१९)

❀ वैराग्य-बत्तीसी ❀

जीवड़ला दुलहो मानव भव कांई रे तूं हारे ॥ ध्रुव ॥

१— मनुष्य जनम दोहिलो लह्यो,
वलि लाधो आरज खेत रे।
उत्तम कुल जनम लह्यो,
हिवे राख धर्म सुं हेत रे ॥ जीव० ॥

२— नव घाटी ऊलंघ ने,
पाम्यो नर भव सार रे ।
पूरी इन्द्रिय पायने,
हिव रोटयां साटे मत हार रे ॥ जीव० ॥

३— अनन्त वार मिसरी भखी,
मीठो कियो ते थूक रे ।
अन्न पुद्‌गल सारा भख्या,
पिण भागी नहीं थारी भूख रे ॥ जीव० ॥

४— आ देही देवालणी,
घणोइज राखे गाढ रे ।
काम पड़े कोई आयने,
जब जाय देवालो काढ रे ॥ जीव ॥

५— गाढ़ घणोहीज राखतो,
झिलतो जोम जमाही रे ।
पहिले पहर दीठा हुँता,
ते छेहले दीसे नांही रे ॥ जीव० ॥

६— माता पिता झुरता रह्या,
वलि बांधवा नी जोड़ रे ।
बाल त्रिया विल विल करे,
ते तो गयोज ऊभा छोड़ रे ॥ जीव० ॥

७— सगपण पुत्र माता तणां,
जिणवर कया ते जोयरे ।
आंसु ते माता तणा,
समुद्रां सु वहुला होय रे ॥ जीव० ॥

८— सगपण करतो थको,
तूं रड़वड़ियो संसार रे ।
एक एक की जून मे,
तूं उपनो अनन्त वार रे ॥ जीव० ॥

९— पल सागर ना आउखा,
ते भुगत्या अनन्ती वार रे ।
जनम मरण वहुला किया,
हिव हिवड़े आण विचार रे ॥ जीव० ॥

१०— मिनख जनम ही पायने,
आउखो ओछो थाय रे ।
रोग मांदगी लागी रहे,
तब धरम कियो कांई जाय रे ।। जीव० ।।
११— चतुराई हूंनर करी,
जोड्या लाखां कोड़ रे ।
पाप थारे केड़े चल्या,
धन गयो सहु छोड़ रे ।। जीव० ।।
१२— धन सुं धीगाणा हुवे,
धन सुं बंधे सहु पाप रे ।
आड़ो आवे अवर ने,
दुःख भुगते आपो आप रे ।। जीव० ।।
१३— धन कारण बांधव वढ़े,
धन तोड़ावे नेह रे ।
धन रोकावे रावले,
धन छिंदावे देह रे ।। जीव० ।।
१४— धन सुं लागे चोरटा,
धन सुं पडेज खार रे ।
धन सेती अनरथ घणो,
धन पड़ावे वाट रे ।। जीव० ।।
१५— ओहीज धन संच्यो हुतो,
नारी केरे काज रे ।
पुरुप अनेरां सुं भोगवे,
पिण मन में न आणे लाज रे ।। जीव० ।।
१६— बड़ा बड़ा जोगी जती,
पड़िया इणरे पास रे ।
'आचारंग' सूत्र में कह्यो,
ए तो आपांणो ही जाय छे नास रे ।।जीव०।।
१७— इम जाणी ने उत्तम नरां,
ए धन नो एह बहु घाट रे ।
इण सेती न्यारा रहे,
ते लेसी मुगत रमण नी वाट रे ।।जीव०।।

१८— एक कनक दूजी कामणी,
फन्द कह्या जिन राज रे ।
इण फंद में फसिया रहे,
ते मरने दुर्गति जाय रे ॥ जीव० ॥

१६— परणी ने हरख्यो घणो,
क्या डाहो क्या भोलो रे ।
खबर पड़ेली तिण दिने,
जब लागेली चींचड़ पोल रे ॥ जीव० ॥

२०— घर में ताजी कमाई नहीं,
तब परदेशां उठ जाय रे ।
ताणांताणी लागी रहे,
थांरे नेह तांतणिये बांध रे ॥ जीव० ॥

२१— धिक धिक विषय विकार ने,
पड़ी पिंजर मांय रे ।
भलाज कुल नो डीकरो,
पड़े नीच तणे घर जाय रे ॥ जीव० ॥

२२— घर नारी छूटे नहीं,
तो परनारी तो छांड़ रे ।
परनारी ना संग थी,
घणा हुआ छै भांड़ रे ॥ जीवा० ॥

२३— राणो 'रावण' खप गयो,
सीता तणे काज रे ।
'द्रोपदी' केरा संग थी,
पाड़ी पद्मोतर री लाज रे ॥ जीव० ॥

२४— विषिया – रस वाह्यो थको,
परनारी सूं खाय रे ।
एक एक मूरख एहवा,
ज्यां ने घरनी न आवे दाय रे ॥ जीव० ॥

२५— एके मारे ऊपर ले,
पाड़े घणा हवाल रे ।

कुटुम्ब सगा मिलियां थकां,
रहे नीचो माथो घाल रे ॥ जीव० ॥

२६— 'मणिरथ' राय मोहि रह्यो,
'मयणरेहा' ने रूप रे ।
'जुगबाहु' ने मारियो,
जाय पड्यो अन्ध कूप रे ॥ जीव० ॥

२७— परनारी नी प्रीत सूं,
पाणी उत्तर जाय रे ।
खिण एक सुख रे कारणे,
मार अनन्ती खाय रे ॥ जीव० ॥

२८— हाथ पग छेदन करे,
वलि छेदे नाक ने कान रे ।
आतो दीठी वानगी,
आगे खुले पापनी खान रे ॥ जीव० ॥

२९— कुलवन्ती जाय चली,
केई करे माठी चाह रे ।
विगर मिल्यां विन भोगव्यां,
मरीने दुर्गत जाय रे ॥ जीव० ॥

३०— काम आसी विष सारिखो,
काम विष सम जाण रे ।
विषय थकी विरक्त हुवे,
ते पहुँचे निर्वाण रे ॥ जीव० ॥

३१— इम जाणी उत्तम नरां,
छांडो एहनो संग रे ।
'सयंभूरमण' समुद्र तिर्यो,
बाकी रह्यो छे गंग रे ॥ जीव० ॥

३२— हेला दे दे जगाविया,
सतगुरु चोकीदार रे ।
जागतड़ा नर केई बूझिया,
गाफल हुआ खुवार रे ॥ जीव० ॥

१८— एक कनक दूजी कामणी,
फन्द कह्या जिन राज रे।
इण फंद मे फसिया रहे,
ते मरने दुर्गति जाय रे॥ जीव०॥

१९— परणी ने हरख्यो घणो,
क्या डाहो क्या भोलो रे।
खबर पड़ेली तिण दिने,
जब लागेली चींचड़ पोल रे॥ जीव०॥

२०— घर में ताजी कमाई नहीं,
तब परदेशां उठ जाय रे।
ताणांताणी लागी रहे,
थांरे नेह तांतणिये बांध रे॥ जीव०॥

२१— धिक धिक विषय विकार ने,
पड़ी पिंजर मांय रे।
भलाज कुल नो डीकरो,
पड़े नीच तणे घर जाय रे॥ जीव०॥

२२— घर नारी छूटे नही,
तो परनारी तो छांड़ रे।
परनारी ना संग थी,
घणा हुआ छै भांड़ रे॥ जीवा०॥

२३— राणो 'रावण' खप गयो,
सीता तणे काज रे।
'द्रोपदी' केरा संग थी,
पाड़ी पद्मोतर री लाज रे॥ जीव०॥

२४— विषिया-रस वाह्यो थको,
परनारी सूं खाय रे।
एक एक मूरख एहवा,
ज्यां ने घरनी न आवे दाय रे॥ जीव०॥

२५— एके मारे ऊपर ले,
पाड़े घणा हवाल रे।

कुटुम्ब सगा मिलियां थकां,
रहे नीचो माथो घाल रे ॥ जीव० ॥

२६— 'मणिरथ' राय मोहि रह्यो,
'मयणरेहा' ने रूप रे ।
'जुगबाहु' ने मारियो,
जाय पड्यो अन्ध कूप रे ॥ जीव० ॥

२७— परनारी नी प्रीत सूं,
पाणी उत्तर जाय रे ।
खिण एक सुख रे कारणे,
मार अनन्ती खाय रे ॥ जीव० ॥

२८— हाथ पग छेदन करे,
वलि छेदे नाक ने कान रे ।
आतो दीठी वानगी,
आगे खुले पापनी खान रे ॥ जीव० ॥

२९— कुलवन्ती जाय चली,
केई करे माठी चाह रे ।
विगर मिल्यां विन भोगव्यां,
मरीने दुर्गत जाय रे ॥ जीव० ॥

३०— काम आसी विष सारिखो,
काम विष सम जाण रे ।
विषय थकी विरक्त हुवे,
ते पहुँचे निर्वाण रे ॥ जीव० ॥

३१— इम जाणी उत्तम नरां,
छांडो एहनो संग रे ।
'सयंभूरमण' समुद्र तिर्यो,
बाकी रह्यो छे गंग रे ॥ जीव० ॥

३२— हेला दे दे जगाविया,
सतगुरु चोकीदार रे ।
जागतड़ा नर केई बूझिया,
गाफल हुआ खुवार रे ॥ जीव०

३३— सूरवीर केई चेतिया,
जाणी अथिर संसार रे ।
धन कामण तज नीसरिया,
लीधो संयम भार रे ॥ जीव० ॥

३४— हेत जाणी साधु कहे,
तूं राख धर्म सूं खेम रे ।
कारज जब ही सूधरे,
ऋषि 'जयमलजी' कहे एम रे ॥ जीव० ॥

---

(२०)

❀ बाल प्रतिबोध-चौतीसी ❀

बूढा तिके पण कहिये बाल ॥ ध्रुव ॥

१— दुर्लभ मिनष जमारो पाय,
परमादे दिन निकल्या जाय।
धर्म विना जे गमावे काल,
बूढ़ा तिके पण कहिये बाल ॥

२— आपणा दोष ढांकण ने काज,
छोड़ देवे मरयादा लाज ।
पर सिर नांखे आपणो आल ॥ बूढा० ॥

३— सूंस नहीं कोई व्रत आंखड़ी,
ढीलो मुख नहीं मेले घड़ी ।
खाणा साहमो रह्यो निहाल ॥ बूढा० ॥

४— देव गुरु धर्म री नहीं पारखा,
सगलाई जाणे सारखा ।
जिम सरवरनी फूटी पाल ॥ बूढा० ॥

५— मेठी नहीं ममगत री नीव,
नहीं सरधे छहकाय रा जीव ।
व्रत पाखंडी कांई न सके पाल ॥ बूढा० ॥

६— जाणपणो नहीं किणी बात रो,
खाली मोह करे करामात रो ।
घर में बह रह्या चीखलखाल ॥ बूढा० ॥

७— पाछली रात रो वेगो जाग,
पाणी अगन रो दीसे अभाग ।
मुख सूं बोले आल पंपाल ॥ बूढा० ॥

८— जे कोई देवे न्याय री सीख,
वलती देवे अपूठी भीख ।
मुख थी बोले माठी गाल ॥ बूढा० ॥

९— नहीं छोड़े आपणी पारकी,
जांणे सूत दिया नारकी ।
विपय निजर भर रह्योज भाल ॥ बूढा० ॥

१०— कल रह्यो छे घर रे काम,
नहीं ले कदे प्रभु रो नाम ।
मुख आव्या छै धवला बाल ॥ बूढा० ॥

११— लांबी माला भाली हाथ,
विच विच करे पराई वात ।
जांणे अरठ तणी घटमाल, ॥ बूढा० ॥

१२— नजर पड़े कोई धर्मी भेष,
तब मूरख ने जागे द्वेष ।
जाणे ऊठी अगन री भाल ॥ बूढा० ॥

१३— नहीं जाणे पेलां री पीड़,
उलटी करी पाप्यां री भीड़ ।
धर्मी सेती बांधे चाल ॥ बूढा० ॥

१४— घर को कोई कह्यो नहीं करे,
पाछो देतां आघो पड़े ।
धस रह्यो छै माया जाल ॥ बूढा० ॥

१५— आठूं प्रहर पाप मे रहे,
कोई वात धर्म री कहे ।
तब तो देवे पड़ती राल ॥ बूढा० ॥

१६— अक्षर भेद न जाणे मूढ़,
चाल रह्यो छै कुलरी रूढ़ ।
ठोठ भट्टारक ठंठण पाल ॥ बूढ़ा० ॥

१७— घर का भोजन युगत सूं करे,
तो ही अनाड़ी यूं ही लड़े ।
रांधी हांडी मे घाले काल ॥ बूढ़ा० ॥

१८— फल मूला गाजर ने कंद,
मांहे अनंत जीवां ना फंद ।
ऊभो ही जाय श्रो गाल ॥ बूढ़ा० ॥

१९— रात दिवस ढोर जिम चरे,
ऊठ सवार पाणी में पड़े ।
अनंत जीवां का करे खोगाल ॥ बूढ़ा० ॥

२०— व्यसन सात जुवटा मे रमे,
सर्व वर्ष धूल मांहि गमे ।
हार गया धन और माल ॥ बूढ़ा० ॥

२१— आया पजूषण भाद्रव मास,
छती शक्ति न करे उपवास ।
चित्त दियो घृत रोटा दाल ॥ बूढ़ा० ॥

२२— न सुणे कदे साधरी वाण,
लागी रहे घर री लेताण ।
बेठो झूठी करे झिकाल ॥ बूढ़ा० ॥

२३— कहे पोसो कीधां रो नाम,
निस दिन करे घरां रा काम ।
सोवे अछायां ढोल्यो ढ़ाल ॥ बूढ़ा० ॥

२४— चीतारे नही चवदे नेम,
परनारी सुं राखे प्रेम ।
चोरी करे ने विसन री चाल ॥ बूढ़ा० ॥

२५— जीव तणी बहु हिंसा करे,
झूठ बोलतो नही डरे ।
पर, घर में ले न जाणे काल ॥ बूढ़ा० ॥

२६— सावज काम थकी नहीं डरे,
जरे चोरासी मांहे फिरे ।
बांधे मूरख पाप री पाल ॥ बूढ़ा० ॥

२७— थोड़ा दिन रो जीवणो जाण,
अब तो मन में शंका आण ।
वय पाकी हिव पाप ने टाल ॥ बूढ़ा० ॥

२८— मूरख मोय रह्यो अज्ञान,
यूं हि कर रह्यो अभिमान ।
रात दिवस चिंतवे पड्यो जंजाल ॥ बूढ़ा० ॥

२९— दिन दिन थारो आउखो जाय,
मूरख तो लालच लपटाय ।
अब तूं परभव मामी भाल ॥ बूढ़ा० ॥

३०— क्रोध कषाय ने नहीं तजे,
लोकां मांहे निंदक वजे ।
वचन भूठ रा कहे ज्यूं शाल ॥ बूढ़ा० ॥

३१— बूढ़ो हुवो तोहि नायो ठाम,
क्यूं कर सुधरसी थारो काम ।
तो ही देतो रह्यो नहीं, मुख थी गाल ॥ बूढ़ा० ॥

३२— पाप करण ने आगो धसे,
कजिया कारा करण ने फंसे ।
तुरत लड़ण ने बांधे चाल ॥ बूढ़ा० ॥

३३— हिंसा मांहे प्ररूपे धर्म,
मूर्ख बांधे जाड़ा कर्म ।
मिथ्यात मांहे वण रह्यो लाल ॥ बूढ़ा० ॥

३४— ऋषि 'जयमलजी' भाषे एम,
दया धरम सूं कर तूं प्रेम ।
छोड़ो तुमे संसार जंजाल ॥ बूढ़ा० ॥

(२१)

❀ पुण्य-छत्तीसी ❀

पुण्य रा फल जोयज्यो, कायर मत होय ज्यो रे ॥ ध्रुव ॥

१— दया-रणसिंघो बाजियो, जागो, जागो नरनार ।
मुगत नगर मे चालणो तुमे, वेगा हुयजो त्यार रे ॥

२— केइक पुण्यवन्त प्राणिया रे, चेत कियो धर्म सार ।
साधु श्रावक व्रत संग्रह्या, समकित सेठी धार रे ॥

३— साध श्रावक व्रत पालने रे, देव हुआ अभिराम ।
महल देवी मोह्या चिन्तवे रे, आहे रखे च वां इह ठाम रे ॥

४— आय ऊपना ततकाल नो रे, देव भवे दीपंत ।
अवधि तणो उपयोग दे रे, देखे देव महंत रे ॥

५— सज्जन केइयक चेतिया रे, केइक हुवा तैय्यार ।
केइक बेठा बापड़ा रे, ज्यांने जाणो नरक मझार रे ॥

६— करो दलाली धर्म री रे, दीपे अधिकी जोत ।
'कृष्ण' महाबलि देखलो, जिण बांध्यो तीर्थङ्कर गोत ॥

७— ऊठो आगो संभाल ने रे, देखो अवसर डाण ।
काल लपेटा ले रह्यो रे, गिणे न केहनी काण रे ॥

८— काचे घर, राचो रूती रे, सास रो किसो विश्वास ।
उत्तम करणी थे करो, ज्यूं पामो शिवपुर वास रे ॥

९— मोती विखर्या चोक मे रे, आंधा, उलंघ्या जाय ।
ज्योति खुली जगदीश री रे, चतुरां लिया उठाय ॥

१०— सिहासण सूं उत्तरे रे, नमे देव तत्काल ।
देव अभोगी ने इम कहे, तुमे रचो विमाण विशाल रे ॥

११— तेह विमाणे वेसने रे, आवे अरिहन्त पास ।
सब विध सूत्रे कही रे, ते करे मन हूलास ॥

१२— नाटिक करे जुजुवा रे, देवल, वेधे, विस्तार ।
अरिहन्त आगल भव तणी, पूछा करे गणधार ॥

१३— तिण काले नगर आद दे रे, नर किरिया आचार ।
जिणजी बतावे जुजुवा रे, पहुंचे तिण भव पार रे ॥

१४— माणस मूके करी रे, पाम्या सुर भव सार ।
सुख सेजां अति दीपती रे, जांमें आय लियो अवतार रे ॥

१५— हाव भाव करती थकी रे, देव्यां आई हजूर ।
इण ठामे आया तुमे, स्यूं किया पुन पूर रे ॥

१६— दचा भुचा किम सुचा रे, विमन न सेव्या सात ।
कहो करतूत किसी करी तुमे, थया हमारा नाथ रे ॥

१७— ज्ञान शियल तप भावना रे, आदरिया तंतसार ।
इण करणी इहां ऊपनो रे, पाम्यो हरष अपार रे ॥

१८— तरुण पणे विषया तज्या रे, तप कर कर्मनो अंत रे ।
इन्द्र पणे आय ऊपना रे, अति दीपे जोत महंत रे ॥

१९— देव कहे देवियां प्रत रे, हूँ पाछो जाऊं एक वार ।
समचो देऊं संसारियां, तुम करजो जिन धर्म सार ॥

२०— देव्यां आवण दे नहीं रे, राखे जो विलमाय ।
जोवो नाटक हम तणो रे, पछे जोश सूं कहिजो जाय ॥

२१— दोय घडी नाटक करे रे, तिहां दोय सहस वर्ष जाय ।
अल्प आऊ ना मानवी रे, पीढ़ियां बहुली थाय रे ॥

२२— सुधर्मा देवलोक मे रे, विमाण बत्तीसे लाख ।
भोला कोई शंका धरे रे, पिण सूत्र मांही छे शाख रे ॥

२३— शीघ्र गति चाले देवता रे, लाख जोजन रे देह ।
एकीका विमाण नो रे, छ मासे नावे छेह ॥

२४— सर्व रतना मे शोभता रे पांच सौ जोजन ऊंचा मेल ।
सत्ताइस जोजन रो तलो रे, ए सुख नहीं छे सहेल रे ॥

२५— सुधर्म आदि देख ने रे, पांच अणुत्तर जोय ।
आयुस, धन सुख लीलारे, चढ़ता चढ़ता होय रे ॥

२६— गहणा गांठा नव नवा रे, नवला नित प्रति वेश ।
चंद्र, सूरज, लेखे किसे रे जिहां रत्नां रो अधिक प्रवेश ॥

२७— धर्म सनेही जे हुंता रे, मित्र, बंधव, परिवार ।
हर्ष धरे, मिलतां थकां रे, करता धर्म विचार रे ॥

२८— सागर सम सुख देवना रे, अन मन अधिको प्रेम ।
कांसु सुख मानव तणां रे, डाभ अणी जल जेम रे ॥

२६— वार अनन्ती पामिया रे, सुख विल्स्या सुर मांय ।
तो पण तृपती नहीं हुई, इम जाणी समता लाय रे ॥

३०— अथिर संसार ने जाण ने रे, चेतो थे भव जीव ।
ओछा जीवित कारणे, क्यु देवो ऊंडी नीव रे ॥

३१— ज्ञान सहित व्रत पालजो रे, भमो न बहु संसार ।
थोड़ा मांय नफो घणो, कोई उत्तम करो विचार रे ॥

३२— मन माडां समझाविया रे धन साधु ऋषिराय ।
नरक पड़तां राख ने रे मेल्या, देवलोकां मांय रे ॥

३३— साधूजी ऊझ्या सूरमा रे, ज्ञान घोडे असवार ।
कर्म कटक दल जूंझिया रे, विलम्ब न कीध लिगार रे ॥

३४— प्रीति हुती भव पाछले रे, एक विमाणे वास ।
हिल मिल ने वातां करे रे, सतगुरू ने साबास ॥

३५— देव तणी ऋद्धि दीपती रे, पामी पुण्य प्रमाण ।
वासा वसिया एहवा रे, पिण मुगति दिया महलाण रे ॥

३६— इम जाणी धर्म आदरो रे,
जे जग मे तंतसार ।
थोड़ा मांहे नफो घणो रे,
'जयमलजी' कहे धर्म धार रे ॥

---

(७२)

❀ आत्मिक–छत्तीसी ❀

कह भाई रूडो ते स्यूं कियो ॥ ध्रुव ॥

१— सतगुरु आगम साख थी,
दे भव जीवां ने सीख ।
सुगुरु, सुदेव, सुधर्म नी,
थां कांय न राखी रे ठीक ॥कह०॥

२— धर्म आराधन नहीं कियो,
मनुष्य जनम सार ।
नरभव पायो छे नीठ सूं,
अहिले मत दीजो हार ॥कह०॥

३— पाछली रयण ज ऊठ ने,
न कियो जिनजी रो जाप ।
काम मांहे कलियो रह्यो,
बहुला संच्या रे पाप ॥कह०॥

४— कुगुरु, कुदेव, कुधर्मनी,
खोटी राखी रे पास ।
हिंसा धर्म प्ररूप ने,
राखी मुक्ति री आस ॥कह०॥

५— [1]पांचू मेली रे मोकली,
[2]छहुँ री खबर न काय ।
[3]सातां सेती रे लग रह्यो,
पड़ियो आठ मद माय ॥कह०॥

६— च्यारूं जाडी रे चोकडी,
तिणरी खबर न काय ।
भरमायो कुगुरां तणो,
तड़फे मोह फंद मांय ॥कह०॥

७— पापां सूं परिचय घणो,
[4]'हवो' रहे रे हजूर ।
[5]'ल'ले लिव लागी रही
[6]द'दो दिल सूं दूर ॥कह०॥

८— बाग बगीचा मे जाय ने,
तोड्या फल फूल पान ।
अनन्त काय भक्षण किया,
अलगण नीर सिनान ॥कह०॥

---

१. पांच इन्द्रिय । २. षट् काय । ३. सात व्यसन
४. हिंसा । ५. ललना । ६. दया ।

९— भांग तिजारा रे काढ़ ने,
ढोल्या अलगण नीर ।
पाणी ने फुहारां तणी,
नही जाणी रे पर–पीर ॥कह०॥

१०— पतले गरणे छाणतां,
जिवड़ा वां मे जाय ।
कदाच जो लारे रहे,
तो पेशे चिपटी रे मांय ॥कह०॥

११— आरंभ मे धसियो घणो,
न गिण्यो काल अकाल ।
कर्मज बांधे रे चीकणा,
भूठी करे भिकाल ॥कह०॥

१२— कुमति कदाग्रह छांड़ ने,
न सुणी सद्गुरु वाण ।
पाप किणां ने रे लागसी ?
ऐसी कहे रे अजाण ॥कह०॥

१३— दिन गमायो रे खाय ने,
रात गमाई सोय ।
ज्ञान, ध्यान क्या बाहिरो,
चल्यो कलंदर होय ॥कह०॥

१४— व्रत न लीधो रे,
आश्रव नाले ने रोक ।
विकथा कीधी रे पारकी,
जनम गमायो फोक ॥कह०॥

१५— विषय निजर भर जोवतां,
संची पाप नी रास ।
मरण लगे मूंक्यो नहीं,
परनारी नो रे पास ॥कह०॥

१६— हांसी खासी रे मिसकरी,
कीधी चावत चात ।
आरत रुद्रज ध्यान में,
गमाया दिन रात ॥कह०॥

१७— घाडी खाधी रे चौंतरे,
दंडाया बहु लोक ।
मन मे जाणें हूँ मोटको,
पर घर घाल्या रे सोक ॥कह०॥

१८— रांड निपूतादिक एहवी,
दीधी दुरासी रे गाल ।
भूंडी गाल कुलक्षणी,
निस दिन करे रे लवाल ॥कह०॥

१९— सूंस लेई ने रे भांजिया,
कर्या कूड़ा रे नेम ।
ढेठो मस्तज हुय रह्यो,
नहीं धर्म सूं रे प्रेम ॥कह०॥

२०— साधु तणां व्रत नां लिया,
श्रावक नां व्रत नाय ।
लेई ने पाल्या नहीं,
चल्यो चौरासी मांय ॥कह०॥

२१— सुध साधु ने साधवी,
षट् काया ना प्रतिपाल ।
ज्यांरी निंदा करी घणी,
पेट मे मांडी रे भाल ॥कह०॥

२२— पाप किया पेलां तणा,
लिया आपमे वेर ।
धर्मी पुरुष ने देखने,
मुख नो दियो रंग फेर ॥कह०॥

२३— पापी सेती रे प्रीतड़ी,
धर्मी सेती रे द्वेष ।
रात दिवस पचतो रहे,
दशा आई रे देख ॥कह०॥

२४— भेख लियो भगवन्त रो,
खाधा लोकां रा माल ।
ज्ञान ध्यान दया बाहिरो,
कूंदो वण रह्यो लाल ॥कह०॥

२५—गुणवंत री निंदा करी,
अवगुण किया रे वखाण।
क्रिया पात्र रे साध सुं,
उलटी मांडी रे तांण ॥कह०॥

२६— हिंसा कीधी रे जीवनी,
बोल्या मिरखावाद।
चोरी कीधी रे परतणी,
मैथुन ने परमाद ॥कह०॥

२७— परिग्रह मेल्यो रे कारमो,
सेव्या अठारे पाप।
कुगुरू कदाग्रह ताण ने,
तें कीधी आपणी थाप ॥कह०॥

२८— धर्म करण ने तूं आलसूं,
पाप करवाने सूर।
थोड़ा जीतव कारणे,
घणो केलवे कूड ॥कह०॥

२९— जीव हण्या छह कायना,
जाण्यो हुसी मुझ धर्म।
बहकायो कुगुरां तणो,
उलटा बांध्या ते कर्म ॥कह०॥

३०— माय बाप गुरां तणी,
ते कांय न राखी रे काण।
हाट हवेली ने धन तणी,
थारे लाग रही लहताण ॥कह०॥

३१— दयाधर्म सूं डरपियो,
हिंसा धर्म री हूँस।
कुगुरु सेव्या ते मोकला,
लिया साधु वंदन ना सूंस ॥कह०॥

३२— जीव हण्या छह कायना,
थारे कांयु आई रे दाय।
बहकायो कुगुरां तणो,
तू हण हण हर्षित थाय ॥कह०॥

३३— देव गुरु धर्म री पारखा,
तूं मूल न जाणे मूढ़ ।
नाम कर्म रे कारणे,
लाग रही कुल रूढ़ ॥कह०॥

३४— कुगुरु शंका रे घाल ने,
मारग पड्यो रे खोट ।
धर्म काज हिंसा करे,
ते बांधी पापनी पोट ॥कह॥०

३५— विनय मारग उत्थापियो,
थारो आई हुवेला रे घाट ।
माया बेसे रे आंगणे,
बायां बेठे रे पाट ॥कह०॥

३६— ज्ञानी पुरुषां रे इम कह्यो,
चवदे पूरव नो सार ।
सामायिक उत्थाप ने,
नहीं माने नवकार ॥कह०॥

३७— छह काया नी रक्षा करो,
जो चाहो सुख क्षेम ।
काज सरे इण जीवनो,
रिख 'जयमलजी' कहे एम ॥कह०॥

---

(२३)

❀ श्री शल्य-छत्तीसी ❀

१— अरिहन्त सिद्ध ने आयरिया,
उवज्झाय ने सगला साधो रे ।
पांचूं ने प्रणमी करी,
समकित खरो आराधो रे ॥
२— 'शल्य' कोई मत राखजो,
शल्य राख्यां दुःख थायो रे ।

इण भव भंड भंड हुवे,
बुद्धि अकल परिजायो रे॥

३— द्रव्य शल्य ने भाव शल्य ने,
मांही रह्या नहीं रूड़ा रे।
भाव शल्य कोई काढ़सी,
ते परमेश्वर ना पूरा रे॥

४— द्रव्य शल्य मांही रह्यो,
एक भवे दुःख थायो रे।
भाव शल्य राख्यां थकां,
भव भव में दुःख थायो रे॥

५— केई वेरागी आलोवसी,
आलोवे नही लपटी रे।
आठ बोल 'ठाणायंग' कह्या,
मायाविया होय कपटी रे॥

६— जाति कुलादिक ऊजलो,
अधिकी जेहनी बुद्धी रे।
सरल थई आलोय ने,
प्रायश्चित लेई होय शुद्धी रे॥

७— आचारवन्त ने आगले,
शुद्ध आलोयण लीजे रे।
भोला बालक नी परे,
सरल होय आखीजे रे॥

८— 'प्रायश्चित' दश प्रकार ना,
लेई ने शल्य काढीजे रे।
लोक बतावे आंगुली,
एहवो काम न कीजे रे॥

६— 'सुख मालिका' साधवी, भणी,
गुरणीये दोष बताया रे।
शल्य सहित मर हुई 'द्रौपदी',
पांच धणी तिण पाया रे॥

१०— पारम नाथजी री साधवी,
'द्रोय से पट्' जाणी रे।
शल्य सहित मरने हुई,
इन्द्र तणी इन्द्राणी रे॥

११— श्रावक श्री वर्धमान रो,
जो वो 'नंदणमणियारो' रे।
शल्य सहित हुवो डेडको,
आपणी वावी मझारो रे॥

१२— 'जमाली' भगवन्त रो,
शिष्य हुवो अंतेवासी रे।
वचन उथापी शल्य राखियो,
हुवो किलमेषी दुःख पासी रे॥

१३— राय 'उदाई' रो डीकरो,
हुतो 'अभीच' कुमारो रे।
सिद्ध उदाई नो शल्य रह्यो,
मर गयो असुर मझारो रे॥

१४— नव निहाणा चालिया,
दशाश्रुतस्कन्ध मांयो रे।
आलोयां विन एहना,
फल रूड़ा नवि थायो रे॥

१५— 'सोमल' कष्ट घणो कीयो,
वमियो समकित सारो रे।
आलोयां विन ते मूवो,
सो हुवो 'शुक्र' नो तारो रे॥

१६— हुई 'सुभद्रा' साधवी,
बाल मुरछा सेवी रे।
गुरणी वचन नहिं मानियो,
हुई 'बहुपुत्तिया' देवी रे॥

१७— 'अंग' 'सुपृष्ट' गाथापती,
जिन धर्म पायो रूड़ो रे।

---

१. ज्ञाता धर्म कथा सूत्र के द्वितीय श्रुत-स्कंध में संकलित।

धुर से विराधीने हुवो,
'चन्द्र' विमाने 'सूरो' रे॥
१८— हूंती 'सोमा' माहणी,
काम भोग तणी केला रे।
सोला वर्ष मे जनमसी,
सुत ना सोले बेला रे॥
१९— 'महाबल' मुनिवर तप कियो,
राखी मित्र सूं माया रे।
स्त्री नो गोत्र उपार्जियो,
'मल्लि' मायाना फल पाया रे॥
२०— कमलप्रभ आचारजे,
वचन प्ररूप्यो भारी रे।
मरता शल्य न काढ़ियो,
हुवो अनंत संसारी रे॥
२१— इत्यादिक बहूला हूवा,
समकित धर्म विराधी रे।
मरने केई नरके गया,
केई नीची गती पिण लाधी रे॥
२२— रुलिया, रुले, रुलसी घणा,
शल्य दूषण मन राखी रे।
शंका भूल न राखजो,
इहां सूत्र बोले छै साखी रे॥
२३— देखी 'श्रेणिक' ने 'चेलणा,'
साध निहाणा कीधा रे।
समोसरण बेठा थका,
वीर शुद्ध करी लीधा रे॥
२४— चित्त चलियो 'रहनेम' नो,
वचन लगायो दोपो रे।
'राजमती' ठाम आणियो,
निश्चल थई गया मोखो रे॥

२५— 'मेघ' मुनि दुःख पावियो,
वीर मिल्या गुरु भारी रे ।
धीरज देई स्थिर थापियो,
हूवो एक अवतारी रे ॥

२६— 'गौतम' स्वामी ज्ञानी बड़ा,
वचन माहिं खलाया रे ।
'आनंद' ने खमाविया,
प्रायश्चित ले शुद्ध थाया रे ॥

२७— 'महाशतक' निज नार ने,
क्रोध करी बोल्यो कूकी रे ।
प्रायश्चित दे प्रभु सुध कियो,
'गौतम' ने घर मूकी रे ॥

२८— दशा मांहिला श्रावक भणी,
देव आय दुख दीधा रे ।
केइयक कष्ट मे चल गया,
मात त्रिया सुध कीधा रे ॥

२९— 'शंख' पोमो कियो कोल देई,
'पोखली' प्रमुख दुःख पाया रे ।
वीर फल कह्या क्रोध ना,
'शंखजी' ने सहूये खमाया रे ॥

३०— कह्यो न मान्यो 'चित्त' तणो,
'संभूत' निहाणो कीधो रे ।
शल्य सहित 'ब्रह्मदत्त' हुवो,
नरक तणो दुःख लीधो रे ॥

३१— 'वर्णनाग' नतुवो हुवो,
चढ़ियो रण संग्रामो रे ।
शल्य काढ़ी ने सेठो हुवो,
सार्यो आतम कामो रे ॥

३२— चारण श्रमण जाय परबते,
बीच मे करि जाय काल रे ।
विराधक विन आलोइयां,
चतुर लेजो संभाल रे ॥

३३— चारे रांघ ना चालिया,
भांत भांत संथारो रे।
आलोई निश्चल हूवा,
पाम्या भव जल पारो रे॥

३४— सूंस वरत पचखाण में,
लागी जावे कोई दोषो रे।
सुगुरु पासे आलोय ने,
शुद्ध हुवा मिले मोखो रे॥

३५— इहलोक ने अरथे करी,
पूरो कदीयन पडसी रे।
आतम दोषज काढसी,
जे परभव थी डरसी रे॥

३६— आलोई उज्वल हुओ,
छोड़ो माया धाखा-धेखो रे।
तिणसुं रिख 'जयमलजी' कहे,
तुमे सिद्ध तणा सुख देखो रे॥

---

(२४)

❀ जीवा–बंयालिसी ❀

जीवा तूं तो भोलो रे प्राणी, इम रुलियो संसार ॥ ध्रुव ॥

१— मोह मिथ्यात्व री नींद मे रे जीवा,
सूतो रे काल अनन्त।
भव भव मांही भटकियो जीवा,
ते सांभल विरतन्त ॥जीवा०॥

२— अनन्त जिन हुवा केवली जीवा,
उत्कृष्टो ज्ञान अगाध।
इण भव सूं लेखो लियो जीवा,
तो ही न कही थारी आद ॥जीवा०॥

३— पृथ्वी पाणी अगनी मे जीवा,
चौथी वायु — काय।
एकीकी तो काय मे जीवा,
काल असंख्यातो जाय ॥जीवा०॥

४— पंचमी काय वनस्पती जीवा,
साधारण प्रत्येक।
साधारण मे तूं वस्यो जीवा,
ते विवरो तूं देख ॥जीवा०॥

५— सुई अग्र निगोद में जीवा,
श्रेणी असंख्याती जाण।
असंख्याता प्रतर कह्या जीवा,
गोला असंख्य प्रमाण ॥जीवा०॥

६— एकीका गोला मध्ये जीवा,
शरीर असंख्या ठाण।
एकीका शरीर मे जीवा,
जीव अनन्त पिछाण ॥जीवा०॥

७— ते मांही थी जीवड़ा जीवा,
मोक्ष जावे [1]दग चाल।
पिण एक शरीर खाली नही जीवा,
नही हुवे अनन्ते काल ॥जीवा०॥

८— एक एक अभवी संगे जीवा,
भवी अनन्ता होय।
वलि विशेषे तेहना जीवा,
जन्म मरण तूं जोय ॥जीवा०॥

९— मोटा पाप करी तिहां जीवा,
उपनो नरक मझार।
छेदन भेदन वेदना जीवा,
ते सही निराधार ॥जीवा०॥

---

१. दग-पाणी

१०— भूख तृषा शीत तापनी जीवा,
रोग, शोक भय जाण।
दुःख भोगवे जे नारकी जीवा,
कर्म तणे अहिनाण ॥जीवा०॥

११— नरक थकी निगोद मे जीवा,
अनन्त गुणो विस्तार।
अनेक पुद्गल पूरिया जीवा,
इम भमियो संसार ॥जीवा०॥

१२— पेंसठ हजार ने पांच सो जीवा,
छत्तीस ऊपर धार।
जन्म मरण इक मुहूर्त में जीवा,
कर आयो बहु वार ॥जीवा०॥

१३— एकेन्द्रिय सूं नीकल्यो जीवा,
इन्द्रिय पाई दोय।
पुण्याई अनन्ती वधी जीवा,
बाल शिखा न्याये जोय ॥जीवा०॥

१४— इम तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय जीवा,
दोय लाखज जात।
दुःख दीठा संसार मे जीवा,
सुनजो इचरज वात ॥जीवा०॥

१५— जीभ बेइन्द्रिय मे वधी जीवा,
नाक तेइन्द्रिय जाण।
आंख चौरिन्द्रिय मे वधी जीवा,
कान पंचेन्द्रिय प्रमाण ॥जीवा०॥

१६— जलचर, थलचर, खेचरु जीवा
उरपर, भुजपर लेख।
सबल निर्बल ने भखे जीवा,
वैर मांहो मांही देख ॥जीवा०॥

१७— भव भव भटकतो नीठ मे जीवा,
पाई नरनी देह।

गर्भावासे दुःख सह्या जीवा,
काई सुनावूं तेह ॥जीवा०॥

१८— माता रुधिर पिता वीर्य नो जीवा,
लीनो प्रथम तूं आहार।
भूल गयो जनम्यां पछे जीवा,
सेखी करे अपार ॥जीवा०॥

१९— अहुट्ठ कोड़ सुई लाल करी जीवा,
चांपे रूं रूं मांय।
आठ गुणी हुवे वेदना जीवा,
गर्भावास रे मांय ॥ जीवा० ॥

२०— जनमतां कोड़ गुणी जीवा,
मरतां कोड़ा - कोड़।
जन्म मरण नी जगत मे जीवा,
जाणो मोटी खोड़ ॥जीवा०॥

२१— पग ऊंचा माथो तले जीवा,
आंखां ऊपर हाथ।
जाल जंजाल विष्टा मध्ये जीवा,
तूं वसियो कही जगनाथ ॥जीवा०॥

२२— गर्भ मांही ए दुःख सह्या जीवा,
छोड़ रही वर्ष बार।
जिण थानक मर ऊपनो जीवा,
बारे वर्ष वलि धार ॥जीवा०॥

२३— देश अनार्य मे ऊपनो जीवा,
इन्द्रिय हीनी थाय।
आउखो ओछो थयो जीवा,
धर्म कियो किम जाय ॥जीवा०॥

२४— कदाच नर भव पामियो जीवा,
उत्तम कुल अवतार।
देह निरोगी पाय ने जीवा,
जाय जमारो हार ॥जीवा०॥

२५— ठग फासीगर चोरटा जीवा,
धीवर कसाई न्यात।
न उपज्यो जिण मांय ने जीवा,
ऐसी न रही कोई जात ॥जीवा०॥

२६— चवदे ही राजू लोक मे जीवा,
जन्म मरण री जोड़।
बालाग्र भाग जित्ती जीवा,
खाली न राखी ठोड़ ॥जीवा०॥

२७— ओहिज जीव राजा हुवो जीवा,
ओहिज हुवो फकीर।
ओहिज जीव हाथी चढ्यो जीवा,
मस्तक आण्यो नीर ॥जीवा०॥

२८— इम संसार मे भटकतां जीवा,
पाई सामग्री सार।
आदर ने छिटकाय दी जीवा,
जावे बाजी हार ॥जीवा०॥

२९— खोटा देवज सराधिया जीवा,
लागो कुगुरू ने केड़।
खोटो धर्मज आदरी जीवा,
दीधा चऊं गति फेर ॥जीवा०॥

३०— कुगुरू भरोसे भूलने जीवा,
रड़वड़ियो यूं मूढ़।
जीव हणी धर्म जाणियो जीवा,
करतो ऊंधी रूढ़ ॥जीवा०॥

३१— कोलापाक 'रेवती' कियो जीवा,
भेल्यो भगवन्त भाव।
'सिंह' अणगार न वहरियो जीवा,
देखो सूत्र के न्याव ॥जीवा०॥

३२— पृथ्वी, पाणी, अगनी, वायरो जीवा,
वनस्पति त्रस काय।
धर्म कार्य हेते हणे जीवा,
ते भव तरिया नांय ॥जीवा०॥

३३— ओघा ने वलि मुखपति जीवा,
मेरू जितरा लीध।
क्रिया समकित बाहिरी जीवा,
एको काज न सीध ॥जीवा०॥

३४— चार ज्ञान गमाय ने जीवा,
नरक सातमी जाय।
चवदे पूर्व भणी करी जीवा,
पड़िया दुर्गति मांय ॥जीवा०॥

३५— भगवत रो धर्म पायां पछे जीवा,
यूं ही न जावे फोक।
कदाच जो जादा रुले जीवा,
तो 'अर्ध पुद्‌गल' मे मोक्ष ॥जीवा०॥

३६— सूक्ष्म ने बादर पणे जीवा,
मेली 'वर्गणा' सात।
एक 'पुद्‌गलपरावर्त' नी जीवा,
झीणी घणी छै वात ॥जीवा०॥

३७— अनन्ता जीव मुक्ति गया जीवा,
टाली आतम दोष।
न गया न जावसी जीवा,
एक मूला रा मोक्ष ॥जीवा०

३८— एहवा भाव सुनी करी जीवा,
श्रद्धा आई नांय।
ज्यूं आयो त्यूं हिज गयो जीवा,
लख चौरासी मांय ॥जीवा०॥

३९— तप जप संजम पाल ने जीवा,
टाली आतम दोष।
जाय 'अर्ध पुद्‌गल' मध्ये जीवा,
अनन्त चौईसी मोक्ष ॥जीवा०॥

४०— कबहिक तो नरक गया जीवा,
कबहिक हुवो देव।
पाप पुण्य फल भोगवी जीवा,
न मिटी मिथ्यात्व नी टेव ॥जीवा०॥

४१— केई उत्तम नर चेतिया जीवा,
लीधो संजम भार।
साचो मार्ग पालने जीवा,
पहुंता मोक्ष मझार ॥जीवा०॥

४२— दान, शियल, तप, भावना, जीवा,
एह थी राखो प्रेम।
क्रोड़ कल्याण छै तेहने जीवा,
रिख 'जयमलजी' कहे एम ॥जीवा०॥

---

(२५)

❀ नाक ❀

१— नाक कहे जग मे हूं बड़ो रे,
मो सम नही जग मे कोय रे।
सगला शरीर मे हूं सिरे रे,
शोभा देऊं सोय रे॥

२— नाकी राखणी जग मे दोहिली रे,
सोहिलो सगलो हि काम रे।
छांदो रोके जे आपणो रे,
ते नाकी रहे ताम रे ॥नाकी०॥

३— नाकी राखण ने केई दान दे रे
सूरा लड़े फोजां मांय रे।
मरे पिण पाछा पग न दिये रे,
रखे इण वाते नाकी जाय रे ॥नाकी०॥

४— बखतावर घरे विवाह हुवे रे,
पकवान परूसे भर छाब रे।
लोकां कने नाकी राखवा रे,
घर मे जीमे रोटा राब रे ॥नाकी०॥

५— नाकी राखण जीव कसे घणा रे,
काढे करड़े रुपये ब्याज रे।

ओसर-मोसर ढोल बजाय दे रे,
चतुर सुधारे मगला काज रे ॥नाकी०॥

६— 'दशार्णभद्र' नाकी राखवा रे,
लीधो वीर पे संजम भार रे।
इंद्र कने कराई वंदना रे,
सफल कियो अवतार रे ॥नाकी०॥

७— राम लच्छन नाकी राखवा रे,
थेट लंका गया चलाय रे।
'सीता' आणी रावण मारने रे,
उठे रह्यां तो नाकी जाय रे ॥नाकी०॥

८— 'पुंडरीक' नृप नाकी राखवा रे,
चारित्र लीधो आप रे,
'कुंडरीक' नाकी गमाय दी रे,
जिणरे पोते बहुला पाप रे ॥नाकी०॥

९— नाकी राखण रे कारणे रे,
'माधव' धातकी खंड में जाय रे ।
'पद्मोत्तर' री इज्जत पाड़ने रे,
सूंपी 'द्रौपदी' लाय रे ॥नाकी०॥

१०— गहणा भारी पेर्यां हुवे रे,
नहीं होवे मुख पर नाक रे।
वस्त्र पेर्यां सोभे नहीं रे,
मांहे पड़ गई मोटी चाख रे ॥नाकी०॥

११— साध पणो ले नाकी राखवा रे,
बले संथारो करे चौविहार रे।
श्रावक रा व्रत राखे खरा रे,
लज्जा करी नर-नार रे ॥नाकी०॥

१२— नाकी राखण ने आलोयणा करे रे,
पायछित लेवे गुरु - पास रे।
कदा इण लोक सूं डरता गोपवे रे,
तो नहीं सद्गति री आस रे ॥नाकी०॥

१३— कोई नाक बिना माहमूं मिले रे,
तो माठा शकुन थाय रे।
गांव दिसावर चाले नही रे,
नकटे दीठां पाछा वल जाय रे ॥नाकी०॥

१४— नाके सोभे तिलक सुहामणो रे,
बली मोती चूनी श्रीकार रे।
नाक विना गहणा सोभे नहीं रे,
सगले डील तणो सिणगार रे ॥नाकी०॥

१५— वंदना अरिहंत सिद्ध साधां भणी रे,
पहलां नाक करे नमस्कार रे।
संसार मांहे राजी हुवे रे,
नाक नमन कियां बारंबार रे ॥नाकी०॥

१६— इत्यादिक गुण नाक ना रे,
कह्या थोड़ा मे विस्तार रे।
रिख 'जयमलजी' इम कहे रे,
बुधवंत लीजो मन धार रे ॥नाकी०॥



जय-वाणी

(४)

चरित

चर्चा

दोहावली

(१)

❀ भृगु पुरोहित ❀

दोहे—

१— दरसण कीधां साधरो, मिटे अग्यान अंधार ।
ज्ञान जोति प्रकटे भली, पामे भवजल पार ॥

२— दरसण साधू रो कियाँ, उधर्या दोनुं कुमार ।
उत्तराध्ययन सूतर विषे, चवदमें अध्ययन अधिकार ॥

ढाल १ ली

(राग—तिण अवसर मुनिय)

१— मुनिवर मोटा अणगार,
करता उग्र विहार ।
सुणो ऋषभजी,
साधु मारग भूलने ए,
पड़िया उजाड़ मे ए ॥

२— पड़ रही तावड़े री भोट,
तिरसा सूं सूखा होट ।
सुणो ऋषभजी,
कठिन परिसो साधनो ए ॥

३— तालवे कोइ नहीं थूक,
जीभ गई ज्यांरी सूख ।
सुणो ऋषभजी,
होठां रे आई खरपटी ए ॥

४— तिरसा तो लागी आय,
जाणे जीव निकलियो जाय ।
सुणो ऋषभजी,
कठण मारग साध नो ए ॥

५— रोही तो डंडाकार,
घणी झंगी ने झार ।

सुणो ऋषभजजी,
मिनख रो मुख दीसे नहीं ए।

६— दोनुं ही मुनिराय,
बेठा तरुवर छाय।
सुणो ऋषभजी,
चिन्ता कर रह्या साधुजी ए॥

दोहे—

१— इतरे आया गवालिया, मुनिवर बेठा देख।
आई ने ऊभा रह्या, पूछे वात विशेष॥
२— वलता मुनिवर इम कहे, काचो न लेवां नीर।
विध वताई आपणी, मोटा साहस धीर॥

ढाल २ जी

(राग—साध सदा इमड़ा)

१— वलता बोले गवालिया,
सामी सुणो अरदास हो।
मुनिवर,
खारो पांणी म्हारे गांवरो।
मांहे भेली छास हो,
धन करणी मुनिराज री॥

२— मुनिवर मांड्यो पातरो,
पांणी ले पीधो तिण वार हो।
मुनिवर
साधुजी साता पामिया
तिरखा दीधि निवार हो॥ धन०॥

३— ऋषभजी दीधी धर्म देसना,
भिन्न भिन्न वहु विस्तार हो।
मुनिवर,
सुणने छहुँ गोवालिया,
लीधो संजम भार हो॥ धन०॥

४— चोखो चारित्र पालने,
पहुंता देव विमाण हो।
मुनिवर,
तिहां सूं चवने ऊपजे,
ज्यांरो सुणो वखाण हो ॥ धन० ॥

दोहे—

१— 'इषुकार' नगर ने विषे, 'इषुकार' हुवो राय ।
दूजी देवी कमलावती, चालि सुतर के मांय ॥

२— 'भृगु' पुरोहित तेहने, 'जसा' पुरोहितानी जाण ।
च्यार जीव तो ए थया, दोय रह्या देव विमाण ॥

३— अवधिज्ञान प्रयूंजियो, देख सुगतरा सूत ।
आंपे चव किहां ऊपजां, थासां 'भृगु' रा पूत ॥

४— दोय देवता देवलोक में, जाण्यो चवण विचार ।
पहिलॉ आया प्रतिबोधवा 'भृगु' पुरोहित परिवार ॥

ढाल ३ जी

(राग— नारी नो नेह निवारजो)

१— ए तो साधू नो रूप बणावियो,
दोनूं देवता तिण वार रे लाला ।
भृगु रे घरे आविया,
करवा शुद्ध करार रे लाला ॥
धन करणी मुनिराज री ॥

२— मुखड़े विराजे मुखपति,
मुनिवर वाले वेसरे लाला ।
ओघो विराजे काख मे,
माथे लोच्या केस रे लाला ॥

३— झोली पातरा हाथ मे,
चाले इर्या मार्ग सोध रे लाला ।
श्रमा पिया षट् कायना,
घणां जीवां ने प्रतिबोध रे लाला ॥

४— मुलकंता दोनु जणा,
भृगु आवता दीठ रे लाला ॥
ऊठी ने वांद्यो दंपती,
तन मन मे लागा मीठ रे लाला ॥

५— अमी समांणि वांणी वागरि,
शुद्ध दियो उपदेश रे लाला ।
ए संसार असार छै,
राखो दयाधर्म रेस रे लाला ॥

६— वाणी सुण मुनिराज री,
भृगु आदरिया व्रत बारे रे लाला ।
पुत्र तणी तृष्णा घणी,
पूछे दंपति तिण वार रे लाला ॥

७— ऋषिजी कहे पुत्र दो ए हुसी,
पिण ये मानो एक वात रे लाला ।
व्रत लेमी बाला पणे,
जो नवि करो व्याघात रे लाला ॥

८— आदरसी तो आदरे,
पिण कोई न कहसि अऊत रे लाला ।
काम सरयां दुःख वीसरे,
ते सुणज्यो विरतंत रे लाला ॥

दोहे—

१— सुरलोक थी चवकरि, 'जसा' उदर लियो अवतार ।
सवा नव मास पूरा हुवा, जनम्या दोनु कुमार ॥

२— पुन्यवन्त पूरा रूप में, नदन नीका वाल ।
भृगु मन मे चिंतवे, बांधू पाणी पेली पाल ॥

३— वालक घर मांसू निकले, भृगु लावे घेर ।
नगरी मे महिमा घणी, साधां रो पग फेर ॥

४— साधां री संगत हुवां, पछे कारि न लागे काय ।
दीक्षा थी डरतो थको, भृगु करे उपाय ॥

ढाल ४ थी

(राग—मारू राग)

१— परिहर्यो नगर वीहतेरे,
वास कियो कुल गाम।
सुणजो बेटा आपणो रे,
कुलवट राखण नाम—के,
जाया संग म जायज्यो रे॥

२— आदू वेर छै ब्राह्मण व्रतियां रे,
मूस मंजारी जेम।
वले सगपण सांकड़ो रे,
दूध रुद्र मेल तेम—के ॥जाया०॥

३— ओलखजो तमे आवता रे,
सीख सुणो हम पाम।
वेगा घर आवजो दोड़ने रे,
रखे करी, वेसास—के ॥जाया०॥

४— उत्तम छै ओ प्राणियो रे,
घणा जिवांरो सेण।
मोह रो घाल्यो भृगु कहे रे,
बोले खोटा वेण--के ॥जाया०॥

५— रंग रंगीला पातरा रे,
हाथ मे चितरंग लोट।
मूंडे राखे मुहपती रे,
मन मे घणी छै खोट—के ॥जाया०॥

६— उतावला चाले नही रे,
हवले मेले पाय।
जतन करे षटकाय ना रे,
दया घणी दिल मांय—के ॥जाया०॥

७— धरती सांमो जोयने रे,
चाले चित लगाय।
ओघो राखे खाख मे रे,
जिण तिण सूं लजाय के ॥जाया०॥

८— मेला पहरे कापड़ा रे,
रेवे पर घर बाट।
जो देखो थे आवता रे,
तो छोड़ दीजो ऊभा वाट के ॥जाया०॥

६— दीसता दीसे एहवा रे,
मुनिवर केरे वेस।
बालक पराया भोलवी रे
ले जावे परदेश के ॥जाया०॥

१०— धर्म कथा धुन सूं कहे रे,
विध सूं करे वखाण।
चतुर तणा मन मोहले रे,
लोहे चमके पाखाण के ॥ जाया ॥

११— प्रीत लगावे एहवी रे,
दोड़्या केड़े जाय।
ए करे सूं गयां थकां रे,
मोह गेहलड़ा थाय के ॥ जाया० ॥

१२— राखे छुरी ने पासणा रे,
पातरां केरे मांय।
नाना बालक भोलवी रे,
कालजो काढी ने खाय के ॥ जाया० ॥

१३— विहार करता आविया रे,
साधू तिण हिज गांम।
भूला चूका पुन जोग सूं रे,
जोग मिलियो छे ताम के ॥ जाया ॥

१४— एक समय रमतां थकां रे,
वारे चाल्या बाल।
मुनिवर देख्या आवता रे,
ऊभ्या सुरत संभाल के ॥ जाया० ॥

१५— दूर थकी मुनिवर देखने रे.
डर्या दोनूं बाल।

तात कह्या जिके आविया रे,
अब नेड़ो आयो छे काल के,
बंधविया ए कुण आया रे।

१६— दोड़ चढ्या तरू ऊपरे रे,
हिवड़े न मावे सांस।
केड़े आपां के आविया रे,
हमे किसी जीवण की आस के ॥बंधविया०॥

१७— धड़ धड़ लागा धूजवा रे,
कंपण लागी देह।
सांकड़े आंपे आविया रे,
किणविध जासां गेह के ॥बंधविया०॥

१८— वृक्ष तले मुनिवर आविया रे,
जीवां रा जतन करत।
दयावत दीसे खरा रे,
मन मे एम धरंत के ॥बंधविया०॥

१९— कीड़ी ने दूहवे नहीं रे,
बालक मारे केम।
मुनिवर देखी मोहिया रे,
लागो धर्म सूं प्रेम के ॥बंधविया०॥

२०— जाति-समरण पामिया रे,
बोले भाई दोनुं वांन।
उतरता इम चिंतवे रे,
रखे पड़ नीलो पान के ॥बंधविया०॥

२१— बंधव ए भल आविया रे,
सरिया वांछित काम।
जाति-समरण ज्ञान थी रे,
आयो वेराग बेऊं ताम के ॥बंधविया०॥

२२— हलवे हलवे ऊतर्या रे,
वांद्या मुनि ना पाय।
मात पिता ने पूछने रे,
मै लेसां संजम सुखदाय के ॥बंधविया०॥

२३— जिम सुख हुवे तिम करो रे,
खिण खिण छीजे आव।
थोड़ा मे नफो घणो रे,
तमे उत्तम देखो भाव के ॥बंधविया॥

ढाल ५ वी

(राग—वीरजिणंद समोसर्या ए)

१— आय कहे माय बाप ने रे,
मैं दीठो अथिर संसार।
बीहना जनम मरण सूं रे,
मै लेसां संजम भार॥
पिताजी अनुमति दीजै आज॥

२— व्रत बिना एको घड़ी रे,
खिण लाखीणी जाय।
सबल पड़े छे आंतरो रे,
थे अनुमत दो हित लाय ॥पिताजी०॥

३— पुरोहित बेटा ने इम कहे रे,
वेद मे इसो रे विचार।
पुत्र विना गति नहीं हुवे रे,
तमे सुख विलसो संसार॥
जाया तुज विन घड़ी रे छ मास॥

४— भंडूसुरी सद्‌गति लहे रे,
करणी निरफल न जाय।
'शुकदेव' प्रमुख सिद्ध हुवा रे,
वेद ई वरता थाय रे ॥ जाया० ॥

५— लाला! लिछमी-सुख भोगवो रे,
पूरव पुण्य पसाय।
जोवन वय पाछी पड्यां रे,
थे उत्तम चारित्रिया थाय रे॥ जाया० ॥

६— मगत हुवे न्हामण तणी रे,
जेहने मित्र हुवे काल।

जे जांणे मरसूं नहीं जी,
ते बांधे आगली पाल ॥ जाया० ॥

७— पुरोहित प्रतिबोध पामियो रे,
दीक्षा आईजी दाय।
विघ्न करे ते ब्राह्मणी रे,
ते सुणज्यो चित्त लाय ॥ जाया० ॥

८— बालक ए व्रत आदरे रे,
आंपे रे वां किस आस।
उत्तम चारित्र आदरांजी,
करां मुगत मे वास ॥
गोरीजी मैं लेस्यां संजम भार ॥

९— बेटा जावे तो जाण दो जी,
आंपां भोगवां लिछमी भंडार।
जूने हंस जिम दोहिलो जी,
तिरणो भव जल पार ॥पतिजी मत०॥

१०— धोरी जिम धर्म धुरंधराजी,
जुंतिया आगेवाण।
ज्यांरे केड़े जावसां जी,
मत करो खेंचाताण ॥ गोरी० ॥

११— प्रीतम पुत्र तिन रिध तजी जी,
मुझने किसो घरवास।
दीक्षा ले व्रत आदरुं जी,
हूँ जासूं साधवियां के पास ॥
पतिजी भल ल्यो संजम भार ॥

दोहा—

१— च्यारे संजम आदर्यो, भृगु पुरोहित जसा नार।
भृगु पुत्र भद्र महाभद्र, ए करसी खेवो पार ॥
२— ऊभा घर तज नीसर्या, च्यारे चतुर सुजाण।
सांभल नृप हुकम दियो, धन लावो सहु ताण ॥
३— पेला दान दियो सहु हाथ सूं, वलि देखो धनसूं हेज।
ताकीदी सूं मंगावियो, नहि करि कांई जेज ॥

४— खबर हुई राणी भणी, जरे कियो मन करूर।
भूपत ने हूं पालसूं, चढ़ियो पोरस सूर॥

ढाल ६ ठी

(राग—रंग महल में हो चोपड़ खेले)

१— मेहलां मे बेठी हो राणी कमलावती,
भीणी तो ऊडे मारग खेह।
जो वे तमासो हो 'इखुकार' नगर नो
कोतुक उपनो मनमें एह।
सांभल हे दासी आज नगर मे
हलचल किम घणी ? ॥

२— के तो परधान हे दासी डंड लीयो
के राजाजी लूंट्यो गाम।
के किणी रो हे गाड्यो धन नीसर्यो,
गाडां रि हेडज ठामो ठाम ॥ सां ॥

३— नां तो परधान हो राणीजी डंड लीयो
न कांई राजाजी लूंट्यो गाम।
भृगु पुरोहित रिध तज नीसर्यो
भूपत रे धन लावण रो काम ॥ सां ॥

४— सांभल हो राणी, हुकम करो तो,
गाड़ो लाऊं घेरने।
इहां तो कुमी नहीं काय,
इतरी सांभल ने हो राणी,
माथो धूणीयो।
राजा ने धन री लागी फाय ॥ सां० ॥

५— सांभल हे दासी राजा ने,
एहवी वातां जुगती नहीं।
मेहलां सूं उतरी हो,
राणी कमलावती ॥
आई छै ठेट हजूर,
वचन कहे छे हो, राजाजी आकारा।
जांणे पोरस चढियो सूर ॥ सां० ॥

६— सांभल महाराजा ब्राह्मण छांडी हो,
रिध मती आदरो।
राजा का मोटा भाग,
वमिया आहार की हो,
वांछा कुण करे।
करे छे,
कूतरो ने काग ॥ सां० ॥

७— काग ने कुत्ता सरीखा,
किम हुवो,
नहीं प्रसंसववा जोग।
भृगु पुरोहित ऋध तज नीसर्यो,
थे जाणो आसी म्हारे भोग ॥ सां० ॥

८— संकल्प कियो पाछो किम लीजिये,
सांभलजो महाराज ।
दान दियो थे पेला हाथ सूं,
पाछो लेतां नहीं आवे लाज ॥ सां० ॥

९— जग सगला रो हो धन भेलो करी,
घाले थांरा राज रे मांय।
तो पण तृष्णा हो राजाजी पापणी,
कदे तृप्ति नहीं थाय ॥ सां० ॥

१०— एक दिन मरणो हो राजाजी यदा तदा,
छोड़ो नी काम विशेष।
बीजो तो तारण जग मे को नहीं,
तारे जिणजी रो धर्म एक ॥ सां० ॥

११— इम सांभलने हो इखुकार बोलियो,
तूं भाखे नी वचन संभाल।
के तो राणी हे तो ने झोलो वाजियो
के थे कीधी मतवाल ॥ सां० ॥

१२— सांभल ? हे राणी राजा ने करड़ा न बोलिये,
निःसङ्क हुई जै नांय।

इसी बेरागण अजे तूं दीसे नहीं,
तूं बैठी छे राज के मांय ॥ सां ॥

१३— ना तो महाराजा झोलो वाजियो,
ना कोई कीनी मतवाल।
भृगु पुरोहित ऋध तज नीसर्यो,
हूँ वरजण आई भूपाल ॥ सां ॥

१४— ऊतरने वाली तो दीसे नहीं,
इसड़ी आइ छै मतवाल।
हूं पण घर छोडी ने नीसरूं,
तमे चेतो हो भूपाल ॥ सां० ॥

१५— रत्न जड़ित हो राजाजी पिंजरो,
सुवो तो जाणे छे फंद।
इसड़ी पण हूं थांरां राज में,
रति न पाऊं आणंद ॥ सां० ॥

१६— स्नेह रूपिया तांतां तोड़ने,
और बंधन सूं रहसूं दूर।
विरक्त थईने संजम मैं ग्रहूं,
थे भी पण होय जाओ सूर ॥ सां० ॥

१७— दव तो लागो छे राजाजी वन मधे,
हिरण ससादिक बले मांय।
ऊला माला रो हो पंखी देखने,
मन मांहे हर्षित थाय ॥ सां० ॥

१८— इण दृष्टान्ते थे मूरख थका,
मुरझ रह्या भोग मझार।
पहिलां दुःख देखे पर चेते नहीं,
राज त्यागी लो संजम भार ॥ सां० ॥

१६— भोगव्या काम भोग छोडने,
वेहुँ भव हलका थाय।
त्रेउं सरीखा पंखीया नी परे,
विचरसां इच्छा आपणी दाय ॥सां०॥

२०— मेहल पिलंगादिक अथिर छे,
सो तो आया आपणे हाथ।
आंपे भोग मांहे राची रह्या,
आप समझो पृथ्वीनाथ ॥ सां० ॥

२१— मांस री बोटी हो पंखीया नी परे,
मोह वस पंखी पड़े आय।
ज्यूं आंपे कामभोग छोड़ ने,
चारित्र लेसां चित लाय ॥ सां० ॥

२२— गृद्ध पंखी जिम इण जीव ने,
काम बधारे संसार।
सांप जिम मोर थकी डरतो रहे,
जिम पाप सूं संको इणवार ॥ सां० ॥

२३— हस्ती जिम बंधन तोड़ने,
आपणे वन में सुखे जाय।
ज्यूं कर्म बंधन तोड़ी संजम ग्रहां,
होस्यां ज्यूं सुखी मुगत मांय ॥ सां० ॥

२४— इम सांभल ने इखुकार राजा चेतियो,
छोड्यो छे मोटो राज।
कायर ने ए रिध तजणी दोहिली,
विषय छांडी सारूं निज काज ॥सां०॥

२५— सनेह सहित परिग्रहो छोड़ने,
साचो एक धर्मज जाण।
तपस्या मोटी सगलां आदरी,
धोरी जिम पराक्रम आण ॥ सां० ॥

२६— छऊंही अनुक्रमे प्रतिबोधिया,
साचा धर्म मे तप जप तंत।
जनम-मरण रा भय थकी डरपिया,
दुःखांरो कियो छे अंत ॥ सां० ॥

२७— मोह निवार्यो जिन शासन मधे,
पूरव सुभ कर्म भाय।
छउं ही जणा थोड़ा काल में,
मुगत गया दुःख मुकाय ॥ सां० ॥

२८— सांभल ने प्राणी संजम लियो,
सुख लेसी सासता सार।
राजा सहित राणी कमलावती,
भृगु पुरोहित ज सार॥ सां०॥

२९— ब्राह्मण रा दोनु ही बालका,
सगला पाम्या भव जल पार।
धन धन प्राणी छती रिध छिटकाय ने,
शिवपुर का सुख लिया सार॥ सां०॥

३०— संक्षेप माफक भाव ए कह्या,
सूत्र अनुसारे जोय।
अधिको ओछो रिख 'जयमलजी' कहे,
मिच्छामि दुक्कड़ मोय॥ सां०॥

३१— इम जाणी ने हो उत्तम मानवी,
छोडो काम ने भोग।
तप, जप क्रिया निर्मल आदरो,
ज्यूं मिटे भव भव रोग॥ सां०॥
धन धन प्राणी हो गुरु सेवा करे॥



(२)

❀ सुबाहु कुमार ❀

दोहे--

१— नमूं वीर शासन-धणी, सर्व-हित-बंधक साम ।
मुक्ति नगर ना दायका, मंगलीक तसु नाम ॥

२— कुंवर 'सुबाहु' नो चरित, बोल्यो-सुख बिपाक ।
सुधर्म जंबू ने कह्यो, अंग इग्यारमानी साख ॥

३— किण कुल ने किण नगरी ए, हुवो सुबाहु कुमार ।
श्री जिणंद गौतम भणी, मांड कह्यो विस्तार ॥

ढाल १

[राग—चौपाई]

१— विनय करी 'सुधर्म' ने वाय ,
'जंबू' पूछे सीस नमाय ॥
'सुख विपाक' ना अध्ययन केता ,
'सुधर्म' कहे जम्बू ! सुण जेता ॥

२— दश अध्ययन कह्या तिण मांहे ,
जुदा जुदा नाम दिया जताए ।
'सुबाहु' 'भद्रनन्दी' कुमार ,
'सुजात' 'सुवास' 'जिणदास 'विचार ॥

३— 'धनपति' 'महब्बल' 'भद्र नंदी' ताम ,
'महचंद' 'वरदत्त' ए दश नाम ।
दशे ही मांही पहला ना भाव ,
जंबू पूछे भर कर चाव ॥

४— बलता कहे सुधर्म स्वाम ,
सांभल जंबू चरित्र अभिराम ।
तिण अवसर नगर सोहतो ,
'हत्थीसीस' इसो नामे हुतो ॥

५— ऋद्धि भवन धने धाने पूर,
वैरी पर दल भय रहे दूर।
ईसाण कोणे 'पुष्फ-करंड' उजाण,
षट् ऋतु ना फल फूल बखाण॥

६— 'कयवणमालप्पिय' हुंतो जक्ष,
देव छे साचो छे प्रत्यक्ष।
'हत्थीसीस' नगर नो राय,
हुंतो 'अदीनशत्रु' कहवाय॥

७— राय तणो वर्णन जाणिया,
'धारिणी' आदि सहस राणियां।
धारिणी राणी तिण प्रस्ताव,
पुनवंत योग शय्या शुभ भाव॥

८— सूती सुपनो लह्यो सिंह' तणो,
मेघ कुंवर-माता जिम भणो।
जन्म वर्णन 'मेघ' नी परे,
'ज्ञाता' मांहे सीख इम धरे॥

६— बाल पणो अति क्रम्यो सही,
जोवन भोग समर्थाई थई।
जाण्यो मात पिता इम जाद,
पांच सौ कराया प्रासाद॥

१०— विचे कुंवर नो छे आवास,
ऊंचो जाय लगे आकाश।
वर्णन चाल्यो 'महाबल' जेम,
भगवती मे भाख्यो तेम॥

११— 'पुष्फचूला' प्रमुख सय पंच,
रायवर कन्या मोटी संच।
एकण दिन पाणी-ग्रहण करी,
धन रो दान दे उलट धरी॥

१२— पांच पांच सौ दीधा दात,
सोनो रूपो ग्रहण संघात।
राछ पीछ वडारण गाय,
विस्तार सूत्र 'भगवती' मांय॥

१३— एक सौ ऊपर बाणू बोल,
एक एक राणी ने दास नी टोल।
भोगवे सुख कुंवर इण परे,
बत्तीस विध ना नाटक अणुसरे॥

१४— विचरे छे ऊपर प्रासाद,
छऊ ऋतु ना सुख बहु जात।
आषाढ श्रावण 'पावस' ऋत, [ऋतु]
तिण रा सुख भोगवे नित नित॥

१५— 'वर्षा ऋतु' भादवो आसोज,
कर्तिक मिगसर 'सरदी' नो चोज।
ऋतु 'हेमंत' पोष ने माह,
फागुण चैत 'वसंत' आराह॥

१६— 'ग्रीष्म' ऋतु वैशाख अने जेठ,
ए छउ ऋतु सुख न सके मेट।
इण पर रहे सुबाहु कुमार,
हिवे किम पावे जिन धर्म सार॥

दोहे—

१— तिण अवसर शासन धणी, समोसर्या महावीर।
साधु संघाते परवर्या, वागे साहस धीर॥
२— वांदण आवी परिषदा, वले 'अदीनशत्रु' राय।
आयो 'कौणिक' नी परे, भेंटे वीर ना पाय॥
३— कुंवर 'सुबाहु' पिण गयो वांद्या जेम 'जमाल'।
रथ बेठी ए पिण गयो भेंट्या महागवाल॥
४— जिणवर दीधी देशना, मोटी परिषदा मांहि।
सांभल सहु हर्षित थया, परिषदा राय बलि जाहि॥

ढाल २

[राग—चितोड़ी रा राजा रे]

१— हिवे सुबाहु कुमारो रे, सुणियो जिन धर्म सारो रे।
प्रभुजी ने पायो रे, घणो हुवो हुल्लासो रे॥
परम वैराग हिया मे ऊपनो रे॥

२— सरध्या निर्ग्रन्थ बयणो, ऊघड़िया नयणो रे।
मोने परतीत आई रे, धर्म नी रूचि पाई रे॥
म्हारी मनसा सवाई इण धर्म ऊपर हुई रे॥

३— राय ईसर चावा रे, जाव सारथवाहा रे।
आप पे घर त्यागी रे, मोटा हुवे वैरागी रे॥
इसड़ी समर्थाई नहीं प्रभु माहरी रे॥

४— पिण हूं आपरे पासो रे, गृही-धर्म हुल्लासो रे।
बारह व्रतधारी रे, मोटा समकित सारी रे॥
एम विचारी बारह व्रत लिया रे॥

५— जिन कहे ए आदरणी रे, तो जेज न करणी रे।
पांच अणुव्रत लीधा रे, सात शिक्षा प्रसिद्धा रे॥
एम बारह व्रत कुमर शुद्ध आदर्या रे॥

६— करी वंदना भाई रे रथ बैठो आई रे।
श्रावक व्रत धारी रे, पामी समकित सारी रे॥
जिण दिस थी आयो तिण दिस ने जायो रे॥

७— तिण अवसर तिण कालोजी, बड सिक्ख विसालोजी।
वीर नो इन्द्रभूतो रे, जाव वर्ण संजुत्तो रे॥
जाव वंदना करी ने पूछे वीर ने जी॥

८— एह सुबाहु कुमारोजी, इट्ठ-रूव उदारोजी।
कंतो कंत-रूपोजी, प्यारो हे सरूपोजी॥
ए सर्व ही लोक तणा मन ने हरे जी॥

९— ए सौम्य सोभागोजी, दीठां हरस रागोजी।
दरसण प्रियकारीजी, इण रो सौभाग्य भारीजी॥
चंद्र ना मंडल परे ए सुहावणोजी॥

१०—वले सुबाहु कुमारोजी, बहु जन हितकारोजी।
इट्ठो कंत इट्ठरूपोजी, पांचे बोल अनूपोजी॥
ए घणा ही लोगों ने वल्लभ हितकारो रे॥

११—ए सुबाहु कुमोरो रे, साधां ने हितकारो रे।
इट्ठ कंत ए प्यारो रे, निरखीजी बार बारो रे॥
पांचे प्रकारे संतां ने सुहामणो रे॥

१२—प्रभुजी सुबाहु कुमारो रे, जोत कंत उदारो रे।
इसड़ी रिध पाईजी, उदय इण री आई जी॥
सुकृत कमाई पूरवे किम करी जी॥

१३—दिच्चा-किं-भुच्चा जी किं जिच्चा जी।
पूर्वे कुण हुँतोजी, कुण ग्राम संजुत्तो जी॥
जाव नाम गोत इण रो कुण हुँतो जी॥

दोहे—

१— वीर जीणंद इम उपदिसे, सुण गोयम मुझ वाय।
पूरब भव करतूत ना निश्चय दूं रे जताय॥

२— ज्ञानी विन कुण उपदिसे, आगम एहवी भाख।
एक मना थई सांभलो, चित्त ठिकाने राख॥

ढाल ३

[राग—वीर सुणो मोरी वीनती]

१— तिण काले ने तिण समे, जंबू द्वीपे हो भरत क्षेत्र मांय।
'हथिणाउर' नगर हुंतो, धन धाने हो समृद्ध कहाय॥

२— वीर कहे सुण गोयमा! भय नहीं हो पर चक्र नो कोय।
तिहां 'सुमुख' गाथापति, ए हुँतो रिद्धिवंतो सोय॥ वीर०॥

३— इण अवसर तिण नगरी ए, पधार्या हो थिवर 'धर्मघोष'।
पांच सो साधां परवर्या, विचरता हो तप कर देह सोस॥ वीर०॥

४— जात पखे करी ऊजला, जाव करता हो अप्रतिबंध विहार।
'हथिनापुरे' 'सहसांब' वन मझे, उतर्या हो ज्ञानी बुध सार॥ वीर०॥

५— निर्दोष थानक पाटला, जाची ने हो विचरे तिण ठाय।
सतरे भेदे संजमे करी, मोटा तपसी हो अप्पाणं भाय॥ वीर०॥

६— तिण अवसर धम्मघोस मुनी—अंतेवासी हो 'सुदत्त' अणगार।
घोर तपसी अति आकरो, तेजो—लेश्या हो उपनी विस्तार॥ वीर०॥

७— मास मास नो पारणो करतो, विचरे हो तपसी काकड़ा भूत।
विनय आचारे ऊजला, तिण दीधा हो शिवपुर ना सूत॥ वीर०॥

८— तिण अवसर 'सुदत्त' मुनि,
मास खमण नो हो आयो पारणो जाण।
पहिले पोर सझाय करी,
तिम दूजे हो ध्यायो छे ध्यान ॥ वीर० ॥
९— जाव गौतम परे गुरु कन्हे,
आय पूछे हो विनय करी आम।
आग्या हुवे तो जाऊं गोचरी,
गुरु कहे हो नही ढील नो काम ॥ वीर० ॥
१०— ऊंच नीच मज्झम कुले,
इरज्या जोतो हो गुरु आज्ञा जाय।
'सुमुख' नाम गाथापति,
मुनि पैठा हो तिण रा घर मांय ॥ वीर० ॥
११— 'सुमुख' नाम गाथापति,
रिख सुदत्त हो आवंतो देख।
हिवड़े हरसज ऊपनो,
ऊठ्यो आसण थी हो विनय करि विशेस ॥ वीर० ॥
१२— खोली पगरी पगरखी,
एक पटो हो उत्तरासण कीध।
सात आठ पग साहमो जई,
'सुदत्त' ने हो भावे वंदणा कीध ॥ वीर० ॥
१३— वंदणा करी तिखुत्तो भणी,
भात पाणी हो रसोड़े आय।
प्रतिलाभ्यो असणादिके,
स्व हाथे हो घणो हर्षित थाय ॥ वीर० ॥
१४— मुनिवर प्रतिलाभ्यां थकां,
घणो आयो हो मन-मे-संतोष।
चित्त वित्त-पात्र तिहुँ मिल्या,
तिण मांहे हो नहीं छे दोष ॥ वीर० ॥
१५— ति-करण भाव प्रतिलाभ्यां थकां,
पुण्य संच्या हो तेणे श्रीकार।
तिण थी देव मानिष करी,
सुमुख कीधो हो परित संसार ॥ वीर० ॥

१६— मनुष्य नो बांध्यो आऊखो;
पांच द्रव्य हों बूढा घर मांय ।
तिण ना नाम किसा किसा,
सोनैया नी हो बहु वृष्टि थाय ॥ वीर० ॥

१७— फूल तो पांच प्रकार ना,
वली हुई हो कपड़ा नी वृष्टि ।
वाजी आकाशे दुंदुभी,
दान घोषणा सुरे करी अभिष्ट ॥ वीर० ॥

१८— हथिणाउर त्रिकादिके,
बहुजन हों मांहो मांहे कहे एम ।
धन धन ते 'सुमुख' गाथापति,
प्रतिलाभ्यो हो मुनि ने धरी प्रेम ॥ वीर० ॥

दोहे—

१— ते 'सुमुख' गाथापति, आऊ घणा वरस पाल ।
काल करि तिण अवसरे, एहज नगर विशाल ॥
२— 'अदीनशत्रु' राजा घरां 'धारणी' देवी जाण ।
तेहनी कूखे ऊपनो, एहवो पुत्र प्रधान ॥
३— तिण अवसर ते 'धारिणी,' सुपने 'सिंह' ज देख ।
सुपन पाठक ने जन्म ना, वीर कह्या रे विशेष ॥
४— जाव जोवन पाम्यां थकां, परणी पांच सौ नार ।
घणो आयो दत्त दायजो, ते सुणजो विस्तार ॥

ढाल ४

[राग—श्री नवकार जपो मन रंगे]

१— पांचसे तो कोड़ रुपैया,
पांचसे सौवन नी कोड़ हो गोयम ।
पांच सौ तो थाल सोना ना,
पांच सौ रूपा ना जोड़ हो गौयम ॥

२— पुण्य तणा फल मीठा जाणो,
संच्या लारला एम हो गौतम ।

पुण्य तणा फल भोगवतां मीठा,
एहो रूप गुण पेम हो गौ० ॥ पुण्य० ॥

३— आठ हार हारां मांहि प्रधान,
आठ एकावली जाण हो गौ० ।
एकावली मे आठ प्रधान,
एम मुक्तावली बखाण हो गौ० ॥ पुण्य० ॥

४— एम कनकावली रतनावली,
जोड़ां कड़ा नी आठ हो गौ० ।
आठे कांकण मे प्रधान,
एम बोहरखा घाट हो गौ० ॥ पुण्य० ॥

५ - आठ क्षोम हीराबल वस्त्र,
आठ पट्ट वस्त्र एम हो गौ० ।
आठ पट्ट हीरां नी साड़ी,
आठ दुकूल जुग जेम हो गौ० ॥ पुण्य० ॥

६— श्री ह्री धृति ने कीर्ति,
बुद्धि लक्ष्मी पट् होय हो गौ० ।
आठ आठ एम रत्न दीधा,
इम नंदा भद्रासण जोय हो गौ० ॥पुण्य०॥

७— इम ही आठ ताड़ वृक्षासण,
ताड़ वृक्ष मे प्रधान हो गौ० ।
आठे दीधी महल नी धजा,
रतन धजा वर जाण हो गौ० ॥पुण्य०॥

८— आठ दीधा गायां ना गोकुल,
नाटक विध बत्तीस हो गौ० ।
आठ घोड़ा इम ही प्रधान,
आभरण रत्न जगीस हो गौ० ॥पुण्य०॥

९— आठ हाथी हाथ्यां में प्रवर,
आभरण रत्नां मांय हो गौ० ।
श्रीघर केरी ओपमा दीधां,
मीठां हीं सुखदाय हो गौ० ॥पुण्य०॥

१०— आठ गाडा गाडां में प्रवर,
इम आठे घुड़ वैल हो गौ० ।
इम आठ जाण पालखी डोली,
सुख मिलिया पुण्य पेल हो गौ० ॥पुण्य०॥

११— इम पिलाण, हाथी अंबाडी,
इम सेजवाला रथ हो गौ० ।
आठ रथ कीड़ा यात्रा ने,
इम संग्रामिक सत्थ हो गौ० ॥पुण्य०॥

१२— इम कोतल हाथी ने घोड़ा,
पालखियां प्रधान हो गौ० ।
दश हजार घरां नी बस्ती,
इसा दिया आठ गाम हो गौ० ॥पुण्य०॥

१३— आठ दास दासां में प्रवर,
इम किंकर कंचुक होय हो गौ० ।
आठे जाण वासधर खोजा,
इम ही पोलिया सोय हो गौ० ॥पुण्य०॥

१४— आठ दीधा सांकली बंध दीवा,
इम सोवन रूप त्रण बोल हो गौ० ।
इम तीनेई पंजर दीवा,
सोवन थाल नी टोल हो गौ० ॥पुण्य०॥

१५— इण रीते आठ थाल रूपा रा,
इम तीन वाटका जात हो गौ० ।
तिण रीते आरणी आठे,
तासक थासक जात हो गौ० ॥पुण्य०॥

१६— इम ही तीने लघु रकेवी,
इम कुडछी चमचा आठ हो गौ० ।
चरू देगचा इण ही रीते,
इम कढाई घाट हो गौ० ॥पुण्य०॥

१७— आठ बकड़िया इम त्रण भेदे,
बाजोट ने पाय-पीठ हो गौ० ।
तीनू बोल सोवन रूपां मे,
इम पीठी त्रण मीठ हो गौ० ॥पुण्य०॥

१८— आठ आठ लोटा ने कलसिया,
सोनादिक भेद तीन हो गौ० ।
इम पिलंग ढोलनी जाणो,
कनक पर इम दीन हो गौ० ॥पुण्य०॥

१९— आठ हंसासन ने कौचासन,
इम गरुड़ासन जाण हो गौ० ।
उच्चासन वलि नीचासन,
दीर्घासन बखाण हो गौ० ॥पुण्य०॥

२०— इम भद्रासण ने मकरासण,
पद्मासन इम ही ज हो गौ० ।
आठ दिसा साथिया कारे,
तेलड वीती महीज हो गौ० ॥पुण्य०॥

२१— 'रायपसेणी' मे चालिया,
जाव सीसरां लग हेम हो गौ० ।
आठ खोजा कूबड़ी दासी,
जाव 'उववाई' जेम हो गौ० ॥पुण्य०॥

२२— जाव आरीसा आठे दीधा,
इम छत्र नो द्वार हो गौ० ।
आठ ही चामर ना द्वार कह्या,
इम वीजणा द्वार हो गौ० ॥पुण्य०॥

२३— आठ जणी पेई नी राखण,
सौपारी तंबोल हो गौ० ।
इम दीधा आठे संगीता,
दूध धाय पंच बोल हो गौ० ॥पुण्य०॥

२४— इम अंग मर्दव विलेपन,
सिनान करावण हार हो गौ० ।
आठ जणी गहणा पहरावे,
इम चूरण–पीसण–नार हो गौ० ॥पुण्य०॥

२५— इम रामत क्रीडा करावण,
आठ करावण हास हो गौ० ।
इम ही ज वस्त्र जतन करि राखे,
आठे ही नाटक रास हो गौ० ॥पुण्य०॥

२६— कुल जात भापा प्रवोणी,
आठ रसोईदार हो गौ० ।
इम वस्तु ने संग्रहण - हारी,
बालक नी आठ धार हो गौ० ॥पुण्य०॥

२७— आठ मांहिला कारज कारी,
आठ ही बार ले काम हो गौ० ।
इम ही बागारोपण मालण,
आठ परूसण ठाम हो गौ० ॥पुण्य०॥

२८— इत्यादिक दात ए गिणती,
एक सौ ने बाणु बोल हो गौ० ।
अनेरो ई वले सौनो रूपो,
गहणो धन नी टोल हो गौ० ॥पुण्य०॥

२९— कांसी थिरमा माणक मोती,
हीरा पन्ना लाल हो गौ० ।
सात पीढ्यां लग खातां खरच्यां,
तोही नीठे नहीं माल हो गौ० ॥पुण्य०॥

३०— इण अवसर ते 'महाबल' कुंवर,
इतरी दात जगीस हो गौ० ।
ते सगली राण्यां ने बगसी,
तिम ही 'सुबाहु' जाणीस हो गौ० ॥पुण्य०॥

३१— इम विचरे कुंवर सुबाहु,
पांच सौ महल इण बार हो गौ० ।
सुख भोगवे राण्यां संघाते,
मादल ना धुंकार हो गौ० ॥पुण्य०॥

दोहे—

१— इम निश्चय गौतम सुणो, वीर जिणंद कहे वाय ।
सुबाहु ने इसी रिद्ध, उदय हुई छे आय ॥
२— बली गोतम पुच्छा करे, एह सुबाहु कुमार ।
घर छोडी ने थायसी, आप कने अणगार ॥

३— एह अर्थ समर्थ छे, एम कह्यो महावीर।
इम सांभल्त वनणा करे, विचरे साहस धीर॥
४— तिण अवसर महावीर जिन, 'हत्थिसीस' ने बार।
बाग थकी नीकल करे, आर्य – देश बिहार॥

ढाल ५

[राग—श्री गौतम साम समो सर्याए]

१— एतो कुंवर सुबाहु तिण समे,
श्रावक हुवो छे आयो रे।
भेद जीव अजीव ना ओलख्या,
जाण्या भले पुण्य ने पायो रे॥ एतो०॥
२— एतो सुख लारे सुख संपजे,
सुकृत ना फल छै मीठा रे।
कुंवर सुबाहु भोगव्या,
निजरां ना निजरे दीठा रे॥ एतो०॥
३— आस्रव संवर ने निर्जरा,
जाण्या छे बंध ने मोखो रे।
दान दे चवदे प्रकार नो,
सुध साधवां भणी निरदोखो रे॥ एतो०॥
४— कुंवर सुबाहु तिण अवसरे,
पोपधशाला मे जायो रे।
'अट्ठम भक्त' चउविह आहार तजी,
एतो तीन पोपह दिया ठायो रे॥ एतो०॥
५— एतो कुंवर भणी आधी रात रा,
ऊपना एहवा अध्यवसायो रे।
जिके गाम नगरादिक धन अछे,
जठे विचरे छे जिनरायो रे॥ एतो०॥
६— वली धन राईसर मांडव,
जाव कौटुम्बी सत्थवाहो रे।
ते वीर कने घर छोड ने,
साधु होय ले छे लाहो रे॥ एतो०॥

— वले तीजो धनकारो दियो
राग ईसर जे कह्या लारो रे।
वीर जिणंद पे जायने,
ले श्रावक ना व्रत बारो रे॥ एतो॰॥

— एतो चौथे धन धन छे जिके,
राजा ईसरादिक जाणो रे।
श्री वीर समीपे जाय ने,
नित नित का सुणे बखाणो रे॥ एतो॰॥

— जो वीर जिणंद विहार करि,
इण नगर ना बाग में आवे रे।
तो घर छोडी अणगार हूँ थऊं,
गृहवी भावना भावे रे॥ एतो॰॥

०— तब भगवंत-देवे जाणियो,
'सुबाहु' भावना भाई रे।
जब हत्थिसीस ना बाग मां,
जिण लियो उतारो आई रे॥ एतो॰॥

११— जब परीषदा वांदण नीकली,
सुण आयो 'सुबाहु' कुमारो रे।
वांदे बैठो छे मुख आगले,
वीर बाणी कही विस्तारो रे॥ एतो॰॥

१२— तो आगार ने अणगार ना,
कह्या धर्म तणा दोय भेदो रे।
जाणी ने निरमल पाल जो,
तुम्हे राखजो मुक्त उमेदो रे॥ एतो॰॥

१३— संसार ना सुख असासता,
एक सासता सुख निरवाणो रे।
जो डर राखो पर भव तणो,
नव तत्व हिरदे आणो रे॥ एतो॰॥

१४— इत्यादिक बाणी सुणी,
राय परिषदा राजी थावे रे।
श्री वीर जितंद ने बांद ने,
एतो आया जिण दिस जावे रे॥ एतो॰॥

१५— इम कुमर सुबाहु सांभली,
वीर जिणंद नी वाणी रे।
ए ऊठ्यो बे कर जोड़ ने,
मन में संवेगज आणी रे ॥ एतो०॥

१६— म्हांने सरधा परतीत जी ऊपनी,
सुध रुचिया प्रवचन सारो रे।
मात पिता ने पूछ ने हूं तो,
लेसूं संजम - भारो रे॥ एतो०॥

१७— श्री वीर कहे ढील मत करो,
संजम ले तूं घणूंज वेगो रे।
वंदणा करी ने कुंवर गयो,
माय सुं पडुत्तर जिम मेघो रे॥ एतो०॥

दोहे—

१— आय माता ने इम कहे, मैं सुण्या वीर ना वाय।
धन कृतार्थ तुम पुता! इम बोली छे माय॥
२— वले कुंवर इसड़ी कहे, सरधा मुझ परतीत।
दो अनुमत लेसूं दीक्षा, जाऊं जमारो जीत॥
३— वचन अनिष्ट अलखावणो, दोहरो लागो माय।
थई अचेतन तिण समे, पड़ी मुर्छागत खाय॥
४— दास्यां घाले वायरो, जल ना छांटा दीन।
सावधान हुई जवे, ऊठाए बैठी कीन॥
५— कुमरज सामो जोवती, रोती बोले एम॥
तूं इष्ट कंत माहरे अच्छे, इम छांडे छे केम॥

ढाल ६ ठी

[राग—वीर जिणंद समो सर्याए]

१— लागे घणो तूं सुहामणो रे, रतन करंड समाण,
उंबर फूल तणी परे रे, दुर्लभ देखवो जाण रे।
जाया बोलो बोल विचार॥

२— थारो वच्छ ! वांछु नहीं रे, खिण मात्र नो विजोग।
तिण कारण माहरा डीकरा रे, विलस काम ने भोग रे ॥जाया०॥

३— रहे तूं, म्हां जीवां जिते रे, कर जावां जब काल।
वेटा पोता वधार ने रे, दीक्षा लीजे सुविशाल रे॥
जाया तो विण घडी रे छमास॥

४— वीर कने व्रत आदरे रे, इम कयो बाप माय।
कुंवर सर्व आदे करी रे, पाछो दे ते जताय॥
हे मायड़ी संजम सुख अपार॥

५— अध्रुव अनित्य अशास्वता रे, उपद्रव लगा है अनेक।
बीजल झबका नी परे रे, जल-परपोटो लेख ॥ हे मायड़ी० ॥

६— डाभ-अणी-जल-विंदवो ए, जैसो संझा नो राग।
सुपन्न दर्शन नी ओपमा ए, सड़न पड़न ए लाग ॥ हे मायड़ी० ॥

७— पेली पछे देह छोडनी ए, कुण जाणे मा चाल।
मा वेटा खबरां नही ए. कुण कर जाये काल ॥ हे मायड़ी० ॥

८— तिण थी हिव आज्ञा हुवे ए, वीर कने लूं दीख।
वलती माता इम कहे रे, सांभल माहरी सीख ॥रे जा० बो०॥

९— ए थारो शरीर छे रे, वंजण लखण उदार।
रोग रहित दोष को नही रे, जोवन कला अपार ॥रे जा० बो०॥

१०— इण वय मे सुख भोगवी रे वधारी पोता नों पूत।
म्हांरे काल कियां पछे रे, संजम ले अद्भूत रे ॥रे जा० बो० ॥

११— कुंवर कहे सुण मातजी ओ, खरी कही ए वाय।
पिण देही असार छे ए, विघन अजाण्यो थाय रे॥ मा० सं० ॥

१२— किरम भिस्टा नी कोथली रे, मांस नसां नो जाल।
हाड चाम बीट्यो रहे रे, ए विणस जाये ततकाल ॥हे मा० सं०॥

१३— अवस देही ए छांडणी ए, तिण मे फेर न फार।
काचा माटी ना भंड ज्यूं ए, विनसत केती बार ॥हे मा० सं०॥

१४— सड़न पड़न विध्वंसणीए, जतन करंतां जाय।
कुण जाणे पेहली पछे ए, दो अनुमत सुख दाय ॥हे मा० सं०॥

६ — कल्पे नहीं निर्ग्रंथने आधाकरमी आहार।
औद्देशिक लेणो नहीं, क्रीत–कृत पिण वार ॥ दीक्षा० ॥

७— थाप्यो आहार लेणो नहीं, रचण कियो कीध।
दुकाल–भत्त पुत्तर वरजवो, वादल–भत्त प्रसिद्ध ॥ दीक्षा० ॥

८— अटवी – भत्त पिण वरजवो, रोगिया ने काज।
ते मुनि आहार ने भोगवे, दया संजम लाज ॥ दीक्षा० ॥

६— कंद मूल फल बीज नो, भोजन हरिकाय।
साध ने भोगवणो नहीं, पाप दोषण थाय ॥ दीक्षा० ॥

१०— तूं बेटा सुखी छे घणो, नहीं छे दुख जोग।
न सहे पुत्र सी तावड़ो, भूख त्रिसा नो सोग ॥ दीक्षा० ॥

११— परीसहा बावीस ते, उदय हुवे जब आय।
समता प्रणामे हो दोहिला, पुत्र सहणा रे जाय ॥ दीक्षा० ॥

१२— तिण कारण सुत समझले विलसो काम ने भोग।
तिचार पछे श्री वीर पे पुत्र लेहजो जोग ॥ दीक्षा० ॥

दोहे--

१— मात पिता कहतां प्रते, बोल्यो एम कुमार।
थे साधपणो दुक्कर कयो, तिण मे फेर न फार ॥

२— साधपणो तिण ने दुकर, मारग प्रवचन सार।
किरपण कायर पुरूष ने, दुख सुख वंछण हार ॥

३— उपराधो परलोक सूं, ए लोक सुख नी चाह।
अर्थी पापी मनुजने, दुक्कर है यह माय ! ॥

४— सूर वीर ने धीर नर, सतवादी सतधार।
पराक्रमवंता मातजी, दुक्कर नहीं लिगार ॥

५— तिण कारण दो आगन्या, वीर कने लूं दीख।
इम सांभल माता पिता, थाका न माने सीख ॥

६— संचय कोई आवे नहीं, कही विधना वाय।
इण अवसर माता पिता, राज नो लोभ दिखाय ॥

७— एक दिवस नो राज श्री, बैठा देखां पूत।
सांभल कंवर चुपको रह्यो, कियो मेत्र जिम सूत ॥

ढाल ८ वीं

[राग—इम धन्नो धण ने पर चावे]

१— मेघ कुंवर जिम महिमा कीधी, ज्ञाता मे प्रसिद्धी जी ।
माता पिता ए आज्ञा दीधी, महोच्छव कियो अति रिद्धी जी ॥

२— दान तणी ए महिमा जाणो, तिण थी सूत्र लिखाणो जी ।
उत्तम मन में हुलसज आणो, शंका मूल न जाणो जी ॥दा०॥

३— श्री वीरजी दीधो संजम – भारो,
जनम हुवो अणगारो जी ।
पाले आठ प्रवचन सारो,
गुप्त ब्रह्मचर्य–धारो जी ॥ दा० ॥

४— वीर समीपे मुनि मन रंगो,
भण्या इग्यारे अंगो जी ।
छठादिक तप करि अभंगो,
तजी न्यातिलां नो संगो जी ॥ दा० ॥

५— आतम भाव दूषण सहु टाली,
जिन मारग उजवाली जी ।
घणा वरस लग चारितर पाली,
मास संथारो शुभ शाली जी ॥ दा० ॥

६— साठ-भक्त अणसण सिरे चाढी,
आलोयने सल काढी जी ।
काल करी सरधा मन गाढी,
प्रथम देवलोक गति लाधी जी ॥दा०॥

७— सुधर्म देवलोक पणे सुख पासी,
जिहां थित पूरी थासी जी ।
चवने मानव गति आसी,
केवल धर्म ने पासी जी ॥ दा० ॥

८— थिवर समीपे साधु थासी,
आराधी रे विसेसा जी ।
काल करी तीजे सुर रे थासी,
चव मानव भव पासी जी ॥ दा० ॥

९— चारित्र लेई पांचमे देवलोको,
वले मानव भव चोखो जी ।

सातमे सुर, चव, वले नर-सोखो (सौख्य),
नवमे जासी सुरलोको जी ॥ दा० ॥

१०— चव मानव होसी सुध साधो,
इग्यारमे सुर आराधो जी।
वले एक मनुष्य जमारो लाधो,
चारित पाल अगाधो जी ॥ दा० ॥

११— जासी सवारथ सिद्ध विमाणो,
चवि महाविदेह वखाणो जी।
मनुस हुसी बहु चतुर सुजाणो,
'दढपइण्णा' नो परिमाणो जी ॥दा०॥

१२— चारित्र ले टालिस सर्व दोषो,
तप करि कर्मा ने सोसो जी।
सीभ बूझने जासी मोखो,
सुणिया ही हुवे संतोपो जी ॥ दा० ॥

१३— इण रीते नवे आचारी,
पांच पांच से नारी जी।
त्यागी लीधो संजम भारी,
सभी जासी मुगति मझारी जी ॥ दा० ॥

१४— जुदा जुदा नाम नगरज भाख्या,
सूत्र विपाके आख्या जी।
ऋपि 'जयमलजी' जोड़ कर भाख्या,
सांभल चित मे राख्या जी ॥ दा० ॥

१५— अधिको ओछो विपरीत होई,
ते मिच्छामि दुकड़ मोई जी।
गुण लेजो खिजमत इम जोई,
सांभल जो भद्र कोई जी ॥ दा० ॥

१६— अठारे से वीयडोत्तर वासी,
कार्तिक पूरणमासी जी।
नगर 'भिलारो' एम विमासी,
ए चरित्र कयो रे हुलासी जी ॥ दा० ॥

---

(३)

❀ भगवान् नेमिनाथ ❀

ढाल—१

(*राग—करो दान शील ने तप*)

१— 'शंख' राजा ने 'यशोमती' रानी ,
जिण साधां ने वैरायो दाखां रो पानी ।
हुवा नेम कंवर राजुल नारी ,
सुध - दान थकी खेवो पारो ॥

२— 'अपराजित' थी चव आया,
ज्यांरी दिप दिप दीप रही काया ।
जस फेल्यो सहू संसारो ,
सुध दान थकी खेवो पारो ॥

ढाल—२

(*राग—चंद्रायण*)

१— नगर 'शोरीपुर' राजियो रे, 'समुद्र विजय' राय धीरो ।
तस नंदन श्री 'नेमजी' रे, सांवल वरण शरीरो ॥
सांवल वर्ण शरीर विराजे,
एक सहस्र आठ लक्षण छाजे ।
दिन दिन अधिकी ज्योत विराजे,
दर्शन दीठां दारिद्रय भाजे ।
श्री नेमीश्वरजी हो ॥

२— एक दिवस श्री नेमजी रे, आया आयुध शालो ।
पंचायन शंख पूरियो रे, चाढयो धनुष करालो ॥
चाढ्यो धनुष कियो टंकारो,
शब्द सुण्यो श्री 'कृष्ण' मुरारो ।
ए नर उठ्यो कोई अवतारो,
आय ने जोवे तो नेम कुमारो ॥ जी० ॥

ढाल—३

(*राग—आवे काल लपेटा लेतो रे*)

१— बाबा मल अखारे चालो रे,
मांने थांरो बल देखालो रे।
अखाड़े मंड्या दोनूं भाई रे,
घणा देखे लोग लुगाई रे॥

२— देखो यां मे कुण जीते कुण हारे रे,
गोप्यां मन एम विचारे।
'हरि' तब कर ऊंचो कीधो रे
'नेमजी' पाछो दीधो ।

ढाल—४

(*राग—चंद्रायण*)

१— तब वलतो 'हरि' झुंबियो रे सार्यो 'नेम' नो हाथो
हिंडोला जिम हींचियो रे, गोप्यां तणो इज नाथो।
सोले सहस्र गोप्यां रो स्वामी,
खांचे घणी आमी ने सामी।
'नेम' री बांह नमावण-कामी,
तो पिण 'नेम' री बांह न नामी ॥जी०॥

२— बल देखी श्री 'नेम' नो रे, 'कृष्ण' थया दलगीरो
बावीसमां जिनजी अछे रे, इण सूं नहीं विगारो॥
इण सूं नहीं विगाड़ रे भाई,
मन चिंता म करो कांई।
तो बिण पूरी समता न आई,
एक नारी इणां ने दो परणाई ॥जी०॥

ढाल—५

(*राग – हूं बलिहारी यादवाँ*)

१— 'हरि' हरखी ने चालियो, साथे गोप्यां रो वृन्द के।
नंदन बन बिच परवर्यां, 'नेम' सहित खेले गोविंद के॥
हूं बलिहारी यादवां॥

२— कान बजावे वांसुरी, गोपी नाचे ताली छंद के ।
पाए नेवर रुण भणे, हस हस रामत रमे आणंद के ॥
हूँ बलिहारी नेम की ॥

३— विच मेलिया 'नेम' ने, टोली फिर रही सगली नार के ।
नंदन वन मे आणंद सूं, कोयल रा तिहां हुवे टहुकार के ॥
हूँ बलिहारी नेम की ॥

४— हाव भाव गोप्यां करे, वलि वलि इधको नेम ने देख के ।
जादव-मन भीजे नहीं, शील सबल तणो विशेष के ॥ हूं० ॥

ढाल—६

[राग—होली—]

१— देवर ने 'रूकमण' हसे, 'हरि' निभावे अनेको रे ।
भाई तूं निभावी न सके, तिण सूं डरता न परणे एको रे ॥
भाई व्यांव मनावे 'नेम' को ॥

२— वलती दूसरी इम कहे, इण रा मन मे धाको रे ।
तोरण आयां करे आरती, टीको काढने सासू खांचे नाको रे ॥
बाई इम डरतो परणे नहीं ॥

३— वली तीसरी इम कहे, तोने बात कहूं विचारो रे ।
बाई चित करने चंवरी चढ़े, तीने फेरा लेणा पड़े लारो रे ॥
बाई सांवलियो इम परणे नहीं ॥

४— वलती चोथी इम कहे, सांभल एक विचारो हे बाई ।
जुवाजुई रमतां थकां. रखे बनड़ो जावे हारो हे बाई ॥इम०॥

५— वलती पांचमी इम कहे, सांभल मोरी बातो हे बाई !
दोरो है कांकण दोरड़ो, खोलणो पड़े एकण हाथो हे बाई ॥इम॥

६— 'गौरी' 'रूखमण' ने कहे, म्हारा सरिया वंछित काजो हे बाई !
तीन सो वरसां रा नेमजी कंवारा फिरतां आवे लाजो ए बाई ॥इम॥

७— अवर तो बात किलोल री, साचो एह उपायो हे बाई !
आंण आंण नितरी कहे, ओ दुख सह्योह न जायो हे वाई ॥इम॥

———

ढाल—७

(राग—हूँ बलिहारी यादवां)

१— नारी घर रो सेहरो, नारी सूं बाजे घर बार के।
जिण घर मे नारी नहीं, ते घर गिणती मे गिणे नहीं संसार के॥
थे क्यूं परणो नी देवर नेमजी॥

२— हिवड़ां तो खबर न का पड़े,
बुढापो थाने घेरसी आय के।
कुण करसी थांरी चाकरी,
जोवो नी देवर हिरदा मांय के॥थे०॥

३— पुत्र बिना सजसी नहीं,
कुण राखेला थांरो कुल व्यवहार के।
पुत्र बिना प्रभुता किसी,
पुत्र बिना नहीं वधे परिवार के॥थे०॥

४— एक नारी रो कांई ढ़ाबणो,
नारी होवे घर को सिणगार के।
नारी बिना मंदिर किसो,
कृष्णजी परण्या बत्तीस हजार के॥थे०॥

५— राणी मिल सब इम कहे,
एक अर्ज विनति अवधार के।
इसड़ा कठोरज कांई हुवा,
थोड़ो तो हिरदा में विचार के॥ थे०॥

ढाल—८

(राग चंद्रायण)

१— कृष्ण-गोप्यां मिल नेम ने रे, फाग रमण ले जायो।
जल सूं भरी खंडोखली रे, पेठ पाणी रे मांयो॥
पेठा तिहां पाखती पाणी,
नेमजी मांहे उछाल्यो पाणी।
मान्यो मान्यो जाणी जाणी,
क्यांय मनाय लियो माडांणी जी॥नेमीश्वरजी॥

२— उग्रसेण-राय-कन्यका रे, राजमती बहु रूपो ।
शील गुणे करी सोभती रे, चतुराई बहु चूंपो ॥
चतुराई बहु चूंप सिखाणी,
घणी विचक्षण मधुरी वाणी ।
चौपठ कला मे शील-समाणी,
बीजली केरी ओपमा आणी ॥जी०॥

३— नेम भणी परणायवा रे, मांगे कृष्ण नरेसो ।
'उग्रसेण' राय इम कहे रे, एक सुणो हमारी रेसो ॥
एक सुणो थे रहस हमारी,
विध सूं जान करो तुमे भारी ।
आवो म्हारा घर मझारी,
तो परणाऊं राजकुमारी ॥जी०॥

४— मानी बात श्री कृष्णजी रे, थाप्यो व्यांव मंडाणो ।
ब्राह्मण लगन लियां थकां रे, हरख्या राणी राणो ॥
हरख्या राणी राणज कोई,
नेमजी आगल पीठी ठोई ।
मांहे घाली घणी कसबोई,
न्हाय धोय कल्पवृक्ष ज्यूं होई ॥जी०॥

ढाल—६

१— महाराज चढे गज रथ तुरियां . ..
हय गय रथ पायक—
सुख – दायक ।
नयन-कमल हरसत ठरियां ॥ महा० ॥

२— खूब बरात बनी—
ब्यावन की ।
घोर घटा उमटी झरियां ॥ महा० ॥

३— लाल गुलाल, अबीर अवारचो ।
चऊं दिस नाच रही परियां ॥ महा० ॥

ढाल-१०

(राग—चंद्रायण)

१— पट हस्ती श्री कृष्ण नो रे, आप हुवा असवारो।
चतुरंगणी सेना सजी रे, साथे दसू दसारो॥
साथे दशूं दशार रे भाई,
बागा वेश बहुत सजाई।
नर नारी बहु देखण आई,
घर घर मांहे बधाई ॥जी०॥

२— जानी बणिया जुगत सूं रे, जादव लाखां कोड़ो।
दल मांहे दीपे घणी रे, नेम कृष्ण नी जोड़ो॥
नेम कृष्ण री दीपे जोड़ी,
कंवर मिल्यो साढे तीन कोड़ी।
रथ पालखियां जावे दोड़ी,
चाल्या जावे होडा होडी ॥जी०॥

३— भेदी मादल झालरी रे, सुरणाई शंख भेरो।
इत्यादिक वाजित्र घुरे रे, पड़े नगारां री घोरो॥
नगरां री घोरज बाजे,
आकाशे जाणे अंबर गाजे।
नेम कंवर रथ बेठां छाजे,
ग्रह नक्षत्र मे जिम चंद्र विराजे। जी०॥

सवैया

लाल घोडा लाल बाग, लाल हिज्र लेवे जान,
लाल ही जड़ियो पिलाण लाल रोम चामड़ी।
ऊपर चढ्यो नेम लाल, बांधी शिर पागे लाल,
केशरी गुलाल लाल, लाल हाथ कावड़ी॥

मुंग्या ही की माला लाल मोत्यां विचे पेरी लाल,
तिलक निडाल लाल, लाल ओढी फांवड़ी।
कहन ज्ञान सुन्दर लाल, जादु माथ वर्ण्यो लाल,
लाल लाल ज्ञान वर्णी मेरे धन-माम री॥

ढाल-११

(*राग—चन्द्रायण—*)

१— इण विध जान जलूस सुं रे, मन में अधिक जगीसो ।
आगे आय ऊभा रह्या रे शक्रेन्द्र ने ईशो ॥
शक्रेन्द्र ने ईशाज दोई,
ऊभा जान रह्या छे जोई ।
नेम कंवर परणे नहीं कोई,
तिणसूं मोने अचिरज होई ॥ जी० ॥

२— कृष्ण कहे इंद्रा भणी रे, थे रहिजो अबोला सीधा ।
विगर बुलायां अविया रे, थाने किण पीला चावल दीधा ॥
किण दीधा थाने पीला चावल,
जान बणी छे रंग वेलावल ।
म्हारे काम पड्यो छे सावल,
रखे बजावो दिखणी बावल ॥ जी० ॥

ढाल-१२

(*राग—चलत*)

१— मैं नीठ नीठ व्याव मनायो रे,
थे विगर बुलायां क्यूं आया ।
थे रहजो अबोला सीधा रे,
पिण पीला चावल किण दीधा ॥

२— एतो इन्द्र बोले विसेखा रे,
कान्हा ! मैं पिण मेलो देखां ।
थे जान जोरावर खाटी रे,
किम उतरे नेम पीली पाटी ॥

ढाल-१३

(*राग—चंद्रायण*)

१— इन्द्र बोल्या बेऊं कृष्ण ने हो, लाया थे जान विसेखो ।
नेम कंवर परणे जिको हो, मैं पिण लेसां लेखो ॥

म्हैं पिण जोवां ब्याव री वाटी.
किम उतरे नेम पीली पाटी।
वाजा बाज रह्या गहगाटी.
पिण किण विध उतरेला पीली पाटी ॥जी ॥

ढाल–१४

१— राजल-सखी आई मिल सगली. निरखण नेम कुंवार।
वडी वरात यादवन की निरखी. हुवो हर्ष अपार॥
देखो सहियां बनड़ो है नेम कुंवार॥

२— सांवल सूरत मोहिनी मूरत. यादव-कुल-सिणगार।
तीन भवन में नहीं कोई उपमा, इन्द्र तणे अणुहार ॥देखो०॥

३— धन माता जिण उदर धरिया. धन जिण कुल अवतार।
निरखत नेण चेन अति उपजत, मोय रह्या नरनार ॥देखो०॥

४— कानां-कुंडल जड़त छवि, कंठ अमोलक हार।
मुकुट छवि छाये शिर ऊपरे. बरसे अमृत धार ॥देखो०॥

५— सर्व सखी रही देख अचंभे. फिर आई तिण वार।
राजमती पासे इम भाखे. नेम तणो अधिकार ॥देखो०॥

ढाल–१५

(*राग—सोरठी*)

१— सहियां राजुल ने कहे.
थारां मोटा भागोए,
अथागोए।
नेम सरीखो वर मिल्योक सहियांए॥

२— वलती राजुल इम कहे.
म्हारे जीमणो फरूके गातो ए।
जग-नाथो ए—
मिलसी के मिलसी नहीक-सहियां ए॥

३— वलती सहियां इम कहे.
बाई! बोलतां मती चूको ए।
परो थूको ए.
तोरण ऊपर आवियोक सहियां ए॥

४— सांवरिया री सूरत मूरत-
सोभे रंगी चंगी ए ।
पंचरंगी ए,
मुकुट विराजे नेमने क-सहियां ए ॥

५— नेम कुंवर तोरण चल्या,
पशुवां करी पुकारो ए ।
हाहाकारो ए—
फूल्यो सगली जानमे क-सहियां ए ॥

ढाल—१६

[राग—फाग]

१— सींचाणा सारस घणा, जीव तणी घणी जात ।
जादव राय ! रोकी ने राख्या पींजरे, दुख करे दिन रात ॥
जादव राय ! तुम विन करुणा कुण करे ॥

२— हरिण सूसा ने बाकरा, सूर सांबर ने मोर ।
दयाल राय ! केई वाड़े केई पिंजरे, दुखिया कर रया शोर ॥
दयाल राय ! तुम विन करुणा कुण करे ॥

३— हिरण्यो हिरणी ने कहे, बाहिर गया बाल ।
दयाल राय ! चूगो पाणी लेवा भणी, कुण करसी साल संभाल ॥द०॥

४— पूरे मासे पारेवडी इम करे अरदास ।
जादव राय ! बंधन पड़्या पग माहरे, ढीला करे कोई पास ॥जा०॥

५— तीतर कहे तीतर भणी,
गर्भ छे उदर मांय ।
जादव राय ! संकट पामूं अति घणूं
कोइक करुणा करि दे छोडाय ॥जा०॥

६— अशरण थका केई पंखिया,
बिल बिल करे निरधार ।
दयाल राय ! छोडावण वालो कोई नही,
छोडावे तो नेम कुमार ॥ दयाल० ॥

ढाल—१७

[राग—चंद्रायण]

१— नेम कहे मावत भणी रे, ए जीव किण काजो।
बलतो बोले सारथी रे, सांभल जो महाराजो॥
सांभल जो महाराज-कुमारो,
व्यांव मंडयो छे एह तुम्हारो।
यां जीवां रो होसी संहारो,
पोखीजसी तुमरो परिवारो॥जी०॥

२— वचन सुणी सारथी तणा रे, नेमजी चिंते आपो।
इतरा जीव विणाससी रे, परणीजण मे पापो॥
परणीजण मे पापज मोटो,
जीव-हिंसा से सहज खोटो।
ए तो दीसे परतख तोटो,
तो लेऊं दयाधर्म रो ओटो॥जी०॥

३— करुणा केरा सागरू रे, जीवां री करुणा कीधो।
माथा रो मुगट वरज ने रे, गहणा वधाई में दीधो॥
गेहणा सब बधाई मे दीधो,
नेम जिणंद समता रस पीधो।
इसड़ो उत्तम कारज कीधो,
तीन लोक मे हुवा प्रसिधो॥जी०॥

४— नफर भणी हलकार ने रे, तोड्या बंधन-जालो।
केई जीवड़ा दोड़ी गया रे, केई उड्या तत कालो॥
उड गया जीव तत-कालो,
जवान बूढा नान्हा बालो।
नेम रह्या छे ऊभा भालो,
जीवां रे वर्त्या मंगल-मालो॥जी०॥

ढाल—१८

१— गगन जातां जीव देवे आसीस के,
पशु ने पंखिया जगदीश।

जादव ! हिवे चिरंजीव जो.
बलिहारी तुम बाप ने माय के,
पुत्र रतन जिन जनमियो ।
स्वामी ! थे सारिया, अम्ह तणा काज के,
तीन भवन रो पाम जो राज के—
शील अखंडित पालजो ॥

ढाल—१६

[राग—चंद्रायण]

१— वैरागे मन वाल ने रे, तोरण सूं फिर जायो ।
इण अवसर श्री कृष्णजी रे, आडा फिरिया आयो ॥
कृष्ण फिर्या छे आडा आई,
हिवड़े धीरज रख चतुराई ।
तेल छढी ने किम छिटकाई,
जादव केरी जान लजाई ॥जी०॥

२— नेम कहे सुण बंधवा रे, ए संसार असारो ।
कुटुम्ब कबीलो छोडने रे, हूं लेसूं संजम-भारो ॥
हूँ लेसूं संजम - भारो,
कामभोग जाण्या खारो ।
ए नारी न लगाऊं लारो,
मुक्ति-रमणी सूं छे मन म्हारो ॥जी०॥

३— जो थांरे मन मे आ हुँती रे, हूं नहीं परणूं नारो ।
तो इसड़ी जान जुलूस सूं रे, मोने नही लावणा था लारो ॥
मोने नही लावणा था लारो,
जो मन वर्त्यो हो इम थांरो ।
हूं तो लेसूं संजम - भारो,
तो इतरो कांई कियो विस्तारो ॥जी०॥

४— मन माडाणी मनावियो रे, कान्हा ! थेहिज म्हारो व्यांवो ।
म्हारे तो पेलां हुँतो रे, संजम ऊपरे चावो ॥
चारित्र ऊपर चाव हमारो,
वचन न लोप्यो एकज थांरो ।

तिण सूं एह हुवो विसतारो,
पिण विरक्त ने कुण राखणहारो ।।जी०।।

५— कृष्ण मन फेरो दियो रे, इन्द्र कह्यो थो एमो ।
नेम कंवर परणे नही रे, वचन खाली जावे केमो ।।

इन्द्र–वचन किम जावे खाली,
कृष्ण रह्या विवाह रो सोस पाली ।
वीनणी विहूणी जानज चाली,
वैरागी मूंडे इधकी लाली ।।जी०।।

६— कृष्ण भणी समजाय ने रे, पाछी वाली जानो ।
लोकांतिक प्रतिबोधसूं रे, दीधो छमच्छर दानो ।।

एक बरस तक दान ज देई,
कुटुम्ब कबीलो साथे लेई ।
सुर नर वृन्द मिल्या छे केई,
लोच कियो सिर नो स्वयमेई ।।जी०।।

ढाल–२०

(राग—व्हाला उचारी रे)

१— मास सावण छठ चांनणी, चित्रा नक्षत्र ने मांय रे ।
सहस्र पुरुष साथे करी रे, संजम लियो जिनराय रे ।।
हूं तो नेम नमूं रे बावीसमां ।।

२— पांच से तेसठ जादवां, कंवर विचक्षण जाण रे ।
एक सो आठ कृष्ण तणा, बहोतर बलभद्र ना बखाण रे ।।हूं तो०

३— वले आठ पुत्र उग्रसेण ना, अठावीस नेम ना भाय रे ।
सात कह्या देवसेन ना, वलि आठ मोटा महाराय रे ।।हूं तो०

४— एक वरदत्त पुत्र 'अक्षोभ' नो, दोय से पांच यादव भेल रे ।
श्री नेम साथे संजम लियो, ओ सहस्र पुरुष रो मेल रे ।।हूं तो

५— एतो दश दशारज हरसिया, वले हरख्या हरि बलदेव रे ।
सुर नर हरख्या अति घणा, सारे प्रभुनी री सेव रे ।।हूं तो

— – —

ढाल-२१

१— सखी-मुख सांभल्यो राजुल बाल,
नेम गया रथ पाछो वाल के।
धरणी ढली ने लही मूरछा-
चंदन लागे छे जेम अंगार के॥
सखी सोने पवन म लावजो,
हिरदा मे वसे नेम कुंवार के-
राजमती इम विल त्रिले॥

ढाल-२२

(राग—काईक ल्योजी ल्योजी)

१— आठ भवां रो नेहज हुंतो, नवमे दी छिटकाई।
तुमसा पूत पनोता होय ने, जादव-जान लजाई॥
ऊभा रोजी, थे रोजी रोजी रोजी, ऊभा रोजी॥

२— सांवलिया - साहिब ऊभा रोजी
थे छो म्हारा ठाकुर ऊभा रोजी
म्हें छां थांरा चाकर ऊभा रोजी॥

३— हरि हलधर सा जानी वणिया, तुम रे कुमिय न काई।
विन परमारथ छोड चल्या, सीख कहां सूं पाई॥ऊभा०॥

४— जो कोई खून हुवे मुज अंदर, तो दूं साख भराई।
पिण कहो जुग मे न्याय करे कुण, जो हुवे राय अन्याई॥ऊभा०॥

ढाल-२३

१— तरसत अखियां, हुई द्रुम-पखियां।
जाय मिलो पिव सूं सखियां !॥
यादुनाथजी रे हाथ री ल्यावे कोई पतियां
नेमनाथजी-दीनानाथजी॥

२— जिण कूं ओलंभो एतो जाय कहणो,
थे तज राजुल किम भये जतिया॥नेमनाथजी०॥

३— जांकूं दूंगी जरावरो गजरो,
कानन कूं चूनी मोतिया॥नेमनाथजी०॥

४— अंगुरी कूं मूंदड़ी-ओढण कूं फमड़ी,
पेरण कूं रेशमी धोतिया ।।नेमनाथजी०।।
५— महल अटारी - भए कटारी,
चद - किरण तनूं दाफतिया ।।नेमनाथजी०।।
६— क्या गिरनार में छाय रहे प्रभु,
वनचर नी करत थितिया ।।नेमनाथजी०।।

ढाल-२४

(राग—नवकार मन्त्र नो " '')

१— म्हे चित्त उम्मेद पेर्यो चूड़ो,
म्हारे मेंदी री रंग आयो रूड़ो।
. पिण सावा री वेला क्यूं टली आगी,
नेमीसर वनो भयो वेरागी ।।
२— हूं शिवा दे सासू री बाजी रे बहू,
मांने जग सगलां मे जांणी ए सहू।
हूँ नेमजी री राणीजी वाजी ।। नेमीसर० ।।
३— कुण ताके तारां ने, छोड शशी-
म्हारे सांवरिया सरीखी सूरत किसी।
म्हे दूजा भरतार नी तृष्णा त्यागी ।। नेमीसर० ।।
४— म्हारी मन री हूंस रही मन मे,
हूं तड़फा तोड़ रही तन मे।
हूँ बात किसी कहूं पाछी ने आगी ।। नेमीसर० ।।

ढाल-२५

१— माता कहे कंवरी ! मत रोय के,
मणि मंडित झारी लेई मुख धोय के।
नेम गयो तो ए जाण दे,
नेम विना जग सूनो न होय के ।।
तोने परणाऊं म्हारी लाडली !
२— चाव तूं पान, फूल सूंघ के,
अजे तांई वाई ! कोरा मूंग के।
माता आई इम धीर दे ।।

ढाल–२६

(राग हंस गया बटाऊ)

१— किन के सरणे जाऊं, नेम बिना किन के शरणे जाऊं ।
इण जग मांय नही कोई मेरो, ताकी मैंज कहाऊं ।।नेम०।।

२— मात पिता सुण सखी सहेल्यां. लिख कर दूत पठाऊं ।
किण गुन्हें मोय तजी पियाजी, मै भी संदेसो पाऊं ।।नेम०।।

३— म्है तो पल एक संग न छोड़ूं, छोड कहो किहां जाऊं ।
अब टुक धीरप रथ-हाथो, चालो मै भी थांरे लार आऊं ।।नेम०।।

ढाल–२७

१— अरि मेरा दुख मत कर जननी !
म्है जाऊंगी गिरनार ।
दीक्षा लेऊंगी भव-तरणी ।।

२— अरि मात पिता सुण सखी सहेली,
करो क्षमास जननी ।
अब रहणे की नांय भई,
मै करूं श्याम-मिलणी ।। अरि० ।।

३— छपन कोड़ जादव मिल आये,
खूब बरात बनी ।
विन परण्यां मुझ नाथ फिरे,
सो कीधी बात घनी ।। अरि० ।।

४— छिन मे काया माया पलटे,
ज्यूं जल डाभ-अणी ।
कुञ्जर-कान, पान पीपल को,
ऐसी आय बनी ।। अरि० ।।

५— मोसूं रे मोह तज्यो मुज प्रीतम,
करी निर्मल करणी ।
पशुवन के शिर दोष दिया,
प्रभु मुगत-वधू परणी ।। अरि० ।।

ढाल-२८

१— सहियां कहे राजुल ! सुणो,
बाई ! कालो नेम कुरूपो ए।
भल भूपों ए-
ओर भलेरो लावसां क सहियां ए॥

२— करी कुसामदी ताहरी,
पिण म्हारे दाय न आयो ए-
न सुहायो ए।
कालो वर किण काम रो क सहियां ए॥

ढाल-२९

१— राजुल भाखे हे सहियां ! थे तो मूढ गिंवार।
काला मे किसी खोड़-पीत किंजे मन भावती॥
कालो हाथी हे सहियां ! सोहे राज दुवार॥
काली घटा जल-धार॥

२— काली हुवे किस्तूरड़ी--काली कीकी हे सहियां!
सोहे आंख मझार।
जिम काला नेम कंवार-
अवर वरेवा आंखड़ी॥

ढाल-३०

(राग—चंद्रायण)

१— साजन ने परजन तणी हो, घणी जण्या ने तारो।
नेम जिणेसर वांदवा रे, पहुंती गढ़-गिरनारो॥
सती पहुँती छे गढ़--गिरनारो,
विच मे वर्षा हुई अपारो।
भीज गया कपड़ा ने साड़ी,
एकल जई गुफा--मझारी ॥जी०॥

२— कपड़ा खोल चोड़ा किया रे, थई उघाड़ी देहो।
झबको पड्यो पुरुष नो रे, स्यूं दीसे छे एहो॥

इहां तो नर दीसे छे कोई,
सती तिहां हे कंपे होई।
राखे शील भांगेला मोई,
हेठी बेठी अंग गुपोई ॥जी०॥

३— डरती देख सती भणी रे, इम बोल्यो रहनेमो।
हूं समुद्रविजयजी रो डीकरो रे, तूं सोच करे छे केमो॥
तूं सोच करे छे केमो,
हे सुन्दर ! धर गोसूं पेमो,
दुर्लभ मिनख जनम एमो,
आदरसां वले संजम - नेमो ॥जी०॥

ढाल-३१

१— चित चलियो मुनिवर नो देखी, राजमती कहे एम।
काम केल करणी इण काया, मोने साचे मन नेम॥

२— मुनिवर दूर खराड़ो रे, लोगो भर्म धरेगा।
नारी-संग कियां थीं रे, पापे पिंड भरेगा ॥मुनि०॥

३— जुवती रच्यो इण मंडल जग मे मोटो जाल।
कामी-मिरग मारण के तांई, मूढ मरे दे फाल ॥मुनि०॥

४— नाक-रींट देखी माखी, चित मे चिंते गट के।
पिण पग पांख लपट जद जावे, मरे शीस पटके ॥मुनि०॥

५— केसर वरणी कोमल काया, मूढ करे मन हूँस।
ए पिण जहर हलाहल जाणो, जैसो थली रो तूस ॥मुनि०॥

६— देखी नेण काजल रा भरिया, जांणे दल उत्पल का।
कामी देव मारण के तांई, काम देव रा भलका ॥मुनि०॥

७— ऊजल कुल ने कलंक लगावे, नाखे दुर्गति ऊंडी।
खोवे लाज जनम री खाटी, पर नारी नरक री कूंडी ॥मुनि०॥

८— राजा जाणे तो घर लूंटे, खर चाढ़े शिर मूंडी।
जग सगलो जाणे भूंडो, ए करणी सहू भूंडी ॥मुनि०॥

९— फिरतां गिरतां राज दुवारे, संचरतां पर गलियां।
हस हाथ दे बजावे ताली, देखाड़े आंगुलियां ॥मुनि०॥

१०—दुर्जन ज्यूं क्यूं चिंते, सांभल वात तूं मीणी।
खाख बजावी करसी हासी, जासी लाज लाखिणी ॥मुनि०॥

११—वंश छोत लागे तुम कुल ने, सहू जग लेसी सींचो।
तुम पर वार उतरसी पाणी, यादव जोसी नीचो ॥मुनि०॥

१२—महासती सूं एह अकारज, उत्तम ने नही छाजे।
जो अति मीठो तो पिण मुनिवर! अखज कहो किम खाजे ॥मुनि०॥

१३—जातिवंत कुलवंत कहीजे, वमिया तूं मती रींझे।
खिण सुख कारण बहु दुख पासो, एहवो काम न कीजे ॥मुनि०॥

ढाल–३२

(राग—सुरसा गरव हदे भयों)

१— गज असवारी छोडनें हो—मुनिवर!
खर ऊपर मती बेस।
देव लोग रा सुख देखने हो—मुनिवर!
पाताले मती पेस॥
सुगणा साधुजी हो मुनि! थांरा मन ने पाछो घेर॥

२— अमृत भोजन छोडने हो—मुनिवर!
तुसिया को कुण खाय।
देव लोक रा सुख देखने हो मुनिवर!
नरक न आवे दाय ॥ सुगणा० ॥

३— खीर खांड भोजन करी हो—मुनिवर!
वमियो कर्दम-कीच।
वमिया री वांछा करे हो—मुनिवर!
काग कुत्ता के नीच ॥ सुगणा० ॥

४— इण परिणामे थाहरो हो—मुनिवर!
संयम थिर नहीं होय।
गंधण कुल रा सर्प ज्यूं हो—मुनिवर!
वमिया ने मत जोय ॥ सुगणा० ॥

५— वचन सुणी राजुल तणा हो—मुनिवर!
चित ने आण्यो ठाम।

धन धन राजुल तूं सही हे-राजुल !
धन थारो परिणाम ॥ सुगणा० ॥

६— नरक पडंता राखियो हे राजुल !
इम वोल्यो रहनेम ।
मुजने थिरता कर दियो-हे राजुल !
वचन-अंकुश गज जेम ॥ सुगणा० ॥

७— नेम समीपे जायने हो-मुनिवर !
शुद्ध थया अणगार ।
निर्मल संजम पालने हो-मुनिवर
पहुँता मुगत मझार ॥ सुगणा० ॥

८— शिव सुख राजमती लही हो-मुनिवर !
पामो परमानंद ।
चौपन दिन छद्मस्थ रह्या हो मुनिवर !
धन धन नेम--जिणंद ॥ सुगणा० ॥

ढाल-३३

(राग—चंद्रायण)

१— तीन से बरस घर मे रह्या हो, रख्या रूड़ा भावो ।
संजम पाल्यो सात से हो, सहस्र वरस नी आवो ॥
सहस्र वरस नी आवज पूरी,
जिनवर करणी कीधी रूड़ी ।
कर्म किया सगला चक चूरी,
पांचसे छत्तीस सूं शिव पूरी ॥जी०॥

२— समत अठारे चोड़ोतरे रे, भाद्रवा मास मझारो ।
शुद्ध पांचम सनीसरे रे, कीधो चरित्र उदारो ॥
कीधो चरित्र उदार आणंदा,
इम जाणी छोडे घर फंदा ।
धन धन समुद्रा विजयजी रा नंदा,
रिख 'जयमलजी' कहे नेम जिणंदा॥जी०॥

(४)

❀ राजा-प्रदेशी ❀

दोहे—

१— 'रायपसेणी' सूत्र मे, राय प्रदेशी ना भाव ।
'सूर्याभ' देव भरने हुवो, धर्म तणे परभाव ॥

२— 'आमलकप्पा' नगरिये, समवसर्या महावीर ।
'सूर्याभ' देव तिहां आवियो, नाटक करवा तीर ॥

३— डावी जिमणी भुजा थकी, काढ्या एक सौ आठ ।
कुंवर कुंवरियां जुजुवा, नाटक करण ने थाट ॥

४— वीर चरित्र धुर मांडि ने, आण्यो नाटक मांय ।
गौतमादिक ने देखाड़ ने, सुर आयो जिहां जाय ॥

५— देव तणी रिध देख ने, पूछे गौतम स्वाम ।
एतली रिध इण काढ ने, घाली कुण से ठाम ॥

६— दीसे नर नारी घणा, गुप्ति गुफा ने बार ।
वात्रल आंधि मेह देख ने, मांहि धसे तिण वार ॥

७— जिम बजाज काढ़े कापड़ो, बांधि मांहि दे मेल ।
तिम इण देव शरीर मे, दीधी ऋद्धि संकेल ॥

तम—८— परभव सामी ! ए कुण हुतो, वसतो कुण से गाम ।
करणी इण कैसी करी, कृपा करि कहो स्वाम ! ॥

ावान्-९— पाछले भव क्रिया करि, मांडी कहे वर्द्धमान ।
गौतम प्रमुख आगले, ते सुणजो धरि ध्यान ॥

ढाल—१

(राग—कपूर हुवे अति ऊजलो रे)

१— तिण काले ने तिण समेजी,
'जम्बू' द्वीप मझार ।
'भरत' क्षेत्र 'श्वेताम्बिका' जी,
नयरी होती विस्तार हो ॥

गौतम ! सुण पूरव भव एह .
अंते क्षमा अधिकी करीजी, निज राणी दीधो छेह ।।हो०।।

२— 'पएसी' राजा हुँतो रे,
अधरमी अविनीत ।
पाप तणी आजीविका रे,
दुष्ट ने खोटी नीत ।।हो गौतम०।।

३— अकरा दंड लेतो घणा रे,
करतो जीवां की घात ।
पर-सुखिये दुखियो हुँतो रे,
रुद्रे खरड़िया हात ।।हो गौतम०।।

४— पाप करि धन भेलो करे रे,
रीझे माठे काम ।
कुव्यसन ने सेवतो रे,
अपछंदो अभिराम ।।हो गौतम०।।

५— हणे छेदे भेदे कूड़ो बदे रे,
थोड़े गुन्हें घणी मार ।
कांण न राखे केहनी रे,
रुद्र क्षुद्र भयकार ।।हो गौतम०।।

६— हाथ ने पग छेदन करे रे,
कान, आंख, जीभ, नाक ।
मारे दुख दे बहुविधे रे,
पड़े परदेशां मे धाक ।।हो गौतम०।।

७— थर हर कंपे नेड़ां थकां रे,
अलगा पावे चैन ।
ओरां री कुणसी चले रे,
न माने माइतां रा वैन ।।हो गौतम०।।

८— राय तणे राणी हुती रे,
'सूरिकंता' नाम ।
प्रीतम सूं अति रागिणी रे,
रूपवंत अभिराम ।।हो गौतम०।।

९— शशि-वदन मृगलोचना रे,
हरिलंकी सुविशाल ।
राजा माने अति घणी रे,
जीव सूं अधिक रसाल ॥हो गौतम०॥

१०— हुँ तो राय ने डीकरो रे,
'सूरिकंत' कुमार ।
पदवी थी युवराज नी रे,
रूपकला गुण सार ॥हो गौतम०॥

११— भाई मित्र सखाइयो रे,
हुं तो 'चित्त' प्रधान ।
भार सूंप्यो छे घर तणो रे,
राय वधार्यो मान ॥हो गौतम०॥

१२— काम चलावे राज्य नो रे,
च्यारे बुद्धि-निधान ।
दंड लेवे पिण संतोष ने रे,
रेत-रक्षा पर भान ॥हो गौतम०॥

१३— राजा दीधी आगन्या रे,
पुर अंतेउर मांय ।
अप्रतीत नही ऊपजे रे,
मन मांने तिहां जाय ॥हो गौतम०॥

१४— राज्य तणो धुरंधरो रे,
मोटो मेढी - भूत ।
राजा ने आंख्या की परे रे,
दीधो राज नो सूत ॥हो गौतम०॥

१५— छांनी प्रगट बात ने रे,
हुँतो पूछवा जोग ।
वार वार वले पूछवा रे,
कहिवा सुणिवा जोग ॥हो गौतम०॥

१६— तिण काले ने तिण समे रे,
देश कुणाल के मांय ।
'सावत्थी' नगरी रूवडी रे,
ऋद्धि वृद्धि करि सुखदाय ॥हो गौतम०॥

१७— ईशान कूण मांहे हुंतो रे,
'कोष्टक' नामे बाग ।
पान फले करि सोभतो रे,
दीठां उपजे राग ।।हो गौतम०।।

१८— सावत्थी नगरी में वसे रे,
'जितशत्रु' नामे राय ।
'पएसी' राजा तणो रे,
हुंतो मित्र सखाय ।।हो गौतम०।।

दोहा—

१— राय 'पएसी' मूकियो, 'चित्त' 'सावत्थी' मांय ।
धर्म पामे किण विधे, ते सुण जो चित्त लाय ।।

ढाल—२

(राग—कर्म थी न छूटे हो कोई विन भोगव्याँ रे)

१— तिण काले ने तिण समे रे,
पार्श्व संतानिया साध ।
'केशी कुमार' श्रमण गुण सोभता रे,
संयम तप समाध ।।

२— भलांई पधार्या हो केशी स्वामजी रे,
भव जीवां के भाग ।
मार्ग दिखावे हो मुनिवर मोखनो रे,
उपजावे वैराग ।।भ०।।

३— आय ने उतर्या कोष्टक बाग मे रे,
निरबद जायगा जोय ।
ते ऋषि बे पक्ष करी निर्मला रे,
बलवंत रूपवंत होय ।।भ०।।

४— गुणवंत रा विनयवंत छे रे,
ज्ञान – दर्शन – चारित्रवंत ।
लाज लाघव ओयंसी तेयसी रे,
जमवत वचल — महंत ।।भ०।।

५— जीत्या कषाय ने इन्द्रियां आपणी रे,
जीत्या परीषह जान ।
जीवियाम मरण-भय तज्यो रे,
तप जप गुणे प्रधान ॥भ०॥

६— क्षमावंत सत्यवंत छे रे,
चवदे पूर्वधार ।
चउनाणी गुरु साथे मुनिवर परवर्या रे,
पंच सयां अणगार ॥भ०॥

७— मुनि विराज्या 'कोष्टक' बाग में रे,
टाले हिंसा री भोड़ ।
नगरी सावत्थी रा श्रावक लोक ने रे,
खबर हुई ठोड़ ठोड़ ॥भ०॥

चित्त:— ८— वांदण लोकां ने जावतां देखने रे,
चित्त सारथी चितवे एम ।
आज महोच्छव कोई इन्द्र खंधनो रे,
[नोकर] नफर ने पूछे धरि प्रेम ॥भ०॥

९— वैश्रमण, नाग भूत यक्ष थुंभ नो रे,
चैत्य रूंख गिरि होय ।
इत्यादिक श्रृङ्गार सजी करी रे,
लोक जावे सहु कोय ॥भ०॥

१०— मोटा कुल ना ऊपना हर्ष सूं रे,
जावे किण महोच्छव काज ।
नोकर: सेवक उत्तर पाछो दे इसो रे,
'केशी' श्रमण पधार्या आज ॥भ०॥

११— छत्ती रिध त्यागी ने हुवा रे,
निर्लोभी निरग्रन्थ ।
नाम गोत सुण्यां लाभ घणो कह्यो रे,
तिरण तारण समरत्थ ॥भ०॥

त्त:— १२— सांभल चित्त अति हर्षित हुवो रे,
रथ पर बैसी आय ।
मुनि वांदि ने वाणी सांभले रे,
उपदेश दे रिषि-राय ॥भ०॥

देश:- १३— लोकालोक नव तत्व ना रे,
भाख्या भिन्न भिन्न भेद ।
ए सुख जाणो सगला कारिमा रे,
राखो मुगति-उमेद ॥ भ० ॥

१४— खानो भोग कर्म छे रोग ना रे,
विलसंतां विगडंत ।
सुख थोड़ो ने दुख घणो अछे रे,
रीझे कुण मतिवंत ॥ भ० ॥

१५— दोय विधि धर्म देखाड़ियो रे,
आगार ने अणगार ।
मोक्ष ना सुख कह्या सासता रे,
और अथिर संसार ॥ भ० ॥

दोहे—

चित्त:— १— सांभल चित हरख्यो घणो, सरध्या तुमरा वेण ।
भवि जीवां नां तारका, थे साचा मिलिया सेण ॥

२— सेठ सेनापति मंत्रवी, धन्य ते तजे घर बार ।
ऐसी पहुँच म्हारी नहीं, द्यो श्रावक ना व्रत बार ॥

ढाल—२

(राग—इण जुग मांहे रे कोई किण रो नहीं)

१— चित्त उजवाली रे आपणी आतमा,
लिया श्रावक ना व्रत बारो जी ।
नव तत्व भेद रे जाण्या रूड़ी परे,
कियो निज आतम विस्तारो जी ॥चि०॥

२— जीव न मारे रे जाण ने चालतो,
वले झूंठ ने कियो आगो जी ।
पांच चोरी का रे त्याग ज आदर्या,
वले पर नारी नो त्यागो जी ॥चि०॥

३— परिग्रह राख्यो रे मन मे तेवड्यो,
दिशी नो करी मरजादो जी ।

नेम चितारे रे व्रत बलि सात मे,
छांड्या अनर्थ दंड प्रमादो जी ॥चि०॥

४— सामायिक पडिकमणो नित करे,
देशावकाशिक सूं प्रेमो जी।
पौषध करे छ इक मास में,
शुद्ध पाले लिया नेमो जी ॥चि०॥

५— बारमां व्रत में दान देवे घणो,
साधां ने निरदोसो जी।
चवदे प्रकारे हर्ष घणो करी,
रह्यो सुपातर ने पोसो जी ॥चि०॥

६— गुरु देवां की रे भावे भावना,
देवे हर्ष सूं दानो जी।
साधू ने कल्पती वस्तु राखे घणी,
दान देवे न करे मानो जी ॥चि॥

७— नियम चवदे रे नित्य चितारवे,
पर उपगारी निर्दोषो जी।
भावना भावे रे चारित्र लेवा तणी,
निजर लागी एक मोखो जी ॥चि०॥

८— वीतराग ना रे वचन सूं चित्त तणी,
मींजी भेदी साते धातो जी।
रंग तो लागो रे चोल मजीठ ज्यूं,
पड़िकमणो दिन रातो जी चि०॥

९— केशी श्रमण मिलियां चित्त तणा,
टलिया पातिक जालो जी।
मिथ्या मत अंधारो मेट ने,
थयो समकित घट ऊजालो जी ॥चि०॥

दोहे—

१— श्रावक ना व्रत आदर्या, नव तत्व को हुवो जाण।
डिगायो डिगे नहीं, जो देव चलावे आण॥
२— पौषध पड़िकमणो करे, देवे सुपातर दान।
'श्वेताम्बिका' री वीनती करे चित्त प्रधान॥

ढाल–४

(राग—रसीया रा गीत)

१— चित्त इम लेई राजा जी रो भेटणो,
आयो गुरां के पास हो महामुनि ।
'श्वेताम्बिका' नगरी हो जातां भाव सूं,
वंदणा करे उल्लास हो महामुनि ॥

२— पूज्यजी पधारो हो नगरी हम तणी,
होसी घणो उपगार हो महामुनि ।
घणां जीवां ने हो मारग आणसो,
थे देस्यो पार उतार हो म०मु० ॥पूज्य०॥

३— 'श्वेताम्बिका' नगरी हो स्वामीजी दीपती,
छे वा देखवा जोग हो म०मु० ।
तिण मे आयां हो नफो बहु नीपजे,
सुखिया वसे बहु लोग हो म०मु० ॥पूज्य०॥

४— 'पएसी' राजा ने मेल्यो भेटणो,
लेई चालूं स्वाम हो म०मु० ।
दोय वार तीन बार कीधी वीनती,
गुरु नहीं वोल्या ताम हो म०मु० ॥पूज्य०॥

५— बार बार करी इम बीनती,
तरे दे दृष्टान्त मुनिराय हो म०मु० ।
फलियो फूलियो कोई बाग हुवे,
सूं पंखी जाय के न जाय हो चतुर नर !
उत्तर द्योनि हो चित्त इण बात को ।

६— हां, सामी ! जावे हो चित्त इम कहे,
वले बोल्या मुनिराय हो च० न० ।
तिण बाग मे हो कोई पारधी वसे,
तो जाय के नही जाय हो च० न० ॥उत्त०॥

७— नही जावे छे पंखी, चित्त इम कहे,
भय उपजे तिण ठाय हो म०मु० ।
इण दृष्टान्ते हो श्वेताम्बिका नगरिये,
बसे पएसी राय हो च० न० ॥उत्त०॥

८— सामी ! सूं प्रयोजन थां रे राय सूं,
वचन कहे चित्त एव हो म०मु० ।
लोक वसे बहु सेठ सेनापति,
करसी स्वामीजी की सेव हो म०मु० ॥पूज्य०॥

९— भाव सहित तुमने वहरावसी,
असनादिक चार आहार हो म०मु० ।
वस्त्र पात्र वंदना भाव सूं,
करसी पूजा सतकार हो म०मु० ॥पूज्य०॥

१०— भांत भांत कर कीधी बीनती,
चित्त डाहो सुविनीत हो म०मु० ।
बलता गुरु बोल्या जाणीजसी,
एहिज साधां की रीत हो म०मु० ॥पूज्य०॥

११— सांभल वाणी हो चित्त हर्षित हुवो,
रोमांचित थई देह हो म०मु० ।
समज्यो खरो हो रिख 'जयमलजी' कहे,
धर्म दलाली सूं नेह हो म०मु० ॥पूज्य०॥

दोहे—

१— वंदना कीधी भाव सूं, गुरु ऊपर बहु राग ।
भेटणो ले ने आवियो, सेयंबिया रे बाग ॥
२— वन-पालक ने इम कहे, जो आवे केशीकुमार ।
दीजे थानक री आगन्या, पाट पाटला संथार ॥
३— जिण वेला गुरु पांगुरे खबर दीजो मोय ।
आया तणी वधावणी, आसा पूरसूं तोय ॥
४— इण विध करने जतावणी, चित आयो निज ठाम ।
पांच सय मुनि सुं परवर्या, आया केसी साम ॥
५— नाम गोत पूछी करी थानक आज्ञा दीध ।
आवी ने चित्त ने कह्यो, जाणे अमृत पीध ॥
६— सुण ने हेठो ऊतरी, करी वन्दना संतूत ।
रथ बेसी वन्दन गयो, देवण मुक्ति रा सूत ॥

७— वन्दना कर बैठो तिहां, गुरु दीधो उपदेश ।
बीजी परसदा बहु सुणे, दयाधर्म की रेस ।।

८— सांभल सहु हर्षित थया, प्रणमे गुरु ना पाय ।
धर्म दलाली चित्त करे, ते सुणजो चित्त लाय ।।

ढाल—५

(राग—रुकमण तूं तो सेणी श्राविका)

१— हाथ जोड़ी वन्दना करे,
सांभल जो मुनिराय हो ।
स्वामी राय प्रदेशी पापियो,
आप आणो मारग ठाय हो ।।स्वा०।।

२— म्हारा राजा ने धरम सुणावजो,
होसी घणो उपगार हो स्वा० ।
दुपद चौपद पंखिया,
साता वरते अपार हो ।।स्वा० मा०।।

३— दंड कर थोड़ा लिये,
जीवां की जयणा थाय हो स्वा० ।
पशु मृग उंदर नोलिया,
दया ऊपजे दिल मांय हो ।।स्वा०मा०।।

४— रैयत भणी साता हुवे,
देश विदेशे सुख हो स्वा० ।
जीव घणा आणंद पासी,
टलसी घणा रा दुख हो ।।स्वा० मा०।।

५— बार बार कीधी वीनती,
उपगारी होवे नर्म हो स्वा०
गुरु कहे चार बोले करी,
न लहे केवली परूप्यो धर्म हो चिता !

६— हूं धर्म सुणावुं किण विधे,
किम आणूं मारग ठाम हो चिता ।
चार बोल किसा किसा किसा,
तेहना बताओ नाम हो ।।स्वा० मा०।।

७— वंदना भाव करे नहीं,
चरचा नहीं चित लाय हो ॥चिता०॥
ग्राम नगर आयां साध के,
जाय नहीं सामो चलाय हो चिता ॥हूं०॥

८— मार्ग पिण मिलियां साध सूं,
जावे मूंढ़ो ढाल हो चित्ता।
ऊंचो हाथ करे नहीं
मुख दे पल्लो ढाल हो चित्ता ॥हूं०॥

६— के किणसूं बातां करे,
के किण ने ल्ये तेड़ हो चित्ता!
के आंख्या दोनू ढांक दे,
के गरदन देवे फेर हो चिता ॥हूं०॥

१०— घरे आयां पिण साहु ने,
न दे असणादिक आहार हो चित्ता।
छते जोग पिण तेहने,
नही दान तणो व्यवहार हो चित्ता ॥हूं॥

११— ए चारे संवलां कियां,
पामे धर्म विशेष हो चित्ता।
थारा राजा ने च्यारां मांहिलो,
बोल न पावे एक हो चिता ॥हूं०॥

१२— चित्त कहे देश कंबोज ना,
घोड़ा राख्या चराय हो, स्वा०।
मै किण ही काले राय ने,
पहिली दियो जताय हो ॥स्व० मा०॥

१३ — तिण मिस कर ने तुम कने,
आणेसूं हूं राय हो, स्वा०।
उपदेश देजो निःशंक थी,
जिम समकित थिर थाय हो ॥स्वा० मा०॥

१४— आप पुरुप छो मोटका,
गुण रत्नां री केल हो स्वा०।
राय प्रदेशी ने आप के,
देसूं लाला मेल हो ॥स्वा० मा०॥

१५— कहिज्यो धर्म निःशंक पणे,
जिम छे थांरो तान हो स्वा० ।
नहीं आवे ऊनो बायरो,
मुझ सरीखा प्रधान हो ॥स्वा० मा०॥

दोहे—

१— गुरु बोल्या जाणीजस्ये, कहिसां अवसर देख ।
सांभल ने चित सारथी, हर्षित हुवो विशेष ॥
२— उठी ने वंदना करी, पाछो आयो गेह ।
किण विध लावे राय ने, सांभल जो धरि नेह ॥
३— आय राजा ने इम कहे, सांभल जो महाराय ।
घोड़ा मै देश कंबोज ना, ताजा कीधा चराय ॥

ढाल—६

(राग—शील कहे जग हूं वडो)

१— मुझ ने आप सूंप्या हुता, सो देखिल्यो चौड़े रे ।
अवसर आज तणो भलो, घोड़ा किसड़ाक दोड़े रे ॥
२— धर्म दलाली चित्त करे, सांभल जो नर-नारी रे ।
'चित्त' सरीखा उपगारिया, बिरला इण संसारी रे ॥धर्म०॥
३— राय पएसी चित्त तणो, मान्यो वचन अनूपो रे ।
राजा के बहुली हुवे, घोड़ा देखण री चूंपो रे ॥धर्म०॥
४— चित्त चारे बुद्धि नो जाण छे अकल उपाई एती रे ।
कोई बीजो नर बेसाणसूं, तो गुरु सूं पड़सी छेती रे ॥धर्म०॥
५— रथ ने घोड़ा जोतर्या, चढियो पएसी रायो रे ।
चित्त बैठो खड़वा भणी, अनेक योजन ले जायो रे ॥धर्म०॥
६— आहमा साहमा दोड़ाविया, छाया जाण उमेदो रे ।
राय पएसी इम कहे, चित्त हुं पाम्यो खेदो रे ॥धर्म०॥
७— राय 'पएसी' इम कह्यो, चित्त अवसर को जाणो रे ।
गहरी छाया बाग की, रथ ऊभो राख्यो आणो रे ॥धर्म०॥
८— धर्म-कथा केशी कहे, मोटे मोटे सादो रे ।
राय पएसी देख ने, मन पाम्यो विखवादो रे ॥धर्म०॥

९— कुण बैठा जड मूढ़ ए, जड मूर्ख करे सेवा रे।
पंडित नहीं अजाण छे, उलटा काढ़ण लागो केवा रे ॥धर्म०॥

१०—ए किण रे कह्ये सूं आवियो, किण रे कह्ये सुं पेठो रे।
चोड़ा पसारा मांडिया, आप धणी होय बैठो रे ॥धर्म०॥

११—वचन बोले भली रीत सूं, मधुरी वाणी सूं भाखे रे।
कांई खावे पीवे किसूं, इण रो तन आरीसा ज्यूं भाखे रे ॥धर्म॥

१२—ए धर्म कहे दीपे घणो, एहने मूंडा आगल थाटो रे।
स्यूं इण रो रोजगार छे, ए ऊंचो बैठो पाटो रे ॥धर्म०॥

१३—अणखीलो राजा घणो, पिण जोर न चाले कोयो रे।
प्रत्यक्ष पुण्य साधां तणा, टुगर टुगर रयो जोयो रे ॥धर्म०॥

१४—खेदो करे राजा घणो, बोले वचन ज काथा रे।
कुण बैठा इहां आय ने, करि करि मोडा माथा रे ॥धर्म०॥

१५—रीस करे राजा घणी; धर्म ऊपर नही रागो रे।
इण मोडे अठे आय ने, मांहरो रोक्यो सगलो बागो रे ॥धर्म०॥

१६—हूं ऊठ बैठ सकूं नही, इसड़ी मन मांहे आई रे।
जितरी हिया मे ऊपनी, जाव चित्त ने सर्व सुणाई रे ॥धर्म०॥

१७—चिता कुण बैठा जड मूढ ए, बाग सहू मारो रूंधो रे।
इत्यादिक श्रवणे सुणी, चित उत्तर देवे सूधो रे ॥धर्म०॥

१८—स्वामी! ए नर मोटको, 'केशी' नाम कुमारो रे।
विचरत आया बाग मे, पांच से ऋषि परिवारो रे ॥धर्म०॥

१९—च्यार महाव्रत आदर्या, तजी मोह ने माया रे।
सरधा इणरी छे इसी, जुदा मांने जीव ने काया रे ॥धर्म०॥

२०—जीव-काया न्यारा कह्या, तब बोल्यो छे रायो रे।
चित्त! नर योग्य छे, हूँ जाऊं चलायो रे ॥धर्म०॥

२१—हां स्वामी योग्य छे, वचन कांना मे घाल्या रे।
राय 'पएसी' चित्त वेहू, 'केशी' श्रमण पे चाल्या रे ॥धर्म०॥

२२—राजा जाय ऊभो रह्यो. ऊंचो न कर्यो हाथो रे।
आव पधारो मुनि ना कह्यो, पिछतायो नर-नाथो रे ॥धर्म०॥

२३—बेसण नाहि बुलावणो, नहीं वचन रो साजो रे ।
माहरी आयां की राखी नहीं, हूं दीन दुखी को राजो रे ॥धर्म०॥

२४—राय 'पएसी' चिंतवे, हूँ आई ने पिछताणो रे ।
कांइक परसन पूछणो, सहजे आण भराणो रे ॥धर्म०॥

२५—जीव काया जुदा कहो, मुनि भणि कहे रायो रे ।
तव बलता मुनिवर कहे, दाण रो चोज लगायो रे ॥धर्म०॥

२६—भारी वस्तु मुलाय ने, भर्यो नवी है दांणो रे ।
तेह पुरुष खड़े कठी – उजड खड़े सुजाणो रे ॥धर्म०॥

२७—इण दृष्टांते राजवी, भांज्यो हमारो दांणो रे ।
ऊंचो ही हाथ कियो नहीं, तूं तच्चो ऊभो आणो रे ॥धर्म०॥

२८—म्हांने बाग मे देखने, थारे मन मे इसड़ी आई रे ।
कुण बैठा जड मूढ़ ए, जाव चित्त ने सर्व सुणाई रे ॥धर्म०॥

२९—तुमने चित चरची करी, चलाय ने इहां आया रे ।
आव पधारो मै ना कह्यो, तरां मन मांहे पिछताया रे ॥धर्म०॥

३०—एह अर्थ समर्थ छे हंता स्वामी! साचो रे ।
दोनूं ही हाथ जोडी लिया, एह मार्ग नहीं काचो रे ॥धर्म०॥

३१—केशी भणी भू-धव कहे, तुमे कहो तो बेसूं रे ।
गुरू कहे जायगा ताहरी, हूं बेसण रो किम कहे सूं रे ॥धर्म०॥

३२—जद नरपति मन जांणी, आही संतो की बाणी रे ।
एहिज पुरुष म्हाने तारसी, ज्यांके नही खुसामदी कांणी रे॥धर्म०॥

दोहे—

१— राय 'पएसी' गुरु प्रते, पूछे धर कर चाव ।
किण प्रयोगे जाणिया, म्हारा मन रा भाव ॥

२— च्यार ज्ञान मोपे अछे सुण पएसी राव ।
केवल ज्ञान मोपे नहीं, इम जाण्या मनरा भाव ॥

३— नंदी सूत्र मे कह्या, न्यारा न्यारा अर्थ लगाय ।
गुरू कहे राजा सरदले, जुदा जीव ने काय ॥

४— बलतो राजा इम कहे, जीव काया छे एक ।
सरधा मारी छे खरी, मैं धारी घणे विवेक ॥

(प्र० १) ५— पहिलो प्रश्न इम कहे, सांभल जो मुनिराय।
म्हारो ते दादो हुतो, इण 'श्वेताम्बिका' मांय॥

ढाल—७

[राग—आईड़ी नी]

१— अधर्मी अवनीत,
चालतो माहरी रीत।
दादो हम तणो ए,
पापी हुंतो घणो ए॥

२— लेतो अकरा दंड,
निर्दयी प्रचंड।
पर जीवां ने पीड़तो ए,
आपणे छंदे कीड़तो ए॥

३— करतो ऊंधी बात,
रहता लोही खरड्या हाथ।
पर सुखिये दुखियो ए,
अन्यायी मे मुखियो ए॥

४— हुँतो अज्ञानी बाल,
रहतो मिथ्यात मे लाल।
स्वर्ग नरक इहां जाणतो ए,
परलोक नहीं मानतो ए॥

५— नास्तिक-मती थो आप,
फल नही पुन्य पाप।
जीव ऊपजे अछतो ए,
इसड़ो वादी हतो ए॥

६— क्रोधी कपटी पूर,
भूंडो दीसे नूर।
धरम रो द्वेपियो ए,
मच्छर विशेपियो ए॥

७— सेवतो पाप अठार,
ममता मोह विकार।

मर्यादा लोपतो ए ,
अधरम में ओपतो ए ॥

८— तुम-कथने मुनिराय !
गयो हुसी नरक रे मांय ।
हेत दादा तणो ए ,
म्हांसूं हुतो घणो ए ॥

९— आय दादो कहे आप ,
पोता ! मत करजे पाप ।
हूँ नरके पड़ियो ए ,
पाप बहुलो कर्यो ए ॥

१०— इम दादो कहे आय ,
तो मानूं मुनिराय !
नहीं तर माहरो ए ,
मत झाल्यो खरो ए ॥

(उ०) ११—केशी—गुरु कहे हेतु लगाय ,
सुण पएसी राय !
राणी ताहरी ए ,
सूरिकंता खरी ए ॥

१२— पहिर ओढ़ जल-न्हाय,
सहु श्रृङ्गार कराय ।
शोभा गहणा तणी ए ,
करी अधिकी घणी ए ॥

१३— कोई पुरुष अनेरो आय ,
काम भोग विलमाय ।
निजर ताहरी पड़े ए ,
दंड कुण सो करे ए ॥

१४-राजा - मारूं कूटूं स्वाम !
पाडूं उणरी मांस ।
शिला ऊपर धरू ए ,
पुरजा पुरजा करूं ए ॥

१५— छेदूं हाथ ने पाय,
शूली देऊं चढ़ाय।
शिर काटी धरूं ए,
जीव रहित करूं ए ॥

१६—केशी—वो नर करे तोसूं अरदास,
म्हांने मेलो न्यातीलां रे पास।
हूं जाय ने कहूँ खरो ए,
मो जिम मती करो ए ॥

१७— दुख पाऊं छुं आप,
पापों रे परताप।
तो तूं जाणदे ए,
विसरामो खाणदे ए ॥

१८—राजा—थांरे कहण री बात,
मो अपराधी साक्षात।
खिण मात्र सहीए ए,
ढीलो मूकूं नहीं ए ॥

१९—केशी—गुरू बोल्या सुण राय!
इतरे गुन्हे कराय।
अलगो न जाणदे ए,
विसरामो न खाणदे ए ॥

२०— थारे दादे केलविया कूर,
संच्या पाप ना पूर।
जाय नरके पड्यो ए,
पाप घणो कर्यो ए ॥
(जंजीरा जड़यो ए)

२१— पल्य सागर की मार,
भुगत्यां विन निराधार।
छूटे को नहीं ए,
दुख मे दिन जावे वही ए ॥
(इम जाणे सही ए)

२२— करे परमाधामी घात,
ज्यांकी पनरे जात।
मार घणी पड़े ए,
ढीलो नहीं करे ए ॥
(किम कर नीसरे ए)

२३— जाणे सीख देऊं जाय,
पिण दादो न सके आय।
रखवाला घणा ए,
दुख नरकां तणा ए ॥
(कष्ट मे नहीं मणा ए)

२४— इण दृष्टांते राय!
सरध जुदा जीव काय।
फेर जाणे मती ए,
मै झूठ न बोलां जती ए ॥
(शंका नही रती ए)

२५—राजा—थे कहो चोज लगाय,
पिण म्हारे न आवे दाय।
ज्ञान बुद्धि तुम तणी ए,
जुगती मेलो घणी ए ॥
(पिण दिल नहीं बेसे मो भणी ए)

(प्र० २) २६— स्वामी! रही पाप्यां की बात,
धरमी की साक्षात।
प्रश्न दूजो भणे ए,
केशी गुरू सुणे ए,

२७— मोहरी दादी स्वाम!
करती धरम रो काम।
तप क्रिया घणी ए,
नव तत्व विधि भणी ए ॥
(दान देती घणी ए-सेवा करे गुरु तणी ए)

२८— करती सूंस पचखाण,
सुणती घणा वखाण।

रहती तंत मे ए,
थांरा पंथ में ए ॥

२६— संच्या पुण्य ना थाट,
टाल्या दुख उचाट।
तुम कहणी सही ए,
देवलोके गई ए ॥
(सुख साता लही ए)

३०— हूं दादी ने अत्यंत,
हुंतो इष्ट ने कंत।
आपणा गोड थी ए,
अलगो न छोडती ए ॥

३१— देवलोक थी आय,
दादी कहे इम वाय।
पोता ! धरम करो ए,
मो जिम सुख वरो ए ॥
(मारग एह खरो ए,

३२— इसी कहे जो मोय,
तो संक न राखूं कोय।
नहीतर माहरो ए,
मत झाल्यो खरो ए ॥
(किम छोड़ीजे परो ए)

३३—केशी:—गुरु कहे सांभल राय !
कोई देव-पूजण ने जाय।
स्नान तिलक करी ए,
धूपेणो कर धरी ए ॥

३४— सेतखाना रे मांय,
कोई भंगी कहे बतलाय।
आवो पग धरो ए,
मोसूं वातां करो ए ॥

३५— तो जाय के नहीं जाय,
सुण परसी राय।

किम जाय अशुचि भणी ए ,
अछबाई घणी ए ॥

३६— गुरू कहे सांभल एम ,
थारी दादी आवे केम ।
दुर्गंध इहां तणी ए ,
ऊंची जावे घणी ए ॥

३७— पांच सौ जोजन लगी जाय ,
देव न सके आय ।
नेह लागा नवा ए ,
सुखां में मगन हुवा ए ॥
(देव्यां सुं पामे रवा ए)

३८— एक मुहूर्त्त नाटक सार ,
वर्ष जाय दोय हजार ।
केहवे किम भणी ए ,
पीछ्यां खपे घणी ए ॥
(इहां मनुष्यां तणी ए)

३६— पल्य सागर की थित ,
मोहिले देव्यां चित ।
मोही रह्या सही ए ,
आय सके नहीं ए ॥

४०— इम जाणी राजान !
जीव काया जुदा मान ।
राजाः—राय कहे वली ए ,
बुद्धि थांरी निरमली ए ॥
(जुगती मेलो भली ए)

४१— ज्ञानी पुरुष छो आप ,
ज्ञान तणे परताप ।
हेतु मेलो सही ए ,
पिण मो दिल बैसे नहीं ए ॥
(इम जाणों सही ए)

दोहे—

(प्र० ३) १— प्रश्न इम पूछे वली, सुणो पूज्य भगवान !
मैं पिण पारखा बहु करी, सुणजो माहरो ज्ञान ॥
४— पएसी राजा हिवे, केशी प्रते कहे एम ।
तीजो प्रश्न पूछ सूं, मैं पिण परख्यो जेम ॥
३— मै पिण जे सरधा ग्रही, करी पारखा अनेक ।
लोक वृन्द बहुला मिल्या, आणी मन विवेक ॥

ढाल—८

(राग—रुकमण तूं तो सेणी सावगा ए)

१— जीवतो चोर काठो ग्रह्यो,
कोटवाल सूंप्यो आण हो स्वामी !
लोह-कोठी में बीड़ियो,
बाहिर न पावे जाण हो स्वामी ॥
तीजो परसन पूछस्यूं ॥

२— छिद्र विवर राख्यो नहीं,
निकलवानो ठाम हो स्वामी ।
केतलेक दिन संभारियो,
मूवो निकलियो ताम हो स्वामी ॥तीजो०

३— जीव हुवे तो नीकले,
छिद्र करे तिण वार हो स्वामी ।
म्हारी ग्राह्य आवे नहीं,
हूं वचन कहूँ अवधार हो स्वामी ॥तीजो०

ढाल—९

[राग—शील कहे जग में हूं बडो]

१— वलता केशी इम कहे,
तेहनो उत्तर आख्यो रे ।
कूड़ागार शाला हुवे,
छिद्र विवर नहीं राख्यो रे ॥
सुण राजा ! केशी कहे ॥

२— भेरी शब्द मांहे रही,
ऊंचे शब्द बजावे रे।
ते शब्द बाहिर वहीं,
ताहरे कानां मे आवे रे ॥सुण०॥

राजाः—३— बलतो नरवई इम कहे,
हंता स्वामी ! आवे रे ।

केशीः— इण दृष्टांते राजवी !
जीव निकलतो न लखावे रे ॥सुण०॥

दोहा—

(प्र० ४) १—राजाः-बलतो राजा इम कहे, सुण हो केशी स्वाम !
नगर-गुत्तिये चोर ने, आणी सूंप्यो ताम ॥

ढाल—१०

(*राग—कुंजारा गीत*)

१— चोथो प्रश्न रसाल रे,
सुण केशी स्वामी ! भरी परिषद्‌ा विचाल रे।
चोर मारी ने मांहे घालियो रे,
कोठी मे,
कोठी मे छिद्र राख्यो नही रे ॥को०॥

२— दिन केताइक राख रे,
सु० के० लोक सहु नी साख रे।
कुंभी मांहि थी काढ़ियो रे,
जाय जोऊ—
जाय जोऊं कृमि कुल किलबले रे ॥को०॥

३— जीव होवे जो न्यार रे,
सु० के० तो कोठी मे होवे तार रे।
नहींतर सरधा माहरी रे,
जीव काया
जीव काया नही न्यारी खरी रे ॥जी०॥

केशीः- ४— उत्तर दे मुनिराय रे,
सुण पएसी ! लोह रो भार धमाय रे।

अग्नि करि व्याप्त थयो रे,
किम पेठी
किम पेठी-अग्नि ज लोह मे रे ॥किम०॥

५— छिद्र कियो नही काय रे,
सु० प० रूपी अग्नि कहाय रे।
जीव अरूपी छिद्र किम करे रे.
समभोनी-
समभोनी जीव काया जुदा रे ॥सम०॥

ढाल-११

[गायड़ मल धीमा चालो]

(प्र० ५) १—राजाः— हूं पांचमो परसन पूछूं,
हूं बात यथार्थ कहुँ छुं,
इण रो उत्तर स्यूं छे हो,
श्री मुनिवरजी।

२— कोई तरूण पुरुष बलवंतो,
ओ काम करे मतवंतो॥
ते बालक किम न करंतो हो ॥श्री मुनि०॥

३— ते हयवान आधार।
ओ नाखे बाण तिवार,
तो जावे पेले पार हो ॥श्री मुनि०॥

४— ते बालक बाण चलाय,
तो मांनूं मुनिराय!
तुमे कहो ते न्याय हो ॥श्री मुनि०॥

५— तव मुनि उत्तर भाखे,
केशीः— हूं कहूँ छुं आगम साखे।
यथा दृष्टान्ते दाखे हो ॥श्री मुनि०॥

६— ओ विज्ञानवंत सुजाण,
नवा धनुपज बाण।
नांखे ते परमाण हो।
श्री नरवरजी!

७— ओ ही पुरुप बलवान,
ते अधूरा तीर कबाण।
ते नांखी न सके बाण हो ॥श्री नर०॥

राजाः—८— केशी प्रत्ये कहे राम,
ते नांखी म मके न्याय।
ते समर्थ नहीं थाय हो ॥श्री मुनि०॥

केशीः- ६— तूं जीव काया जुदा मान,
तुमें समझो क्यूं न राजान!
मति करो खेंचातान हो श्री नरवरजी!

दोहा—

राजाः- १—वलतो राजा इम कहे, सुणो पूज्य भगवान!
यथा दृष्टान्ते हूँ कहूँ, सुणजो म्हारो ज्ञान॥

ढाल—१२

(राग—मोरा प्रीतम ते किम कायर होय)

(प्र० ६) १— छठो परसन पूछस्यूंजी,
पूरा उपगरण धार।
कोई बुद्धिवंत कला-निर्मलोजी,
पराक्रमवंत अपार॥
मुनीसर! प्रश्न पूछुंजी एह॥

२— लोह भार तरुवा तणोजी,
सीसो ने बली खार।
ते उपाड़ी ने वहेजी,
लेवे जितरो भार ॥मुनीसर॥

३— तेह पुरुष जर्जर हुवोजी,
शिथिल पड़ी छेजी काय।
लीलरी पड़े शरीरमे जी,
चामड़ी हाड दिटाय ॥मुनीसर०॥

४— हाथे डांडो झालियोजी,
चालतो लड़थड़े देह।

दांत श्रेणी खोली पड़ीजी,
आपद पीड्यो तेह ॥मुनीसर०॥

५— भूख तृषा व्याप्त थयोजी,
निर्बल थयो अपार ।
तेहज लोह तरुवा तणोजी,
यावत खार नो भार ॥मुनीसर०॥

६— ते समर्थ वहिवा भणीजी,
भार उपाड्यां जाय ।
तो थांरो मत साच छेजी,
मैं मांनूं मुनिराय ! ॥मुनीसर०॥

दोहे—

केशी— १—केशी मुनिवर इम भणे, सुण पएसी राय !
हेतु कहूं रलियावणो, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल—१३

[रांणपुरो रलियामणो रे लाल,]

१— केशी मुनिवर इम भणे रे लाल,
सुण पएसी राय-सुविचारी रे ।
यथा दृष्टांते ते कहूं रे लाल,
धर्म पांमवा उपाय-सुविचारी रे ॥केशी०॥

२— कोई पुरुष तरुणो थको रे लाल,
विज्ञानवंत नीरोग सु० ।
नवी कावड़ छीका नवा रे लाल,
भार उपाड़वा जोग सु० ॥केशी०॥

३— लोहादिक भार ते भर्यो रे लाल,
उपाड़न समरथ होय सुवि० ।
[— पएसी कहे हां प्रभु ! रे लाल,
[— वले कहूं ते जोय सुवि० ॥केशी०॥

४— कावड़ ते जूनी थई रे लाल,
घुणादिक जीव खाय सुवि० ।

तणियां छींको बोदो थयो रे लाल,
डांडो सुलियो जाय सुवि० ॥केशी०॥

५— तिण कारण समरथ नहीं रे लाल
बहवा कावड़ी भार सुवि० ।
जुदा जीव काया सरध ले रे लाल ।
शंका मकर लिगार सुवि० ॥केशी०॥

राजा— ६— राय कहे ज्ञान बुध करी रे लाल,
थे हेत मेलो छो आय सुवि० ।
पिण जीव काया जुदा जुदा रे लाल,
दिल न बैसे साम सुवि० ॥केशी०॥

दोहा—

कवि— १— प्रश्न पूछे सातमो, गुरू प्रति राजान ।
गुरु पाछो किण विध कहे, ते सुणजो धर ध्यान ॥

ढाल—१४

[राग—भूलो मन भंवरा कॉई भमे]

(प्र० ७) १— एक दिवस पूरी परिषदा, बैठो सभा मांय ।
नगर-गुत्तिये चोरटो, सूंप्यो मोने आय ॥

२— सुण केशी ! राजा कहे, ज्ञान प्रापत काज ।
सत गुरु मोटा भेटिया, तारण तिरण जहाज ॥सुण०॥

३— मैं चोर जीवतो तोलियो, पछे करि उपाय ।
मसोसी ने मारियो, नहीं शस्त्र लगाय ॥सुण०॥

४— पछे मारी ने तोलियो घट्यो बध्यो न लिगार ।
तिण कारण मैं जाणियो जीव काया नहीं न्यार ॥सुण०॥

५— चोर मुवां ने जोवतां, फेर पड़तो स्वाम !
तो हूँ न्यारा सरधतो, आप कहो छो आम ॥सुण०॥

६— नहीं तर मत म्हारो खरो, जीव काया छे एक ।
प्रति उत्तर मुनिवर कहे, युक्ति मेले विशेष ॥सुण०॥

केशी— ७— वाय भरावी दीवड़ी, सुणी दीठी ते राय !
राजा— हंता मे दीठी राय कहे, तब बोल्या मुनिराय ॥सु०॥

केशी— ८— उपगारी इम उपदिसे, समझावाने हेत ।
आप तिरे पर तारता, खुलिया ज्ञान रा नेत ॥सुण०॥

९— वाय भरी तोले दीवड़ी, पछे काढि रे वाय ।
घालि तराजू मे तोलतां, किंचित् फेर ज थाय ॥सुण०॥

राजा— १०— राय कहे स्वामी ! ना घटे, बधे नहीं तिल मात।
केशी— तब बलता गुरु इम कहे तूं देखे साक्षात ॥सुण०॥

राजा— ११— राय पएसी इम कहे, ज्ञानी पुरुष छो आप।
हेतु युक्ति जांणो घणी, ज्ञान तणे परताप ॥सुण०॥

दोहा—

(प्र० ८) १— बांको परसन आठमो, गुरां प्रति कहे राय ।
हूं मोटे मंडाणे करि, बेठो परीषदा मांय ॥

२— कोटवाल एक चोरटो, आणी सूंप्यो मोय ।
परीक्षा करवा भणी, मैं कीधा खंडवा दोय ॥

३— तो पिण जीव न देखियो, जब खंडवा कीधा चार ।
आठ सोले संख्याता किया, पिण जीव न दीठो न्यार ॥

४— निकलतो जीवज देखतो, तो हुं मान तो बाच ।
तिण कारण हे महामुनि ! म्हारो मत छे साच ॥

ढाल–१५

(राग—बहुयर तूं नव रंग)

केशी:— १— गुरु कहे राजा तूं एहवो ए,
कठियारा मूरख जेहवो ए।
राजा:— वलतो राजा कहे एम ए,
कठियारो मूरख केम ए ॥

केशी:— २—गुरु कहे चोज लगाय ए,
सांभल पएसी राय ए।

कठियारा अटवी-वाट ने ए ,
भेला मिल चाल्या काठ ने ए ॥

३— आगा अटवी मे जाय ए,
सिसलत कीधी माहोमांय ए।
कठियारा एकण भणी ए ,
दीधी भोलावण भोजन तणीए ॥

४— अमे भारी लेई आवां तरे ए,
तूं जीमण त्यारी करे जितरे ए।
लकड़ी थोड़ी थोड़ी आपसां ए ,
तोही थारी भारी करी थापसां ए ॥

५— तूं रहेलो प्रमाद मे लाग ए,
कदाच बुझ जावे आग ए।
तो लीजो काष्ट अरणी काढ़ ए ,
तूं दीजे काम सिरे चाढ़ ए ॥

६— इम सीखामण दीधी घणी ए,
आगा चाल्या लकड़्यां भणी ए।
लारे नींद तणे वश थाय ए ,
जितरे गई आग बुझाय ए ॥

७— इतरे जागी ने पेखियो ए,
अग्नि-खीरो बुझियो देखियो ए।
जाण्यो किम निपजाऊं आहार ए ,
तो काढूं लकड़ो फाड़ ए ॥

८— बांध कमर फरसी झाल ए,
काष्ट पे आयो चाल ए।
घणो जोमायतो होय ए ,
काष्ट ना खंड कीधा दोय ए ॥

९— च्यार आठ कीधा भाग ए,
पिण नजर पड़ी नही आग ए ॥
सोले बत्तीस चोसठ किया ए ,
इण नान्हा नान्हा छेदिया ए ॥

१०— जाव खंड संख्याता किया ए,
पिण अग्नि देखाला ना दिया ए।
कहे फाटोफिटो होय ए,
आ किसी विपत सूंपी मोय ए॥

११— हूं जघन्य आयुष्य अभाग ए,
हिवे काढूं किहां थी आग ए।
मोने सूंप्यो कवण जंजाल ए,
फरसी दीधी हेठी राल ए॥

१२— याद आवे अन्य बात रा ए,
मोने कासूं कहसी साथ रा ए।
आरत रुद्र ध्यान झाल ए,
रह्यो नीचो माथो घाल ए॥

१३— ज्यूं ज्यूं याद करे तरे ए,
घणूं सोच फिकर मांहे पड़े ए।
बीजी तो चिन्ता सही ए,
पिण जाणूं लकड़ी देसी नहीं ए॥

१४— इतरे कठियारा आविया ए,
आरत ना लक्षण पाविया ए।
कहे आरत ध्यान तूं किम करे ए,
ते बिलखो होय बोल्यो तरे ए॥

१५— थे काज गया था बताय ए,
मोसूं गरज सरी नहीं काय ए।
निद्रा काष्ट अग्नि तणी ए,
सहू बात कही साथ्यां भणी ए॥

१६— आग न निकली लकडा मांय ए,
तिण मो दुख पड़ियो भाय ए।
हूं इण कारण दिलगीर ए,
भाई! जिहां दुखे तिहां पीर ए॥

१७— मांहोमांही सहू इम भणे ए,
आंपे रह्या भरोसे मूरख तणे ए।

इतरां में निपुण थो एक ए,
चतुराईवंत विवेक ए॥

१८— कला जांणे छे ते छती ए,
तिण काष्ठ मांहे अरणी मथी ए।
अग्नि हुई तैयार ए,
निपजायो त्यारे आहार ए॥

१९— संपाड़ा किया बहु ए,
करि पूजा ने सज हुवा सहु ए।
कयवलिकम्मा देव ए,
उठि पूज्या घर ना देव ए॥

२०— भेला होय भोजन करी ए,
सहू चलू करि मूछ्ण मुख धरी ए।
सहू जीमी ने ताजा होय ए,
तिण मूरख ने कहे जोय ए॥

२१— ते क्रोध कियो इण ठाय ए,
पिण अकल नहीं तो मांय ए।
इम पाड़ीजे आग ए,
ए संसार चतुरनो माग ए॥

२२— कठियारो मूरख अजाण ए,
लकड़ी सूं मांडी ताण ए।
अग्नि पाड़ण नही पारिखो ए,
तिण राजा तूं कठियारा सारिखो ए॥

राजाः- २३— राय कहे मुनिवर भणी ए,
ए परिषदा आय मिली घणी ए।
थे चतुर अवसर का जाण ए,
मोने बोल्या करड़ी वाण ए॥

२४— ए देखे परिषदा रा लोग ए,
थांने मूरख कहणो जोग ए।

केशीः— गुरु कहे तूं जाणे एतली ए,
तो चाली परिषदा केतली ए॥

राजाः– २५– हां स्वामी ! जाव तयार ए,
परिषदा चाली च्यार ए।

केशीः— नाम–प्रमाण किसी किसी ए,
राजाः— ते राय कहे हुई तिसी ए॥

२६— क्षत्रिय गाथापति ब्राह्मण तणी ए,
ऋषीश्वरां नी चोथी भणी ए।

केशीः— गुरु कहे तूं जाणे इसो ए,
च्यारे अपराध्यां ने दंड किसो ए।

राजाः– २७— हां स्वामी ! जाणू दंड ए,
अपराधी ने प्रचंड ए।

राजा नो खून करे तरे ए,
छेदी जीव काया न्यारा करे ए॥

२८— गाथापति नो अपराधी थाय ए,
तिण ने बाले तिणा लगाय ए।

निभ्रछे बारंबार ए,
कहीजे न्यात रे बार ए॥

२९— ब्राह्मण नो खूनी घणो ए,
लंछण स्वान काग ना पग तणो ए।

कुंडल ने आकार ए,
शिर डांम दे साम्ही लिलाड़ ए॥

३०— ऋषीश्वरां सुं बांको वहे ए,
तिण ने जड मूरख इसड़ो कहे ए।

शीः— गुरु कहे वचन ते ना सह्यो ए,
पिण ताहरे मुखे ते कह्यो ए॥

३१— मै निकल्या कदाग्रहो छंड ए,
ए ऋषीश्वरो नो दण्ड ए।

परसन पूछे तूं वांकड़ा ए,
ए क्रोध व्यापण रा टांकड़ा ए॥

३२— वीतराग न वोले गेर ए,
म्हारी छद्मस्थां री लेर ए।

म्हांसू चर्चा कीधी घणी ए ,
मैं जड मूरख कह्यो तो भणी ए ॥

[रा]जा:- ३३— तब बलतो कहे राय ए,
सुणजो स्वामी ! म्हारी वाय ए।

हूॅ पहिले परसने बूझियो ए ,
जब म्हारो कर्तव्य थांने सूझियो ए ॥

३४— म्हारी कही मनोगत बात ए,
तदि समझ्यो स्वामी नाथ ए।

ए आडा तेडा आणते ए ,
मैं परसन पूछ्या जाणते ए ॥

३५— ज्ञान तणी प्रापत भणी ए,
मै वांकी चर्चा कीधी घणी ए।

ज्यूं ज्यूं पूछूं वांकी तरे ए ,
मोने जिनधर्म की खवरां पड़े ए ॥

३६— हूं जाणूं जीव अजीव ए,
सम्यक्त्व चारित्रनी नीव ए।

मैं मन बिचार इसड़ो कियो ए ,
जांणी ने बांको वरतियो ए ॥

३७— जाणपणां सुं सुधरे काज ए,
इतरे बोल्या मुनिराज ए।

केशी:- जाणे तूं राजा जेतला ए ,
व्योपारी चाल्या केतला ए ॥

राजा:- ३८— हां स्वामी ! जबाब तयार ए,
व्योपारी चाल्या च्यार ए।

मै राख्या छे दिल मांहे धार ए ,
ज्यां को जुदो जुदो विचार ए ॥

३९— एक बोले करड़ा बोल ए,
खेद उपजाय सटके दे खोल ए।

मांगे दूजा कने जाय ए ,
तरे गिदरो देवे विछाय ए ॥

४०— बोले जोड़ी हाथ ए,
करे खुशामदी री बात ए।
लुल लुल वचन विनय सुं भाखिया ए।
म्हे तो आप थकां हिज राखिया ए॥

४१— बले बोले मीठा बोल ए,
थांने देसूं दूधां सुं खोल ए।
नरमाई करे घणी ए,
पिण पोहच नहीं देवण तणी ए॥

४२— मांगे तीजा कने जाय ए,
तरे उठी ने ऊभो थाय ए।
न करे लाल न पाल ए,
तुरत देवे पला में घाल ए॥

४३— जो मांगे आधी रात ए,
पिण नहीं नटण री बात ए,
इसड़ो राखे तोल ए,
देवे सटको से गांठड़ी खोल ए॥

४४— चोथो गाल देने पाछो लडे ए,
उलटी धका धूमां करे ए।
बले इसड़ी चलावे रग्ग ए,
खांचे दरबारा लग्ग ए॥

४५— मुख सुं बोले आलियो ए,
थारो बाप दादो देवालियो ए।
एकीका ने उधारा दिया ए,
ज्यां ने देई दुश्मण किया ए॥

४६— लेतां तो राजी होय ए,
पिण दुममण जिम जोय ए।
केशी:—
गुरु कहे त्यारां मांय ए।
कुण व्यवहारियो कहवाय ए॥

४७— कुण कहीजे अव्यवहारियो ए,
राजा कहे जिम धारियो ए।

जा:— राय कहे व्योपारी तीन ए,
स्वामी चोथो नहीं प्रवीण ए ॥

शी:- ४८— बलता गुरू बोलिया तरे ए,
तूं पहला व्योपारी की परे ए।
ते बांका प्रश्न बातां कही ए,
पिण जाणूं छूं व्रत लेसी सही ए ॥

४९— अंदर भक्ति, मो मन परिखो ए,
तूं तो पहला व्योपारी सारिखो ए।
कवि:— जड कह्यां राजा खेदे भर्यो ए,
पिण इतरी कह्यां ठाडो पड्यो ए ॥

५०— कोई खुशामदी नहीं काण ए,
ए समजावण रा डाण ए।
उपगारी करे उपगार ए,
समझावे बारं - बार ए ॥

५१— ऐसी कही हेतु जुगत ए,
तिण सुं वेगी मिले मुगत ए।
रिख जयमलजी कहे इम भाख ए,
सूत्र रायपसेणी री साख ए ॥

दोहे—

राजा:- १— गुरां प्रते राजा कहे, थे अवसर का जाण।
सद उपदेश भलो कह्यो, निपुण गुणां की खान ॥
(प्र० ६) २— शरीर मांथी काढने, थे समरथ छो अतीव।
आंवला जेम दिखायदो, जुदो हाथ मे जीव ॥

ढाल—१६

(राग जगत गुरु त्रिशला नंदन वीर)

१— तिण काले ने तिण समेजी,
राय पएसी ने पास।
वृक्ष तणा पानड़ीजी,
कुण हलावे तास ॥

मुनिवर पूछे एम—
जेह ने परसन पूछियाजी, निष्फल जावे केम ॥मुनि०॥

केशी:- २— मुनिवर पूछे राय ने जी,
ए कुण हलावे पान।
देव असुर नाग किन्नराजी,
जाव गंधर्व अभिधान ॥मुनि०॥

राजा:- ३— राय कहे नहिं देवताजी,
जाव गंधर्व न हिलाय।
वृक्ष तणा ए पानड़ा जी,
हलावे वायु - काय ॥मुनि०॥

केशी:- ४— गुरु कहे तूं देखे अछेजी,
रूप सहित वायु - काय।
कर्म लेश्या वेद सहितजी,
राग मोह शरीर कहाय ॥मुनि०॥

राजा:- ५— राय कहे देखूं नही जी,
केशी:- तब कुरु बोल्या एम।
तूं रूपी वायु देखे नहीं जी,
तो ने जीव दिखावुं केम ॥मुनि०॥

६— छद्मस्थ देखे नहीं जी,
दश स्थानक राजान।
देखे तो श्री केवलीजी,
तूं जीव काया जुदा मान ॥मुनि०॥

ढाल-१७

(राग—जल्ला के गीत की)

(प्र० १०) राजा:-१— दशमो परसन राय पएसी पूछे हो—
मोटा मुनिराय, मोटा मुनिराय,
जीव समो हाथी ने कुंथुवो स्यूं छे हो—?
मुनिंद ॥

केशी:- २— हंता कहे मुनि, जीव मे फेर न जाणो हो—
समझो नर नाथ ॥ सम० ॥

राजाः- तब बलतो राजा कहे मीठी वाणी हो ॥मुनिंद०॥

३— हाथी अधिको खावे बोझ उठावे हो—मोटा०
कुन्थुवा सुं कार्य तिण जितरो नहीं थावे हो ॥मुनिंद०॥

४— जीव सरीखो तो कार्य अंतर किम छे हो—मोटा०
इण रो उत्तर पाछो भाखो जिम छे हो ॥मुनिंद०॥

केशीः- ५— तब मुनिवर दीपक दृष्टान्त भासे हो समझो०
उंडी शाल बिशाल में जोति प्रकासे हो ॥नरिंद०॥

६— ने आडो जड़ियां बाहिर जोत न आवे हो सम०
तिम हिज डालो पालो ने ढकणी समावे हो ॥नरिंद०॥

७— भाजन जितरी जोत प्रमाणो हो समझो०
हाथी कुंथुवा के जीव मे फेर म जाणो हो ॥नरिंद०॥

८— काया अन्तर कार्य फेर कहाणो हो समझो०
जीव असंख्य प्रदेशी पिछाणो हो ॥नरिन्द०॥

दोहे-

(प्र० ११) कविः-१— परसन इग्यार में पूछियो, मुनिवर दियो जबाब ।
लोह वाणियो छेहड़े कह्यो, तव आई धर्म री आव ॥

राजाः- २— राय पएसी गुरु प्रति बोले जोड़ी हाथ ।
हूँ पहले परसने बूझियो, थे कही मनोगत बात ॥

३— हूं जाणीने पूछिया, आडा तेढा वेण ।
ज्ञान तणी प्रापत हुई, थे साचा लागो सेण ॥

४— दादा परदादा तणो, दर पीढ्यां रो राह ।
बडा बडेरां रो संचियो, किम छूटे सामिनाह ! ॥

५— खरो करि म्हे जाणियो, थांरो धर्म ए सार ।
पिण मो सेति छूटे नहीं म्हारा बूढ़ा बडेरां रो भार ॥

६— मन घणा दिन झालियो, छोडत आवे लाज ।
जिम छे तिमहि रहण दो, गई करो मुनिराज ॥

कविः- ७— वचन सुणी राज तणा, गुरु बोल्या छे एम ।
केशीः- राजिन्द ! तुं पिछतावसी, लोह-वाणिया जेम ॥

राजा:- ८— स्वामी ! कुण लोह वाणियो, पिछतायो कहो केम ।
आप कहो किरपा करि, हूं सुणस्युं धरि प्रेम ॥

ढाल–१८

(राग—चौपाई)

केशी:- १— गुरु बोल्या राय ! सांभल जेह,
परसन इग्यारमो – उत्तर एह ।
केई वाणिया धन री चाय,
भेला मिल अटवी मे जाय ॥

२— आगे जातां इक आयो उद्यान,
तिण मांहे दीठी लोह नी खान ।
निर्धन के तो लोह होय धन्न,
खान देखी सहू हर्ष्या मन्न ॥

३— जाणे दारिद्र गयो हिवे दूर,
लोह नो भार उपाड्यो पूर ।
धन अर्थे आगे राह जाय,
तिहां तरुवो देखी आणे दाय ॥

४— कहे नाखो ए लोह नो भार,
सगलां बांध्यो तरुओ सार ।
कह्यो मान लोह दीधो राल,
तरुओ बांध लियो ततकाल ॥

५— इतरां मांहे वाणियो एक,
लोह ने से[illegible] त्रिशेक[illegible]
[illegible] ने साथ
[illegible] छोड़े

६— तरुवा सु[illegible] घणो,
भार छोड़ [illegible] ।

७— खप कीधी माहरी यूं ही जाय,
तिण कारण छोड़ूं नहीं भाय।
जिहां थी चाल आगे राह गया,
तब ते खान रूपा नी लह्या ॥

८— तरुवो नांख रूपो लियो घात,
पिण उण मूरख रे वाहीज बात।
आगे आई सोना री खान,
इमहिज हीरा रतन बखान ॥

९— माणक मोती वज्र आविया,
ते सगलां के मन भाविया।
नांखी दीधो पाछलो भार,
वज्र हीरा बांध लिया सार ॥

१०— ऊभो देखे लोह—वाणियो,
लोह भार नो मोह आणियो।
सगला कहे छोड दे लोह,
लोह थकी उतार तूं मोह ॥

११— वज्र हीरा नो लोह आवे वहू,
हमे ही होसां सरिखा सहू।
लोह—वाणियो बोल्यो वाय,
रे ! छोडा-मेला करे बलाय ॥

१२— मैं तो भार लियो सो लियो,
थे छोडा मेला स्यांनि कियो।
जब साथ्यां सगला जाणियो,
ए मूरख छे लोह-वाणियो ॥

१३— साथ्यां सीख दीधी छे घणी,
पिण मत नहीं ऊपनी मूरख भणी।
सगला पाछा आया तेह,
पोहता छे सहू आपणे गेह ॥

१४— भरी माल लाया ते घरे,
एक हीरा नो विक्रय करे।

तेहना आया बहुला दाम ,
दाम थकी सहू सुधरे काम ॥

१५— सप्त-भोमिया वणिया आवास ,
नारी मिली तरुणी बहु तास ।
मादल बाज रह्या धुंकार ,
बत्तीस विध नाटक बहु सार ॥

१६— विलसे संसार ना कामभोग ,
पुण्य थकी आय मिलियो योग ।
हिवे तो लोह-वाणियो आय ,
लोह लेने वैठो घर मांय ॥

१७— लोह बेच्यो गांठड़ी खोल ,
तिण रो आयो अल्प सो मोल ।
थोड़ा दिन मे दियो निठाय ,
कांइक नारी लारे गई खाय ॥

१८— घर मे आई दारिद्र भूख ,
भूख थकी देही जावे सूख ।
साथ्यां की मेलायत देख ,
नाटक त्रिया सुख विशेष ॥

१९— हूँ अधन्य अकृत-पुण्य घणो ,
हूं टूटती अमावस रो जण्यो ।
दुरंत दुख लक्षण मो मांय ,
लाज दया माहरी न रही काय ॥

२०— ज्यूं देखे ज्यूं सोचज करे ,
पछे गरज कहो किम सरे ।
साथ्यां तणी न मानी सीख ,
हा हा अबे पड़ी मुझ ठीक ॥

२१— पश्चाताप ते करे घणो ,
वचन मान्यो नहीं सजनां तणो ।
तेहनी परे सांभल तूं राय ?
पछे पछतापो तोने थाय ॥

दोहे—

जाः- १— लोह-वाणियो जिम कियो, तिम हूँ न करूं स्वाम ।
थां सरिखा गुरु भेटिया, सही सुधरसी काम ॥
विः- २— पएसी प्रतिबोधियो, सांभल एह दृष्टान्त ।
हेतु युगत करि तारियो, मिलिया केशी संत ॥
जाः- ३— स्वामी थे मोटा पुरुष, मोटी मन की देण ।
कृपा करि सुणायदो, केवली हंदा वेण ॥
विः- ४— मुनिवर दीधी देशना, मोटी परिषद्‌ा मांय ।
मोटे मंडाणे करी, सुणे पएसी राय ॥

ढाल—१९

(राग—विणजारा की)

१— चेतन ! चेतो रे—मुनिवर दे उपदेश,
राखो सरधा धर्म की चे० चे०
चेतन चेतो रे—परखो देव गुरू धर्म,
मेटो माया भर्म की ॥
चेतन चेतो रे ॥

२— चेतन चेतो रे—मनुष्य जमारो पाय,
परमाद मे पड़जो मती चेतन चेतो रे ।
चेतन चेतो रे—जरा रोग लगे आय,
सेठा रहिजो सूरा सती चेतन चेतो रे ॥

३— चेत्तन चेतो रे—वासो वसियो आय,
जीव बटाऊ पांवणो चेतन चेतो रे ।
चेतन चेतो रे—चट दे जीव चलाय,
साथे न हुवे केहनो जावणो चेतन चेतो रे ॥

४— चेतन चेतो रे—देह की मुर्छा मति आण,
पोख मति करी चाकरी चेतन चेतो रे ।
चेतन चेतो रे—छांड जाय ए प्राण,
ढ़ेरी करदे राख री चेतन चेतो रे ॥

५— चेतन चेतो रे-जिहां लग चेतन घट मांय,
जिहां लग इन्द्रिय साबता चेतन चेतो रे।
चेतन चेतो रे-जिहां लग रोग न आय,
राखजो धर्म रा जापता चेतन चेतो रे॥

६— चेतन चेतो रे-साधपणो ल्यो सार,
काम भोग त्यागन करो चेतन चेतो रे।
चेतन चेतो रे श्रावक ना व्रत बार,
शिव रमणी वेगी वरो चेतन चेतो रे॥

७— चेतन चेतो रे अल्प आउखो जाण,
तन धन जोवन अथिर छे चेतन चेतो रे।
चेतन चेतो रे पालो जिनवर आण,
पछतावो न पड़े पछे चेतन चेतो रे॥

८— चेतन चेतो रे इत्यादिक उपदेश,
जाव शब्द मे जाणजो चेतन चेतो रे।
चेतन चेतो रे रिख जयमलजी कहे रेस,
दया तणी दिल आणजो चेतन चेतो रे॥

दोहे—

कविः— १— सुगुरु तणी वाणी सुणी, घणूं ज रीझ्यो राय।
राजाः— हाथ जोड़ी ने इम कहे, मैं सध्यों तुमरा वाय॥
कविः— २— पएसी राजा तिहां, श्रावक ना व्रत लीध।
लागो रग मजींठ जिम, भव भव आशा सीध॥

ढाल—२०

(राग—बहुयर तू नवर)

केशीः— १— जाणे छे राय! तूं बात रा ए,
आचार्य कितरी जात रा ए।
राजाः— जाणूं छूं स्वामी नाथ ए,
आचार्य की तीन जात ए॥
केशीः— २— गुरु बोल्या राय! जाणे इसी ए,
तीनो की जात किसी किसी ए।

राजाः- कला शिल्प धर्म आयरिया ए,
तीनों रा नाम मैं धारिया ए ॥

केशीः- ३— गुरु कहे राय जाणे इसी ए,
यांरी सेवा भक्ति करवी किसी ए।

राजाः- जाणूं स्वामी ! धुर वेहुं तणी ए,
कला शिल्प आयरिया भणी ए ॥

४— अशनादिक बहु आहार ए,
जीमावे पूजा सत्कार ए।
जल न्हावण मंजण करी ए,
पुष्पादिक माला उर धरी ए ॥

५— धन देवो वस्त्र पहिराय ए,
जिको दर पीढ्यां लग खाय ए।
खातां खूटे नांय ए,
त्यांने इतरो धन दिराय ए ॥

६— हिवे धर्म आयरिया तणी ए,
स्वामी ! विनय भक्ति करवी घणी ए।
वन्दना सत्कार सन्मान ए,
देणो चवदे प्रकार नो दान ए ॥

७— असण ने वले पाण ए,
वले मेवा लूंगादिक जाण ए।
वस्त्र पात्र ने कांवली ए,
पाय-पूछणो पीढ़ फलग बली ए ॥

८— सेज्या ने संथार ए,
वले औषध भेषज सार ए।
विचरे इण परी आपता ए,
चवदां री करता जापता ए ॥

९— ज्यां ने वचन विनय सूं भासणो ए,
ज्यां रो कुरब घणोहिज राखणो ए।
मारग आणे मूल ए,
स्वामी ! कुण छे गुरु से तूल ए ॥

१०— गुरु दीवो गुरु देव ए,
नित्य कीजे गुरां की सेव ए।
राखे आसता इक तार ए,
ज्यां रो जाणो धन्य अवतार ए॥

११— ज्यां की करणी सार संभाल ए,
आसातना सगली टाल ए।
राजी होय गुरु देख ए,
ज्यांरी पुन्याई विशेप ए॥

१२— गुरु देखी द्वेष लाय ए,
जिके धका नरक मे खाय ए।
गुरां सूं बांका बहे ए,
जिके दुर्गति मे दुख सहे ए॥

१३— गुरां की निंदा करे ए,
जिके चौरासी मे रुलता फिरे ए।
गुरु विना घोर अंधार ए,
ज्यां ने वांदो बारंबार ए,

केशी:- १४— ऐसो पएसी! तूं जाण ए,
मोने वांका परसन आण ए।
तूं पाम्यो समकित सार ए,
बले श्रावक ना व्रत धार ए॥

१५— बोले राजा तूं न्याय ए,
पिण चाले केम अन्याय ए।
तूं ईसो विचक्षण जांण ए,
किम भांज्यो वंदणा रो दांण ए॥

१६— म्हाने चाल्यो विना खमाय ए,
थारे का सूं आई दिल मांय ए।
चर्चा मो सूं कीधी घणी ए,
तूं चाल्यो श्वेताम्बिका' भणी ए॥

राजा:- १७— वलतो बोल्यो तब रोय ए,
म्हारे इसड़ी आई मन मांय ए।

नगर न्यात मे मो तणो ए,
स्वामी कुजस फैल्यो अति घणो ए ॥

१८— म्हारी होती खोटी नीत ए,
म्हारी घणां जणां ने अप्रीत ए।
हूँ रह्यो थो मिथ्यात मे राच ए,
कुण माने पापी रो साच ए ॥

१९— हूँ वांको जड हुतो घणो ए,
नहीं आवे भरोसो मो तणो ए।
हूं करतो ऊंधी बात ए,
रहता लोही खरड़या हाथ ए ॥

२०— हूं पर-सुखिये रहतो दुखी ए,
स्वामी ! पर-दुखिये हुँ तो सुखी ए।
हूँ नगरी मांहे जाय ए,
म्हारो कुटुम्ब कबीलो लाय ए ॥

२१— म्हांने देखे सहू कोय ए,
खमाऊं नीचो होय ए।
बले देखे सहू परिवार ए,
हूँ वांदु बारंबार ए ॥

२२— नगरी जाणे जेहवो ए,
स्वामी ! अनड़ नमायो एहवो ए।
ऐसी मै दिल मे धरी ए,
मै जाण करने वंदना ना करी ए ॥

शी:- २३— गुरु बोल्या इम वाय ए,
राजा ! जिम तो ने सुख थाय ए।
कवि:- इसड़ो निश्चय धारियो ए,
राजा उठी ने 'श्वेताम्बिका' चालियो ए ॥

२४ — नगरी मांहे जाय ए,
कुटुम्ब भेलो कियो राय ए।
ब्याही न्यातीला लोक ए,
ज्यां का मिलिया घणा थोक ए ॥

२५— सूरिकंतादिक राणियां ए,
राजा रथ बेसाणी ने आणिया ए।
अधिको धरम सूं प्रेम ए,
राजा चढ़ियो 'कोणक' जेम ए॥

२६— बाजा बाजंतां जाय ए,
घणो हरस ऊमाहो मन मांय ए।
गज होदे असवार ए,
चलियो जावे मझ बाजार ए॥

२७— मृग-वन मांहे जाय ए,
हाथी सूं उतरियो राय ए।
देख रह्या सहू कोय ए,
वांदे नीचो होय ए॥

२८— पांच अंग नमाय ए,
राजा लुल लुल लागो पाय ए।
जब नर-नारी इसड़ो जाणियो ए,
पापी ने पेंडे आणियो ए॥

२९— नर-नारी सुख पायो घणो ए,
भलो होय जो, इण 'केशी' गुरु तणो ए।
मन की पूगी रंग रली ए,
घणां जीवां के ठारक वली ए॥

३०— छोडाय दियो मत खोटको ए,
समझायो राजा मोटको ए।
मोटा जिन मारग वहे ए,
तो पाखंडी दबिया रहे ए॥

३१— मोटा चाले धरम मे ए,
तो घणा जीव पड़े शर्म मे ए।
देखादेखी रो धर्म ए,
देखादेखी बांधे कर्म ए॥

३२— धन्य धन्य केशी स्वाम ए,
सार्या पएसी ना काम ए।

श्रावक रो दियो धर्म ए,
मिटायो मिथ्या भर्म ए॥

३३— हुवो घणो उपगार ए,
राजा कीनो परित संसार ए।
परिषदा बैठी आय ए,
धर्मदेशना दीधी सुणाय ए॥

३४— वले सुणे बहु नरनार ए,
मुनि धर्म कहे हितकार ए।
सुण सुण उत्तम जीव ए,
देवे समकित चारित्र नीव ए॥

३५— सांभल वाणी महंत ए,
जिण मे तीन लोक रो तंत ए।
परिषदा सुण हर्षित थाय ए,
मुखियो पएसी राय ए॥

३६— ऐसी वणाई युगती ए,
जिणसूं वेगी मिले मुगती ए।
धर्म आयो घणो दाय ए,
भेट्या गुरां रा पाय ए॥

दोहा—

१— सत गुरु की वाणी सुणी, घणूं ज हर्ष्यो राय।
राजा:- हाथ जोड़ी ने इम कहे, सरध्या तुमारा वाय॥

२— श्रावक ना व्रत आदर्या, हुवो नव तत्व रो जाण।
डिगायो डिगूं नहीं, जो देव चलावे आण॥

केशी:- ३— ऊठण लागो तिण समे, गुरु कहे रहिज्यो ठीक।
पहिली होय रमणीक ने, पछे मती होय अरमणीक॥

राजा:- ४— रमणीक स्वामी किम हुवे, अरमणीक होवे केम?
केशी:- बलता गुरु इसड़ी कहे, सांभल राय! धरि प्रेम॥

५— इक्षु-खेत, ने अन्न-खला, बाग नटवा-शाल।
पहिलां तो रमणीक हुवे, पछे अरमणीक भूपाल!॥

ढाल—२१

[राग—चीतोड़ी राजा रे]

१— इक्षु - रस हेतो रे,
ज्यां का पाका छे खेतो रे।
रस रा बहु चाला रे।
बहे घाणा रा नाला रे॥
जिम भाक भमाला हो—भीड़ लागी रहे रे॥

२— इक्षु पीलीजे रे,
खाईजे ने पीईजे रे।
रस बहुला दीजे रे,
देखी ने रीभे रे॥
जब लागे छे रमणीक खेत सुहावणा रे॥

३— खाय पीय ने आया रे,
ठिकाणे लगाया रे।
सूना हुवा खेतो रे,
मांहे उड रही रेतो रे॥
अरमणीक इण हेते, खेत दीखे बुरा रे॥

४— बागां गेहरी छाया रे,
मांजरी आया रे।
घणा फूल्या ने फलिया रे,
फल ने भारे ढलिया रे॥
जब लागे छे रलिया हो, बाग सुहावणा रे॥

५— केई आवे ने जावे रे,
बहु चीजां खावे रे।
पामे अति साता रे,
पान नीला ने राता रे॥
इण कारण बाग- रलियामणो रे॥

६— फागुण वाय बागा रे,
पान भड़िवा लागा रे।

निकल गया डाला रे,
नहीं फल रसाला रे ॥
अति काला भंकाला हो, बाग असोभतो रे ॥

७— जब नटवां की शाला रे,
गावे गीत रसाला रे।
बाजा बजावे रे,
देखण बहु आवे रे ॥
नटशाला सुहावे हो,राजिंद ! अति घणी रे ॥

८— हल ताल लगावे रे,
जल सुं मुख न्हावे रे।
नवा नवा सांग आणे रे,
नाचे रूप रसाणे रे ॥
जब जायने देखे तो, शाला सुहावणी रे ॥

९— नाटक गयो पूगी रे,
दिहाड़ो जाय ऊगी रे।
लोग लागे ठिकाणे रे,
नट लागा काम खाणे रे ॥
जब दीसे हो राजिंद ! शाला असोभती रे ॥

१०— लाटा धान गाहीजे रे,
खाईजे ने दीजे रे।
ऊफणे धान मादो रे,
ढिग किया अगाधो रे ॥
जब जादा रे लाटा मे चेल लागी रहे रे ॥

११— धुर तो जावे बोहरा रे,
मिलिया ठोडां ठोडां रे।
हाकम लटारा रे,
विणजारा सोदारा रे ॥
पटवारी कुंतारा सैणा भोमिया रे ॥

१२— चोधरी चोकड़ाती रे,
तुलावट खाती रे।

काय्थ कानूंगा रे,
केई लेता चूंगा रे॥
जब लाटा हो, लागे राजिंद ! चेल सूं रे॥

१३— लाटा ले चाल्या रे,
धान ठिकाने घाल्या रे।
भीड़ गई भागी रे,
रेत उडवा लागी रे॥
जब लाटा हो राजिन्द ! लागे असोभता रे॥

१४— हिवड़ां थांरो जाझो रे,
वैराग छे ताजो रे।
पायो धर्म रसीलो रे,
रखे पड़ि जाय ढीलो रे॥
मटक वैरागी हो राजिंद ! होय ज्यो मती रे॥

१५— हिवड़ां मैं बैठा रे,
थारा परिणाम सैंठा रे।
विहार करि जावां रे,
अन्य ग्राम सिधावां रे॥
लारे हो राजिंद ढीला पड़ज्यो मती रे॥

१६— लारे निंदक द्वेषी रे,
दोषी गेरी विशेषी रे।
जेहने पासे जावे रे,
छल कुबुद्धि सिखावे रे॥
ऐसा कुगुरू कुमत्यां री, कुसंगत करज्यो मती रे॥

१७— करे घणां री संगो रे,
चित्त थाये कुरंगो रे।
क्रिया बहुली करायो रे,
गुरु आसता नांयो रे॥
धर्म पायो अणपायो रुले भव-अरण्य मे रे॥

१८— गुरु-उत्थापक पापी रे,
केई आपण-थापी रे।

ज्यां की संगति मेटी रे।
राखो गुरु आसता सेंठी रे॥
किरमची रंग ज्यूं रहिजो गुरु भक्ति में रे॥

१६— होवे सुविनीत सेणा रे,
धारे गुरु वेणा रे।
जैसी ढलती छाया रे,
राखे प्रीत सवाया रे॥
कदे कार न लोपजो, गुरु वचनां तणी रे॥

२०— इम जाणी उत्तम प्राणी रे,
सांची माने गुरु-वाणी रे।
गुरु-आज्ञा शुद्ध पाले रे,
कुगुरु कुमति कुसंग टाले रे॥
तो स्वर्ग मुक्ति ना सुख वेगा लहे रे॥

२१— केशी रिषि बोले वायो रे,
सुण पएसी रायो रे।
मिथ्यात मिटायो रे,
समकित धर्म पायो रे॥
लारे गुरुदेवां री आसता मती मूकजो रे॥

२२— रहिजो राय! ठीको रे,
दीधी तो ने सीखो रे।
च्यारे ज्यूं रमणीको रे,
धर्म पालजो नीको रे॥
ज्यूं टीको तोने आवे शिव-रमणी तणो रे॥

दोहे—

राजा.— १— अरमणीक होसूं नहीं म्हारे धर्म सूं राग।
सात सहस्र ग्राम खालसे, करि देसूं च्यार विभाग॥
२— एक भाग राण्यां भणी, एक भाग खजान।
एक भाग अश्व हाथियां, एक भाग देऊं दान॥
३— माहण श्रमण शाक्यादिके, मांडी मोटी शाल।
अशनादिक निरजाय ने, दान देऊं दग-चाल॥

४— आप कने व्रत आदर्या, चोखा पालीस स्वांम।
सामायिक पोसा करी, सारीस आतम-काम॥

५— इत्यादिक बलि बलि कहि, भेटे गुरु ना पाय।
भाव सहित वंदन करी, आयो जिण दिशि जाय॥

कवि:- ६— केशी सरिखा गुरु मिल्या, चित्त सरिखा प्रधान!
इसड़ा अनड़ राजा भणी, आण्यो धर्म ने थान॥

ढाल—२२

(राग—वेग पधारो रे महिल थी)

१— पएसी राजा हिवे,
मोटी शाल कराय।
असनादिक निपजाय ने,
दुर्बल दान दिराय॥

२— वैरागे मन वालियो,
सुण साधां री बाण।
दयाधर्म दिल मे रूच्यो,
मन मे वैराग आण॥वैरागे०॥

३— पएसी धर्म में दृढ़ थयो,
नव तत्व को हुवो जाण।
डिगायो डिगे नहीं,
जो देव चलावे आण॥वैरागे०॥

४— पौषह पड़िकमणो करे,
शील व्रत नित्य मेम।
चोखी पाले सूंस आंखड़ी,
देव गुरु धर्म सूं प्रेम॥वैरागे०॥

५— दान दे चवदे प्रकार नो,
साधां ने निरदोष।
हाड मींजा धर्म मे रंगी,
हर्षे पात्र ने पोष॥वैरागे०॥

६— देव गुरु धर्म नी आमता,
बैठो समकित धार।

शंका कंखा नां करे,
रुचिया प्रवचन सार ॥वैरागे०॥

७— जिण दिन सूं व्रत आदर्या
राज्य देश भंडार ।
बल वाहन राण्यां भणी,
न करे सार संभाल ॥वैरागे०॥

८— चाकर नकर परिवार सुं,
उतर गयो मन राग ।
पर-भव की खरची भणी,
रात दिवस रह्यो लाग ॥वैरागे०॥

९— बेले बेले पारणो,
तपस्या करे अभंग ।
सूर वीर धर्म-दृढ थयो,
करिवा कर्मां सुं जंग ॥वैरागे०॥

१०— करड़ो हुतो राजवी,
पायो जिनवर धरम ।
लागी रसायण धर्म की,
नरम हो गयो परम ॥वैरागे०॥

——

दोहा—

१— जिहां लगि धर्म पायो नहीं, करतो जाड़ा पाप ।
संसार्यां ने सुहावतो, पड़ती जेहनी छाप ॥
२— 'सूरिकंता' राणी हुंती, घणो राजा नो प्यार ।
राणी नामे पुत्र नो दियो 'सूरिकंत' कुमार ॥
३— स्वारथ नी सगाइयां, जोइजो इण संसार ।
किण विधि विरचे कंत सूं, 'सूरिकंता' नार ॥
४— कुण बेटा कुण मायड़ी कुण नारी प्रिय भाय ।
स्वारथ का सब ही सगा, परमारथ मुनिराय ॥

ढाल—२३

[राग—देवो काना ! म्हारी चूनड़ी]

सूरिकंता:-१— हिवे राणी ! मन चिंतवे,
(सूर्य कान्ता) एतो भरम गयो भूपाल रे लाला ।
सार करे नहीं राज्य की,
इण ने लागो कोण जंजाल रे लाला ॥

कवि:- २— तुमे जोयजो रे स्वारथ ना सगा,
एतो मुतलब केरा प्यार रे लाला ।
जो स्वारथ पूगे नही,
तो तोड़े जूनो प्यार रे लाला ॥तुमे॥

सूर्यकान्ता:-३— केशी श्रमण आयां पछे,
इण ने किसी सिखामण दीध रे लाला ।
म्हारे सिंह सरीखो राजवी,
इण ने धर्म-गेलड़ो कीध रे लाला ॥तुमें

४— इण राजा सूं गरज सरे नहीं,
नहीं चाले राज्य नो भार रे लाला ।
जहरादिक ना जोग सूं,
हूं इण ने नांखू मार रे लाला ॥तुमे०॥

५— 'सूरियकत' कुमार भणी,
हूँ तो लेई बेसाड़ूं राज रे लाला ।
जब काम चले म्हारा राज रो,
सब सीझे वंछित काज रे लाला ॥तुमे०॥

६— इसड़ी बात विचार ने,
कुमर बोलाव्यो पास रे लाला ।
राणी जितरी मन मांहे तेवड़ी,
तितरी दीधी परकास रे लाला ॥तुमे०॥

७— बेटा ! ताहरा तात ने मार तूं-
जहर शस्त्र ने जोग रे लाला ।
जिम राज्य बेसाणूं तो भणी,
म्हारो मिट जाय दुःख ने सोग रे लाला ॥तुमें०॥

सूर्यकान्तः-८— एतो कुमर सुणी ने चिंतवे,
आ दुष्टण दीसे मात रे लाला ।
तात म्हारो धर्मी अछे,
किम मारूं मुझ हाथ रे ? लाला ॥तुमें०॥

९— एतो नां, कह्यां मात छे बुरी,
हां कह्यां म्हारो बाप रे लाला ।
कविः- कुंवर अवसर नो जाण थो,
ओ तो होय गयो चुप चाप रे लाला ॥तुमें०॥

१०— एतो अण बोल्यो उठी गयो,
राणी ने नहीं दीधो जबाब रे लाला ।
तब राणी मन चिंतवे,
हा हा गई म्हारी आब रे लाला ॥तुमें०॥

११— कुंवर रखे कहेला राय ने,
म्हारी रहस्य छानी बात रे लाला ।
हूँ तो पहिलां अवसर देख ने,
वेगी करसूं राजा री घात रे लाला ॥तुमें०॥

दोहा—

१— इम मन मांहि विचार कर, कदि राजा एकलो होय ।
छल बल निसदिन ताकती, आई इक दिन अवसर जोय ॥

ढाल-२४

(राग—नव रसा की)

१— हाथ जोड़ी ने विनती करती
वयण विनय सूं भाखे रे ।
म्हारे ऊपर किरपा कीजे,
हूं कहुं छुं सहू नी साखे रे ॥
राणी एक धुतारी रे ।
बोले मीठा बोल करसी खवारी रे ॥

२— लुल लुल ने आ लटका करती,
मो पर किरपा करो महाराज रे ।

'छट्ठ' तणो पारणो थांके,
मुझ घर कीजे आज रे ॥राणी०॥

३— आप तो धरम करण ने लागा,
करो काया रो निस्तारो रे।
म्हारे आंगणे पगल्या करतां,
पाप विलय जावे म्हारो रे ॥राणी०॥

४— मुख ऊपर अति मीठी बोले,
मांडे छे बहुली प्रीत रे।
पिण अंतर में घात ज खेले,
जांणो दुसमण नी ए रीत रे ॥राणी०॥

५— मुख ऊपर तो हंसतो दीसे,
बोले कोमल वाणो रे।
हिया विचे कतरणी राखे,
कपटी एम पिछाणो रे ॥राणी०॥

ढाल—२५

[राग—ए जीव विषय न राचिये]

१— कुण माता ने कुण पिता,
कुण स्त्री प्रिय भाय रे।
हुवे दुषमण कपड़ा डील रा,
जब करम उदय हुवे आय रे॥
जोयजो रे स्वारथ का सगा॥

२— बार बार कीधी वीनती,
मानी पएसी राय रे।
हिवे कुण उपाय राणी करे,
ते सुणजो चित्त लाय रे॥ जोयजो०॥

३— एक सगपण प्रीतम तणो,
बेले बीजो व्रत धार रे।
तीजो तपसी वैरागियो,
राणी करुणा न करी लिगार रे ॥जोयजो०॥

४— श्रावक ना व्रत लीधां पछे,
तप तेरे बेला कीध रे ।
एकण कम चालीस दिने,
राय जग मांहे जस लीध रे ॥जोयजो०॥

दोहे—

१— राय पएसी जाणियो, राणी तणो जे कूर ।
अशनादिक में घालियो, सगले जहर रो पूर ॥
२— विधि सुं करी विछावणा, बिच में मेल्यो थाल ।
भोजन की वेला हुई, आय बैठो भूपाल ॥
३— विविध प्रकारे भोजन हुता, जीमतां आई लहर ।
राय पएसी जाणियो इण राणी दीधो जहर ॥
४— जहर उतारण री विधी, जाणे छे भूपाल ।
पिण धग पड़ो संसार ने, जीवणो कितोइक काल ॥
५— मोहरा-वाली मुद्रिका, खोल पियां दुख जाय ।
ते पिण राजा पास थी, मूल न कीधो उपाय ॥

ढाल—२६

[राग—वे वे तो मुनिवर वहिरण पांगुर्या रे]

१— राजा तो उठ्यो, वेग सतावसूं रे,
राणी ऊपर न कर्यो द्वेष रे।
ऊजल करकस वेदन ऊपनी रे,
राख्यो इण समता भाव विशेष रे॥

२— जाइजो रे समकित नो परगम्यो रे,
जिन मारग ने चाढी सोभ रे।
इसड़ी समता केई बिरला करे रे,
जीत्या छे मोह तृष्णा ने लोभ रे ॥जोइजो०॥

३— आगे विचाले पिण वेराग नो रे,
आयो छे मन मे अधिको जोस रे।
वेदनी कर्म संच्या छे माहरा रे,
नहीं छे इण राणी तणो दोष रे ॥जोइजो०॥

४— शरीरे दाघ-ज्वर इसड़ो ऊपनो रे,
बलूं बलूं हुई छे देह रे।
हेलो हाको मुख सूं ना कियो रे,
राजा देही सूं नाएयो नेह रे ॥जोइजो०॥

५— पुत्र त्रिया ने सज्जन घर थकी रे.
मूल न आएयो मन में मोह रे।
औषध भेषज कोई ना कियो रे,
धर्म ने रंगे रातो सोह रे ॥जोइजो०॥

६— मन रो जोश करी ने वेग सूं रे,
आयो पौषध-शाला रे मांय रे।
जायगा पड़िलेही लघु वडी नीत नी रे,
डाभादिक संथारो दियो ठाय रे ॥जोइजो०॥

७— पल्यंकादिक आसन बेठी करी रे,
दोनूं ही माथे हाथ चढाय रे।
'नमोत्थु णं' दीधो श्री अरिहंत ने रे,
जाव ते जासी शिवपुर मांय रे जोइजो०॥

८— 'नमोत्थु णं' बीजो पूर्व मुखे रे,
भाव सूं 'केशी' श्रमण ने दीध रे।
धर्माचार्य मोटा माहरा रे,
पूर्वे मैं श्रावक ना व्रत लीध रे ॥जोइजो०॥

९— हिवड़ां माहरे तिमहीज व्रत छे रे,
नवरं त्रिविधे त्रिविधे विशेष रे,
इहां लेऊं छुं सूंस ने आंखड़ी रे,
उवां तो आप रह्या छो देख रे ॥जोइजो०॥

१०— पाप अठारे सगला पचखने रे,
च्यारे ही आहार पचख्या जास रे।
इष्ट ने कांत आ काया हती रे,
वोसराई छे छेहले सास उसास रे ॥जोइजो०॥

११— कथाकार मे आएयो एहवो रे
रखे जीवेलो करी उपाय रे।
सुख समाधि पूछण ने मिसे रे,
राजा ने गले टूंपो दीधो जाय रे ॥जोइजो०॥

ढाल-२७

[राग—आवे काल लपेटा लेतो रे]

१— राणी मांड्या ढपला ने सोगो रे,
माहरे व्हालां को पड़े वियोगो।
हा हा करूं हिवे कासूं रे,
माहरो हिवड़ो फटे मां सू॥

२— थे वेगा वैद्य बुलावो रे,
माहरा साहिबां की पीड़ा मिटावो।
माहरे पापां को छेह न पारो रे,
यां विना घोर अंधारो॥

३— धूतारी चरित्र बणावे रे,
आ फिर फिर झोला खावे।
थोड़ा-सा अलगा होइजो रे,
मोने दर्शन करवा दीजो॥

४— इसड़ी प्रतीत उपजावे रे,
आ नेड़ी नेडी आवे।
राणी इसड़ो अकाज कीधो रे,
गले जाय ने टूंपो दीधो॥

५— हा हा पापण मा हत्यारी रे,
नहीं आणी दया लिगारी।
देखो राणी री कमाई रे,
जोयजो स्वारथ नी सगाई॥

ढाल-२८

[राग—आदेसरजी को नंदन नीको]

१— 'पएसी' राजा मन चिंते,
देख राणी रा कामजी।
अहो कर्म-गति कोई न जाणे,
राखूं दृढ़ परिणामजी॥

२— धन्य धन्य श्रावक 'पएसी'
जिण कीवी क्षमा भरपूरजी।
बारे वेला ने तेरमो तेलो,
करम किया चकचूर जी ॥धन्य०॥

३— मन वचन काया त्रिहुँ करीने,
ध्यायो निर्मल ध्यानजी।
इसी समता जो मुनिवर राखे,
तो पामे केवल ज्ञानजी ॥धन्य०॥

४— राणी ऊपर द्वेष न आण्यो,
जाण्यो देवे धर्म को साज जी।
समता हर्ष हिये में व्याप्यो,
रांक लहे जिम राज जी ॥धन्य०॥

५— ज्यूं कोई परदेश सिधावे,
खरची पास न होय जी ॥धन्य०॥
खरची मिलियां राजी होवे,
इण दृष्टान्ते जोय जी ॥धन्य०॥

ढाल—२६

(राग—चलो जिदवा जिहां)

१— राणी ना चरित्र देख ने,
पएसी राजान ।
मन संवेगज बाल ने,
ध्यावे निर्मल ध्यान ॥

२— धन्य धन्य कर्म करे जिके,
बहती वेला के मांय।
आतम गुण संभाल ने,
सुधी भावना भाय ॥धन्य०॥

३— बारे बेला ने तेलो तेरमो,
लीधो काज समार।
आलोई पड़िकम ने,
ठाय दिनो संथार ॥धन्य०॥

४— संथारो कर भावसूं,
काले मासे करी काल।
प्रथम स्वर्ग में ऊपनो,
पाम्यो भोग रसाल ॥धन्य०॥

५ — 'सूर्याभ' नामे विमान मे,
देव रूप अभिराम।
पांच पर्याप्ति करि दीपतो,
सार्या आतम – काम ॥धन्य०॥

६— तीन जात नी परिपदा,
देख्यां नाटक तान ।
महल विमान ने रिद्धि ना,
भाव कह्या बर्द्धमान ॥धन्य०॥

७— तेहने नामे विमान छे,
सगलो ओ अधिकार ।
'राय-पसेणी' देख लो,
शंका न करो लिगार ॥धन्य०॥

गौतमः- ८— वले गौतम पूछा करे,
विनयवंत धरि हेत ।
'सूर्याभ' थित पूरी करी,
चवने जासी केत ? ॥धन्य०॥

दोहा—

भगवान्-१— च्यार पल्य नो आउखो, भोगवी सुख श्रीकार ।
गौतम ने प्रभुजी कहे, ते सुणजो विस्तार ॥

ढाल-३०

(राग—वीर सुणो मोरी वीनती)

१— वीर कहे सुण गोयमा,
ए चवसी हो सूर्याभज देव ।
महाविदेह क्षेत्र ने विसे,
जन्म लेसी हो जिहां सुख नित्यमेव ॥वीर०॥

२— ए बालक गर्भ मे अवतर्यां,
मात पिता हो धर्म में दृढ़ हो थाय।
पूरे मासे जनमसी,
महा-महोच्छव हो करसी बाप माय ॥वीर०॥

३— दिन पहले नालो छेदन करी,
दिखासी हो तीजे चंद ने सूर।
दिन छट्ठे रात जगावसी,
दिन बार मे हो अशुचि करसी दूर ॥वीर०॥

४— गर्भ आयां धर्म दृढ़ थयां,
जिणसूं देसी हो 'दृढ़ पइन्नो' नाम।
पंच धायां पालीजसी,
लीला करसी हो मन वांछित काम ॥वीर०॥

५— वरसी गांठ चोटी राखणी,
कर मुंडन हो खरचे बहु वित्त।
वले अनेरा छे घणा,
इत्यादिक हो लौकिक री थित्त ॥वीर०॥

६— हाथो हाथ रमावतां,
बेसारसी हो निज खोला मांय।
हिंवड़ा सेती भीड़तां,
मुख बोलो हो, थांरी लेऊं बलाय ॥वीर०॥

७— रत्न जटित घर आंगणे,
चालतो हो अति बाधे प्रेम।
व्याधि-रहित सुखे वधे,
गिरि-कंदर हो चंपा-लया जेम ॥वीर०॥

८— बीज ना चंद तणी परे,
आठ वरस-नी हो पूरी वय जाण।
कलाचार्य ने सूंपसी,
कला बहोत्तर हो सीख सुजाण ॥वीर०॥

६— हसण बोलण चालण विसे,
घणूं होसी हो अवसर नो जाण।
युद्ध करी अपराभवी,
नवांग सुंदर हो, सोभे शृंगार बखाण ॥वीर०॥

१०— भोग-संयोग समरथ होसी,
अवीहतो हो फिरसी काल अकाल।
मात पिता बहु घालसी,
अन्न पाणी हो सयणासण ने माल ॥वीर०॥

११— पिण कुमर ते नही राचसी,
सुख मांहे हो गृद्धि नहि थाय।
जिम कमल पाणी मे नीपजे,
नही लीपे हो ऊंचो रहिवाय ॥वीर०॥

१२— साधां समीपे बूझसी,
घर छोडी हो होसी अणगार।
पंच समिति तीन गुप्ति सूं,
घोर तपसी हो होसी पारंपार ॥वीर०॥

१३— निर्दोषण अन्न भोगवी,
जीतसी हो मोह माया ने मान।
उत्कृष्टी करणी करी,
उपजसी हो अंते केवल-ज्ञान ॥वीर०॥

दोहा --

१— हिवे 'दृढपइन्नो' केवली, जाणसी सर्व उपाव।
दर्शन करी ने देखसी, तीन लोक ना भाव ॥

ढाल—२१

(*राग—वैरागी थयो*)

१— केवल-ज्ञान पाम्या पछी रे,
विचरसी केतला काल।
आतम-ज्ञान प्रगट करी रे,
केवल पर्याय पालो रे॥
धन्य जिनधर्म ने॥

२— शेष आउखो जोयने रे,
अणसण करसी सार।

च्यारे ही आहार पचखने रे,
घणा भक्त विस्तारो रे ॥धन्य०॥

३— अंते मुक्ति सिधावसी रे,
'रायपसेणी' मझार ।
सांभल ने हिरदे धरे रे,
ज्यां को खेवो पारो रे ॥धन्य०॥

४— सूत्र विरुद्ध जे आवियो रे,
अधिको ओछो रे कोय ।
तिण रिख 'जयमलजी' कहे रे,
'मिच्छामि दुक्कड़' मोयो रे ॥धन्य०॥

५ — संवत अठारे सतोतरे रे,
वदि तेरस आषाढ़ ।
सिंध 'पएसी' राय नी रे,
कीधी सूत्र थी काढो रे ॥
धन्य जिनधर्म ने ॥



(५)

❀ स्कंदक ऋषि ❀

दोहे—

१— मोह-तणे वश मानवी, हासो कितोल कराय ।
कर्म कठण बांधे जीवड़ो, तीनूं वय रे मांय ॥
२— वैर पुराणो नहि हुवे, जोवो हिये विचार ।
काचर ने 'खंदक' तणो, भविक सुणो विस्तार ॥
३— क्षमा कियां सुख ऊपजे, क्रोध कियां दुःख होय ।
क्षमा करी खंदक ऋषि, मुगति गयो शुद्ध होय ॥

ढाल—१

(राग —मुनीसर जै जै गुण भंडार)

१— नमूं वीर शासन धणीजी, गणधर गौतम साम ।
कथा अनुसारे गावसूं जी, 'खंदक' ना गुण-ग्राम ॥

२— क्षमावंत जोय भगवंत नो जी ज्ञान ।
अंत क्षमा अधिकी कही जी, रह्या धर्म ने ध्यान ॥क्षमा०॥

३— त्वचा उतारी देहनी जी, राख्या समताजी भाव ।
जिन-धर्म कीधो दीपतो जी, मोटा अटलक राव ॥क्षमा०॥

४— 'सावत्थी' नगरी शोभती जी, 'कनक-केतु' जिहां भूप ।
राणी 'मलया' सुन्दरी जी, 'खंदक', कुंवर अनूप ॥क्षमा०॥

५— सगला अंगज सुंदरू जी, इन्द्रिय नही कोई हीण ।
प्रथम वय चढती कला जी, चतुर घणा प्रवीण ॥क्षमा०॥

६— 'विजयसेन' गुरु पांगुर्या जी, साधां रे परिवार ।
ज्ञान गुणे कर आगला जी, तपसी पार न पार ॥क्षमा०॥

७— नर नारी ने हुवो घणो जी, साध-वांदण रो जी कोड ।
कोई पाला केई पालखी जी, चाल्या होडाहोड ॥क्षमा०॥

८— खंदक कुंवर पिण आवियो जी, बैठो परिषदा मांय ।
मुनिवर दीधी देशना जी, सगलां ने चित्त लाय ॥क्षमा०॥

९— आगार ने अणगारनो जी, धर्म तणा दोय भेद।
समकित सहित व्रत आदरो जी, राखो मुगति-उम्मेद ॥क्षमा०॥

१०—डाभ-अणी-जल-बिन्दवा जी, पाको पीपल-पान।
अथिर तन धन आउखो जी, तजो कपट ने मान ॥क्षमा०॥

११—पेहड़े सुत ने बंधवा जी, पेहड़े स्वजन परिवार।
धन ने कुटुम्ब पेहड़े सहू जी न पेहड़े धर्म सार ॥क्षमा०॥

१२—आयो छे जीव एकलो जी, जासी एकाजी एक।
भोले को मती भूलजो जी, कुटुम्ब कबीलो देख ॥क्षमा०॥

१३—पुन जोगे नर-भव लह्यो जी, सद्गुरु नो संजोग।
पाछ हिवे राखो मती जी, तजो जहर जिम भोग ॥क्षमा०॥

१४—ओछा जीवित कारणे जी, स्यूं दो ऊंडी थे रांग।
भव भव मांहे काढिया जी, नटवे-वाला सांग ॥क्षमा०॥

१५—च्यार गति संसार मां जी, लग रही खांचा जी ताण।
अथिर वस्तु सगली कही जी, निश्चल छे निर्वाण ॥क्षमा०॥

१६—अथिर सुख संसार ना जी, कांय अलूजो जी जाल।
वचन सुणो सत गुरु तणा जी, चेतो सुरती संभाल ॥क्षमा०॥

दोहे—

१— मुनिवर परिषदा आगले, दाखे धर्म सुजाण।
राजा कुंवरजी आद दे, निसुणे सतगुरु-वाण ॥

२— आदि अनादि जीवड़ो, रुलियो चऊ गति मांय।
धर्म बिना ए जीव की, गरज सरी नही काय ॥

३— धर्म करो भवि-प्राणिया! दे सतगुरु उपदेश।
साधु-श्रावक-व्रत आदरो, राखो दया नी रेस ॥

ढाल—२

(राग—जी हो मिथिला पुरी नो राजियो)

१— जीहो काया माया कारमी,
जीहो जेसो सुपनो रेण।
जीहो-विणसंतां देर लागे नहीं,
जीहो मानो सत्तगुरू-वेण ॥

२— चतुर नर चेतो,
अवसर एह।
जीहो दान शील तप भावना,
जीहो राचो रूड़े नेह ॥चतुर०॥

३— जीहो धन धान घर हाटनी,
जीहो मकरो ममता कोय।
जीहो काचा सुखां रे कारणे,
जीहो हीरा-जनम मति खोय ॥चतुर०॥

४— जीहो पांच महाव्रत आदरो,
जीहो श्रावक ना व्रत बार।
जीहो कष्ट पड्यां रोठा रहो,
जीहो ज्यूं हुवे खेवो पार ॥चतुर०॥

५— जीहो सगपण सहू संसार ना,
जीहो स्वारथ ना छे एह।
जीहो जो स्वारथ पूगे नही,
जीहो तड़के तोड़े नेह ॥चतुर०॥

६— जीहो सगपण इण संसार ना,
जीहो थया अनंती बार।
जीहो मिल मिल ने बले वीछड़े,
जीहो कर्म लगावे लार ॥चतुर०॥

७— जीहो नरक निगोद मां उपनो,
जीहो छेदन भेदन मार।
जीहो तो पिण धेठा जीव ने,
जीहो नहीं आवे लाज लिगार ॥चतुर०॥

८— जीहो वेदना नरक मे सासती,
जीहो जरा तापसी खेद।
जीहो वेदना दश प्रकार नी,
जीहो जिणरा न्यारा न्यारा भेद ॥चतुर०॥

९— जीहो मारां पल सागर तणी,
जीहो सुणतां थरहरे काय।
जीहो तो पिण धेठा जीव ने,
जीहो धर्म न आवे दाय ॥चतुर०॥

१०— जीहो ठग बाजी मांडे घणी,
जीहो चाडी चुगली खाय।
जीहो कर्म उदय आयां थकां
जीहो पछे पछतावे मन मांय ॥चतुर०॥

११— जीहो ऐसा दुखां सुं डरपने,
जीहो चेतो चुतर सुजाण।
जीहो ज्ञानादिक आराध ने,
जीहो लेवो पद निर्वाण ॥चतुर०॥

१२— जीहो दिल मे दया विचार ने,
जीहो छोडो खांचा-ताण।
जीहो ज्ञान सहित तप आदरो,
जीहो ए जीतां रा डाण ॥चतुर०॥

१३— जीहो उपशम मन मां आण ने,
जीहो चेतो बहती बार।
जीहो रिख 'जयमलजी' इम कहे,
जीहो उतर्यो चाहो पार ॥चतुर०॥

दोहे—

१— परिषदा सुण राजी थई, समकित देश-व्रती थाय।
निज सगती के सम करी, आया जिण दिश जाय ॥

२— वाणी सुण सतगुरु तणी, कुमर जोड़या दोनूं हाथ।
वचन तुम्हारा सरदह्या, रूड़ा कह्या कृपानाथ ! ॥

३— मात पिता ने, पूछ ने लेसूं संजम-भार।
वलि ते मुनिवर इम कहे, मकरो ढील लिगार ॥

४— चरण कमल प्रणमी करी, खंदक नामे कुमार।
संजम लेवा ऊमह्यो, बीहनो भव-भ्रमण संसार ॥

ढाल–२

[राग—मरणो दोरो संसार मां]

१— कुंवर कहे माता सुणो, दीजे मुज आदेश।
संजम ले होसूं सुखी, काटण करम-कलेश ॥

२— अनुमति दीजे मोरी मातजी, ए संसार असार।
जनम मरण दुख मेटवा, चारित्र लेऊं इण वार ॥अनु०॥

३— वचन सुनी सुत ना इसा, धरणी ढली छे माय।
सावचेत थई इम कहे, एसी मती काढो वाय ॥अनु०॥

४— झुलक झुलक माता रोवती, कुंवर सामो रही जोय।
ए सुरती जाया! ताहरी, ऊंबर फूल ज्यूं होय ॥अनु०॥

५— संजम छे वछ! दोहिलो, जैसी खांडा नी धार।
पाय उलहाणो चालणो, लेवो शुद्धज आहार ॥अनु०॥
वछ! दुकर व्रत पालना।

६— हिंसा न करणी जीवरी, तजवो मृपा-वाद।
अणदीधी वस्तु लेवी नहीं, तजणा सरस सवाद ॥वछ०॥

७— घोर ब्रह्मचर्य पालवो, तजवो नारी नो रंग।
मन वचन काया करी, व्रत पालणा इक रंग ॥वछ०॥

८— परिग्रहो नहीं राखवो, त्रि-विधे त्रि-करण त्याग।
रयणी-भोजन परिहरे, ते सांचो वैराग ॥वछ०॥

९— मेला लूगड़ा राखवा, करवी नहीं सिनान।
बावीस परीसा जीतणा, रहणो रूड़े ध्यान ॥वछ०॥

१०— सुवेण कुवेण लोक ना, खमणा परीसा-भार।
राज कुंवर सुकमाल छे, करवी न देह री सार ॥वछ०॥

११— केई कहे पूज पधारिया, देवे आदर मान।
केई कहे मोडा! क्यूं आवियो, बोले कड़वी बाण ॥वछ०॥

१२— ए परीसा सहणा दोहिला, कहू छूं बारंबार।
सुख भोगव संसार ना, पछे लीजो संजम-भार ॥वछ०॥

दोहे—

१— कुंवर कहे माता सुणो, तुम्हे कह्यो ते सत्त।
सुख चाहे इह लोग ना, तेह ने दोरो चरित्त ॥

२— अथिर संसार नी साहिबी, जातां न लागे बार।
आज्ञा दे राजी थई, होसूं शुद्ध अणगार ॥

३— उत्तर प्रत्युत्तर किया घणा, बाप बेटा ने मांय।
सूत्र मांहे विस्तार छे, दीजो चतुर लगाय॥
४— माता मन मां जाणियो, राख्यो न रहे कुमार।
दीक्षा ए लेमी सही, इण मां फेर न फार॥

ढाल–४

(राग सहेल्याँ ए आंवो मोरियो)

१— अनुमति देवे माय रोवती, तुज ने थावो कल्याणो रे।
सफल थावो तुम आसड़ी, संजम चढ़ज्यो परिणामो रे॥अनु०॥

२— महोच्छव जमाली नी परे, करि मोटे मंडाणो रे।
शीविका मां बेसाण ने दाखे जे जे वाणो रे॥अनु०॥

३— हिवे कुंवर तणा वांछित फल्या, हरख्यो चित्त सभारो रे।
आव्या जिहां मुनिवर अछे, साथे बहु परिवारो रे॥अनु०॥

४— इष्ट ने कांत वाल्हो हुँतो, सामी ! माहरो पूतो जी।
डरियो जनम मरण सूं, करसी करणी करतूतो जी॥अनु०॥

५— 'मलया' सुन्दरी कहे मुनि भणी, अरज करूं कर जोड़ो जी।
जालवजो रूड़ी परे, सूंपी कलेजा नी कोरो जी॥अनु०॥

६— तप करतां ने वार जो, भूखा नी करजो सारो जी।
दुख जमवारे जाण्यो नहीं, सतगुरु ने अवतारो जी॥अनु०॥

७— माहरे आथी पोथी हुँती, दीधी तमारे हाथो जी।
जिम जाणो तिम राख जो, व्हाली माहरी आथो जी॥अनु०॥

८— तब कुंवर कहे प्रणमी करी, तारो मोने कृपालो जी।
तब गुरु व्रत उचराविया, थया छकाया ना दयालो जी॥अनु०॥

९— सूरत देख कुंवर तणी, ऊठी मोह नी झालो जी।
प्रेम तणे वश मायड़ी, विलवे सा असरालो जी॥अनु०॥

१०—ठलक ठलक आंसू पड़े, जाणे तूट्यो मोत्यां रो हारो जी।
कुंवर कने माता आय ने, भाखे वचन उदारो जी॥अनु०॥

११—सिंह नी परे व्रत आदरी, पालो सिंहज जेमो रे।
करणी कीजे रे जाया निर्मली, लीजे शिवपुर खेमो रे॥अनु०॥

दोहा—

१— इम सिखावण देई करी. आया जिण दिश जाय ।
कुंवर खंदक दीक्षा ग्रही, मन मां हर्पित थाय ॥

ढाल–५

(*राग—मुनीसर जै जे गुण भंडार*)

१— खंदक संयम आदर्यो जी, छोडी ऋध परिवार ।
निज आतम ने तारवा जी, पाले निरतिचार ॥

२— मुनीसर धन धन तुम अणगार ।
नाम लियां पातिक टले जी, सफल हुवे अवतार ॥मुनी०॥

३— पांचे इन्द्रिय वश करी जी, टाले च्यार कषाय ।
पांच समिति तीन गुप्तिने जी, राखे रूड़ी ऋषि-राय ॥मुनी०॥

४— संयम पाले निरमलो जी, सूत्र अर्थ लीधा धार ।
जिन-कल्पी पणो आदर्यो जी, एकल-मल अणगार ॥मुनी०॥

५— मलिया-सुंदरी कहे रायने जी, ए नानड़ियो जी बाल ।
सिंहादिक नो भय करी जी, राखो तुमे रखवाल ॥मुनी०॥

६— पांच से जोध बुलायने जी, दिया कुंवर ने जी लार ।
साधु ने खबर कांई नहीं जी, साथे बहे सिरदार ॥मुनी०॥

७— सावत्थी नगरी सूं चालिया जी, कुंती नगरी जी जाय ।
नगरी बहनोई तणी जी शंक न राखी काय ॥मुनी०॥

८— पांचमी ढाल मां एतलो जी, ऋषि 'जयमलजी' कहे एम ।
आगे निरणो सांभलो जी, सहे परीसो केम ॥मुनी०॥

दोहे-

१— पांचसे ही इण अवसरे, लाग्या खावा पीवा काज ।
वलो वलि चलता रह्या, एकला रह्या ऋषि-राज ॥

२— हिवे किम ऊठे गोचरी, उपसर्ग उपजे केम ।
एक-मना थई सांभलो, अडिग रह्या ऋषि जेम ॥

ढाल—६

(राग—आषाढभूत अणगार)

१— तिण अवसर मुनिराय,
कुंती नगरी के मांय, सुकोमल साध ।
बिहरण विरिया पांगुर्या ए ॥

२— बाजे लूहा - जाल,
दाझै पग सुकुमाल, सुकोमल साध ।
तीजा पोहर नी गोचरी ए ॥

३— झोली पातरा हाथ,
पसीने भीनो गात, सुकोमल साध ।
दो पहरां रे तावड़े ए ॥

४— निरमोही निरमाय,
इर्या जोवता जाय, सुकोमल साध ।
राऊ तणी परे गोचरी ए ॥

५— सुसता उतावल नांहि,
धीरज धरे मन मांहि, सुकोमल साध ।
गयवर नी परे मालतो ए ॥

६— राय राणी तिण वार,
रमेज पासा सार, सुकोमल साध ।
महलां तले मुनि अविया ए ॥

७— पड़िया राणी री फेट,
खंदक महलां हेट, सुकोमल साध ।
एसो हुँतो मुज बंधवो ए ॥

८— चीता आय गयो पीर,
नेणां में छूटो नीर, सुकोमल साध ।
विरह व्याप्यो ने चिता थई ए ॥

९— राजा साहमो जोय,
आ राणी इम किम रोय, सुकोमल साध ।
सुख मांहे दुख किम हुवो ए ॥

१०— साधु ने जाता देख,
राजा ने जाग्यो धेख, सुकोमल साध ।
एह कर्म मोडे किया ए ॥

११— राणी हुँती सुख मांय,
रोवाणी इण आय, सुकोमल साध ।
खबर हमे मोडा तणी ए ॥

१२— राजा नफर बुलाय,
जावो थे वेगा धाय, सुकोमल साध ।
इण मोडाने पकड़ो जायने ए ॥

१३— राजा विचारी गेर,
जाग्यो पूर्वलो वैर, सुकोमल साध ।
पाछलो भव काचर तणो ए ॥

१४— माठी विचारी मन मांय,
इण ने मसाण भोम ले जाय, सुकोमल साध ।
त्वचा उतारो देहनी ए ॥

१५— मति करजो कांई काण,
इण ने ले जावो मसाण, सुकोमल साध ।
सगली खाल उतारजो ए ॥

१६— नफर सुणी इम वाण,
कर लीधी प्रमाण, सुकोमल साध ।
अजाण थका जायने ए ॥

१७— पकड्या मुनि ना हाथ,
थाने मसाण भोम ले जात, सुकोमल साध ।
नफर कहे कर जोड़ने ए ॥

१८— कहे मोने तो खबर न काय,
फुरमायो महाराय, सुकोमल साध ।
खाल उतारो देहनी ए ॥

१९— तिणसूं माहरो नहीं दोष,
मुनि ! मति करजो रोष, सुकोमल साध ।
डरप्या, रखे बाल भस्मी करे ए ॥

२०— कठण आण बण्यो काम,
तोही न कह्यो आपणो नाम, सुकोमल साध ।
सगपण कोई दाख्यो नहीं ए ॥

२१— मसाण भोमका ने मांय,
काया दीवी वोसिराय, सुकोमल साध ।
आहार च्यारू त्यागन किया ए ॥

२२— राख्या समता — भाव,
संयम ऊपर चाव, सुकोमल साध ।
मन-कर ने चलिया नहीं ए ॥

२३— तीखी पाछणा नी धार,
मस्तक ऊपर फार, सुकोमल साध ।
त्वचा उतारी देहनी ए ॥

२४— पगां सुधी खाल,
तोही रह्या संयम मां लाल, सुकोमल साध ।
नाकेई सल घाल्या नहीं ए ॥

२५— रह्या रूड़े ध्यान,
पाम्या केवल ज्ञान, सुकोमल साध ।
कर्म खपाय मुगते गया ए ॥

२६— केवल महिमा होय,
धन धन करे सउ कोय, सुकोमल साध ।
जिन मारग कियो दीपतो ए ॥

२७— सह्यो परीसो थोड़ी वार,
कर्मा रो कियो अपहार, सुकोमल साध ।
अविचल सुख मां झिल रह्या ए ॥

२८— ऋषि 'जयमलजी' कहे इम वाय,
प्रणामूं ते ऋषि ना पाय, सुकोमल साध ।
सासता सुख पाया मुगति गया ए ॥

———

दोहे—

१— कुंती नगरी ने विसे, हुवो हाहाकार ।
देखो राय मराचियो, बिना गुने अणगार ॥

२— लोग हुवा बहु आकुला, पिण जोर न चाले कोय ।
मुनि ने मुगति सिधावणो, वैर पुराणो न होय ॥

३— किम चूके पांच से सुभट, वले राणी ने राय ।
वैराग पामे किण विधे, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल—७

(राग—पुण्य सदा फले)

१— अजेय साध आयो नहीं रे,
जोवे पांच से वाट ।
भोलावण दीधी रायजी रे,
खिण खिण करे उचाटो रे ॥

२— धन मोटा मुनिराय,
नित कीजे गुण ग्रामो रे ।
मन वंछित फले,
सीझे सगला कामो रे ॥धन०॥

३— नगर गली फिर फिर जोवियो रे,
कठेई न दीठो रे साध ।
सुण्यो साध मार्यो गयो रे,
तब परमारथ लाधो रे ॥धन०॥

४— राजा पूछे कुण तमे रे,
तब चलि ते कहे योध ।
'कनक-केतू' रा रजपूत छां रे,
तमे कीधी बात अलोधो रे ॥धन०॥

५— कुंवर खंदक दीक्षा ग्रही रे,
म्हे रखवाल रे ल्हार ।
सो मुनिवर थे मारियो रे,
मांसू न सरी गरज लिगारो रे ॥धन०॥

६— वचन सुणी जोधां तणा रे,
राय हुवो दलगीर ।
हा हा पाप जाडा किया रे
म्हे मार्यो राणी रो वीरो रे ॥धन०॥

७— राणी वात सुणी तिसे रे,
लागो मर्म – प्रहार ।
मूर्छित थई धरणी ढली रे,
छूटी आंसुड़ा री धारो रे ॥धन०॥

८— हा हा हूं अभागिणी रे,
केने रोई हे माय ! ।
मोटो रिख मार्यो गयो रे,
म्हारो जामण जायो भायो रे ॥धन०॥

९— बंधव भव सफलो कियो रे,
तोड्या मोह ना फंद ।
हूं पापण किम छूटसूं रे,
इम बेनड करे आक्रंदो रे ॥धन०॥

१०— लोही खरड़ी मुखपति रे,
सांवली दीधी रे लाल ।
बहन 'सुनंदा' देखने रे,
ऊठी मोहनी झालो रे ॥धन०॥

११— जिम जिम भाई सांभरे रे,
आणे राय पर धेख ।
वीरा वेगो ! आवजे रे,
हूँ लेऊं निजरां देखो रे ॥धन०॥

१२— कुण वीरो कुण बहनड़ी रे.
जोयजो मोहरी बात ।
इण भव मुगति सिधावसी रे.
एम करे विलापातो रे ॥धन०॥

१३— इम जाणी ने मानवी रे,
मोह म करजो कोय ।
मोह थकी दुख ऊपजे रे,
कर्म बंधे इम होयो रे ॥धन०॥

१४— सालो सगो नहीं जाणियो रे,
तपसी मोटो जी साध ।
'पुरुष-सिंह' राजा झुरे रे,
बहुत लागो अपराधो रे ॥धन०॥

१५— पांच सो जोध इम चिंतवे रे,
मार्यो गयो मुनिराय ।
'कनककेतु' राजा कने रे,
कासु कहिसां जायो रे ॥धन०॥

१६— चारित्र लेसूं चूंपसूं रे,
किसो श्वास-विश्वास ।
काल किताइक जीवणो रे,
राखां मुगति नी आसो रे ॥धन०॥

१७— मतो करी संयम लियो रे,
पांच से सिरदार ।
चोखो पाली सुरगति लही रे,
करसी खेवो पारो रे ॥धन०॥

दोहे—

१— राजा मन मे चिंतवे, एहवो खून न कोय ।
साध-मरण मन ऊपनो, ए सांसो छे मोय ॥
२— एम विचारी वांदण गयो, साध भणी कहे एम ।
विना गुने मोटो मुनि, म्हे मार्यो कहो केम ॥

ढाल–८

[राग – वीर सुणो मोरी वीनती]

१— साध कहे राय सांभलो,
तूं तो हुँतो रे काचर तणो जोव ।
ए खंदक हुतो मानवी
चतुराई रे हुती अतीव ॥
२— कर्म न छोडे केह ने,
विण भुगत्यां रे छूटको नहीं होय ।

इम जाणी उत्तम नरां,
तमे वांधो रे कर्म मति कोय ॥कर्म०॥
३— कुण साह ने कुण चोरटो,
भिख्यारी हो कुण राणो ने राव ।
कुण धर्मी पापी तिके रे,
भला भूडा रे भू-पे सहू भाव ॥कर्म०॥
४— कितरेक भव इण खंदके,
उतारी हो काचर तणी खोल ।
विचलो गिर काढी लियो,
सरायो हो घणी करी किलोल ॥कर्म०॥
५— पछे ही पिछतायो नही,
बंध पड़ियो हो तिण रे तिण ठाय ।
तिण कर्मे करि साध री,
ते खाल हो उतारी राय ॥कर्म०॥
६— वचन सुणी राजा डरपियो,
करमां री हो घणी विखमी बात ।
राय राणी दोनूं कहे,
घर मांहे हो घड़ी अफली जान ॥कर्म०॥
७— पुरुपसिंह राजा तिहां,
सुनंदा हो राणी सुविनीत ।
राज छोडी चरित्र लियो,
आराधी हो दोनूं रूड़ी रीत ॥कर्म०॥
८— कर्म खपाई मुगते गया,
बधारी हो जुग धर्म री सोय ।
अजर अमर सुख सासता,
ऐसी करणी हो कीजो सहू कोय ॥कर्म०॥
९— अठारे सो इग्यारोतड़े,
चैत मासे हो सुद सातम जोय ।
'लाडणूं' रिख 'जयमलजी' कहे,
विपरीत रो मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥

——

(६)

❀ महारानी देवकी ❀

दोहे—

१— 'भद्दलपुर' पधारिया, बावीसमां जिनराय ।
भव-जीवांने तारता, मेले मुगत रे मांय ॥

२— 'वसुदेवजी' रा डीकरा, 'देवकी' रा अंग-जात ।
सुलसा रे घरे वध्या, ते सुणजो साक्षात ॥

३— छऊं वय में सारिखा, सारिखे, उणियार ।
वैराग पाम्या किण विधे, ते सुणजो विस्तार ॥

ढाल-१

(राग—अलवेल्या)

१— नेम जिणंद समोसर्या रे लाल,
भद्दलपुर के वाग हो, भविक जन ।
सुणने लोग राजी हुवा रे लाल,
भवि जीवां रे भाग हो, भविक जन ॥नेम०॥

२— सहस अठारे साधुजी रे लाल,
अज्जा चालिस हजार, भविक जन ।
तिण ने आण मनावता रे लाल,
शासन रा सिरदार हो, भविक जन ॥नेम०॥

३— नर नारी ने हुवो घणो रे लाल,
नेम वांदण रो कोड हो, भविक जन ।
कोई पाला ने पालखी रे लाल,
चाल्या होडा-होड हो, भविक जन ॥नेम०॥

४— केई कहे दरसण देखस्यां रे लाल,
केई कहे सुणस्यां वाण हो, भविक जन ।
केई कहे परसन पूछस्यां रे लाल,
केई कुतुहल जाण हो, भविक जन ॥नेम०॥

५— राजा प्रमुख आविया रे लाल,
लारे नर नार्यां ना थाट हो, भविक जन ।

लोग वहु लटका करे रे लाल,
बोले विरुदावली चारण भाट हो, भविक जन ॥नेम०॥

६— नाग सेठ वांदण चालियो रे लाल,
लारे छः बेटा लेई साथ हो, भविक जन।
प्रभुजी रो दर्शन देखने रे लाल,
हिवड़े हर्षित थाय हो, भविक जन ॥नेम०॥

७— जिनवर दीधी देशना रे लाल,
सुण ने हर्षित थाय हो, भविक जन।
परिषदा सुण पाछी गई रे लाल,
छऊं भाई जोड़या दोनूं हाथ हो, भविक जन ॥नेम०॥

८— ए संसार छे कारमो रे लाल,
मै लेस्यां सयम भार हो, भविक जन।
जिम सुख होवे तिम करो रे लाल,
म करो ढील लिगार हो, भविक जन ॥नेम०॥

९— घर आवी कहे मात ने रे लाल,
नेम दीठा मै आज हो, भविक जन।
वाणी सुण ने सरदही रे लाल,
प्रभु सारे पर ना काज हो, भविक जन ॥नेम०॥

१०— बीहना जनम मरण थी रे लाल,
म्हां चावां उत्तम ठाम हो, भविक जन।
आज्ञा दो तमे मो भणी रे लाल,
मै सारां आतम-काम हो, भविक जन ॥नेम०॥

११— सुण माता विलखी थई रे लाल,
बात काढी कैसी आज हो, भविक जन।
संयम छे वछ! दोहिलो रे लाल,
एतो सूरां नो काज हो भविक जन ॥नेम०॥

१२— मात पिता पाल्या घणा रे लाल,
एतो रह्या नहीं लीगार हो, भविक जन।
नार्या विलविलती रही रे लाल
नहीं आण्यो मोह तिवार हो, भविक जन ॥नेम०॥

१३— संयम लीधो वैराग सूं रे लाल,
घणो लाड ने कोड हो, भविक जन।
मुगती महल रे कारणे रे लाल,
ऊभा घर दिया छोड हो, भविक जन ॥नेम०॥

१४— नेमजी साथे छऊं जणा रे लाल,
करता उग्र विहार हो, भविक जन।
वैराग रस मांहे भूलता रे लाल,
संयम तपस्या धार हो, भविक जन ॥नेम०॥

दोहा—

१— वैरागे मन वाल ने, दे तपस्या री नींव।
बेले बेले पारणो, प्रभु! करादो जाव जीव ॥
२— नेम जिणंद समोसर्या द्वारिका नगरी मझार।
समोसरण देवां रच्यो देशना दे हितकार ॥

ढाल—२

(राग—विनो करीजे बाई वि०)

१— पहली पोरसी सूत्र चितारे,
बीजी पोरसी अर्थ वीचारे।
जाणे तीजी पोरसी लागी,
वेदन रे वस खुध्या जागी ॥
२— मुनिवर मिलि जिणद पे आया,
हाथ जोड़ी ने बोले वाया।
प्रभु! तमारी आज्ञा थाय,
तो म्हां द्वारिका मे गोचरी जाय ॥
३— भगवंत बोल्या इसड़ी वाय,
देवाणुपिया! जिम सुख थाय।
रखे घड़ी री ढील न ल्यावो,
आहार पाणी ने वेगा जावो ॥

—— ——

दोहा--

१— बचन सुणी भगवंत रो मुनिवर हर्ष अपार ।
पड़िलेही झोली पातरा, सुंदर षट अणगार ॥

२— चरण करण में ऊजला, च्यार महाव्रत धार ।
रूप-गुणे अति शोभता, नल-कूबर अणुहार ॥

ढाल--३

(राग—वीर वखाणी राणी चेलणा)

१— आज्ञा ले भगवंत री जी, षट् बांधव मुनि जोय ।
गोचरी करवा ने नीकल्या जी, मुनिवर टोले टोले दोय ॥
साधुजी उठ्या मुनि गोचरी जी ॥

२— गोचरी करवा ने नीसर्या जी, द्वारिका नगरी मजार ।
पाड़े पाड़े मे फिरता थका जी, लेवे छे शुद्ध ते आहार ॥साधु०॥

३— ऊंच नीच मज्झम कुले जी, इर्या ए जोवता जाय ।
दोष बंयालिस टालता जी, लीना छे सयम माय ॥साधु०॥

४— बेला तणो मुनि ने पारणो जी, ताक ताक नही जाय ।
अनुक्रमे फिरता थका जी, आया वसुदेव-घर मांय ॥साधु०॥

५— बेठी सिंहासन देवकी जी, आपरा मंदिर मांय ।
गज गति दीठा मुनि आवता जी, रोम रोम हर्षित थाय ॥साधु॥
साधुजी भलां पधारियाजी आज ॥

६— सिंहासण थी राणी ऊठनेजी, सात आठ पग साम्ही जाय ।
तिक्खुता रो पाठ गिणी करीजी, लुल लुल नीचीजी थाय ॥सा०॥

७— भाव सुं भगति करे घणीजी, पांचे ई अंग नमाय ।
आज कृतारथ हुं थई जी, फली फूली विकसी घणी काय ॥साधु०॥

८— आज भली दशा माहरी जी, दीठी छे मुनि तणी जोड़ ।
आज भलो भानु ऊगियो जी, पूगा म्हारे मन तणा कोड ॥साधु०॥

९— मोदक थाल भरी करी जी, मंदिर मांहे थी लाय ।
केशरीसिंह जटा जिसा जी, वेहराया उलटे जी भाव ॥साधु०॥

१०—मुनिवर वेहर पाछा वल्या जी,
लागी छे थोड़ी सी वार।
बीजो सिंघाड़ो इहां आवियोजी,
देवकी - घर - बार ॥ साधुजी० ॥

दोहे—

१— उठी ने साम्ही गई, जोड़ी दोनूं हाथ।
विनय सहित वंदना करी, मन मे थई रलियात ॥

ढाल—४

(राग—हमीरिया के गीत की)

१— देवकी हरखी अति घणी,
भले पधारिया रिषिराय, मुनीसर।
पेहला सिंघाड़ा तणी परे,
भाव सहित बहराय, मुनीसर ॥

२— धन धन राणी देवकी,
प्रतिलाभ्या अणगार मुनी०।
चित्त वित्त पात्र तीने भला,
राणी सफल कियो अवतार ॥मुनी० धन०॥

३— जाता ने पोहचाय ने,
पाछी आई तिण ठाई मुनीसर ॥
तीजो सिंघाड़ो आवियो,
चिंतवे राणी चित मांय ॥मुनी० धन०॥

४— पहिला याने जो पूछ सूं,
तो नहीं लेसी मुनि आहार मुनी०।
वेहर्यां पछे ऊभा नहीं रहे,
इम मन मे करे विचार ॥मुनी० धन०॥

५— जहाज आई हम बारणे,
सहजे पुण्य प्रमाण, मुनीसर।
मोदक पहलां बहराय ने
हूं पूछसूं जोड़ी पाण ॥मुनी० धन०॥

६— भाव सहित वेहराय ने,
देवकी चिंते एम मुनीसर ।
साधां रे लोभ हुवे नहीं,
वलि वलि आवे छे केम ॥मुनी० धन॥

दोहा—

१— आडी फिर ने देवकी, लुल लुल नीची थाय ।
एक संदेहो ऊपनो, दीजे मोहि बताय ॥

ढाल–५

[राग—जगत गुरु त्रिसला–नन्दन वीर]

१— भगवंत नगरी द्वारिका जी,
बारे जोजन प्रमाण ।
कृष्ण नरेसर राजवी जी,
ज्यांरी तीन खंड में आण ॥
मुनीसर एक करूं अरदास ॥

२— सोवन कोट रतन कांगुरा जी,
सोभे रूड़ा आवास ।
झिग मिग करने दीपता जी,
देवलोक जिम सुख–वास ॥मुनी०॥

३— साठ कोड़ घर बाहिरे जी,
मांहे बहोतर कोड़ ।
लोग सहु सुखिया वसे जी,
राम कृष्ण री जोड़ ॥मुनी०॥

४— भाविक लोक बसे घणा जी,
दातार वहुला थाय ।
चवदे प्रकार नो सूझतो जी,
अटलक दान दिराय ॥मुनी०॥

५— सेठ सेनापति मंत्रवी जी,
ज्यांरे घर में घणो धन्न ।
साधां रे दरसण बिना जी,
मुख में न घाले अन्न ॥मुनी०॥

६— लाखां कोड़ां रा धणी वसे जी,
नगरी मे वहु लोग ।
खाणे पीणे खरचणे जी,
पुन्य सूं मिलियो जोग ॥मुनी०॥

७— धणी पुन्याई बाई ताहरीजी,
इम बोल्या मुनिराय ।
देवकी मन मे जाणियो जी,
यां ने तो खबर न काय ॥मुनि०॥

८— बात छे अचिरज सारिखी जी
माहरे हिये न समाय ।
कह्यां मे नफो नहीं नीपजेजी,
बिन कह्यां रह्यो न जाय ॥मुनी०॥

९— मैं आगे इम सांभल्यो जी,
नहीं बारं - बार ।
यो मोने अचिरज थयो जी,
पुच्छा करूं निरधार ॥मुनी०॥

१०— हूं पूछूं इण कारणे जी,
मुनि ने न लाभे आहार ।
म्हारा पुण्य तणे उदेजी,
आप आया तीजी बार ॥मुनी०॥

११— वलि ते मुनिवर इम कहे जी,
बाई शंका मूल म आण ।
थारे घर वहरी गया जी,
ते मुनिवर दूजा जाण ॥
देवकी लोभ नहीं छे कोय ॥

१२— हाथ जोड़ी कहे देवकी जी,
सांभल जो ऋषि-राय !
मै स्व-हाथां सुं बहराविया जी,
मो सूं इम किम नटियो जाय ॥मुनी॥

१३— वलि ते मुनिवर इम कहे जी,
बाई ! नगरी में बहु दातार ।

तीन संघाड़े आविया जी,
अमे छो छउ अणगार ॥
देवकी लोभ नहीं छे कोय ॥

१४— सारखी रूप संपदा जी,
बाई ! सारिखे अणुहार ।
साथे संजम आदर्यो जी,
बाई ! सारिखो तप धार ॥देवकी०॥

१५— हाथ जोड़ी ने कहे देवकी जी,
सांभल जो मुनि-राय !
उतपत थांरी किहां अछे जी,
हूँ सुणसूं चित लाय ॥मुनि०॥

१६— किसा नगर रा नीकल्या जी,
स्वामी ! बसता कुण से ग्राम ।
किण रा छो दीकरा जी,
पिता रो कहो नाम ॥मुनीसर०॥

१७— 'भदलपुर' रा वासिया जी,
बाई ! 'सुलसा' म्हांरी माय ।
नाग सेठ रा दीकरा जी,
घर छोडया छऊं भाय ॥देवकी०॥

१८— बत्तीसे रंभा तजी जी,
बत्तीसे बत्तीसे दात ।
कुटुम्ब मेलो सहू रोवतो जी,
बाई बिल-बिल करती मात ॥देवकी०॥

दोहे—

१— हाथ जोड़ी कहे देवकी, सांभलजो रिख-राय ।
वैराग पाम्या किण विधे, दीजे मोहि बताय ॥
२— साध वचन इसड़ा कहे सांभल मोरी बाय !
माहरी रिध कहां किसी, ते सुणजो चित्त लाय ॥

ढाल—६

(राग—राजगृही नगरीअ)

१— बत्तीस कोड़ सोनैया,
बत्तीस रूपां री कोड़ री माई ।
बत्तीसे बाजुबंध दीधा,
बत्तीस कांकण री जोड़ री माई ॥
पुण्य तणा फल मीठा जाणो ॥

२— बत्तीस तो हार एकावली,
बत्तीस अद्धसरा जाण री माई ।
बत्तीसे नवसरा दीधा,
बत्तीस मुकुट प्रमाण री माई ॥पुण्य०॥

३— त्रण सरिया वले हार बत्तीसे,
बत्तीस कनकावली हार री माई ।
हार मुक्तावली ऊजल सोहे,
बत्तीस रत्नावली सार री माई ॥पुण्य०॥

४— हीर चीर वले रत्नां जड़िया,
पट कुल रा बहु वृन्द री माई ।
भीणा सूत रा वस्तर दीधा,
पहिर्यां अति सोहंदरी माई ॥पुण्य०॥

५— बत्तीसे तो पिलंग सोना रा,
बत्तीस रूपा रा जाण री माई ।
बत्तीसे सोना रूपा रा भेला,
पागा रतना मे वखाण री माई ॥पुण्य०॥

६— बत्तीसे तो थाल सोना रा,
बत्तीस रूपा रा जाण री माई ।
बत्तीसे तो प्याला दीधा,
दूध पीवण ने वखाण री माई ॥पुण्य०॥

७— बत्तीसें बाजोट सोना रा,
बत्तीस रूपा रा जाण री माई ।
बत्तीसे तोतवा सोना रा,
बत्तीस रूपा रा प्रमाण री माई ॥पुण्य०॥

८— बत्तीसे तो गोकुल गायां रा,
दूध पीवण ने दीध री माई।
दास्यां बडारण खोजा दीधा,
बत्तीस चंदण-पीसणा लीध री माई ॥पुण्य०॥

६— इण रीते छऊ कुमारां ने,
सरीखी दातां री तोल री माई।
पगे लागतां सासूजी दीधा,
एक सौ ने बाणू बोल री माई ॥पुण्य०॥

दोहा—

१— कितरो काल संसार में, भोगविया सुख सार।
देव दोगुंधक नी परे, बहुलो छे विस्तार॥

ढाल–७

(राग—करेलणा घड़दे रे)

१— जातो काल न जाणता जी, मैं रहता महलां मझार।
दास्यां रा परिवार सूं जी, बत्तीसे बत्तीसे नार॥
देवकी हे लोभ नहीं माहरे कोय॥

२— चन्द्र-वदन मृग-लोयणी जी, चपल-लोचनी बाल।
हरीलंकी, मृदु-भाषिणी जी, इन्द्राणी सी रूप रसाल॥देव०॥

३— प्रीतवती मुख आगले जी, मुलकंती मोहन-वेल।
चतुरां ना मन मोहती जी, हंस-गमणी सूं करता बहु केल॥देव०॥

४— नित नवी चीजां खावणी जी, नित नित नवला वेश।
सुंदर सूं भीना रहे जी, सुपना मे नहीं कलेश॥देव०॥

५— राग छत्तीसे होवती जी, मादल ना धोकार।
नाटक विध बत्तीसना जी, रंग विनोद अपार॥देव०॥

६— भगवंत नेम पधारिया जी, साधां रे परिवार।
म्है भगवंत ने वांदिया जी, सफल कियो अवतार॥देव०॥

७— नेम तणी वाणी सुणी जी, मीठी दूधाधार।
प्रतिबोध्या छऊं जणा जी, जाण्यो अथिर संसार॥देव०॥

८— कुटुम्ब कबीलो छोडियो जी, सुंदर बत्तीसे नार ।
धन कंचन रिध छोडने जी, लीधो संयम-भार ।।देव०।।

९— बेले बेले पारणो जी, जाव-जीव मन धार ।
मुक्ति भणी मै उठिया जी, लेवां छां सुध आहार ।।देव०।।

१०—दोय दोय मुनिवर जुवा जुवा जी, आया नगर मझार ।
तीन सिंघाड़े उठिया जी, द्वारिका नगर मझार ।।देव०।।

११—तिण साधां रा वचनमे जी, शंका मूल म आण ।
ताहरे घर वेहरी गया जी, ते मुनिवर दूजा जाण ।।देव०।।

दोहे—

१— तिण कारण मोदक तणो लालच नहीं मोय ।
घर री रिध एहवी तजी, मुगती साहमो जोय ।।
२— इतरो सुण शंका पड़ी, देवकी करे विचार ।
मोने खबर न का पड़ी, देखूं यांरो अणुहार ।।

ढाल-८

(राग—कर्म परीक्षा करण कु०)

१— नेण निहाले हो राणी देवकी रे,
मुनिवर साम्हो न्हाल ।
जोति कांति यांरी दीपती रे,
मुनिवर रूप रसाल ।।नेण०।।

२— जिण घर थी ए छऊं नीकल्या रे,
किस्यूं रह्यूं छे लार ।
छऊं सहोदर दीसे सारिखा रे,
नल-कूबर उणिहार ।।नेण०।।

३— छपन कोड़ जादवां री साहिबी रे,
हरिवंश-कुल-सिणगार ।
दीठा म्हारा सगला राज मे रे,
नही कोई यांरे उणिहार ।।नेण०।।

४— इण उणिहारे म्हारे राज मे रे,
अवर दीसे न कोय ।

जो छे तो कांइक म्हारो 'कान' छे रे,
ए मोने अचिरज होय ।।नेण०।।

५— नेड़ो तो सगपण को दीसे नहीं रे,
म्हारो हिवड़ो सगपण जेम ।
लागे मुनिवर म्हाने सुहावणा रे,
इम किम जाग्यो प्रेम ।।नेण०।।

६— श्रावक रो साधां ऊपरे रे,
होवे छे धर्म – सनेह ।
मो जिम पर वश कांई ना पड़े रे,
इम किम उलस्यो माहरो नेह ।।नेण०।।

७— लाडु बहराया राणी देवकी रे,
लागी थोड़ी सी वार ।
मुनिवर बहरी ने पाछा नीसर्या रे,
ऊभा न रहे अणगार ।।नेम०।।

८— सूरत थांरी प्यारी लागे घणी रे,
कह्यो कठा लग जाय ।
जाणे यांने देखवो हूं करूं रे,
इम माहरो मोहज थाय ।।नेण०।।

९— मोहणी कर्म मोटो छे घणो रे,
दोरो जीत्यो जाय ।
जीते कोई वड सूरमो रे,
मन में धीरज लाय ।।नेण०।।

दोहे—

१— देवकी देख हर्षित थई, दिया मुगति रा सूत ।
करणी ज्यांरी दीपती, मुनिवर काकरा–भूत ।।
२— सारिखी जेहनी चामड़ी, सारिखे अणुहार ।
वरण सारिखो जेहनो, यौवन रूप उदार ।।
३— इम चिंतवतां तेहवे, उपनो मन संदेह ।
कुण माता पुत्र जनमिया, भरत क्षेत्र में एह ।।
४— बालपणे भाख्यो हुँतो, अयवंते अणगार ।
आठ जणसी हे देवकी, जिसा नही जणे भरत मझार ।।

ढाल—६

[राग—रे जीव विषय न राचिए]

१— भरत खेतर मे सांमठा, किण मां बेटा जाया रे ।
तीन संघाड़े आविया, मै हाथा सूं बेहराया रे ॥
करे विमासण देवकी ॥

२— मो आगे कह्यो हुँतो, अयवंत ऋषि-रायो रे ।
तेतो बात मिलती नहीं, स्यूं रिख वाणी मृषा थायो रे॥करे०॥

३— आज्ञा देतां मात नी, जीभ बुही छे केमो रे ।
एहवा बेटा वाहिरी, दिन काढ़ेला केमो रे ॥करे०॥

४— सूरत दीसे सोहती, घणोइज ज्यांरो हेतो रे ।
जिण घर सूं ए नीकल्यां, लारे रह्यो छे केतो रे ॥करे०॥

दोहे—

१— एहवा पुत्र जनम्यां विना, किम थावे आणंद ।
हाथ कांकण सी आरसी, इहां छे नेम जिणंद ॥

२— इसड़ी मन मे ऊपनी, वांदूं भगवंत-पाय ।
भाव-सहित वंदन करूं, तन मन चित लगाय ॥

३— शंका छूं अणगार नी, मुझ मन उपनी सोय ।
नेम जिणंद ने पूछ ने, संसो भांजु मोय ॥

४— इम चित मांही विचार ने, सज सोले सिणगार ।
जिण वांदण जावा भणी, करे सजाई त्यार ॥

ढाल—१०

[राग—वींछिया का गीत]

१— चाकर पुरुष बुलायने,
देवकी बोले इम वाया रे लाला ।
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !
तूं रथ वेगो जोताय रे ॥
श्री नेम वांदण ने जावस्यां ॥

२— चाकर पुरुष राजी थयो,
जाय संभाले जाण रे लाला।
उवट्ठाण-शाला छे बाहिरली,
रथ ऊभो राख्यो आण रे ॥श्री०॥

३— रथ हलको घणो वाजणो,
वले च्यार पेड़ां रो जाण रे लाला॥
अशुद्ध शब्द करे नही,
लागे लोकां ने सुहाण रे ॥श्री०॥

४— हलवा काष्ट नो भूंसरो,
वले चोड़ा पेड़ा जोत रे लाला।
मोत्यां री जाली लग रही,
छती शोभा को उद्योत रे ॥श्री०॥

५— रथ सिणगार्यो फूटरो,
जुहारां सूं हालो जोय रे लाला।
समिल सुंहाली हलकी घणी,
ज्यूं बलदां एल न होय रे ॥श्री०॥

६— खोली भूल विराजती,
पाखतियां गुघर माल रे लाला।
सामग्री सगली सज करो,
जाय वांदू दीन दयाल रे ॥श्री०॥

७— दीसत दीसे सोभता,
एहवी बलदां री जोड़ रे लाला।
चालत अति ही उतावला,
सींग पूंछ मे नहीं खोड़ रे ॥श्री०॥

८— धवला ने माता घणा,
वले छोटी सिंगड़ियां जाण रे लाला।
दोनूं बराबर दीसता,
तूं एहवा ऋषभ आण रे ॥श्री०॥

९— बलदां रे भूलज सोभती,
नाके नघर साल रे लाला।
राखड़ी सींगां मे सोभती,
गुल वांधी गुघर-माल रे ॥श्री०॥

१०— सोना री गले में सांकली,
रूपा रो टोकरियो जाण रे लाला।
सोना री खोली सींग मे,
दोय इसड़ा बलद्‌ज आण रे ॥श्री०॥

११— कमल रो सोहे सेहरो,
लटके सींगा रे मांय रे लाला।
नाथ सोने रेशम री भली,
तिणसूं नाक दोरो नहीं थाय रे ॥श्री०॥

१२— इण रीते सेवग सुणी,
रथ जोतर कियो तयार रे लाला।
देखत लागे सुहावणो,
रथ चढण रो करे विचार रे ॥श्री०॥

१३— न्हाई ने मजन करी,
पहिर्यां नव-नवा वेश रे लाला।
माणक मोती माला मूंदड़ी,
गहणा हार विशेष रे ॥श्री०॥

१४— हाथो मे कांकण सोभता,
कंठे नवसर हार रे लाला।
पगे नेवर दीपता,
जाणे देवांगना उणिहार रे ॥श्री०॥

१५— अलंकार एहवा सजी,
आई उवट्ठाण-साला मांय रे लाला।
रथ सजियो कसियो थको,
कलप-वृक्ष समो ते थाय रे ॥श्री०॥

१६— करी सजाई एहवी,
चढ बैठी रथ रे मांय रे लाला।
बारलां ने दीसे नहीं,
मांहे देखंती जाय रे ॥श्री०॥

१७— लीधी साथे सहेलियां,
राणी चाली मज्झ बाजार रे लाला।
चतुर बेसाण्यो सागड़ी,
ए गृहस्थ नो आचार रे ॥श्री०॥

दोहे—

१— बाजारे विच विच थई, रथ पवन वेग चलाय ।
राणी सांसो भांजवा, नेम जिणंद पे जाय ॥

२— अतिशय देखी जिणंद नो, उतरी रथ रे बार ।
पाली होय ने देवकी, वांदे वार-वार ॥

३— वंदणा कीधी नेम ने, भांत भांत नम सेव ।
जिण आगूंच इसड़ो कहे, मन संदेह छे तेह ॥

४— पुत्र छऊं ए ताहरा, सुलसा रा मति जाण ।
देवकी सुण हर्षित थई, सांभल जिनवर-वाण ॥

ढाल—११

[राग—जगत गुरु त्रिशला नंदन वीर]

१— हिवे उपजत एहनी जी, दिखाड़े जिन-राय ।
कर्म तणी गति वांकड़ी जी, देवकी ! सुख चित लाय ॥
जिणेसर सांसो टाले एम ॥

२— भद्दलपुर मांहे वसे जी, 'नाग' सेठ रिधवत ।
'सुलसा' तेहने भारिया जी, रूप मे घणी सोहंत ॥जिणे०॥

३— तेहने कह्यो निर्मित्तिये जी, बाल पणे निमंत ।
जणसी पुत्र मुवा थका जी, कर्म तणे विरतंत ॥जिणे०॥

४— 'हरिणगवेशी' देव नी जी, प्रतिमा पूजा कराय ।
भगते रींझ्यो देवता जी, तूठो बोले वाय ॥जिणे०॥

५— सुलसा कहे तूठो मुझ भणी जी, मुझ करवो तुरत काज ।
पुत्र जीवाडो माहरा जी, कृपा करो महाराज ॥जिणे०॥

६— देव कहे नही मुझ थकी जी, तुझ नंदन जीवाय ।
पिण हुं आपिस जीवता जी पर ना बालक लाय ॥जिणे०॥

७— सुलसा ने तूं एकण समेजी, गर्भ धरे समकाल ।
साथे जणे देव जोग थी जी अनुक्रेम षट् ही बाल ॥जिणे०॥
देवकी सांसो मति कर कोय ॥

८— मुवा बालक सुलमा जणे जी, ते मेले तुम पास ।
तारा मेले जीवता जी, सुलसा री पूरे आस ॥देव०॥

६— ते भणी पुत्र छे ताहरा जी, सुलसा रा नहीं एह ।
मुनि-भाषित मृषा नहीं जी. न टले कर्म नी रेह ॥
देवकी ! कर्म न छोड़े कोय ॥

१०—पाछले भव ते देवकी जी, दीधी छाती मे दाह ।
सात रतन ते शोक ना जी, चोर्या नाणी आह ॥देव०॥

११—तिण ने रोती देखने जी, ते मनमें करुणा आण ।
एक रतन पाछो दियो जी, सोले घड़ी थी जाण ॥देव०॥

१२—तिण कर्में चोर्यां गया जी, ए थारा छऊं पूत ।
सोले वर्ष थी कृष्णजी ए, आय राख्यो घर-सूत ॥देव०॥

१३—सुख दुख संच्या आपणा ए, जिके उदे हुवे आय ।
समो विचार्यां सुख हुवे ए, चिंता म करो काय ॥देव०॥

१४—कर्म सबल संसार में ए, विन भुगत्यां न टलंत ।
देव दाणव नर राजवी ए, एकण पंथे वहंत ॥देव०॥

दोहे—

१— नेम जिणेसर वांद ने, आई साधां रे पास ।
निरखे वांदे हेत सूं, हिवड़े हरस उलास ॥
२— मोक्ष तणी किरिया करे, ज्यांरो घणोहीज वान ।
सहस्र अठारे साध मे, कठे ही न रहे छान ॥

ढाल—१२

(राग—वे वे तो मुनिवर वहरण०)

१— देवकी तो आई नदन वांदवा रे,
ऊभी रही मुनिवर पास रे ।
नेणों साधां ने राणी देखने रे,
करवा तो लागी इम अरदास रे ॥देवकी०॥

२— हाथ जोड़ी ने राणी वदना करे रे,

त्रण प्रदक्षिणा दीवी हाथ सूं रे,
लटका करे लुल लुल नीची थाय रे ॥देवकी०॥

३— आज कृतार्थ आशा मुझ फली रे,
रोम रोम मे प्रगट्यो आनन्द रे।
म्हारी कूख मां एहवा ऊपना रे,
धन धन यादव-कुल – चंद रे ॥देवकी०॥

४— तड़के से तूटी कस कंचू तणी रे
थण रे तो छूटी दूधाधार रे।
हिवड़ा मांहे हर्ष माने नही रे,
जाणे के मिलियो मुझ करतार रे ॥देवकी०॥

५— रोम रोम विकस्या, तन मन ऊलस्या रे,
नयणे तो छूटी आंसू-धार रे।
बिलिया तो बाहां मांहे मावे नहीं रे,
जाणे तूट्यो मोत्यां रो हार रे ॥देवकी०॥

६— देवकी आंख्या ने अण हलावती रे,
निरख्या बेटा ने घणी वार रे।
वलि वांदी ने आई जिन कने रे,
हिये उपनो कवण विचार रे ॥देवकी०॥

दोहा—

१— देवकी मन मांहे चिंतवे, देखो कर्म-संयोग।
मैं जनम्या छ बालुड़ा, पाल्या किण ही लोग॥
२— इम चिंतव प्रभु वांद ने, आई आपणे गेह।
दुख मन मांहे ऊपनो, कह्यो न जावे जेह॥
३— चिंता सागर झूलती, नजर धरणी पर राख।
मुख विलखे जोवे नहीं, किण ही सूं नहिं भाख॥
४— इण अवसर श्री कृष्णजी, मा ने वंदन काज।
आवे प्रणमी चरण युगल, बेठा श्री महाराज॥
५— देवकी तो बोली नहीं, पुत्र थकी तिण वार।
तब कृष्णजी मन चिंतवे, मा! तोने चिंता अपार॥

६— माहरा सहू इण राज में, थे ही जो दुखिया होय ।
सो कहो इण संसार में सुखियो न दीसे कोय ।
७— बहुवां थांरे हुकम मे, लुल लुल लागे पाय ।
सगली पगे लगावतां पिंड्यां को शल जाय ॥

ढाल—१३

(राग—चंद्रायण)

१— माताजी ! किण कारणे हो, वदन तमारो आजो ।
चिंतातुर दीसे घणो हो, इण बाते आवे लाजो ॥
इण बाते मोने लाज कहावे,
पुत्र थकां मां दुखणी थावे ।
हूँ समझूं थांरे समझावे,
बात कहो वेला घनी थावे ॥
जी मातजी हो ॥

२— थांने चिता रो कुण हेत, कहो तुमे हम भणीजी ।
हूँ करसूं हो चिंता दूर के, जासण ! तुम तणी जी ॥

३— बोले माता देवकी हो, मुझ नंदन थया सातो ।
लाल्या पाल्या मे नही हो, ए मुझ दुख री बातो ॥
ए दुख मुजने दिन दिन शाले,
भाजन सो, जो ए दुख पाले ।
एसो भाग्य लिखो मुज माले ।
जो आवे हिब वात विचाले ॥
जी कान्हजी ओ ॥

दोहा—

१— वले माता इम कहे, सांभल तूं अंग-जात !
दुख मुझ ने शाले घणो; ते सुण दुख री बात ॥

ढाल—१४

(राग—वालेसर मुझ वीनति)

१— हूँ तुज आगल सी कहूं कन्हैया !
वीतक दुख री बात रे, गिरधारी लाल ।

दुखणी जग मे छे घणी कन्हैया,
पिण घणी दुखणी थारी मात रे, गिरधारी लाल ॥हूँ०॥

२— आज लगे हूँ जाणती, कन्हैया,
पूरब करम विशेष रे गिर० ।
फासू जाया मैं छ जणा-कन्हैया !
इहां नहीं मीन ने मेष रे गिर० ॥हूँ०॥

३— ते वधिया सुलसा घरे कन्हैया !
प्रत्यक्ष दीठा मैं आज रे गिर० ।
बात कही सहू मांडने कन्हैया ?
आपण पे जिनराज रे गिर० ॥हूँ०॥

४— सोले वरस छांनो वध्यो-कन्हैया !
तू पिण यमुना री तीर रे, गिर० ।
नंद यशोदा ने घरे कन्हैया !
कहिवाणो अहीर रे गिर० ॥हूँ०॥

५— यमुना-तीरे जायने कन्हैया !
ते नाथ्यो काली नाग रे, गिर० ।
कंस राजा ने पछाड़ियो,
पछे खुलिया थारा भाग रे गिर० ॥हूँ०॥

६— छ तो इम छाना वध्या, कन्हैया !
एक रह्यो तूं पास रे, गिर० ।
तोख मायां रा राखतो कन्हैया !
तूं आवे छट्ठे मास रे गिर० ॥हूँ०॥

७— जाया मै तुम सारिखा कन्हैया !
एकण नाले मात रे, गिर० ।
एकण ने हुलरायो नहीं कन्हैया !
गोद न खिलायो खण मात रे, गिर० ॥हूँ०॥

८— बालपणा रा बोलड़ा कन्हैया !
पूरी नही कांई आस रे, गिर० ।
आशा अलूधी हूं रही कन्हैया !
भार मुई नव मास रे, गिर० ॥हूँ०॥

९— रोवतो मै राख्यो नहीं, कन्हैया !
पालणिये पौढाय रे, गिर० ।
हालरियो देवा तणी, कन्हैया,
म्हारे हूँस रही मन मांय रे, गिर० ॥हूँ०॥

१०— आंगणिये न करावी थिरी, कन्हैया !
आंगुलियां विलगाय रे, गिर० ।
हाऊ बेठो छे तिहां, कन्हैया,
अलगो तूं मति जाय रे, गिर० ॥हूँ०॥

११— ओढणियो पहराव्यो नहीं, कन्हैया,
टोपी न दीधी माथ रे, गिर० ।
काजल पिण सार्यो नहीं, कन्हैया,
फदिया न दीधा हाथ रे, गिर० ॥हूं०॥

१२— रोवाण्यो नहीं हासी मिसे, कन्हैया–
म्हैं आंख तोषण काज रे, गिर० ।
न कर्यो एह नो सासरो, कन्हैया !
करिस्यां तेवड आज रे, गिर० ॥हूँ०॥

१३— न कह्यो केहने कीकलो, कन्हैया,
ए माहरे मन चाय रे, गिर० ।
इतरा वोलां मायलो, कन्हैया !
एक न पाम्यो थारी माय रे, गिर० ॥हूँ०॥

१४— पुत्र तणी आरती घणी कन्हैया !
हर्ष नही मुज तन्न रे, गिर० ।
गोद खिलावे पुत्र ने, कन्हैया !
ते माता छे धन्न रे, गिर० ॥हूँ०॥

१५— मोटी जग मांहे मोहणी, कन्हैया !
उदे थई मुज आज रे, गिर० ।
बीजो कोई जाणे नहीं, कन्हैया !
जाणे श्री जिनराय रे, गिर० ॥हूं०॥

दोहे–

१— एह वचन सुरण मात ना, कृष्ण करे अरदास ।
सोच कोई राखो मती, पूरस्यूं थांरी आस ॥
२— जिम तुझ नंदन थाहस्ये, करस्यूं तेह उपाय ।
मीठा मधुरा वचन सूं, संतोषी निज माय ॥
३— माता इण पर सांभली, हिवड़े हर्ष अपार ।
सत्पुरुप वचन चले नही, जो होवे लाख प्रकार ॥

ढाल–१५

[राग – चंद्रायण]

१— कृष्ण कहे मातजी ! सांभलो हो चिंता म करो लिगारो ।
जिम मुझ बांधव थायसी हो, तिम हूं करसूं विचारो ॥
तिम हूं करसूं विचारो रे माई !
म करो मन में चिंता कांई ॥
दीजो मोने भली बधाई ,
जब होवे नानो भाई ॥
जी मातजी हो ॥
२— माता रे पगे लागने हो, आया पौषध-शालो ।
हरिणगमेसी देवता हो, मन चिंतवे ततकालो ॥
मन चिंतवे ततकाल मुरारी ,
तेलो तप मन मांही धारी ।
आवी देव कहे तिण वारी ,
काम कहो मुझ ने सुविचारी ॥
जी कान्हजी हो ॥
३— देवकी रे पुत्र आठमो हो,
जिम होवे करो तेमो ।
इण कारण मै सिमर्यो हो,
बीजो नही कोई प्रेमो ॥
बीजो मही कोई प्रेम हमारे ,
पुत्र थयां मां दुख विसारे ।
बालक नी लीला चित धारे ,
स्त्री ने एहिज सुख संसारे ॥
जी देवाजी हो ॥

४— देव कहे पुत्र थायस्ये हो, पिण होस्ये जब मोटो ।
चारित्र लेस्ये ए भलो हो, वचन हमारो न हो खोटो ॥
वचन हमारो खोटो न थावे,
इम कही सुर निज ठामे जावे।
कृष्ण हिवे सुर ना गुण गावे ।
माताजी ने हर्ष मनावे ॥
जी मातजी हो ॥

दोहे—

१— कोइक सुर ने चव करी. गर्भ लियो अवतार ।
रंग विनोद वधावणा, हरख्यो सहु परिवार ॥
२— भविक जीव प्रतिबोधता, जिनवर करे विहार ।
पाप तिमिर निर्घाटवा, सहस्र-किरण दिन-कार ॥
३— गर्भ दिवस पूरा करी, जायो सुन्दर नन्द ।
घर घर रंग वधावणा, घर घर मांहे आणंद ॥

ढाल-१६

(राग—जीहो मिथिला नगरी रो राजियो)

१— जीहो शुभ वेला शुभ मुहूर्त्त लाला,
राणी जनम्यो बाल ।
जीहो कोमल गज तालुओ लाला,
देव कुंवर सुकुमाल ॥
राणीजी कुमर जायो जी ॥

२— जीहो हरस्यो श्री हरि राजवी लाला,
हरस्या दशे ही दशार।
जीहो हरसी माता देवकी, लाला,
हरस्यो सहू परिवार ॥राणीजी०॥

३— जीहो बंदीखाना मोकल्या-लाला,
कीधा बहु मंडाण ।
जीहो नगरी नी शोभा करी लाला,
बाजे त्रिविध निशाण ॥राणी जी०॥

४— जीहो-तोला मापा वधारिया लाला.
दश दिन महोच्छव थाय।
जीहो- बांध्या तोरण, वांटे सीरणी लाला,
चंदन केशर हाथां दिराय ॥राणी जी०॥

५— जीहो-यादव नारी सांवटी लाला,
आवे गावे गीत।
जीहो-चोक पुरावे मांडणा, लाला,
माचविये शुभ रीत ॥राणीजी०॥

दोहे—

१— बाजा बाजे अति भला, वरत्या मंगल-माल।
संतोषे याचक सुहासणी, हर्ष्या बाल गोपाल ॥
२— मरता जीव छोडाविया, सगले नगर मझार।
मुह मांग्या दीजे घणा, मणि माणक भंडार ॥

(ढाल–वही)

६— जीहो-दीधा मेगल मोतीड़ा, लाला,
दीधा हयवर हार।
जीहो-दीधा सोनो साबटू, लाला,
दीधा अर्थ भंडार ॥राणीजी०॥

७— जीहो बारसमो दिन आवियो, लाला,
नाम दियो अभिराम।
जीहो चंद्रकला जिम वधतो, लाला,
रूप–कला–गुण–धाम ॥राणीजी०॥

दोहा—

१— हाथी नो जिम तालवो, देही तिम सुकुमाल।
वालक हुवो तेहवे, नामे गज – सुकुमाल ॥
२— वालक पांच धाये करी, वाधे आनंद-कंद।
एक ग्रही दूजी ग्रहे, दिन दिन अधिक आणंद ॥

(ढाल-वही)

८— जीहो खेलावण-हुलरावणे, लाला,
चुगांवण ने पाय।
जीहो न्हवरावण पेहरावणे, लाला,
अंगो अग लगाय ॥राणीजी ॥

९— जीहो आंखड़ली अंजावणी, लाला,
भाल करावण चंद।
जीहो गालां टीकी सांवली, लाला
आलिंगन आनंद ॥राणीजी०॥

१०— जीहो पग-मांडण ग्रही अंगुली, लाला,
ठुमक ठुमक री चाल।
जीहो बोलण भापा तोतली, लाला,
रिझावण अति ख्याल ॥राणीजी०॥

११— जीहो दही रोटी जिमावणे, लाला,
अरू चबावण तंबोल।
जीहो मुख सू मुख मे दिरीजतां, लाला,
लीला अधर अमोल ॥राणीजी०॥

१२— जीहो बतलावण ने चालवे लाला,
दीरावण मुख, गाल।
जीहो आलकरावण आकरी लाला,
सीखावण सुर-साल ॥राणीजी०॥

१३ — जीहो बरस सरस आठां लगे लाला,
लीला बाल, विनोद।
जीहो सब ही पर मा देवकी, लाला,
पावे अधिक प्रमोद ॥राणीजी०॥

१४— जीहो पढियो गुणियो मति आगलो, लाला,
माधव जीवन जोय।
जीहो सहू ने प्यारो प्राण थी लाला,
माताजी ने सोय ॥राणीजी०॥

दोहा—

१— बालक – क्रीड़ा तेहनी, देखी विविध प्रकार ।
हर्षी माता देवकी, हिवे सफल गिणे अवतार ॥
२— यौवन वय आव्यां थकां, कीवी सगाई अभिराम ।
'द्रुम' राजा नी पुत्रिका, 'प्रभावती' इण नाम ॥
३— 'सोमल' ब्राह्मण नी धिया, 'सोमा' नामे एक ।
प्रत्यक्ष जाणे अपछरा, चतुराई रूप विशेष ॥
४— क्रीड़ा करतां तेह ने देखी कृष्ण नरेश ।
लघु भाई लायक अछे, बाला यौवन-वेश ॥
५— कीधी सगाई तेहसूं, 'सोमा' आई दाय ।
थापी तेहनी भारिया, मेली कुमारी-अंतेउर मांय ॥
६— तिण काले ने तिण समे, करता उग्र विहार ।
भगवंत नेम पधारिया, द्वारिका नगर मझार ॥
७— वन पालक अनुमत लही, उतर्या बाग मझार ।
वन-पालक दीवी वधावणी, हर्ष्या कृष्ण मुरार ॥

ढाल–१७

(राग—रंग मेहल में हो चोपड़ खेलस्यां)

१— वस्त्र ने गेहणा हो घणा शरीर ना,
सोनैया लाख साढ़ी बार ।
प्रीतज दान हो दियो तेहने,
हर्ष्यो बधाई – दार ॥

२— यादवपति जावे हो प्रभुजी ने वांदवा,
नगरी द्वारिका सिणगार ।
घर घर मांहे हो महोच्छव मंड रह्यो,
हर्ष सूं जावे नर – नार । यादव०॥

३— नर ने नारी ने हो हर्ष हुवो घणो,
नेम वांदण री कोड ।
कोई पाला ने हो कोई पालखी,
चाल्या जावे होडा-होड ॥यादव०॥

४— मंजन-घर में हो कृष्ण न्हावण करी,
सर्व पहेर्या सिणगार।
चंदन-लेप हो शरीर लगाविया,
जाणे इन्द्र – अवतार ॥यादव०॥

५— एक सो आठ हो हाथी सिणगारिया,
चरच्या तेल सिंदूर।
दीसत दीसे हो पर्वत-टूंक ज्यूं,
चाले आगे हजूर ॥यादव०॥

६— एक सौ आठ कोतल हय सिणगारिया,
सुन्दर-सोवन-जड़ित पिलाण।
एक सौ ने आठ रथ सिणगारिया,
चाले असवारी आगीवाण ॥यादव०॥

७— लाख वैयालिस हाथी सिणगारिया,
वले लाख वैयालिस घोड़।
लाख वैयालिस रथ सिणगारिया,
पायदल अड़तालिस कोड़ ॥यादव०॥

८— हरि ने हलधर दोनूं गज चढ्या,
साथे लियो गजकुमार।
छत्र ने, चामर दोनूं विंजे रह्या,
बाजे बाजां रा झणकार ॥यादव०॥

९— देवकी माता आदे राणिया,
साथे सहू परिवार।
बोले विरुदावलियां, चारण सुजन सब,
जय जय शब्द अपार ॥यादव०॥

दोहे—

१— अतिशय देखी ने उतर्या, वांद्या दीन दयाल।
पांच अभिगम साचवी, पाप कियो पेमाल॥
२— भगवंत दीधी देशना, भवि जीवां हितकार।
आगार ने अणगार नो, धर्म करो सुखकार॥
३— परिषदा सुण पाछी गई, वलिया कृष्ण नरेश।
गज – सुकुमार वैरागियो, लागी धर्म री रेश॥

४— हाथ जोड़ी कहे नेम ने, आणी मन वैराग ।
मात पिता भाई पूछ ने, करसूं संसार नो त्याग ॥
५— जिम सुख होवे तिम करो, म करो ढील लिगार ।
घर आवी कहे मात ने, चरण नमी तिण वार ॥

ढाल–१८

(राग जोधाणे जसराज)

१— वाणी श्री जिनराज तणी, काने पड़ी–रे माई ।
आज अंदर री आंख, जामण म्हारी ऊघड़ी ॥
२— वलती बोले माय, वारी जाऊं तुम तणी–रे जाया ।
सुणी प्रभुजी री वाण, पुन्याई ताहरी घणी ॥
३— कुंवर कहे माय ! वाण, साची मैं सरदही–री माई ?
मीठी लागी जेम, दूध शाकर दही ॥
४— अनुमति दीजो मोय, दीक्षा लेसूं सही–री माई ।
हिवे आज्ञा री जेज, जामण ! करवी नहीं ॥
५— वचन अपूरब एह, पुत्र ना सांभली–री माई ।
घणूं मूर्छा–गति खाय, धमके धरणी ढली ॥
६— खलकी हाथां री चूड़, माथे रा केश बीखर्या–री माई ।
ओढ़ण हुवो दूर, आंखे आंसू झर्या ॥
७— मोह तणे वश आज, सुरती चलती रही–री माई ।
शीतल पवन घाल, माता बैठी थई ॥
८— कुंवर सामो माय, रही छे जोवती–री माई ।
मोह तणे वश वेण, बोले माता रोवती ॥

ढाल–१९

(राग—सौदागर चलणान देसूं)

१— प्यारे हमारे जाया, एसी न कीजे ।
तुम विन आछे लाल, कहो किम जीजे रे ॥प्यारे०॥
२— छतियां मेरे लाल !, तीखी खाती ।
कलेजो कांपे लाल, अति अकुलाती रे ॥प्यारे०॥

३— छतियां मेरे लाल, आगन्न उठी।
तनु जाले रे लाल, न समजे झूठी रे ॥प्यारे०॥

४— छतियां मेरे लाल! दुख न समावे।
दाड़िम ज्यूं रे लाल, फाटी आवे रे ॥प्यारे ॥

५— वेटां की रे लाल! आशा एती।
छती नहीं जावे लाल! अंबर जेती रे ॥प्यारे०॥

६— ऊंची लेई लाल, आभ अडाई।
नीची किंयां लाल, जात वडाई रे ॥प्यारे०॥

७— रोवत अत ही लाल देवकी राणी।
भर भर आवे लाल, नयणां में पाणी रे ॥प्यारे०॥

८— कुंवर कहे रे लाल, माय न रोजे।
मरणो आवे लाल, किम सुख सोजे रे ॥प्यारे०॥
प्यारी हमारी अमां अनुमति दीजे ॥

९— जनम जरा रे लाल पूठ लागी।
किम छूटीजे लाल, तेहथी भागी रे ॥प्यारी०॥

१०— उत्कृष्टी रे लाल, कीजे करणी।
तो रे मिटे लाल, यम की डरणी रे ॥प्यारी०॥

११— अजर अमर लाल, हूं अब होस्यूं।
शुद्ध होई लाल! त्रिभुवन जोस्यूं ॥प्यारी०॥

दोहे—

१— मात कहे सुत सांभलो, संयम दुक्कर अपार।
तूं लीला रो लाडलो, सुख विलसो संसार ॥

ढाल—२०

(रागः—जोधाणे जसराज)

१— साधपणो नहीं सहेल, जाया जामण कहे-रे जाया।
तूं न्हानड़ियो बाल, परीसा किम सहे ॥
२— त्रिविधे त्रिविधे च्यार, महाव्रत पालवा-रे जाया।
नान्हा मोटा दोष, अहोनिश टालवा ॥

३— दोष बेंयालीस टाल, करणी वच्छ गोचरी-रे जाया।
भमवो भमरा जेम, चिंता मोने लोच री॥

४— कनक कचोला छांड, लेवी वच्छ काछली-रे जाया।
जाव जीव लगे वाट, नहीं जोवणी पाछली॥

५— रहणो गुरां रे पास, विनय सूं आपणो-रे जाया।
राती पड़्यां एक शीत, वासी नहीं राखणो॥

६— सरस नीरस आहार, करणो वछ पातरे-रे जाया।
ए सुख सेज्या छोड़ सूवणो साथरे॥

७— नहीं करणी सिनान, मुखे बंधे मुहपती-रे जाया।
मेला पेहरे वेश, तिके जैन रा यती॥

८— करणो उग्र विहार, सेहणो सी तावड़ो-रे जाया।
कह्यो हमारो मान, पुत्र तूं बावरो॥

९— ए कायर ने दुर्लभ, माताजी थे कह्यो-री माई—
सूरा ने छे सेहल, कुमर उत्तर दियो॥

१०— जनम मरण रा दुख, माता जिणवर कह्या-री माई।
वसियो गर्भावास, जामण मैं दुख सह्या॥

११— नहीं पलक री आस, जाणू काल जंपियो-री माई।
ओ जग मरतो देख, माताजी कंपियो॥

दोहे—

१— वलती माता इम कहे, सांभल तूं सुजाण।
परिवार ताहरे छे वणो, म करो दीक्षा री बात॥

ढाल वही

१२— सहम बहोत्तर मात तात, वसुदेव है-रे जाया।
जीवन-प्राण आधार, केशव बलदेव है॥

१३— भोजायां सहस्र बत्तीस, तणो रामेकरो-रे जाया।
तुम ने अनुमति देवा, कुण होसी खरो॥

१४— सहस्र बहोत्तर परिवार, माताजी आवी मिले-री माई।
पर भव जातां साथ, कोई ना चले॥

१५— पलटे रंग पतंग, तिको जिण रो जिसो-री माई।
तिण ऊपर विश्वास, जामण करणो किसो ॥

१६— शूर वीर बावीस, परीसा धारसी-री माई।
जाणो शिवपुर वास, तिके नर पावसी ॥

१७— सुन्दर बाला दोय, परणीजो पदमणी-रे जाया।
सुख-लीनी जोबन-वेश, रूप चतुराई घणी ॥

१८— मृग-नयणी, शशि-वदन इन्द्राणी-सम अछे-रे जाया।
विलसी सुख संसार, लीजो चारित्र पछे ॥

१९— लिया घणा ने घेर, विषय महापापणी-री माई।
जग मांहे सहू नार, माता कर थापणी ॥

२०— स्वार्थ नी सगी नार, माता जिनवर कही-री माई।
अशुच दुर्गंध अपार, माता परणूं नहीं ॥

२१— वाल्यो मन वैराग विषय रस परिहरी माई।
मल मूत्र नो भंडार, माता नारी खरी ॥

२२— किंपाक फल समान, विषय जिनवर कह्या-री माई।
दीजे अनुमति आज, कीजे मो पर मया ॥

२३— नेम जिणेसर पास, महाव्रत आदरी-री माई।
जाव जीव लगे बात, न करूं प्रमाद री ॥

२४— जाव जीव जप तप, करस्यूं खप आकरी-री माई।
मूल थकी जड़ काटस्यूं, कर्म-विपाक री ॥

२५— म्हारे क्षमा गढ़-मांय, फोजां रहसी चढ़ी-री माई।
बारे भेदे तप तणी, चोकी खड़ी ॥

२६— बारे भावना नाल, चढ़ाऊं कांगरे-री माई।
तोड़ूं आठे कर्म, सकल कार्य सरे ॥

२७— हाथ जोड़ी ने अर्ज, कुंवर माय सूं करे-री माई।
द्यो अनुमति आदेश, मनोरथ मुझ फले ॥

दोहा—

१— मोह छकी माता कहे, सांभल माहरी बात।
दुर्लभ उंवर फूल ज्यूं तुझ दर्शन साक्षात॥
२— पान फूल नूं जीव तूं, कोमल केलि समान।
ललूड़ो अति लाडलो, लालन-लीला थान॥

ढाल–२१

(राग—राजवियां ने राज पियारो)

१— देवकी बोले सांभल बेटा,
निसुणो माहरी वाणी।
जो माता करि जाणो मौने,
तो मत कर खांचा-ताणी॥
२— रे जाया चारित्र दोहिलो,
जोवो हिये विमासी।
वेलू-कंवल लोहना चणा,
मेण-दांते न चबासी॥रे०॥
३— द्वारिका नगरी नो राज्य ले तूं,
मस्तक छत्र धराय।
सफल मनोरथ करि माता नो,
हाथी घोड़ा अधिपति थाय॥रे०॥
४— कृष्ण नरेसर बोले लेवे,
निसुणो वचन सुखदाई।
पगे करी ने अगनी बुझावे,
ज्यूं दुकर संयम भाई॥रे०॥
५— बावल बाथ मे लेवी दोरी,
चालवो खांडा नी धार।
सायर तरवो भुज बल करी ने,
ज्यूं दुक्कर संयम - भार॥रे०॥
६— केशव कहे लघु भाई ने,
जो तूं छोड़े संसार नो पास।
पिण द्वारिका नगरी नो,
राज तोने देसूं, पूरो माता नी आस॥रे०॥

७— रह्यो अबोलो वचन सुणी ने,
तब दीधो माधव राज।
छत्र ने चामर दोनूं वीजे,
कीना राज ना साज ॥रे०॥

८— गज-सुकुमार कहे केहनो मारो,
अब वरते आण हमारी।
तो हुकुम माहरो मत उथपो,
थे करो दीक्षा री त्यारी ॥रे०॥

९— श्री भंडार मांहे सूं काढ़ो,
तीन लाख सोनैया लीध।
वे लाख ना ओघा पातरा,
एक लाख नाई ने दीध ॥रे०॥

दोहा—

१— दीक्षा महोच्छव कृष्णजी, कीधो हर्ष अपार।
मझ बाजारे चालिया, आया जिहां करतार ॥

ढाल—२२

(राग—गवरादे बाई आज वसो०)

१— कुंवर कहे कर जोड़ ने,
सांभलो कृपानाथो रे।
एतो जनम मरण सूं डरपियो,
छोडसूं सगली आथो रे॥
माहरो कुंवर वैरागी संयम आदरे॥

२— इण गहणा तनसूं उतारिया,
माता खोला मांहे लीधा रे।
जिम सरप बिछु ने अलगा करे,
तिम कुमर परा नांखी दीधा रे ॥माहरो०॥

३— माता देखो कुमर भणी,
जाग्यो मोह अपारो रे।
इण रे ठलक ठलक आंसू पड़े,
जाणे तूट्यो मोत्यां रो हारो रे ॥माहरो०॥

४— मोने इष्ट ने कंत व्हालो हुतो,
हूं देखी ने पामती साता रे ।
पिण म्हारो राख्यो न रह्यो न्हानड़ो,
इण विध बोले छे माता रे ॥माहरो०॥

५— इण ने तपस्या थोड़ी करावजो,
घणी कीजो सार संभालो रे ।
हिवे कुंवर कने माता आयने,
एतो देवे सीख रसालो रे ॥माहरो०॥

६— बेटा सूरपणे व्रत आदरे,
तो सूरपणेहीज पाले रे ।
तूं क्रिया कीजे रे जाया निर्मली,
तूं दोनूं ही कुल उजवाले रे ॥माहरो०॥

७— झुरती बोले माता देवकी,
सांभल तूं सुजातो रे ।
ते मुजने रोवाई इण परे,
जिम बीजी म रोवाणे मातो रे ॥माहरो०॥

दोहे—

१— लोच कियो निज हाथ सूं, कोण ईशाने जाय ।
वेश पेहरी साधु तणो, वांदे प्रभुजी ना पाय ॥

२— जनम मरण रा जोड़ सूं, बिहनो किरपानाथ ! ।
भवोदधि मोने तार ने, दीजे शिवपुर आथ ॥

ढाल—२३

(राग—सोभागी—सुन्दर)

१— नेम जिणेसर स्व-हथे जी, चारित्र दीधो तास ।
हर्ष लहे चित में घणो जी, थई मन मे आस ॥

२— सोभागी मुनिवर धन धन गजसुकुमार ।
भव बंधन थी छूटवा जी, छोड्यो माया-जाल ॥सोभागी०॥

३— माधव-प्रमुख दुख धरे जी, मन में आणी नेह ।
वांदी मुनि ने आपणे जी, पोहता लोग सुगेह ॥सोभागी०॥

४— मेहलां में कुंवर दीसे नहीं जी. साले आई-ठाण।
झुरे माता देवकी जी, प्रेम बडो बंधाण ॥सोभागी०॥

५— तिणहीज दिन जिनवर भणी जी. पूछे ते मुनिराय।
प्रतिमाए जाई रहूं जी, जो तुम आज्ञा थाय ॥सोभागी०॥

६— जिम सुख होवे तिम करो जी. म करो बहु प्रतिबंध।
चाल्यो मुनिवर जिन नमी जी, मेटण भव नो द्वंद ॥सोभागी०॥

७— गजसुकुमार मसाणमे जी. प्रतिमा रह्यो रे सधीर।
मेरु तणी परे नवी डिगे जी, वड-क्षत्री वड-वीर ॥सोभागी०॥

८— आतम ध्यान विचारतो जी, मूकी ममता देह।
जड चेतन भिन्न भिन्न करे जी, लागो शिव सूं नेह ॥सोभागी०॥

९— आपण ने भजे आप सूं जी, पुद्गल रुचि ने निवार।
आतम-राम रमावतो जी, निज-स्वभाव विचार ॥सोभागी०॥

१०—क्षपक श्रेणि मुनि चढ्यो जी. करण अपूरब मांय।
ध्यान शुक्ल मुनि ध्यावता जी, परीषह उपजे आय ॥सोभागी०॥

११—सोमल ब्राह्मण आवियोजी. दीठो मुनिवर तेह।
मन में बहु दुख ऊपनोजी, चिंते दुष्टी जेह ॥सोभागी०॥

१२—अति नान्ही मुज बालिकाजी, रूपे देव-कुमार।
पापी इण परणी नहीं जी, मूकी ते निरधार ॥सोभागी०॥

१३—पाखंड दर्शन आदर्योजी, पर दुख जाणे नांय।
हिवे दुख दूं इण ने खरोजी, जिम जाणे मन मांय ॥सोभागी०॥

१४—चित मांहि इम चिंतवेजी, निर्दय विप्र चंडाल।
करे परीसो साधनेजी दे मुख सूं घणी गाल ॥सोभागी०॥

१५—बलता अगारा ग्रहीजी, वड़ी मांहे ते घाल।
पापी माथे मेलियाजी, पहिलां बांधी पाल ॥सोभागी०॥

१६—आप कमाया पापियेजी, तूं भोगव फल आज।
मुज पुत्री दुखणी करीजी, तुजने नावी लाज ॥सोभागी०॥

दोहा—

१— दु:सह परीषह मुनि सहे, मन मे नाणे रीस।
धर्म के बल ध्याने चढ़े, मुनि ध्यावे जगदीश ॥

ढाल—२४

(राग—रहेनी रहेनी अलगी रहेनी)

१— माता-हाथ तणो करि भोजन,
अन्य आहार नवि लीधो।
गज मुनि धीर कर्म ने हणवा,
मुक्ति-महल मन कीधो ॥
तुम पर वारी मै वारी—२ तुमपर वारी ॥

२— महाकाल मसाण व्याल बहु,
लाल अंबर द्रिग दीस।
उजड़ झाल वले चेहे झील,
तरु – तल रह्या मुनीस ॥तुम पर०॥

३— नेत्र-दृष्टि मंडी अंगुष्ठ,
शिष्ठ सकल विध साजे।
राचे आतम राम तणे रस,
सर्व पुराकृत भाजे ॥तुम पर०॥

४— मस्तक पाल बंधी माटी की,
मुनिवर समता रस भरिया।
झग झगता खयर ना खीरा,
मुनिवर ने शिर धरिया ॥तुम पर०॥

५— खदबद खीच तणी परे सीजे,
तड़ तड नासां तूटे।
मुनिवर समता-भाव करी ने,
लाभ अनंतो लूटे ॥तुम पर०॥

६— अंत समे केवल ऊपारजी,
त्याग उदारिक देह।
अक्षय अटल अवगाहना कर ने,
अनन्त चतुष्टय लेह ॥तुम पर०॥

७— अलर प्रव्रज्या, अतुल परीषह,
अष्ट कर्म करी हाण।
जनम मरण नो अंतज कीनो
सासता सुख निर्वाण ॥तुम पर०॥

दोहे—

१— मात तात वांदण भणी, आवे कृष्ण नरेश ।
दीठो ब्राह्मण डोकरो, महतो वहु कलेस ॥

२— ईंट वहे देवल भणी, कद होस्ये पूरी एह ।
दया आणी मन तेहनी, एक उपाड़ी तेह ॥

३— एक एक ते सहू ग्रही, कृष्ण तणे परिवार ।
मन में ते हर्षित कहे, कृष्ण कियो उपगार ॥

४— करि उपगार शुभ भावसूं, चित में धरि आणंद ।
वांदण आव्या कृष्णजी, जिहां श्री नेम जिणंद ॥

ढाल—२५

(राग—पंथीड़ा तूं कंई भूलो रे)

१— त्रण प्रदक्षिणा दे करीजी, वांद्या दीन-दयाल ।
साध सकल वांदियाजी, नहीं दीसे गज-सुकुमाल ॥

२— जगत गुरु! किहां गयो-गज-सुकुमाल ?
हूं प्रणमूं जई तेहनेजी, त्रि-करण-शुद्ध त्रि-काल ॥जगत०॥

३— पूछे कृष्ण नरेसरूजी, छांड्यो जिण संसार ।
रमणीय सुहावणो हो, रूप मदन अवतार ॥जगत०॥

४— नेम कहे उत्तर इसोजी, पोहतो ते निर्वाण ।
सबल सखाई तसु मिल्योजी, काम थयो सिध जाण ॥जगत०॥

५— अचेतन थई देवकीजी, कुरडे सा असराल ।
हीन दीन विल विल करेजी, दोहली पेट री झाल ॥जगत०॥

६— मूरछागति धरणी पड्योजी, चेतन पामी जाम ।
बोले कृष्ण दयामणोजी, नेम भणी सिर नाम ॥जगत०॥

७— किण उपसर्ग कियो इसोजी, मुजने कहो जिनराय !
आपूं सीख जाई करीजी, जिम मुज रीस बुझाय ॥जगत०॥

८— अमने वांदण आवतांजी, ब्राह्मण ने जिम आज ।
ते उपगार कियो भलोजी, तेहनो सार्यो काज ॥जगत०॥

९— भिलियो ते उपगारियोजी, बहु काले जे कर्म।
न खपता ते थोड़े खप्याजी, मत कह भाई ! अधर्म॥
कृष्णराय ! सांभलो मोरी बाण।
१०—मैं किम हिवे जाणी सकूंजी, मुज भाई मारण-हार।
नेम कहे हवे सांभलोजी, ते तुज कहूं विचार॥कृष्ण०
११— जे नर तुजने देखनेजी तुरत तजे जे प्राण।
तिण तुज-भाई मारियोजी, ए सच्चो सहिनाण॥कृष्ण०
१२—सांभल वाणी नेमनीजी, ते दुख हिये न समाय।
काम किसो कियो पापियोजी, ते मुख कह्यो न जाय॥जग०
१३—नेम भणी हरि वांदनेजी, आवे नगरी मझार।
खिण खिण भाई सांभरेजी, प्रीत सबल संसार॥जगत०

दोहे—

१— दुख करता भाई तणो, कृष्ण घणूं उदास।
मझ चोहटो टाल ने, जावे निज आवास॥
२— मुनि-घातक ब्राह्मण जिको, डरप्यो मन मे अपार।
सेरी कानी नीकल्यो, जावे नगरी बार॥

ढाल—२६

[राग—ऋषभ प्रभुजी ये ए]

१— कृष्ण-वदन देखी करिए,
मार्यो हुंतो जिणे साध।
ते तो मुवो पापियो ए,
आप किया फल लाध॥
२— नरेसर इम कहे ए,
साची प्रभुजी री वाण।
अन्यथा नहीं होवे ए,
ए मुनि-घातक जाण॥नरेसर०॥
३— तुरत बंधावी रांढुये ए,
जेहना हाथ ने पाय।
नगरी मांहे बाहिरे ए,
फेरी जे तसु काय॥नरेसर०॥

४— कराई उद्घोषणा ए,
सारे शहर मझार ।
साध ने दुख दियां तणा ए,
ए फल ताजा सार ॥नरेसर०॥

५— फल दीठो ऋषि-घातनो ए,
इम नहीं करे चंडाल ।
ते इण कियो पापिये ए,
खिण खिण होय उदाल ॥नरेसर०॥

६— वात सुणी मुनि तणी ए,
बहु यादव - परिवार ।
लेवे संयम भलो ए,
जाणी अथिर संसार ॥नरेसर०॥

७— जे चारित्र लेवा मते ए,
ते लेज्यो इण वार ।
माधव कहे मुख सूं इसो ए,
म करो ढील लिगार ॥नरेसर०॥

८— पाछल सहू परिवार नी ए,
हूं करिसु संभाल ।
दुखियां रा दुख मेटसू ए,
सुणजो बाल गोपाल ॥नरेसर०॥

९— वचन सुणी श्री कृष्ण नो ए,
हुवा साध अनेक ।
महा महोच्छव हरि करे ए,
आणी हृदय विवेक ॥नरेसर०॥

१०— केई तो श्रावक हुवा ए,
केई समकित - धार ।
नेम जिणेसर तिहां थकी ए,
जनपद कियो विहार ॥नरेसर०॥

११— साता दीजो साधां भणी ए,
तन मन चित्त उल्लास ।

आज्ञा मती उथापजो ए,
ज्यूं पामो सासतो वास ।।नरेसर०।।

१२-- सतगुरु संगति पायने ए,
मत कीजो परमाद ।
पर निन्दा ईर्ष्या तजो ए,
कीजो धर्म – आल्हाद ।।नरेसर०।।

१३— इण आरे धरम पायने ए,
कीजो घणा जतन ।
थोड़ा में नफो घणो ए,
राखीजो ऊजल मन ।।नरेसर०।।

१४— इण अवसर मे चेतजो ए,
धरम खरची लीजो लार ।
गुरु-सेवा कीजो हरस सूं ए,
जिम होसी निस्तार ।।नरेसर०।।

१५— एसा पुरुषां सांमो जोयने ए,
राखीजो धर्म सूं प्रेम ।
ज्यूं शिव-रमणी वेगी वरो ए,
रिख 'जयमलजी' कहे एम ।।नरेसर०।।



(७)

❀ उदाई राजा ❀

दोहे--

१— चंपा नगर पधारिया, भगवन्त श्री महावीर ।
मोटा जिन-शासन-धणी, शूर वीर ने धीर ॥
२— उदाई राजा भणी, किण विध दीधी दीख ।
एक मना थई सांभलो, चित राखी ने ठीक ॥
३— 'वीत-भय' पाटण नो धणी, 'सिन्धु सौवीर' ज देश ।
आदि देई सोले नृपति, बरते नृप-आदेश ॥
४— तीन से तेसठ नगर नो, धणी उदाई राय ।
महासेण प्रमुख दशे, चामर छत्र धराय ॥

ढाल-१

(राग—जतनी ए)

१— जिण रे 'पद्मावती' राणी,
दूजी 'प्रभावती' जाणी ।
'प्रभावती' रो अंग जात,
नाम 'अभीचकुमार' कहात ॥

२— कुंवर रूपवंत सुकुमाल,
शिव भद्र नो वरण संभाल ।
राज चिंता - काम काज,
जिण ने पदवी दी युवराज ॥

३— जिण कुंवर सूं राजा रे हेज,
वले 'केशी' नाम भाणेज ।
जिण रो पिण रूप वखाण्यो,
ज्ञानी पिण सूत्र में आण्यो ॥

४— उदाई आडम्बर साज,
करे सोले देश नो राज ।
साधां रो सेवक जिन-मत,
जिणे जाण्या छे नव-तत्त (तत्व) ॥

५— नर–भव नो लाहो लेतो,
सुपात्रां दानज देतो।
एक दिवस उदाई राय,
बेठो छे पोषह मांय॥

दोहा—

१— धर्म चिंता करतां थकां, महीपति चिंते मन्न।
जहां विचरे श्री वीर जिन, धरणी छे ते धन्न॥

ढाल—२

(राग—मेड़तिया भंवरजी रो कर०)

१— देश नगर वो धन्य छे,
धन श्रावक नर नारीजी।
दरसण देखे श्री वीर नो,
ज्यांरी पुन्याई छे भारीजी॥
जोऊं म्हारा सतगुरु नी बाटड़ी॥

२— वाणी सुधा रस जेहवी,
श्रवण सुणे नित–मेवोजी।
धन श्रावक धन श्राविका,
नित करे प्रभुजी री सेवो जी॥जोऊं०॥

३— गुरु सरीखो संसार मे,
नहीं कोई उपगारीजी।
ज्ञान–दीपक घट मे कियो,
तिमिर हरण सुखकारीजी॥जोऊं०॥

४— प्रभु दरसण दीठां थकां,
भूख तृषा सहू जावेजी।
निरखतां नयण धापे नहीं,
अवर चिंता नहीं आवेजी॥जोऊं०॥

५— सत गुरु शब्द ज सांभलू,
जद मनड़ो हुवे राजीजी।
हलु–करमी हरसे घणा,
मिथ्यात–मत जावे भाजीजी॥जोऊं०॥

दोहे--

१— 'वीत-भय' पाटण समोसरे, भगवंत श्री महावीर ।
भाव सहित सेवा करू', रहूँ जिणां रे तीर ॥

२— चंपा नगरी प्रभु हुंता, जाण्या उदाई रा भाव ।
सूंपी स्थानक पाटला, विहार कियो धर चाव ॥

३— पर उपगारी एहवा, नदी नाला जल कीच ।
'चंपा' ने 'वीत-भय' नगर, सातसे कोस नो बीच ॥

४— इम विहार करतां थकां, आया 'मृग-वन' बाग ।
साध संगाते परवर्यां, भव जीवां रे भाग ॥

५— आग्या मांग ने ऊतर्यां, थानक पाटला लीध ।
राजा लोगज सांभल्यो, जाणे अमृत पीध ॥

ढाल---३

[राग—अलबेल्या०]

१— त्रिक चउक्कादिक विस्तरी रे लाल,
वीर आयां नी बाय रे-भविक जन ।
सहु कोई तत्पथ गया रे लाल,
हिवड़े हरप न माय रे-भविक जन ॥
वीर जिणंद समोसर्या रे लाल ॥

२— राय उदाई हाथी चढ्यो रे, लाल,
शोभा करे धर प्रेम रे-भविक जन ।
गहणा भूषण पहरने रे लाल,
चाल्यो कोणिक जेम रे-भविक जन ॥वीर०॥

३— इम लीला करतो थको रे लाल,
आयो 'मृग वन' मांय रे-भविक जन ।
जबर अतिशय देखने रे लाल,
गज सूं उतर्यो राय रे-भविक जन ॥वीर०॥

४— पंच अभिगम साचवी रे,
वांद्या वीर रा पाय रे-भविक जन ।
वाणी सुण धर्म सांभली रे,
उठ्यो उदाई राय रे-भविक जन ॥वीर०॥

दोहे—

१— कर जोड़ी ने इम कहे, सरध्या तुमना वेण।
निर्ग्रन्थ वचन मोने रुच्या, खुलिया अंतर नेण॥

२— राज पुत्र ने थाप ने, लेसूं संजम–भार।
वलता वीर इसड़ी कहे, म करो ढील लिगार॥

३— वीर वांद गयवर चढ्यो, पाछो नगर में जाय।
एकाकी ए पुत्र छे, इम चिंते मन मांय॥

ढाल–४

(राग—सामी थारा दरसण री व०)

१— अभीच कुंवर म्हारे ए
इष्ट कंत सुं व्हालो विशेष हो।
भवियण भाव सुणो–
कुंवर लागे छे प्यारो
उंबर फूल ज्यूं दुलभ हमारो हो ॥भवियण०॥

२— जो इण ने राज देसूं,
वीर संगे संजम लेसूं, हो भवियण।
ओ फंस जासी राज रे मांय,
देश मुलक मे गृधित थाय, हो ॥भवियण०॥

३— रखे व्हालो दुरगति जाय,
इम चिंते उदाई राय, हो भवियण।
सिरे नही मुज राज देणो,
वीर संगे चारित्र लेणो, हो ॥भवियण०॥

४— सो निज म्हारो 'केशी' भाणेज,
राज देणो न करणी जेज, हो भवियण।
इम चित सभा मे आय,
केशी ने लियो बुलाय, हो ॥भवियण०॥

५— तिण सूं धर कर हेज,
राज थाप्यो न करि जेज, हो भवियण।

प्रगट कहूँ नहीं छानो,
म्हारी परे इण ने मानो, हो ॥भवियण०॥

६— बलतो बोले 'केशी' राय,
मामाजी थांरे स्यूं न्याय, हो भवियण० ।
म्हारो वचन करो परमाणो,
तीन लाख सोनैया आणो, हो ॥भवियण०॥

७— कु-तिया-वण ने दोय लाख नाणो,
दे ओघा पातरा आणो, हो भवियण ।
नाई ने नाणो एक लाख,
केश उतारो आंगुल चार राख, हो ॥भवियण०॥

दोहे—

१— इम सांभल हर्षित हुवो, 'केशी' नामे राय ।
सिंहासण वेसाय ने, सोवन कलश ढलाय ॥
२— इत्यादिक जलूस कर, कड़ा मोती ने हार ।
गहणा विध विध भांत रा, कल्पवृक्ष-दीदार ॥
३— हजार पुरुष सुं ऊपड़े, शिविका बैठा आय ।
दीक्षा रो महोच्छव घणो, 'जमाली' जिम थाय ॥

ढाल—५

[राग—पवरांदे बाई आज वसोनी मारे०]

१— नवरं राणी पद्मावती,
लीधा मस्तक-केशो रे ।
पिवरे विजोगे आंसू भरे,
राणी कीधो दुख विशेषो रे ॥

२— राजा सोले देसां रो साहिबो,
हिवे बिछड़तां नी वेला रे ।
एतो बेठो शीविका ऊपरे,
सहू कुटुम्ब न्याती भेला रे ॥राजा०॥

३— लेई ओघा ने पातरा,
बैठी डावे कानी धाय माता रे ।

पट शाटक ले 'पद्मावती',
दक्षिण दिश बिख्याता रे ॥राजा०॥

४— जाव भांत भांत विरुदावली,
बोले छे चारण भाटो रे।
जमाली नी परे परवर्या,
नर-नार्यां ना थाटो रे ॥राजा०॥

५— राजा वीर समीपे आय ने,
शीविका सूं नीचे उतर्यो रे।
वीर जिणंद ने वांद ने,
ईशान दिशा संचर्यो रे ॥राजा०॥

६— आभरण अंग सूं उतारिया,
लिया खोले पद्मावती राणी रे।
विजोग व्हालां रो दोहिलो,
जाणे मोती लड़ तुटाणी रे ॥राजा०॥

७— स्वयमेव मस्तक लोचन कियो,
दीक्षा दी श्री महावीरो रे।
समिति गुप्ति सीखाय ने,
सेठो हुवो शूर ने वीरो रे ॥राजा०॥

८— हिवे राणी सिखावण दे इसी,
घणो पराक्रम फोड़ तप कीजो रे।
जेज म कीजो धर्म नी,
शिव-रमणी ने वेग वरीजो रे ॥राजा०॥

९— सिंहपणे व्रत आदर्या,
सिंहपणे आराधो रे।
संयम नी खप करजो घणी,
सफल कीजो नर-भव लाधो रे ॥राजा०॥

१०— इम सिखामण देई करी,
राणी कुटुम्ब कबीला केड़े रे।
वीर वांदी पाछा वल्या,
मोहे आंख्या आंसू रेड़े रे ॥राजा०॥

दोहे—

१— जनम हुवो अणगार नो, भणिया अंग इग्यार।
आज्ञा ले श्री वीर नी, एकला कियो विहार॥
२— अरस विरस खानां थकां, डील में उपनो रोग।
'वीत-भय' पाटण आवियो, जांण्यो राजा लोग॥
३— 'केशी' राजा चिंतवे, भलो न आयो एह।
उमराव सहू मिल जावसी, तो मुझ ने देशी छेह॥
४— हेलो पड़ायो शहर में, सुण जो सगला लोय।
उदाई ने रेण ने थानक म दीजो कोय॥

ढाल—६

[राग— केल करावे हाथ]

१— राजा ढंढोरो फेरियो,
प्रगट नाम म्हारो लीजो रे।
साध उदाई आयो शहर में,
थानक कोई म दीजो रे॥
जोइजो रे स्वारथ ना सगा।
२— जो इण ने थानक दियो,
तो घर लेसूं लूंटो रे।
कुरब कायदो न गिणूं
दुष्ट राजा इसो भूठो रे॥जोइजो०॥
३— एह हेलो लोक सांभली,
थानक न दीधो कोई रे।
इतरा में एक नगर मे,
कुंभार तत्पर होई रे॥जोइजो०॥
४— सोले देशां रो साहिबो,
मै खाधो लूण ने पाणी रे।
थानक री दी आगन्या,
मन में करुणा आणी रे॥जोइजो०॥
५— राजा बात ज सांभली,
ओ रह्यो इहां नहीं रूड़ो रे।
जहरादिक ना जोग सूं,
पाडूं एहने पूरो रे॥जोइजो०॥

ढाल–७

[राग – चरित्र चित्त वस्यो]

१— तेड़ी भाखे वैद्य ने,
नाम म्हारो मत लीजो रे।
धिग धिग लोभने,
आवे उदाई औषध भणी।
तिण ने थे विष दीजो रे॥धिग०॥

२— वैद्य तहत कर चालियो,
पाछो उत्तर न बाले रे धिग०।
चाकर कुकर सारखा,
जेम कहे तिम चाले रे॥धिग०॥

३— अटण करंता आविया,
वैद्य अकारज कीधो रे धिग०।
विप मिश्रित वस्तु तिका,
मुनिवर पात्रे दीधो रे॥धिग०॥

४— निरदोपण जाण थानक आय ने,
रोग जावा औषध खायो रे धिग०।
जहर प्रगम्यो वेदन हुई,
ऊजल सही न जायो रे॥धिग०॥

५— मुनि जाण्यो जहर ज दियो,
राग द्वेष फल जोयो रे धिग०।
भाणेजा ने राज मैं दियो,
पुत्र ऊपर राग होयो रे॥धिग०॥

६— फल कडुवा राग – द्वेप ना,
आण्यो मन शुभ ध्यानो रे धिग०।
सहू पर समता आदरी,
पाम्या केवल ज्ञानो रे॥धिग०॥

७— सुध मन संथारो करी,
कर्म खपाय गया मोखो रे धिग०।
राय केशी डुबोई आतमा,
जामा लगाया दोपो रे॥धिग०॥

८— प्रभावती मर हुई देवता,
नगर ने आपदा दीधी रे धिग० ।
कुंभकार घर वरज ने,
पट्टण दट्टण कीधी रे ॥धिग०॥

९— पापी एक लार यूं,
घणा ज मार्या जोयो रे धिग० ।
सामुदानिक कर्म जिम बांधिया,
जिसा उदय हुवे आयो रे ॥धिग०॥

दोहे—

१— कुंवर 'अभीच' तिण अवसरे, आधी रात रे मांय ।
अध्यवसाय उपना इसा, हूं उदाई रो पुत्र थाय ॥
२— एकाकी हुँ हीज हुतो, प्रभावती-अंग जात ।
खोड़ नही कांई अंग मे, पिण नहीं मान्यो तात ॥
३— मोने परोहिज मूक ने, दियो भाणेज ने राज ।
वीर समीपे सयम लियो, भलो न कीधी काज ॥
४— मानसिक दुख वेदतो, 'केशी' हुवो ज राय ।
आण दाण इणरी फिरे, मो सूं सुणी न जाय ॥
५— अंतेउर परिवार ले भंडोपकरण संभाय ।
'वीतभय' सेती निकली, 'चंपा' नगरी जाय ॥
६— 'श्रेणिक' राय नो दीकरो हुँतो मास्याई भाय ।
'कोणिक' चम्पा नो धणी, रह्यो समीपे जाय ॥

ढाल—८

(*राग—दलाली चित्त करो*)

१— कुंवर महलां सूं ऊतर्यो,
विलसे संसार ना भोगो रे ।
पुण्य जोग आवी मिल्यों,
साध तणो संजोगो रे ।
धन धन वीर जिणंदजी ॥

२— हुँतो उदाई नो दीकरो,
नामे अभीच कुमारो रे।
'वीत-भय' पाटण सूं निकली,
लिया श्रावक ना व्रत बारो रे ।।धन्य०।।

३— गुणवंत नी संगत थकी,
सीझे सगला कामो रे।
दुख दोहग दूरे टले,
पामे अविचल ठामो रे ।।धन्य०।।

४— जीव अजीव ने ओलख्या,
जाण्या पुण्य ने पापो रे।
आस्रव संवर निर्जरा,
बंध मोक्ष वले थापो रे ।।धन्य०।।

५— सामायिक पोषह करे,
वले पड़िकमणो विशेषो रे।
पांचू पद खमावतां,
सिद्ध 'उदाई' सूं द्वेषो रे ।।धन्य०।।

ढाल—६

(पंथिड़ो चाल्यो परदेश में रे)

१— लुल लुल ने लटका करे रे,
विनय भाव करे अरज रे।
गुणवंतां ने वनणा करे,
एक मिध उदाई बरज रे ।।
जीव रुले राग द्वेष थी रे ।।

२— इण संसार मे देखलो रे,
राग द्वेष नी लेर रे।
बीजा तो जठे ही रह्या रे,
पिण सिद्धां सूं वेर रे ।।जीव०।।

३— कर पनरे दिन री संलेखणा रे,
पिण शल्य रह्यो मन मांय रे।
विण आलोयां पड़िकम्यां रे,
काल कियो तिण ठाय रे ।।जीव०।।

४— 'रतन-प्रभा' रे पाखती रे,
भवन-पत्यां रा भवण कहाय रे।
एक पल्य ने आऊखे ऊपनो रे,
असुर-कुमारां मां जाय रे ॥जीव०॥

५— नर पुन्यवंत हुसी धर्म पायने रे,
लेसी संजम-भार रे।
केवल-ज्ञान ऊपायने रे,
जासी मुगत मभार रे ॥जीव०॥

६— सूत्र 'भगवती' थी कह्यो रे,
किंक परंपरा जोय रे।
अधिका ओछां नो मिच्छामि दुक्कड' रे,
रिख 'जयमलजी' कहे मोय रे ॥

---

(८)

❀ मेघ-कुमार ❀

दोहे—

१— गौतम गणधर गुणनिलो, लब्धि तणो भंडार।
चवदे सो बावन सहू, नमतां जय जय कार ॥
२— सूत्र ज्ञाता मे चालिया, 'मेघ' ऋषि ना भाव।
संक्षेपे करी हूं कहूँ, सांभल जो धरि चाव ॥

ढाल—१

१— राजगृही नगरी अति सुन्दर,
माथा रा तिलक समान री माई।
एक कोड़ ने छासठ लाख,
गांव तणो अनुमान री माई ॥
पुण्य तणा फल मीठा जाणो ॥

२— राज करे तिहां 'श्रेणिक' राजा,
मंत्री 'अभय' कुंवार री माई।
महाराजा रे 'धारिणी' राणी,
साधां ने हितकार री माई॥पुण्य०॥

३— धारणी-श्रेणिक रो अंग-जात,
नामे मेघ-कुमार री माई।
सुविनीत बहोतर कला भणियो,
वाणी अमृत सार री माई॥पुण्य०॥

४— तिण नगरी में नालंदो पहाड़ो,
तिण रो इसो अनुमान री माई।
चवदे तो चौमासा किया,
भगवत श्री वर्द्धमान री माई॥पुण्य०॥

५— पूरब भव गवालज केरो,
दान दियो तिण खीर री माई।
जिण पुन्याई इसडी बांधी,
घाली 'गोभद्र' सेठ घर सीर री माई॥पुण्य०॥

६— 'जंवू' जैसा इण पाड़ा मे हुवा,
बले कोड़ी-धज घर थाय री माई।
सहस पेसठ ने लाख इग्यारे,
पणसे छत्तीस घर इण मांय री माई॥पुण्य०॥

७— मंदिर मालिया जाली झरोखा,
सोहे पोल प्रकार री माई।
चौरासी बले चोहटा सोहे,
परतक देवलोक सार री माई॥पुण्य०॥

दोहे—

१— 'मेघ' कुंवर जोवन आया, परणी आठे नार।
महल मांहे सुख भोगवे, मादल नो धोंकार॥

२— गाम नगरपुर विहरता, भगवन्त श्री महावीर।
शरणे आवे ते प्राणिया पावे भव जल तीर॥

ढाल-२

(राग—रसिया के गीत की)

१— वीर पधार्या हो मगध सुदेश में,
करता धर्म उद्योत-जिणेसर।
मेला जीव थया हे मिथ्यात्त में,
ज्यां री उतारता छोत-जिणेसर ॥वीर०॥

२— चोतीस अतिशय हो करने दी ता,
वाणी रा गुण पेंतीस-जिणेसर।
एक सहस्र ने आठ लक्षण-धणी,
जीत्या राग ने रीस-जिणेसर ॥वीर०॥

३— 'राजगृही' नगरी हो अति रलियामणी,
'गुणशिल' नामे बाग-जिणेसर।
विचरता वीर जिणंद समोसर्या,
भव जीवां रे भाग-जिणेसर ॥वीर०॥

४— 'श्रेणिक' सुणियो हो वीर पधारिया,
हिवड़े हर्षित थाय-जिणेसर।
करी सजाई ने नृप वांदण चाल्यो,
सेवा करे चित लाय-जिणेसर ॥वीर०॥

५— नर-नारी ने हो हरस हुवो घणो,
वीर वांदण रो कोड़-जिणेसर।
नगर विचाले हो होयने नीकल्या,
चाल्या होडा - होड-जिणेसर ॥वीर०॥

६— च्यारे जातरा देवी ने देवता,
वले नर-नारी साथ-जिणेसर।
लुल लुल ने हो प्रभु ने लटका करे,
जोड़े दोनूं हाथ-जिणेसर ॥वीर०॥

दोहा—

१— षड ऋतु ना सुख भोगवे, मेहलां मे मेघ कुमार।
कामण सूं लीनो रहे, आगे सुणो अधिकार॥

ढाल—३

(राग—मम करो काया माया कारमी)

१— मेघ कुंवर तिण अवसरे,
बैठो है महल मझार रे।
लोग बारे जातां देख ने,
सेवक बुलाया तिवार रे॥
कुंवर इसो मन चिंतवे॥

२— के कोई महोच्छव भूत नो,
के कोई यक्ष नो जाण रे।
बले अनेराई पूछिया,
के कोई खिणावे निवाण रे॥कुंवर०॥

३— वचन सुणी श्री मेघ नो,
सेवग हर्षित थाय रे।
हाथ जोड़ ने इण पर कहे,
ते सुणजो चित लाय रे॥कुंवर०॥

४— चोवीस मां श्री वीरजी,
तारण तिरण जहाज रे।
तेहनी वाणी सुणवा भणी,
लोग वांदण जावे आज रे॥कुंवर०॥

५— नाम ने गोत्र सुणियां थकां,
पातिक जावे परा दूर रे।
साजे ही मन्न आराधतां,
च्यारे ही गति देवे चूर रे॥कुंवर०॥

६— वचन सेवग तणो सांभली,
चिंतवे मेघ कुमार रे।
हूं पण वीर ने वांदसूं,
वेग सजाई करो तयार रे॥कुंवर०॥

७— वीर वांदण तणो मेघ ने,
ऊळ्यो है प्रेम अपार रे।
मोटे मंडाने करी नीकल्यो,
चाल्यो मझ बाजार रे॥कुंवर०॥

८— दरसण दीठो श्री वीर नो,
पुण्यवंत हर्षित थाय रे।
त्रण प्रदक्षिणा देई करी,
सनमुख बैठो छे आय रे ॥कुंवर०॥
९— भगवंत देवे हो देशना,
ते सुणजो धरि प्रेम रे।
ए जीव लोह जिम जाणई',
पिण किण विध होवे छे हेम रे ॥कुंवर०॥

दोहा—

१— आगार ने अणगार नो, धर्म ना दोय प्रकार।
चउ-विध धर्म आराधतां, चउ-गति पामे पार ॥

ढाल-४

(राग—नवकार मंत्र नो ध्यान धरो)

१— जीवड़ला री आद नहीं कांई,
पुन रे जोग नर-भव पाई।
भमियो जीव आठ करम बाधो,
इम जांणी दया धरम आराधो ॥

२— पाम्यो जीव आरज खेतो,
उत्तम घर जनम लह्यो हेतो।
तोही सेवे पांच परमादो ॥इम०॥

३— आऊखा नो सुणियो मानो,
जिम पाको पीपल-पानो।
पड़तां वार नहीं जादो ॥इम०॥

४— इसड़ो छे ओछो आयू,
ज्यूं ओस खिरे वागे वायू।
तिण मे रोग सोग बहु असमाधो ॥इम०॥

५— पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय गयो,
संख्यात असंख्यात काल रयो।
हिवे निगोद रो सुणो संवादो ॥इम०॥

६— जीव हुवो मूलो ने आदो,
घण जणा सवाद करी खादो।
वनस्पति रा भव बहु लाधो ॥इम०॥

७— पंचेन्द्रिय काय मांय रे फसियो,
उत्कृष्टो सात आठ भव वसियो।
पिंड अशुच उदारिक लोही राधो ॥इम०॥

८— देवता ने नारकी रे हुवो,
सुखियो दुखियो जीव बहु मुवो।
भाख गया देव देवाधो ॥इम०॥

९— इम रुलियो चउ-गति मांयो,
अब नीठ नीठ नर-भव पायो।
समो एक म करो परमादो ॥इम०॥

१०— कदा च मनुष्य रो भव पासो,
तो कठे आरज क्षेत्र ठामो।
नीचे कुल में जनम लाधो ॥इम०॥

११— आर्य क्षेत्र कुल सुध आयो,
तो पूरी इन्द्रिय जीव नहीं पायो।
हीण-इन्द्रिय दुखां नो दाधो ॥इम०॥

१२— कदाच जो पूरी इन्द्रिय पाई,
तो धर्म सुणवो किहां सुख दाई।
मिथ्या मत्यां नो जोर जादो ॥इम०॥

१३— उत्तम धर्म सुणवो जे रे लह्यो,
पिण सरधा विना जीव यूंही गयो।
काम ने भोग कलण कादो ॥इम०॥

१४— भुगती इण जीव चउरासी,
शुद्ध धर्म करणी सूं मुगति जासी।
नहीं तर सुपनो एक योही लाधो ॥इम०॥

———

दोहे—

१— वाणी सुण ने परिषदा, आई जिण दिश जाय ।
'श्रेणिक' नामे नरपति, वांदी वीर ना पाय ॥

२— 'मेघ' कुमर तिण अवसरे, जोड़ी दोनूं हाथ ।
सर्धा रुच्या प्रतीतिया, दीक्षा लेसूं जग-नाथ ॥

३— चलता वीर इसी कहे, सुणजो 'मेघ' कुमार ।
जो थारो मन वैराग सूं, तो म करो जेज लिगार ॥

४— प्रभु प्रणमी घर आयने, वंदे मात ना पाय ।
हाथ जोड़ ने इम कहे, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल—५

(राग—सोजत रो सिरदार दागां रो लोभी)

१— वाणी श्री जिनराज तणी, काने पडी रे माई ।
आज अंदर री आंख जामण ! म्हारी ऊघड़ी ॥

२— बलती बोले मांय, हूं वारी जाऊं तुम तणी ।
रे जाया ! सुणी जिणंद नी वाण, पुन्याई थारी घणी ॥

३— पुत्र कहे मांय ! वाण, साची मैं सरदही, री माई ।
लागी मीठी जेम, दूध शाकर सही ॥

४— दीजे अनुमत मोय, दीक्षा लेसूं सही-री माई ।
हिवे आज्ञा री जेज, करवी जुगती नहीं ॥

५— वचन अपूरब एह, पुत्र ना सांभली-री माई ।
मूर्छागत झट थाय, माता धरणी ढली ॥

६— मोह तणे वश आज, सूरती चलती रही रे जाया ।
शीतल पवन घाल, माता बैठी थई ॥

७— पुत्र ने सांमी माय, रही छे जोवती, रे जाया !
मोहतणे वश वेण, बोले माता रोवती ॥

८— साधपणो नहीं सहल, जाया ! जामण कहे । रे जाया !
तूं नानड़ियो बाल परीषह किम सहे ॥

९— त्रिविधे त्रिविधे करी, पंच महाव्रत पालना, रे जाया !
नान्हा मोटा दोष, अहोनिश टालना ॥
१०— दोष बेयालिस टाल, करणी रे जाया ! गोचरी रे ।
भमणो भंवरा जेम, चिंता मोने लोच री ॥
११— कनक कचोला छोड, लेणी रे बच्छ काछली, रे जाया !
जाव जीव लगे वाट, नहीं जोवणी पाछली ॥
१२— न्हावे धोवे नांहि. मुखे राखे मुखपति, रे जाया !
मेला पेह्रे वेश, जिके जैन रा जती ॥
१३— ए कायर ने दुर्लभ, माताजी थे वह्यो, री माई ।
सूरा ने छे सहल, कुंवर उत्तर दियो ॥
१४— जनम मरण री बात, सहू जिणवर कही, री माई ।
दो अनुमत आदेश, दीक्षा लेसूं सही ॥
१५— पलटे रंग पतंग, जामण ! जाणो इसो, री माई ।
तिण ऊपर विश्वास, जामण ! करणो किसो ॥

दोहे—

१— माता मुख सूं इम कहे, बात सुणो मुज पूत ।
कोड घणे परणावियो, कांई भांजे घर – सूत ॥
२— रमभण्यां सामो जोइये, ए माता ना बेण ।
मोह शब्द बोले घणा, झुरे भर भर नेण ॥
३— धन जोवन रांण्या तणो, लाहो लीजे एह ।
दिन पाछा पड़ियां पछे, कीजो मन-चिंतेह ॥
४— वचन सुणी माता तणा, बोले मेघ-कुमार ।
अथिर सुख संसार ना, विणसंता नहीं वार ॥

ढाल—६

(राग—धन धन सती चंदनबाला)

१— वले माता ने कहे एमो ,
मोने धर्म तणो आगे प्रेमो ।
अब तो जेज नहीं कीजे ,
मोने आज आज्ञा जननी दीजे ॥

२— संयम दुख रो स्यूं कहेणो,
छेदन भेदन वेदन सहेणो।
नरक तिर्यञ्च दुख महा खीजे ॥मोने०॥

३— हूँ तो जामण! मरण थकी डरियो,
वीर वचन छे रस थी भरियो।
तन धन जोवन आऊ छीजे ॥मोने०॥

४— संसार ना सुख सहू काचा,
इण लोक-अर्थी जाणे साचा।
भोग विषय मे रह्या कलीजे ॥मोने०॥

५— मैं तो जाणी ए काची काया,
विललावे जिम बादल छाया।
ऐसी जाणी कहो कुण रीझे ॥मोने०॥

६— सरव संजोग मिलियो आई,
स्वारथ नी जाणो सगाई।
इसो जाणी ने संजम लीजे ॥मोने०॥

७— वार बार कहूं हे जननी!
अनुमत री ढील नहीं करणी।
जिम पेट मे पडियां पतीजे ॥मोने०॥

दोहे—

१— वचन सुणी सुत ना इसा, बोले वाणी एम।
मोह छकी माता कहे, ते सुणजो धरि प्रेम॥

२— मरतां ने, जातां थकां, राखी न सके कोय।
पिण जो आपण काढियो, तो मन डीभो होय॥

ढाल—७

[राग—पिताजी बोलो नी एकण वार]

१— धीरज जीव धरे नहींजी,
उलट्यो विरह अथाह।
छाती लागी फाटवाजी,
नयणे नीर प्रवाह–रे जाया।
तो विन घड़ी रे छ मास॥

२— कुण कहिस्ये मुज मायड़ीजी,
घड़ी घड़ी ने छेह ।
कहसूं केहने नानड़ोजी,
सबल विमासण एह-रे जाया ।।तो विन०।।

३— हरखी न दीधो हालरोजी,
बहू नहीं पाड़ी रे पाय ।
एक ही पुत्र न जनमियोजी,
हॅूस रही मन मांय-रे जाया ।।तो विन०।।

४— आंत्र-लुहण तूं माहरेजी,
कालेजा नी कोर ।
तूं वच्छ आंधा-लाकड़ीजी,
किम हुवे कठिन कठोर ।।रे जा० तो०।।

५— चढती तुझ मुख जोइवाजी,
दीहाड़ा मे दश वार ।
ते पिण भूंय भारी हूंसथीजी,
कुण चढसी चउ वार ।।रे जा० तो०।।

६— जो बालापणो संभारस्येजी,
सीयाला नी रे रात ।
तो जामण ने छांडवाजी,
सहीय न काढे बात ।।रे जा० तो०।।

७— बूढापे सुखणी हुंस्यूंजी,
होती मोटी रे आस ।
घर सूनो करि जाय छे रे,
माता मूकी नीरास ।।रे जा० तो०।।

८— दीसे आज दयामणोजी,
ए ताहरो परिवार ।
सेवक ने सामी पखेजी,
अवर कवण आधार ।।रे जा० तो०।।

९— महल कवण रखवालस्येजी,
कवण करसी सार ।
एकण जाया बाहिरोजी,
सूनो सहू संमार ।।रे जा० तो०।।

१०— वच्छ ! तूं भोजन ने समे रे,
छिवड़े वेगे सी आय ।
जो माता करि लेखवो रे,
तो तूं छोडि म जाय ॥रे जा० तो०॥

११— शाल तणी पर शालस्ये रे,
ए मुज आही-ठाण ।
प्राण हुस्ये हिवे पाहुणाजी,
भावे जाण म जाण ॥रे जा० तो०॥

१२— संयम छे वच्छ ! दोहिलो रे,
जैसी खांडा नी रे धार ।
पाय उवराणे चालनो रे,
लेवो शुद्ध आहार ॥रे जा० तो०॥

१३— सुवचन कुवचन लोक ना रे,
खमणा पड़सी रे कुमार ! ।
तूं राजकुंवर सुकुमार छे रे,
देह री न करणी सार ॥रे जा० तो०॥

१४— उत्तर परोत्तर किया घणा रे,
बाप बेटा ने माय ।
सूत्र मे विस्तार छे रे,
लीजो चतुर लगाय ॥रे जा० तो०॥

१५— हितसूं दीधी आगन्याजी,
मात-पिता चित लाय ।
राण्या बोले किण विधेजी,
ते सुणजो चित लाय ॥रे जा० तो०॥

———

दोहे—

१— सासूजी थाका सही, हिव आंगण नी बार ।
हाथ जोड़ राण्यां सहू, बोले वचन विचार ॥
२— कहिवो उवरस्ये जिकुं, जाणां छां निरधार ।
पिण इण अवसर नारी ने, कहिवा नो व्यवहार ॥

ढाल—८

[राग—राजेसर रावण हो बोलोनी]

१— सुंदर आठे मुलकंती, ऊभी महलां रे मांह ।
इण उणिहारे लोयणां, निरखो नवला नाह ॥
रहो रहो बालहा विछड़ो क्यूं इण बार ॥

२— दूजा तो सगला रह्या, मुख बोलो मीठा बोल ।
कांई ठेलो पगसूं परी, बात कहो मन खोल ॥रहो०॥

३— सुंदर मंदिर मालिया, मुलकंती नेह-विलुद्ध ।
पूरे हाथे पूजियो, परमेश्वर मन - शुद्ध ॥रहो०॥

४— आगोत्तर सुख कारणे, छती रिध छोडो आवास ।
हाथ छोडी कुण करे, पेट मांहिली आस ॥रहो०॥

५— पदमणी-परिमल पाम ने, भोगी भ्रमर नाह! ।
सुख विलसो मोसुं बालहा ! लीजे जोवन-लाह ॥रहो०॥

६— कुंवर कहे श्री वीर नी, मैं बाणी सुणी कान ।
तन धन चंचल आउखो, जैसो पीपल-पान ॥
रहो रहो कामणी अमें लस्यां संयम-भार ॥

७— अलप सुख संसार ना कुण वांछे काम-भोग ।
कड़वा फल किंपाक सा, बहुला रोग ने सोग ॥रहो०॥

८— पोखे प्रेम स्वारथ लगे, अथिर अबला नो रंग ।
च्यार दिहाड़ा उहड़ है, जेम कसूंभा नो रंग ॥रहो०॥

दोहा—

१— ए जुग जाणी कारमो, लेस्यां संयम भार ।
वचन सुणी प्रीतम तणा, वले बोले आठे नार ॥

ढाल—९

[राग—भाग्य प्रबल नृप चंदनो रे]

१— सुंदर आठे वीनवे रे,
कोई अवगुण मो में दीठ रे ।
कही ने देखाचा कंता ! मा भणी रे,
बोलो वाणी मीठ रे ॥

२— कामण कंत ने वीनवे रे,
सांभलो नणदी रा वीर रे।
पलक घड़ी देखां नहीं रे,
तो व्यापे बहुली पीड़ रे ॥कामण०॥

३— ए मंदिर मालिया रे
ए सुकमाली सेज रे।
कुंकुम वरणी मां सुंदरी रे,
मति मूको अबलासूं हेज रे ॥कामण०॥

४— कणो कदे न थांरो लोपियो रे,
जोड़ खडी रहती हाथ रे।
थां करड़ी नजर कदे न जोवता रे,
इसड़ी कदे न काढ़ी बात रे ॥कामण०॥

५— थे तो दीक्षा ना वाल्हा उठिया रे,
छोडी म्हासूं प्यार रे ।
प्राण-वल्लभ ! प्रीतम ! तो विना रे,
मो अबला ने कोण आधार रे॥कामण०॥

६— जो हेज थांरो, मो सूं घणो रे,
आंसूं नाखो केम रे।
थेई दीक्षा जो आदरो रे,
तो जाणूं साचो थांरो प्रेम रे ॥कामण०॥

७— ए वचन सुण बोली नही रे,
तब जाण्यो मेघ कुमार रे।
आप स्वारथ रीं कामणी रे,
विण स्वारथ कुण होवे लार रे ॥कामण०॥

दोहे—

१— कुंवर कहे सुन्दर सुणो, अमे लेवां छां दीख ।
पाछे रूड़ा चालिजो, एह हमारी सीख ॥
२— सासुजी रा हुकम मे, रहिजो कुल-आचार ।
पीहर सासरे तुम सही, लीजो शोभा सार ॥
३— दीक्षा महोच्छव हर्ष सूं, करे श्रेणिक महाराय ।
आठ राण्यां रो लाडलो, धन धन मेघ-कुमार ॥

४— दीक्षा ने त्यारी हुवो, मन मे हर्ष अपार।
हियो कायर रो थरहरे, ते सुणजो चित लाय॥

ढाल-१०

(बे बे तो मुनिवर वहरण पांगुरिया रे)

१— मोटी वणाई इक शीविका रे,
माँहे बेठो छे मेघ-कुमार रे।
माता रो हिवडो फाटे अति घणो रे,
विल विल कर रही आठे नार रे॥
जोयजो कायर रो हीयो थर हरे रे॥

२— संयम लेवा घर सूं नीसर्यो रे,
जिम रण मांहे निकसे सूर वीर रे।
वाजित्र बाजे शब्द सुहावणा रे,
कायर इण वेला होवे दलगीर रे॥जो०॥

३— कोईक कामण मुख सूं इम कहे रे,
दीसे नान्हड़ियो सुकमाल रे।
कुटुंब कबीलो किण विध छोडियो रे,
किण विध तोड़यो माया जाल रे॥जो०॥

४— एक एक कहे बारी जाऊं एहनी रे,
इण वैरागे छोड्यो घर-सूत रे।
जोवन वय मे सुन्दर परहरी रे,
राजा 'श्रेणिक-धारिणी' के रो पूत रे
जोइजो समकितनो रस परगम्यो रे॥

५— पडदायत नारी मंदिर मालिये रे,
जोवे जाल्यां में मूंडो घाल रे।
सुंदर कमलां री केल री कांब ज्यूं,
देखो पापी मूके छे आठे बाल रे॥जो०॥

६— धरम रा धेखी धेटा इम कहे रे,
बोले मूंडे सूं खोटी बाण रे।
रिध सां दा रमणी पामी अति घणी रे,
पिण परमेसर नही देवे खाण रे॥जो०॥

७— बाई कोई परणी जावे सासरे रे,
मगनो गावे संसार नो भाग रे।
ज्यूं काचे हिये रा मानव झूरे घणा रे,
नहीं धर्म उपर तेहनो राग रे ॥जो०॥

८— एक एक बोले इण परे रे,
धन धन इण कुंवर तणो अवतार रे।
मूकी इण काया माया कारमी रे,
आप तिरसी ने ओरां ने तार रे ॥जो०॥

९— इण राणी इंद्राणी सम छोड दी रे,
वले भाई सजन मायने बाप रे।
नरक दुखां सूं इण बीहते रे,
जिम कांचली छोडे सांप रे ॥जो०॥

१०— कोइक भुरखी नाखी इम कहे रे,
बोले ज्यूं मनरी आवे दाय रे।
ज्ञानी तो जाणे गेला सारखा रे,
ए खूत माखी ज्यूं खेल मांयरे ॥जो०॥

११— चारण भाट बोले विरुदावली रे,
जय जय बोले शब्द कर घोष रे।
कर्म आठे ही वेरी जीतने रे,
वेगी थे लीजो अविचल मोख रे ॥जो०॥

दोहे—

१— नगर बीच ही नीकल्या, गया वीर जिणंद रे पास ।
वंदणा करी कर जोड़ ने, कहे तारो भवजल तास ॥
२— मूंडे सोलो चढ़ रही, जाणे बरत्या मंगल-माल ।
गहणा उतारे डील थी, हुवो वैराग में लाल ॥

ढाल—११

(राग—सहेल्यां ए आंबो मोरियो)

१— कुंवरजी गहणा उतारिया,
माता खोला मांहे लीधा रे।

सर्प बिच्छू अलगा करे,
जिम कुंवर परा नाख दीधा रे।
वैरागी हो संयम आदरे॥

२— माता देखे बेटा भणी,
जिम जागे मोह अपारो रे।
ठलक ठलक आंसू पड़े,
जाणे तूट्यो मोत्यां रो हारो रे॥वैरागी०॥

३— प्रभुजी सूं करे वीनती,
जोड़ी दोनूं हाथो जी।
माहरो कुंवर बीहनो संसार थी,
थांने सूंपूं कृपानाथो जी॥वैरागी०॥

४— मोने इष्ट ने कांत वालो हुंतो,
हूँ देखी ने पामती साता रे।
पिण माहरो राख्यो नां रहे,
इण विध बोले माता रे॥वैरागी०॥

५— एहनी सार संभार कीजो घणी,
मायड़ी इण पर दाखे रे।
कुंवर आगे हिबे आयने,
देखो किण विध माता भाखे रे॥वैरागी०॥

६— बेटा सूरपणे व्रत आदरे,
तो सूरपणेहीज पाले रे।
संयम चोखो पालने,
दोनूं कुल उजवाले रे॥वैरागी०॥

७— मोने तो सेवाणी तमे,
अब तो क्रिया करायो रे।
लीजो पदवी शिवपुर तणी,
कांई दूजी म रोवाये मायो रे॥वैरागी०॥

८— आठ नारी ने मायड़ी,
बाप बांधव ने परिवारो रे।
सहू आंख्या नीझरणा नांखता,
पाछा आया घर मझारो रे॥वैरागी०॥

दोहा—

१— धारिणी घर में आय ने, झुरे आठे ही नार ।
मेहलां में कुंवर दीसे नहीं, रोवे वारंवार ॥

ढाल–१२

(राग—संयम थी सुख)

१— मेघ–कुंवर संयम लियो, छोड्यो माया जाल–मुनीसर ।
साधां री रीत हुती जिका, साचवे कालो–काल–मुनीसर ॥
जोयजो गति कर्मां तणी ॥

२— संथारो कियो सांभरो, 'मेघ' रिखि तिणवार–मुनीसर ।
साध घणा प्रभुजी खने, तिण सूं आयो छेहलो संथार ॥मु०जो०॥

३— विनय मार्ग जिनधर्म छे, राव रंक रो कारण नहीं कोई–मुनी० ।
आपसूं पहलां नीकल्या, ते मुनिवर बडा होई ॥मुनी० जो० ॥

४— वैरागे राज छोड ने, हुवो नव–दीक्षित अणगार–मुनीसर ।
उण दिनरो थो नीकल्यो, तिण सूं चित्त चले संयम बार ॥मु०जो०॥

दोहा—

१— सिख हुवो श्री वीर नो, आणी वैराग भाव ।
कर्मां रे वश साधुजी, इमे करे पिछताव ॥

ढाल–१३

(राग—मान न कीजे रे मानवी)

१— कोई परठन जावेजी मातरो,
रात तणे समय मांयजी ।
किण री ठोकर लागवे,
कोई ऊपर पड़ी जायजी ॥
मेघ रिखी मन चिंतवे ॥

२— कोई लेवा जावेजी वांचणी,
पग तले आंगुली आयजी ।
पगनी रज पड़ साथ रे,
अरति आई मन मांयजी ॥मेघ०॥

३— कठे प्रीत साधां तणी,
कठे राण्या रो हेजजी ।
अठे धरती सोवणो,
कठे लुंबाली सेजजी ॥मेघ०॥

४— अठे काठ पातरा,
कठे सोना रा थालजी ।
अठे मांग ने खावणो,
कठे घर रा चावल दालजी ॥मेघ०॥

५— जदि हूँ घर मे हुँतो,
म्हारे माथे हुंती पागजी ।
एहिज साधु बुलावता,
धरता मोसूं रागजी ॥मेघ०॥

६— आगे साधुजी और था,
अबे हो गया और जी ।
मैं तो माथो मुंडायने,
बडो पसायो जोरजी ॥मेघ०॥

७— हूँ राजा श्रेणिक रो दीकरो,
म्हारे कुमी नहीं थी कायजी ।
पिण यांतो माथो मूंड ने,
घाल्यो खोगी री भरती मांयजी ॥मेघ०॥

८— रात हुई पट मासनी,
चिंतवे मनरे मांय जी ।
दुख रा दाधा मांणसा,
यम–वारो किम जायजी ॥मेघ०॥

९— आवण जावण ऊठणो,
साधां मांडी ठेलम ठेलजी ।
आखी राती मे नहीं सक्यो,
आंख्या दोनूं मेल जी ॥मेघ०॥

———

ढाल—१४

(राग—काची कलिगाँ)

१— कोई चांपे साथरो रे हां, कोई संथटे अणगार।
मेघ मुनीमरू ॥
कोइक छांटे रेणुका रे हां, चिंतवे मेघ कुमार मेघ० ॥
२— कोइक ढाले मातरो रे हां, कोइक अंग ठवंग मेघ० ।
खेद पामे तिण अवसरे हां, चारित्र सूं मन भंग मेघ० ॥
३— राज ने रिध रमणी तजी रे हां, स्वरूप बहुला दाम मेघ० ।
परवश पड़ियो आयने रे हां, किम सुधरसी काम मेघ० ॥
४— कुटुम्ब न्यातिला माहरा रे हां, धरता मोसूं प्रीत मेघ० ।
खमा खमा करता सदा रे हां, ते पाछे रही रीत मेघ० ॥
५— किहां प्रमदानी प्रीतड़ी रे हां, किहां साधु नी रीत मेघ० ।
किहां मंदिर ने मालिया रे हां किहां सुन्दर ना गीत मेघ० ॥
६— किहां फूल किहां कांकरा रे हां, किहां चंदन किहा लोच मेघ० ।
पूरव भोग संभार तो रे हां, मेघ करे मन सोच मेघ० ॥
७— मेघ मुनि कोपे चढ़योरे हां, चिंतवे मन में एम मेघ० ।
लट पट करी दीक्षा दीवी रे हां, अबे करे छे केम मेघ० ॥
८— परीसा चीतारे घणा रे हां, आया कायर भाव मेघ० ।
जोग भागो संयम थकी रे हां, सीदावे मन मांय मेघ० ॥
९— अजे कांई विगड़यो नहीं रे हां, पहली रात विचार मेघ० ।
मन मान्यो करूं माहरो रे हां, एतो छे व्यवहार मेघ० ॥
१०—मैं कांई न लीधो वीर नो रे हां. मैं नवि खाधो आहार मेघ० ।
झोली पातरा सूंपने रे हां, जास्यूं राज मझार मेघ० ॥

दोहे—

१— चारित्र थी चित्त चल गयो, मन मे थयो संताप ।
घरे जावण रो मन हुवो, इसो उगटियो पाप ॥
२— चंदन अगर ने गंधवत्ती, लेप लगाऊं अंग ।
क्रीड़ा करूं संसार मे, नाटक नव नव रंग ॥
३— लोक-व्यवहार राखण भणी, वीर समीपे जाय ।
पूछण री विरिया हुई, तरे लाज आई मन मांय ॥

ढाल-१५

(राग—कोयल पर्वत धूंधलो रे)

१— प्रभात समे उतावलो रे,
मेघ आयो वीर जिणंदजी रे पास हो-मुनीसर।
पडि-कमणो पिण नवि कियो रे,
मेघ ऊभो चित्त उदास हो-मुनीसर।
वीर जिणंद बुलावियो रे मेघ !

२— श्रेणिक नो तूं दीकरो रे,
मेघ ! धारिणी माता थाय हो-मुनीसर।
संयम थी मन ऊतर्यो रे,
मेघ ! थारे कारयूं आई दिल मांय हो मुनी० ॥वीर०॥

३— संयम-दुखां सूं बीहतो रे,
मेघ ! ते आण्यो कायर-भाव हो-मुनीसर।
मन मे सिदायो अति घणो रे,
मेघ ! ते लाधो नहीं तिणरो साव हो-मुनी० ॥वीर०॥

४— छोडी थे माया काया कारमी रे,
मेघ ! वले पाछो मती न्हाल हो-मुनीसर।
ओ तो दुःख तूं स्यूं गणे रे मेघ !
पूरब भव संभाल हो-मुनीसर ! ॥वीर०॥

५— तिहां थी मरने ऊपनो रे मेघ !
श्रेणिक - घर अवतार हो-मुनीसर !
पहिले भव हाथी हुतो रे मेघ !
हथणियां रो भरतार हो-मुनीसर ॥वीर०॥

६— नरक तिर्यंच मे तूं भम्यो रे मेघ !
सह्या दुःख अघोर हो-मुनीसर।
सगली जायगा ऊपनो रे मेघ !
खाली न रही कोई ठोर हो-मुनीसर ॥वीर०॥

७— भव अनंतां भमता थकां रे मेघ !
लाधो नर अवतार हो-मुनीसर।
नर-भव चिंतामणि सारिखो रे मेघ !
एले जनम मति हार हो-मुनीसर ॥वीर०॥

८— एतो दुख जाणो मती रे मेघ !
रहे तूं मन सूं मधीर हो-मुनीसर ।
संसार समुद्र तीरे पामियो रे मेघ !
जेज म करि बैठो तीर हो-मुनीसर ॥वीर०॥

९— [सातमो सुख चक्रवर्ती तणो रे मेघ !
आठमो देव-विमाण हो-मुनीसर ।
नवमो सुख साधां तणा रे मेघ !
दशमो सुख निर्वाण हो-मुनीसर] ॥वीर०॥

१०— पूर्व भव दुख सांभल्यो रे मेघ !
हाथी रो भव जाण हो-मुनीसर ।
पूरव-भव सभारतो रे मेघ !
उपनो जाति-स्मरण ज्ञान हो मुनी० ॥वीर०॥

११— याद आयो भव पाछलो रे मेघ !
चमक्यो चित्त मझार हो-मुनीसर ।
जनम मरण सूं थर हर्यो रे मेघ !
पाछो हुवो सुरति संभार हो-मुनीसर ॥वीर०॥

———

दोहे—

१— भागो थो पिण बावड्यो, वीर लियो समझाय ।
ज्यूं खुरड़ री खाधी बाजरी, मेह हुवां बूंठो बंधाय ॥
२— पाके खेत रा मानवी, करे घणा जतन ।
ज्यूं 'मेघ' मुनि संयम तणा, करे कोड़ जतन ॥
३— संयम अमोलक ते कह्यो, भांजे भव भव रा दुःख ।
शिव-रमणी वेगी वरे, जावे सगला दुख ॥
४— कारमा खेत संसार ना, किण विध जावे भूक ।
मेह तणी कसर रहे, तो ऊभा जावे सूक ॥
५— पड़तो थो जिम टापरो, दीधी थूंणी लगाय ।
तिम 'मेघ' संयम थी डिग्यो, पिण वीर दिधो सहाय ॥

ढाल-१६

(राग—पत्तनी)

१— 'मेघ' ने वीर समझायो,
तरे धरम अमोलक पायो।
वले शंका न राखी कायो,
ए परमार्थ साचो पायो॥

२— इण रे मन मे इसड़ी आई,
पिण वीर हुवा रे सहाई।
इण रा परिणाम हुवा था खोटा,
पिण वाहरू मिलिया मोटा॥

३— परिणामों मे पड़ियो फेर,
पिण वीरजी लीधो घेर।
वले दीक्षा लीधी तिण वार,
मन में हर्ष हुवो अपार॥

४— मन ठिकाणे दियो आण,
भगवन्त बोले वाण।
दोय नेणां री करसी सार,
और डील साधां ने त्यार॥

५— घणा काल संयम पाली,
तिण आतम ने उजवाली।
मन वैराग तिहां वाली,
तप कर देही गाली॥

६— चढ्यो पर्वत ऊपर सार,
कियो पादोपगमन संथार।
तिहां थी कीनो मुनि काल,
पहोतो विजय विमाण रसाल॥

७— देव नी थित पूरी करसी,
महाविदेह में अवतरसी।
तिहां भरिया घणा भंडार,
माय बाप कुटुम्ब परिवार॥

८— जठे धरम ध्यानी रो पासी ,
वठे आठे ही करम खपासी ।
जठे केवल ज्ञान उपासी ,
गतो मुगति नगर में जासी ॥

९— जनम मरण रो करसी अंत ,
लेसी सासता सुख अनन्त ।
सूत्र ज्ञाता तणे अनुसार ,
रिख 'जयमलजी' कह्यो विस्तार ॥

---

(९)

❀ कार्तिक सेठ ❀

दोहे--

१— अरिहंत सिध साधु सरव, ए पांचूं पद नवकार ।
इणांनि जेहने आसता, ज्यां रो खेवो पार ॥

२— प्रथम देवलोक ने विषे, शक्र इन्द्र ना भाव ।
किण कारण करि ऊपनो, ते सुणजो धरि चाव ॥

३— इणहिज जंबूद्वीप में, भरत क्षेत्र मांय ।
'हथणापुर' नामे नगर, 'कार्तिक' सेठ कहाय ॥

४— बिंभो जेहने अति घणो, धन धीणा ना थाट ।
करे व्यापार गुमासता, एक हजार ने आठ ॥

ढाल–१

(राग—नींदड़ली नी)

१— 'मुनि-सुव्रत' प्रभु पधारिया,
साधां रे परिवारोजी ।
'हथणापुर' ना बाग मे,
आय उतरिया सुखकारोजी ॥

२— जग-तारण जग-गुरु बीसमां,
चोतीस अतिशय धारोजी।
सहस्र ने आठ लक्षण धणी,
और वाणी तणा गुण भारोजी ॥जग०॥

३— नर–नारी वांदण गया,
आयो कार्तिक सेठोजी।
जिनवर – वंदना करी,
बेठो छे जिनवर भेटोजी ॥जग०॥

४— जिनवर दीधी देशना,
विचित्र प्रकार ना भावोजी।
आगार ने अणगार नो,
चतुरां सुण्यो धरि चावोजी ॥जग०॥

५— कार्तिक सेठ सुण हर्षित थयो,
मैं सरध्या तुम्हारा वायोजी।
साध पणो लेई न सकूं,
व्रत बारह दो करायोजी ॥जग०॥

६— जाणी पीछी आकूट ने,
हूँ त्रस जीव नहीं मारूंजी।
विन अपराधे गुनाह विना,
पहिलो व्रत इम धारूंजी ॥जग०॥

७— कन्या नो कूड़ बोलूं नहीं,
धरती थापण गायोजी।
कूड़ी साख भरूं नहीं,
राज दुवारे जायोजी ॥जग०॥

८— खात्र खणी, गांठी छोडी ने,
ताला कूंची घर वाट वाड़ोजी।
लाधी वस्तु नट्टूं नहीं,
ए कराय दो हितकारोजी ॥जग०॥

९— आपरी परणी मोकली,
बीजी नारी नो त्यागोजी।
एक करण जोग भांगा जुदा,
न धरूं देवी सुं रागोजी ॥जग०॥

१०— इच्छा-परिमाण व्रत पांचमो,
परिग्रहो इम जाणोजी !
छट्ठो दिस तणो कियो,
जाव बारह व्रत प्रमाणोजी ॥जग०॥
११—आनंद नी परे जाण जो,
व्रतां एहीज रीतोजी ।
दृढ-धर्मी श्रावक हुवो,
एक मुगत जावण सूं प्रीतोजी ॥जग०॥

दोहे—

१— जीव अजीव पुन्य पाप ही, आस्रव संवर धार ।
निरजरा बंध मोक्ष रो, जाण पणो छे सार ॥
२— नव तत्व जाणे निर्मला, बीजाई बोल ने चाल ।
डिगायो रे डिगे नही, हुवो समकित मे लाल ॥

ढाल—२

(राग—अलबेल्या नी देशी)

१— आज पछे नहि वांदिवा रे लाल,
जिनधर्म के बार-सुविचारी रे ।
तीन से तेषठ पाखडिया रे लाल,
नही करूं पूजा सत्कार सुवीचारी रे ॥
२— कार्तिक नो समकित भलो रे लाल,
समकित सूं सुधरे काज-सुवि० ।
वैमानिक सुर पद लहे रे लाल,
पामे शिवपुर राज सुविचारी रे ॥का०॥
३— अन्य तीर्थी ना देवता रे लाल,
ब्रह्मा विष्णु महेश-सुविचारी रे ।
ते वांदूं पूजूं नही रे लाल,
जाण सुगति नी रेस सुविचारी रे ॥का०॥
४— अरिहंत ना साधु हुंता रे लाल,
मिल्या निन्हव मे जाय-सुविचारी रे ।

तेहने पिण वांदूं नहीं रे लाल,
किण ही ने हित लाय सुविचारी रे ॥का०॥

५— पहिला बतलाऊं नही रे लाल,
एक वार बहु वार सुविचारी रे ।
नहीं बहराऊं माहरा हाथ सूं रे लाल,
असणादिक आहार सुविचारी रे ॥का०॥

६— घर मांहे बेठो जितरे रे लाल,
छ छंड नो आगार सुविचारी रे ।
राजा नो हुकम करे रे लाल,
गण समुदाये कह्यो सार सुविचारी रे ॥का०॥

७— अथवा देव पीतर कहे रे लाल,
कोई बलवंत थाय सुविचारी रे ।
कोई गुरु-जन मोटको रे लाल,
नागो अड़े कोई आय सुविचारी रे ॥का०॥

८— अथवा मेह खंच करे रे लाल,
ऊपर पड़ जावे काल सुविचारी रे ।
तो देणो मोने मोकलो रे लाल,
अटवी मांही रसाल सुविचारी रे ॥का०॥

९— मोक्त मारग नी खप करे रे लाल,
चाले सूत्र सुग्रंथ सुविचारी रे ।
ते कलपे मुझ वांदवा रे लाल,
सुसाधु निर्ग्रन्थ सुविचारी रे ॥का०॥

१०— ज्यां ने बहरावूं म्हारा हाथ सूं रे लाल,
असणादिक आहार सुविचारी रे ।
वस्त्र पात्र कांबली रे लाल,
औषध भेपज सार सुविचारी रे ॥का०॥

११— मरजादा बावीस बोल नी रे लाल,
पनरे कर्मादान सुविचारी रे ।
अनरथ-दंड निवारियो रे लाल,
पोसा पड़िकमणा बहुवान सुवि० ॥का०॥

—— ——

दोहा—

१— गैरिक परिव्राजक तिहां, आयो 'हथिणापुर' मांय ।
तपस्या कष्ट घणो करे, नर-नारी बहु जाय ॥
२— नगर लोग राजी घणा, तापज कष्टज देख ।
वीजा नर-नारी जिके, करेज भक्ति विशेष ॥
३— तापस ने वांदे घणा, लुलि लुलि लागे पाय ।
अवर लोग बहुला गया, पिण कार्तिक सेठ न जाय ॥
४— नामी जादा थो नगर मे, तापस पाम्यो धेख ।
मोने वन्दन ना करे, सो फल लेसी देख ॥

ढाल-३

(राग—पुण्य सदा फले)

१— तापस मच्छर बहु कियो रे,
राजा नमे जो मोय ।
सेठ मुजने नहि नम्यो रे,
इचरज मोटो होय रे ॥

२— धन जिनधर्म ने,
धर्म थी सुध होवे काज रे ।
सुख साता हुवे,
पर-भवे अविचल राज रे ॥ध०॥

३— निहुत जिमावे बहु जणा रे,
करे वीनती सराय ।
राजा री भगत ज देखने रे,
तापस बोल्यो वाय रे ॥धन०॥

४— सेठ जिमावे मो भणी,
तो हूं जीमसूं हे राय ! ।
राजाजी बुलाय ने,
कहे भगत करो जिमाय रे ॥धन०॥

५— कार्तिक सेठ मन मांहे चिंतवे रे,
राजा वचन कहे एम ।

चांदणा मोय करवी नहीं,
जिमावणो जेम रे ॥धन०॥

६— छ छंडी आगार छे रे,
जो राजा हुकम कराय।
तो मोने देणो पारणो रे,
इम सेठ घरां ले जाय रे ॥धन०॥

७— कार्तिक ने तापस कहे रे,
खीर कराय रढाय।
घणा पिस्ता दाख घालने रे,
कहुं ज्यूं भगत चढाय रे ॥धन०॥

८— खीर रंधावे कार्तिके रे,
तापस बैठो जे आय।
खीर पुरसी थाल मे,
दियो बाजोट बिछाय रे ॥धन०॥

९— तपसी कार्तिक ने कहे रे
मोर तमारा मांड।
थाल हेठे मोर मांड दे,
नहितर करसूं भांड रे ॥धन०॥

१०— तब कार्तिक इम जाणियो रे,
संकट पड़ियो मोय।
इण विरिया कह्यो ना करूं,
तो राजा बेराजी होय रे ॥धन०॥

११— सेठ मन रा बल सूं मांडियो रे,
तापस ने देई पूठ।
नमन सिर इण ने ना करूं,
स्यूं करसे एह रूठ रे ॥धन०॥

१२— ऊनी खीर परूस ने,
मोरां ऊपर मूकी थाल।
सेठ मोर फेर्या नहीं,
निज थाल सूं उपड्या छाल रे ॥धन०॥

१३—कठिन परीषह सेठ सह्यो,
जाणे अजयणा थाय।
रखे थाल हेठो पड़े रे,
तो नाना जीव मार्या जाय रे ॥धन०॥

१४— तपसी मन हर्षित हुवो रे,
बलता मोर ज देख।
अब नाक थारो किहां रह्यो,
ऐसो द्वेष सेख रे ॥धन०॥

१५— सेठ कहे तापसा रे,
कर्म न छोडे कोय।
भले भलो ने बुरे बुरो रे,
बांध्या उदय आय होय रे ॥धन०॥

१६— हलवे हलवे जीमतां रे,
मोरां ऊपर चेंटोजी थाल।
पोली ज्यूं उतरी चामड़ी रे,
एह बात सुणी भूपाल रे ॥धन०॥

१७— तापस मानता घट गई रे,
मिटियो आदर मान।
सेठ भणी उपसर्ग कियो रे,
ज्यूं हार्यो जीतो चोर रे ॥धन०॥

दोहे—

१— कार्तिक सेठ धर्म-दृढ घणो, समकित सरधा धार।
श्रावक-प्रतिमा पांचमी, हुही छे सो बार॥

२— मन वैराग तब ऊपनो, जाण्यो अथिर संसार।
वांणोतर सुं चर्चा करे, लेणो संजम-भार॥

३— सेठ कहे संजम ग्रहूं, हिवे थे करसो केम।
बलता वांणोतर कहे, वेरागे धर प्रेम॥

ढाल—४

(राग—हाथ जोड़ी ने वीनवे)

१— बलता वांणोतर कहे,
थे लेसो संजम-भार हो-साहिब।

आलंबन मोने किसो.
बीजो कुण आधार हो-साहिब ॥

२— भव-थित पाकी हो भव तणी,
गुमासता बहु होय हो-साहिब।
जेसो साथ सेठ नो कियो,
इसड़ा विरला होय हो-साहिब ॥भव०॥

३— सेठ कहे थांरे मन हसी,
संजम सेती प्रेम हो-भवियण।
तो हिवे ढील करो मती,
ज्यूं सुख थाय तेम हो-भवियण ॥भव०॥

४— घर थापो पुत्रां भणी.
जिम सहू सजन जिमाड़ हो-भवि०।
ओच्छव महोच्छव बहु किया,
लीधो संजम-भार हो-भवियण ॥भव०॥

५— क्रोध तज ने नीकल्या,
एक हजार ने आठ हो-भवियण।
कार्तिक सेठ सुखी हुवो,
करि तपस्या पुण्य थाट हो-भवि० ॥भव०॥

६— क्रिया करतूत आचार शुद्ध,
बहु बरस संजम पाल हो-भवियण।
सुध संथारो साचवे,
काल-अवसर करि काल हो-भवि०॥भव०॥

७— प्रथम देवलोक ऊपना,
सुधर्मावतंसक विमान हो-भवि०।
दोय सागर ने आऊखे,
जाणे दशो दिसी ऊगा भान हो-भवि० ॥भव०॥

८— शक्र - सिंहासन ने विषे,
आंगुल असंख्याता भाग हो-भवि०।
बत्तीस बरस जवान ज्यूं,
शय्या थी उठे जाग हो-भवि० ॥भव०॥

९— बत्तीस लाख विमान नो,
देव हुवो सरदार हो-भवियण।
सोले सहस्र आत्म-रखो,
सात अनीका सार हो-भवियण ॥भव०॥
१०— साते अनीकां रा अधिपती,
अग्र महीषी आठ हो-भवियण।
वैक्रिय रूप इन्द्र करे,
बत्तीस विध नाटक थाट हो-भवि०॥भव०॥
११— ए सरिखी करणी करी,
त्रायस्त्रिंशक तेतीस हो-भवियण।
पुरोहित थानक इन्द्र ने,
उपना जिम ईश हो-भवियण ॥भव०॥
१२— चौरासी सहस्र देवता,
चोकी च्यारूं दीस हो-भवियण।
रुखवाला एह पाखती,
त्रण लाख सहस्र छत्तीस-हो भवि०॥भव०॥
१३— परिषदा तीन कोट पाखती,
बाहिरली मझ मांय हो-भवियण।
इन्द्र नी सेवा करे,
पूरब पुण्य-पसाय हो-भवियण ॥भव०॥
१४— ऊंचा जोजन पांच से,
महल झरोखा सोभाय हो-भवियण।
जोत्यां जोर विराजती,
जोतां त्रपत न थाय हो-भवियण ॥भव०॥
१५— कोट ऊंचो जोजन तीन से,
सो जोजन ऊंचो मूल हो-भवियण।
पचास योजन चोड़ो बीच मे,
पचवीस ऊपर अतूल हो-भवियण ॥भव०॥
१६— बाग बण्या चिहुँ पागती,
मेहलां पंगत ठाय हो-भवियण।
सुधर्मा सभा वडी,
दीठां आवे दाय हो-भवियण ॥भव०॥

१७— अढाई सो जोजन तणा,
ऊंचा पोल ना बार-भवियण।
आधा कह्या चोड़ तिपणो,
इन्द्र-कील की बाड़ हो-भवियण ॥भव०॥

१८— पेंसठ भोम पोलां ऊपरे,
तेतीस ने भोम ने मांय ह-भवियण।
सिंहासन शक्र इन्द्र नो,
जीव सुख विलसाय हो-भवियण ॥भव०॥

दोहे—

१— गेरिक नाम परिव्राजको तापस ना व्रत पाल।
प्रथम स्वर्ग मे ऊपनो, काल मास करि काल॥

२— 'ऐरावत' हाथी पणे, वैक्रिय रूप बणाय।
इन्द्र पासे ऊभो रह्यो, इन्द्र बेसण लागो आय॥

३— विभंग ज्ञाने ऐरावत, जाण्यो कार्तिक नो जीव।
एह चढे मो ऊपरे, दु:ख पाम्यो अतीव॥

४— चढ़ता मोर पाछा करे, वैक्रिय हाथी बणाय दोय।
दोय रूप इंदर किया, इचरज पाम्यो जोय॥

ढाल—५

[राग—चेतो भव जीवां चेतो]

१— हाथी च्यारू रूप बणाया,
जब इन्द्र च्यार कराया।
इन्द्र अवध देई जोयो रे,
ए तापस नो जीव होयो॥

२— मोय परीषह दीयो अधीरो रे,
जीमी वलती मोंरा खीरो।
इण घाल्यो नाक ने हाथो रे,
हिवे इण केरी वातो॥

३— तापसिया ! ते गर्वज आण्यो रे,
पिण हिवे ओलखि तोहि जाण्यो।

थारा कर्म आया हिवे आडा रे,
इतरा चरित काहे करे पाडा ॥

४— चलती खीर जीमी गोरां भारी रे,
हिवे आयां तणी असवारी।
उही राजा नो पख सारो रे,
पिण कर्म न छोडे थारी लारो रे॥

५— ऐरावत जाणी साची वातो रे,
मैं कर्म किया साक्षातो।
सिलाम कीधी सूंड पसारो रे,
मोने अंकुश थी मती मारो रे॥

६— माहरा शिर में मति दो ठाकर रे,
तुमे ठाकुर ने हूँ चाकर।
छोरू हुवे केई खोटा रे,
पिण मावित सदा होवे मोटा रे॥

७— जद बोल ऊपर मे आण्यो रे,
हिवे थांरो पराक्रम जाण्यो।
मोने मीठा वचन थे भाखो रे।
कृपा दया भाव दिल राखो रे॥

८— म्हारो कष्ट न खाली वूहो रे,
तिण सूं थारो वाहण हुवो।
थोड़े आऊखे बांधे पालो रे,
जिको वाहण असंख्या कालो रे॥

९— च्यार पल्य प्रमाणो रे,
ऐरावत आउखो जाणो।
इण इसड़ी नरमाई कीधी रे,
इन्द्र जब दिलासा दीधी॥

१०— हूं जतन करीसुं थारो रे,
तूं ऐरावत अवतारो।
जब माहरी होसी असवारी रे,
तब तूं लार नो लारी॥

११— इन्द्र दीधो हरख नो दुबो रे,
सुण देवता राजी हुवो।
इन्द्र लारे पगला धरसूं रे,
तो हूँ प्रभुजी रा दरसण करसूं ॥

१२— बत्तीस लाख विमान नाथो रे,
एक पल्य सागर रो साथो।
समदृष्टि नो चाकर थायो रे,
संगत थी सुधर जायो ॥

१३— दोय सागर आऊ कालो रे,
बज्र आहावद ही रसालो।
वेरी ऊपर आवध मारे रे,
तो छमास वेदन मारे ॥

१४— इन्द्र इन्द्राणी वैक्रिय बनावे रे,
दोय जंबूद्वीप भरावे।
विपे द्वीप असंख्याता धरसी रे,
भर्या न भरे नहीं भरसी ॥

१५— मेरु-गिरि मरयादा छे छती रे,
शक्र दक्षिण दिश अधिपती।
हुकम क्यारू लोक-पालो रे,
भरते बुरो भलो हुवे चालो ॥

१६— दोय सागर आयू पुरो करसी रे,
चव महाविदेह अवतरसी।
अन धन भर्या भंडारो रे,
तज लेसी संजम-भारो ॥

१७— करणी करी केवल पामी रे,
मुगती जासी कर्म खपाई।
सूत्र कथा अनुसारे ए भाखी रे,
रिख 'जयमलजी' उपयोग दिल राखी ॥

———

(१०)

❀ सती-द्रौपदी ❀

दोहा—

१— शील वडो वरतां मध्ये, मंत्रों में नवकार ।
दानां मांहि वडो अभय, करदे खेवो पार ॥

२— ज्ञानां में केवल वडो, ऋषियां में गौतम नेम ।
सतियां मांहि शिरोमणि, जोवो पांचाली जेम ॥

३— पर-वश पड़ियां द्रौपदी, 'पद्मोत्तर' के पास ।
शील सावतो राखियो, सफल फलित सुआश ॥

४— भरत क्षेत्र मांहे भलो, 'कंपिल पुर' नगर रसाल ।
राज करे रलियामणो, 'द्रुपद' नाम भूपाल ॥

५— राजा राणी रंग सूं भोगवे लील विलास ।
चूलनी-उदरे ऊपनी, देवी गरभावास ॥

६— नव मास पूरा थया, जनमी पुत्री जाम ।
हरष विनोद वधावणा, कीधा महोच्छव ताम ॥

७— द्रुपद-सुता तिण द्रौपदी, नाम दियो अभिराम ।
पांच धायां पालीजती, बुद्धि भली गुण-धाम ॥

ढाल—१

[राग—विंछियानी]

१— कुंवरी रूप मांहे रलियामणी,
मुख बोले अमृत-वाण रे लाला ।
मीठी शाकर कंदसी,
बले भासे हित मित जाण रे लाला ।
नयण सलूणी रे कन्यका ॥

२— अधर शशी सम सोभतो,
पुनि पूरण भरियो भाल रे लाला ।
नयन-कमल जिम विकसता,
बेहूं बांह कमल नी नाल रे लाला ॥नय०॥

३— नाशिका दीपे शिखा समी,
नकवेसर लहे नाक रे लाला।
दंत जिसा दाड़िम कुली,
मृग-नयनी सूरत पाक रे लाला ॥नयन०॥

४— द्रुपद राजा नी दीकरी,
चूलनी री अंग-जात रे लाला।
'द्रौपदी' नामे कन्यका
रूप घणो विख्यात रे लाला ॥नयन०॥

ढाल—२

(राग—नित करूं साधुजी ने वंदना)

१— चूलनी राणी तिण अवसरे,
कुंवरी ने सिणगारी ए।
रतन-जड़ित री मूंदड़ी,
गहणा सोभे अति भारी ए॥
सुणजो थे चरित्र सुहामणो॥

२— इक दिन माता तेहने,
साथे दीनी सहेली ए।
खोजा दास्यां सुं परवरी,
पिता रे मुजरे मेली ए ॥सुणजो०॥

३— पिता देखी इम चिंतवे,
किण राजा ने परणाऊं ए।
पछे तो इण रे भाग रो,
निवड़े भूंडो के साहू ए ॥सुणजो०॥

४— परण्यां पूंठे पुत्री भणी,
आवे मन अपसोसो ए।
कदाच कोई दुख हुवे,
तो देवे वावलिया ने दोसो ए ॥सुणजो०॥

५— स्वयंवरा-मंडप मंडाय ने,
निजरां देखाढ़ूं भरतारो ए।
भूंडो भलो निज भाग रो,
दोप नहीं पछे म्हारो ए ॥सुणजो०॥

दोहे—

१— इण चिंतव राजा तिहां, स्वयंवरा-मंडप मंडाय ।
गेली दूत जुश जुश, राजिंद भणी तेड़ाय ॥
२— देश देश रा राजवी, करता झाक-जमाल ।
वाची कागद ऊठिया, जान सजी तत्काल ॥
३— मेली आडम्बर घणा, आणी अधिकी चूंप ।
आय बैठा तिण मंडपे, बडा बडेरा भूप ॥
४— कृष्ण प्रमुख सहु राजवी, बैठा सिंहासन पाट ।
वर-माल देखण भणी, मिल्या नर-नारी ना थाट ॥
५— रथ बैठी ने सचरी, हुवो खाड़ेती भ्रात ।
भाटण देवे विरुदावली, आरीसो लेई हाथ ॥
६— आवि स्वयंवर मंडपे, प्रथम कृष्ण नर-नाथ ।
दूहा बोले भाटणी, सुणो सहू को साथ ॥

ढाल–३

[राग – चढो चढो लाडा वारम]

भाटण- १— द्वारामति नो साहिबो-कृष्ण नरेसर तेज सवायो,
वर परणो बाई ! ओ रायजादो ।
छिनू हजार गोर्यां रो लाडो,
सांवल वरण गुणां रो गाडो ॥वर०॥

२— ज्यां सूं तीन खड मांहे नहीं आडो,
वर परणो केसरियो लाडो ॥वर०॥
चंप-कली अधिको थारो रूप,
भमर भलो बाई सोभे भूप ॥वर०॥

द्रौपदी- ३— इण दुल्हा मे तो दूषण गेर,
चंपा ने भमरे तो आदू वेर ॥नहीं परणूं ओ०॥
ओ दाय बैठो नहीं भूपाल,
भाटण तू अब आगी चाल ॥
नहीं परणूं ओ राय-जादो ॥

भाटण-	४—	चंपा नगरी रो राजा साहू, सूर वीर नाम इण रो 'राहू' ओ सोहे जिम सेन्ये गयंदो, तूं सोहे जिम पुनम-चंदो ॥वर०॥
द्रौपदी-	—५	राहू तो चन्द्रमा रे आडो आवे, तरे लोगां रे मांहे ग्रहण कहावे ॥नहीं०॥ ओ दाय बैठो नहीं भूपाल, हां बाई, तूं आगे री चाल ॥नहीं०॥
भाटण-	६—	डाहलियो राजा 'शिशुपाल,' मन माने तो घालो वर-माल ॥वर०॥
द्रौपदी-		कहे द्रौपदी ब्राह्मण बाचे, डाहलियो तो अथिर थई नाचे ॥नहीं०॥
भाटण-	७—	'हस्तिशीर्ष' 'दुर्दन्तु' कहावे, मरिय मिटे पिण भाज न जावे ॥वर०॥
द्रौपदी-		सूरो है संग्राम मांहे घोड़ो राले, खूणे बेठ रंडापो म्हारे कुण गाले ॥नहीं०॥
भाटण-	८—	'महिपाल' 'मथुरा' नो वासी, राग वैरागी ने लील-विलासी ॥वर०॥
द्रौपदी-		वैरागी तो उरी लेवे दीक्षा, पछे म्हारी लारे कुण करे रक्षा ॥ नहीं परणूं ओ राय-जादो ॥
भाटण-	९—	उज्जयिनी भूप आयो दल मेली, शीतल किरण ने तेजस केली ॥वर०॥
द्रौपदी-		इण राजा रो तो मति ले नाम, शीतल ठाढो आवे किण काम ॥नहीं०॥
भाटण-	१०—	कौरव वंक अनूप विराजे, सौ भायां ऊपर दुर्योधन छाजे ॥वर०॥
द्रौपदी-		आतो ते वात सुणाई, अलोधी, वांको तो बाई हुवे क्रोधी ॥नहीं०॥
भाटण-	११—	अब कांई करे मो कने ताका, कहे भाटण फिरतां पग थाका ॥वर०॥

घालणी हुवे तो घाल वरमाल,
ज्यूं सगलां रो मिटे जंजाल ॥वर०॥
१२— पांडव पांचे हथिणापुर-मोती,
कंचन जिम जिगमिग जोती ॥वर०॥
द्रौपदी- कहे द्रौपदी बाई ! ए दाय आया,
पांचां ने देख ठरी म्हारी काया ॥वर०॥

दोहे—

१— पांडव पांचज देखिया, विकसत थयाज नेन ।
कहो छिपायो किम छिपे, अंतर-गत रो हेत ॥
२— रथ सूं हेठी उतरी, मूल न करि कांई खंच ।
वर-माला घाली कहे मैं वरिया ए वर पंच ॥
३— देव निहाणा विधी कही, सांभल मानी सांच ।
कृष्णादिक सगला कहे, वर्या भला वर पांच ॥
४— द्रुपद राजा आडंबरे, कन्या ने दी परणाय ।
दत्त दायजो ले करी, आया हथिणापुर मांय ॥
५— गजपुर-पति गरजे महा, पांडु प्रबल प्रताप ।
आज्ञा ईश्वरता पणे, पाले पृथ्वी आप ॥
६— तिण अवसर पांडु नृपत, अंतेवर परिवार ।
बैठा पांचूं ई दीकरा, कुंती नामे नार ॥
७— सुखे समाधे विचरता, बैठा सिंहासण ठाय ।
इतरा मे इचरज थयो, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल—४

१— कच्छुल नारद तिण अवसरे,
हुँतो दरसण रो भद्रीक रे ।
अवसरे देख विनय करे,
अंतर दुष्ट नहीं, चित ठीक ॥
नारद चरितालियो चरित लगावे रे ॥
२— माथे मुगट जटा तणो,
हाथे कमंडल रुद्राक्ष नी माल रे ।

कलहो युध व्हालो घणो,
सिंदूर री टीकी आंख्यां लाल ।।नारद०।।

३— राड़ देखण राजी घणो,
नारद तुरत देखण ने जाय रे।
कद कजियो ना हुवे,
तो कुत्ता देवे लड़ाय रे ।।नारद०।।

४— कल–कली भूत कलेसियो,
कजिया विन रह्यो न जाय रे।
भगवा कपड़ा वाम उतरासणो,
कड़ियां रे मूंज बंधाय ।।नारद०।।

५— आकाशे उडतो रहे,
बले धरती में पेस जाय रे।
मुवां ने मूंडे बोलाय दे,
जीवतां ने मुवो देखाय रे ।।नारद०।।

६— थंमण छूटण री विद्या,
उड जावे गगन पयाल रे।
इष्ट राम केशव भणी,
देख हर्षे सहु बाल गोपाल ।।नारद०।।

७— मृग–चर्म उत्तरासणो,
पहरण बल्कल वस्त्र रसाल रे।
जनोई जुगती गले,
डांडो कमंडल कर झाल ।।नारद०।।

८— आकाशे गमन करतो थको,
जोतो पुर पाटण गाम रे।
देश नगर उलंघतो,
आयो हथिणापुर ठाम ।।नारद०।।

९— पांडु राजा रा भवन में,
नारद ऊभो छे आय रे।
पांच पांडव कुंती देख ने,
आसण छोड ने साह्या जाय ।।नारद०।।

१०— नमन करि कर जोड़ ने,
देई प्रदक्षिणा तीन रे।
बेसण आसण मूंक ने,
होय रह्या छे लहलीन ॥नारद०॥

११— धरती रे पाणी छांट ने,
तिण ऊपर डाभ बिछाय रे।
कुशल क्षेम पूछी करी,
सुखे बैठो छे तिण ठाय ॥नारद०॥

१२— द्रौपदी मन मांहे चिंतवे,
ए तो भखड़ो मूढ अजाण रे।
गया आगमिया काल रा,
इण रे नहीं व्रत पचखाण ॥नारद०॥

१३— तिण कारण द्रौपदी ऊठी नही,
आदर दियो न कियो विशेष रे।
द्रौपदी री अविनय देख ने,
नारद ने जाग्यो द्वेष ॥नारद०॥

१४— सासू ने सुसरा ऊठिया,
पांडव ऊठ्या साक्षात रे।
द्रौपदी ऊठी नही,
जोइजो इण लुगाई री बात ॥नारद०॥

१५— ए तो राज मांहे मुरभी घणी,
मद – छकी बहे नार रे।
मोने गिणती मे राखे नही,
इण रे मांथे पांच भरतार ॥नारद०॥

१६— मो आयां ऊभी ना हुई,
मोने नही कीधो सलाम रे।
हिवे वेला वितोऊं इण नार ने,
तो नारद म्हारो नाम ॥नारद०॥

ढाल–५

(*राग—चंद्रायण*)

१— रीस वसे चित चिंतवे रे, एक पुरुष नी नारो ।
मन मांहे गर्व करे घणो रे, हूं मोटी संसारो ॥
हूं मोटी संसारो रे जाणी,
पांच पुरुष नी ए नार बखाणी ।
मद आठा सूं अति अभिमाती,
न्याय रहे रस – रंग राती ॥
जी नारद जी जी रे ॥

२— सोले हजारां देश मे रे, बरते सगले हरि आणो ।
पहुँचाऊं तिण थानके रे, जिहां न चले हरि-प्राणो ॥
जिहां न चले हरि नो प्राणो,
सोधूं इसो कोई निश्चल ठाणो ।
द्वीप समुद्र उलघी जाये,
नारद करिवा कार्य उमाये ॥जी०॥

दोहे—

१— इम चिंती ने ऊठियो, चाल घणी प्रचंड ।
लवण समुद्र ऊलंघ ने, गयो तिहां धातकी-खंड ॥
२— भरत क्षेत्रे नगरी भली, सुर-कंका इण नाम ।
'पद्मनाभ' राजा भलो, सात सय-त्रिय-स्वाम ॥
३— युवराज पदवी तसु, नाम 'सुनाभ' कुमार ।
रूप कला गुण आगलो, देव कुंवर उणियार ॥

ढाल–६

१— नारद आयो जाण ने,
राजा ऊठी ने ऊभो थाय रे ।
उठी सात से राणियां,
कर जोड़ी ने सीस नमाय ॥नारद०॥

२— थे गामां नगरां फिरो घणा,
जावो राज-धानी रे मांय रे।
म्हारे सरीखो राणियां,
कठे दीठी हुवे तो बताय ॥नारद०॥

दोहा—

१— सांभल नारद मुलकियो, राजा पूछे हसिया केम।
तूं गहिलो नारद कहे, सुण दृष्टान्त कहूँ जेम॥

(ढाल—वही)

३— नारद इसड़ी सांभली,
तब बोले मुख सूं एम रे।
मैं तोने जाणियो,
कूवा रो मिंडक जेम ॥नारद०॥

४— एक समुद्र रो डेडको,
आयो कुवा रा डेडका पास रे।
जब कुवा रो मिंडक इम कहे,
भैया किहां तुमारो वास ॥नारद०॥

५— कूवा रा डेडका ने इम कहे,
समुद्र मांहे म्हारो वास रे।
कहे समुद्र मोटो केहवो,
मोने कहि देखालो जास ॥नारद०॥

६— तब दरियाव - दुर्दर कहे,
म्हारो समुद्र मोटो अपार रे।
तब कूवा रे मींडके,
पाय लीक काटी तिण वार ॥नारद०॥

७— तब कूवा रो मिंडक कहे,
म्हारो कूवो मोटो साक्षात रे।
कूवा थी समुद्र मोटो नही,
थारी झूठी सगली बात ॥नारद०॥

ढाल-७

(*राग—अलबेल्या के गीत की*)

१— पुर पाटण अंतेउरी रे लाल,
हय गय रथ परिवार-सुण राजवी रे ।
विण दीठां जाणे सही रे लाल,
मो सम दूजो नहीं संसार-सुण राजवी रे ॥
नारद लगती लगावणो रे लाल ॥

२— श्वान चले गाडा तले रे लाल,
जो मंतर पूंछ मरोड़-सुण राजवी रे ।
हूँ जो एक हुँतो नही रे लाल,
तो कुण करतो जोर-सुण राजवी रे ॥नारद०॥

३— इण दृष्टान्ते राजवी रे लाल,
थारे इयां राण्यां सूं प्रेम-सुण० ।
पेलां री नार दीठी नहीं रे लाल,
सांभल कहूं तुज – जेम-सुण० ॥नारद०॥

४— जंबू-द्वीप ना भरत मे रे लाल,
हथणापुर नगर मजार-सुण० ।
पांडु राजा रा दीकरा रे लाल,
ज्यां री द्रौपदी नामे नार-सुण० ॥नारद०॥

५— रूप जोवन अधिको घणो रे लाल,
जिण रो वर्णन करीजे केम-सुण० ।
उण रूपे थारी सात से राणियां रे लाल,
नही छे रे अंगूठा-नख जेम-सुण० ॥नारद०॥

६— इतरी लगती लगायने रे लाल,
नारद गयो आकाश-सुण० ।
करमां रे वस राजवी रे लाल,
कर रयो विश्वास-सुण० ॥नारद०॥

दोहे—

१— पद्मनाभ मन चिंतवे, कोईय न लागे उपाय ।
तीन उपवास पोषह किया, पूर्वक्रिया संगति देव कहे आय ॥

२— कहे देव किण कारणे, मांने समरियो राय ।
नृप कहे हथणापुर थकी, सूंपो द्रौपदी लाय ॥

ढाल—वही

७— हुई हुवे होस्ये नहीं रे लाल,
वात नहीं अजोग-सुण० ।
पांच पांडव नी द्रौपदी रे लाल,
नहीं आवे थारे भोग-सुण० ॥नारद०॥

८— राजा हठ मूके नहीं रे लाल,
तव देव हथणापुर जाय-सुण० ।
युधिष्ठिर वारे हुंती रे लाल,
लीधी द्रौपदी उठाय-सुण० ॥नारद०॥

दोहा—

१— द्रौपदी ने मेली बाग में, देव आयो नृप ने पास ।
अब हूं आंवू नहीं, जो भूखां मरे छमास ॥

ढाल—८

[*राग—कोयलो पर्वत धूंधलो*]

१— झबके से जागी द्रौपदी रे लाल,
नहीं म्हारे प्रीतम पास रे-पंथीड़ा ।
बाग वाड़ी नहीं माहरी रे लाल
नही म्हारो महल आवास रे पंथीड़ा ।
करे विमासण द्रौपदी रे लाल ॥

२— किहां मुज पीहर सासरो रे लाल,
किहां मुज भरतार रे-पंथीड़ा ।
फंद माहे आंण हूं पड़ी रे लाल,
ए सूं कियो किरतार रे-पंथीड़ा ॥करे०॥

३— के कोई मोने लायो देवता रे लाल,
जक्ष राक्षस थाय रे-पंथीड़ा ।
के कोई विद्याधर अपहरी रे लाल,
तिण री खबर ना कायरे-पंथीड़ा ॥करे०॥

४— हूँ रूप जोवन जोखे भरी रे लाल,
शील तणो मोने सोच रे-पंथीड़ा।
पग पग लागू अति घणा रे लाल,
कर रही मन में आलोच रे पंथीड़ा ॥करे०॥

दोहा—

१— बीजा राजा रा बाग में, मोने मेली छे लाय।
गल-हत्थो देई करी, बैठी आरत-ध्यान रे मांय॥

ढाल—६

(राग—आवे काल लपेटा)

१— इतरे पद्मोत्तर आयो रे,
साथे अंतेउर लायो।
द्रौपदी ने दुमनी दीठी रे,
बतलावण करे घणी मीठी॥

२— म्हांने नारद आय बताई रे,
मैं देवता कने मंगाई।
तूं तो धातकी-खंड में आई ए,
हिवे मत कर चिन्ता कांई॥

३— म्हारे छे सासतो राणी ए,
पिण तूं सगलां मे ठकुराणी।
मुज वचन अंगीकार कीजे रे,
मुज सेति हंस ने बोलीजे॥

४— द्रौपदी-मन मांहे जाणी ए,
हूं तो पड़ी फंद मांहे आणी।
अठे बल काम न आवे ए,
कल सेती काम सिखावे॥

ढाल—१०

[राग—धमाल]

१— तब बलती कहे द्रौपदी, हो,
सांभल एक विचार।
कृष्ण ने पांडव माहरी हो,
मही करसी हो वे बार।
सतवंती अवसर देखियो हो ॥

२— राजा ने कहे द्रौपदी हो,
म्हारो वचन मति ठेल।
तुम्हारी अंतेउरी हो,
तिण जायगा दे तूं मोने मेल ॥सतवंती०॥

३— छ मास पछे मो भणी हो,
जो कृष्ण न करे बार।
कोई खबर न लेवे माहरी हो,
तो हूं बैठी छूं तुमारे सार ॥सतवंती०॥

४— द्रौपदी रो मन राखवा हो,
वचन न सक्यो ठेल।
बाग थकी लेई करी हो,
दीधी कुमारी कन्या मे मेल ॥सतवंती०॥

५— ज्यां लग कंत मिले नहीं हो,
रहणो धर्म मे लाल।
मांड्यो बेले बेले पारणो हो,
लूखो अन्न पाणी मांहे घाल ॥सतवंती०॥

६— इम आयंबिल करती थकी हो,
विचरत आतम मांय।
तपस्या मन साचवे हो,
सफल दिहाड़ा इम जाय ॥सतवंती०॥

दोहा—

१— युधिष्ठिर तब जागियो, द्रौपदी न देखे पास।
उठी ने जोई घणी, अणलाध्यां थया उदास ॥

२— द्रौपदी किहां पामी नहीं, पांडव थया उदास।
एक नारी राखी न शक्या, घर हाण लोकां हास।
३— पांडू राजा पे आय ने, बोले इसड़ी बाय
द्रौपदी ने कोई ले गयो, तेहनी खबर न काय॥
४— अनुचर तेडी नृप कहे, जावो हथिणापुर मांय
त्रिक-चउक्कादिक मारगे, करो उद्‌घोषणा जाय।
५— देव दानव किण अपहरी, द्रौपदी नामे नार
खबर देवे कोई आपने, तो नृप देवे धन सार।
६— पांडु कह्यो तिम तिण कियो, सोध आया नृप पास
द्रौपदी किहां पाई नहीं नृपत हुवो उदास।
७— बात नगर में विस्तरी, जाण्यो राणो राण।
एक नार रही नहीं, लोक हास घर हाण।
८— कुंती राणी ने तेड़ ने, पांडु नृप कहे एम
जाय द्वारिका कृष्ण ने, बात कहो हुई जेम॥

ढाल-११

(राग—चंद्रायण)

१— हाथी रे होदे चढी हो, कुंती राणी तिण वारो।
चतुरंगणी सेन्या सजी हो, हय गय रथ परिवारो॥
हय गय रथ परिवार सजाई,
अनुक्रमें द्वारामती आई।
भूवाजी री गई बधाई,
कृष्ण सुणी ने हर्षित थाई॥
जी भूवाजी जी हो॥

दोहा—

१— वचन सुणी सेवग तणो, माधव हर्षित थाय।
साम्हा जावे भूवा तणे, ते सुणजो चित लाय॥

ढाल-१२

(राग—परिग्रहो एहवो ए)

१— शोभा विविध प्रकार सूं ए,
कीधी नगरी के मांह।

जय जय शब्द बहु ऊचरे ए,
बाजा बजत उच्छाह ॥
भूवाजी भलां आविया ए ॥

२— साम्हां भूवाजी रे चालिया ए,
हय गय रथ पायक सार।
बेठ बड़े गजराजजी ए,
साथे सकल परिवार ॥भूवाजी०॥

३— दान देवे याचकां भणी ए,
हरि जी हरप आवंत।
दरसण देख्यो दूर थी ए,
भूपत सुख पावंत ॥भूवाजी०॥

४— हाथी सूं हेठे उतरी ए,
प्रणम्या भूवा ना पांव ।
भगत करी भल भाव सूं ए,
चित नो चोखो चाव ॥भूवाजी०॥

५— जनम कृतार्थ माहरो ए,
आज थयो उल्लास ।
दरसन दीठो भूवाजी तणो ए,
सफल फली मुज आस ॥भूवाजी०॥

६— कंठ लगायो प्रेम सूं ए,
आणी अधिक जगीस।
फूली अंग मावे नहीं ए,
तब भूवाजी दी आशीस ॥भूवाजी०॥

७— चिरं-जीवे चिरं नंदजे ए,
चिर लगे पालजे राज।
निज परिवार ने रेत का ए,
पूरजे वांछित काज ॥भूवाजी०॥

८— भूवा भतीज सूं एकठा ए,
बैठा गजराज तिवार ।
नगरी मांहे पधारिया ए,
घर घर मंगलाचार ॥भूवाजी०॥

९— भोजायां भगती घणी ए,
नणदी सूं नेह उदार ।
बहोतर सहस्र सुहामणी ए,
पग लागी अवर अपार ॥भूवाजी०॥

१०— भोजन भगती करी भली ए,
बैठा सुखासन तिवार ।
भूवाजी आगम तणी ए,
पूछे श्री कृष्ण मुरार ॥भूवाजी०॥

ढाल—१३

(राग—चंद्रायण)

१— सुखासन बेसाण ने हो, कृष्णजी बोल्यो एमो ।
बात कहो थारां मन तणी हो, पधारणो हुवो केमो ॥
पधारणो हुवो केम तुमारो,
बात रो कहो सहू इसारो ।
सुणवारो मन वरते छे म्हारो,
तब कुंती मांड कह्यो विस्तारो ॥
जी भूवाजी जी हो ॥

२— युधिष्ठिर बारे हुँती हो, द्रौपदी महलां रे मांय ।
देव दानव किण अपहरी हो, तिण री खबर न काय ॥
तिण री खबर मैं कांई नहीं पाई,
फेर ढंढोरो ने घणी जोवाई ।
तिण कारण तुम पासे आई,
हिवे कर कांना ! दाय उपाई ॥जी०॥

३— पांचां में एक अस्तरी हो, सुणियां अचिरज आयो ।
ते पिण राखी ना सक्या हो, हरि हासो न समायो ॥
हरि हासो न समाये भारी,
पांडव पांच महा—जुंझारी ।
छिन्नू सहस्र एक हूँ भरतारी,
पांचे बैठा एक गमाई नारी ॥जी०॥

४— वचन सुणी भूवा तणा हो, कृष्णजी बोल्या वायो ।
जिहां गई तिहां लावसूं हो, चिंता मत करो कायो ॥
चिंता भूवा मत करो कांई,
स्वर्ग मृत्यु पाताल मे जाई ।
जो किण रा घर मांहे थाई,
आणी हाथो हाथ दूं पकडाई ॥जी०॥

दोहे—

१— बहु सत्कार सन्मान दे, दीवी भूवा ने सीख ।
आई तिहां पाछी गई, कृष्ण करे हिवे ठीक ॥
२— कृष्ण कराई उद्घोषणा, तीन खंड रे मांय ।
कठे न पाई द्रौपदी, कृष्ण चिंतातुर थाय ॥
३— इतरे नारद आवियो, पूछे कृष्ण मुरार ।
गांव नगर फिरो घणा, कठे दीठी द्रौपदी नार ॥

ढाल—१४

(राग—चंद्रायण)

१— तड़क भड़क नारद कहे हो, म्हांरी जाणे बलाय ।
मै लुगायां ने स्यूं करां हो, मोने खबर न काय ॥
मोने खबर न काय लिगारी,
मैं जोगीसर जटा-धारी ।
किणरी देखता फिरां मै नारी,
पिण एक कहूं हकीकत भारी ॥
जी माधवजी हो ॥

२— धातकी-खंड मे हूँ गयो हो, भरत क्षेत्र के मांय ।
अमर-कंका नगरी भली हो, पद्मोत्तर महाराय ॥
पद्मोत्तर महाराय ज जाणी,
तिणरे तो छे सातसो राणी ।
सांभल जे तूं म्हारी वाणी,
एक कहूं तोने बातज मीठी ।
पद्मनाभ रे राज मे भबके से दीठी ॥जी०॥

दोहे—

१— बलता माधव इम कहे, हिवे मैं पायो ठाम।
तेहिज चाला चालिया, नारद थारा काम॥
२— उडतो नारद इम कहे, सांभल कृष्ण मुरार।
बल देखूं हिवे ताहरो, जब लावसो द्रौपदी नार॥
३— दल बादल पाछा फिरे, फिरे नदियां का पूर।
माधव वचन फिरे नहीं, जो पिछम ऊगे सूर॥

ढाल–१५

(राग—जगत गुरु त्रिशलानंदन वीर)

१— श्री हरिजी निश्चय लह्योजी, पायो सुख भरपूर।
आर्त चिंता सहू गईजी, बोले प्रभु अति सूर॥
सती की वाहर चढया केशव राय॥
२— दूत अनोपम मोकल्योजी, पांडवजी ने पास।
नारद वचन सुणावियाजी, तब उपज्यो ऊलास॥सती की०॥
३— कृष्ण कहायो पांडव भणीजी, ले फोजां रा थाट।
गंगा रे तट आवजो जी जोइजो माहरी बाट॥सती की०॥
४— हथिणापुर थी पांडव चढया जी, फोजां लेई लार।
गंगा समीपे आवियाजी, गाजे सुर सुभट जोधार॥सती की०॥
५— द्वारिका थी चढ़ाई हुई जी, शुभ मुहूर्त्त शुभ वार।
शुभ शुकुने पेर्या थकाजी, करवा शक्ति की सार॥सती की०॥
६— देई दुमासा कटक ना जी, चाल्यो कमला-कंत।
हय वर हाथी रथ साथ सूं जी, दल बल नो नहिं अंत॥सती की०
७— आवि मिल्या एकठाजी, पांडव जादव-राय।
धर अंबर धरणी विचेजी, समझ न कांई लहाय॥सती की०॥
८— वेहूँ कटक फोजां घणीजी, अरि ऊपर हुँसियार।
पिण गंगा समुद्र में किम चालसां, इम चिंतवे कृष्ण मुरार॥सती०
९— गंगा तीरे अष्टम करीजी, साध्यो सायर देव।
कर जोड़ी ऊभो आगलेजी, करतो अधिकी सेव॥सती की०॥

ढाल–१६

[राग—चंद्रायण]

१— स्वस्तिक देव कहे कृष्ण ने हो, समुद्र लांघी किम जायो ।
धातकी-खंड सू आणने हो, द्रौपदी थ्रूँ पकड़ाय ॥
द्रौपदी ने सूंपूं लाय,
कहो तो पकडूं पद्मोतर राय।
ऋद्धि सहित अमर-कंका उठाय,
लवण-समुद्र में दूं डबकाय।
जी माधव जी हो ॥

२— कृष्ण कहे देवता भणी हो, रखे करो ए बातो ।
मैं वचन दियो भूवा भणी हो, हूँ लासू हाथो हाथो ॥
हाथो हाथ दूं पकड़ाय।
समुद्र लांघी अमर-कंका जाय।
पाज बांधण रो देव! करो उपाय,
ज्यूं छऊं रथां ने मारग थाय ॥जी०॥

३— जाय ने द्रौपदी तणी हो, स्वयमेव करसूं वारो ।
पद्मनाभ राजा तणी हो, आसूं इज्जत पाड़ो ॥
सेखी विखेरी इज्जत पाड़ी।
जीत कर लाऊं द्रौपदी नारी,
कह्यो मान देव पाज पसारी।
छऊं रथ गया पेले पारी ॥जी०॥

दोहे—

१— अमर-कंका रा उद्यान मे, छऊं रथां ने ठाय ।
दारुक नामे सारथी प्रते, कहे अमर-कंका जाय ॥

२— कृष्ण पत्र लिखने दियो, तूं कहे पद्मोतर ने जाय।
द्रौपदी आण ने सौपदे, जो इज्जत राखण री चाय ॥

ढाल-१७

(राग—रे जीव विषय न राचिये)

१— हंभो रे मोडा दुरमति, दुख-वंछण-हारो रे ।
काली अमावस रा जिण्या, नहीं तोमे लाज लिगारो रे ॥
कोप्यो रे द्वारा-पुर-धणी ॥

२— भाला री अग्रे करी, म्हारो परवानो दीजे रे ।
मुजरो तूं करजे मती, हूँ कहूँ तिम कीजे रे ॥कोप्यो०॥

३— आक्रंद कर क्रोध चाढ़ ने, आंख्या करजे राती रे ।
दांत पीसने बोलजे, धर धर करजे छाती रे ॥कोप्यो०॥

४— रे पद्मोतर ! दुरमति ! द्रौपदी ने मेलो रे ।
कृष्ण पांडव आविया, करसी तोमे हेलो रे ॥कोप्यो०॥

५— इत्यादिक वचने करी, वेग चलावो दूतो रे ।
अमर-कंका नगरी भणी, वेगो जाय पहुंतो रे ॥कोप्यो०॥

दोहे—

१— पद्मनाभ तिण अवसरे, बेठो जोड़ दरबार ।
पुरोहित ने परधान री, सभा रची अति सार ॥
२— दूत देख मन चिंतवे, बेठो पद्मनाभ भूपाल ।
धणी कह्या जिम हूँ कहूँ, तो फल पाऊं तत्काल ॥
३— करवा मुज स्वामी तणा, वचन सहू प्रमाण ।
पद्मनाभ राजा कने, राख्या चाहीजे प्राण ॥

ढाल—१८

(राग—कोई कहे पूज पधारिया)

१— तिण अवसर दूत के, नेड़ो आवियो रे ।
'पद्मोत्तर' महाराय के, दूत वधावियो रे ॥

२— तूं मोटो महाराय, कीरत थारी अति घणी रे ।
चिरंजीवे घणा काल, नगरी ना धणी रे ॥

३— वीनतड़ी इण भांत, म्हारा मन सूं कही रे ।
धणी रा समाचार ए तो छे नहीं रे ॥

४— सिंहासन ठोकर मार, अकल थारी किहां गई रे।
काली अमावस रा जायो, कृष्ण इसड़ी कही रे॥

५— द्रौपदी नार, राख्यो चाहे कायदो रे।
कृष्णजी रो नाम, गिणे न मुलायदो रे॥

६— कहे पद्मोत्तर राय, बात सुण एतली रे।
आया द्रौपदी काज, फोजां लाया केतली रे॥

७— बोले इण पर दूत के, पराक्रमी छे अति घणा रे।
पांच पांडव ने कृष्ण, आया अठे छे जणा रे॥

८— सिंह रे मुंडा मांय, कांई घाले आंगुली रे।
असवारां री होड करे, डोशी पांगुली रे॥

९— नहीं आपूं द्रौपदी नार, बात कहे छती रे।
वेगो हुइजे तयार, पाछ राखे मती रे॥

१०—थारी जवां री पाण के, पूरो पाड़नो रे।
नीति शास्त्र रे न्याय, दूत न मारणो रे॥

११—पद्मोत्तर राय, त्रिशूलो चाढियो रे।
दूत ने धका दिराय, बारी-कांनी काढियो रे॥

१२—मन मांहे दूत घणो पिछतावियो रे।
आमण दूमण होय, माधव पासे आवियो रे॥

———

दोहे—

१— दूत बात नृप ने कही, धक्का दे काढ्यो मोय।
ओ नही आपे द्रौपदी, मूल गिणे नहीं तोय॥

२— मद-छकियो राजा कहे, देऊं छवां ने ठेल।
इतरे देख्यो दल आवतो, जाणो समुद्र-वेल॥

३— पद्मोत्तर नृप देख ने, कहे पांडव ने वाय॥
कहो राजा सूं हूं लड़ूं, अथवा थे लड़ो माय।

४— कहे पांडव लड़सां अम्हे, देखो म्हारा हाथ।
छत्र छाया आपरी, ए नर कितरी बात॥

ढाल–१६

(राग—चित्तोडी राजा रे)

१— हरि हुकम ज दीधो रे,
पांडवां बीड़ो लीधो रे।
लेई धनुप बाण, धकाया साहमा पांडवा रे॥
२— पद्मोत्तर पिण आयो रे,
मिल जंग मचायो रे।
गगन बाण करी ने, छायो अति घणो रे॥
३— देवता ने वले देई (वी) रे,
विद्याधर केई रे।
मिल आया देखण ने, युध अचिरज भयो रे॥
४— नारद पिण आयो रे,
जाणे लाडू पायो रे।
कुण जीते म्हारा भाई, देखां कहतो फिरे रे॥
५— दल चऊं दिश उठ्या रे,
पांडवां ने लपेट्या रे।
हाको हाक मचावे, हां पांडव पकड़ लो रे॥
६— देखी दल तूटा रे,
पांडवां रा पग छूटा रे।
सजोर होय, पद्मोत्तर, केड़े दोड़ियो रे॥

सवैया

१— पांचव पांचेई पूर, हरि सूं कहे हजूर–
राखो तुमे पूठ पूर–देखो हाथ मार का।
मुख सूं करतो शोर, हम नहीं त्रिया-चोर–
भड़ा भड़ हुई जोर–उडया बाण सार का॥
वचन के छल वस, पांडव हुवा परवश–
गिणी तिहां एकादश–हर! दीठी हार का।
मुख सूं कहत मुरार, भागा किहां जावो गिमार–
ऊभा रहो इकवार, भागां ने दूर भई द्वार का॥

दोहे—

१— पांडव भागा देख ने, हरि भाखे अहो सूर ।
हिवे नासी जासो कठे, रही द्वारका दूर ॥
२— मत नाटो, ऊभा रहो, आय कहे नृप स्याम ।
दूर थकी देखो तुमें, हिवे हमारा काम ॥

ढाल—२०

(राग—पारस जिणंदजी सूं मन लागा)

१— माधव बोल्या मूंछ मरोड़,
ऊभो रहे रे पर-नारी रा चोर।
तूं तो कांई जूंजे रे,
कुमति ! पद्मनाभ ! कांई जूंभे रे।
एकलो जाणे मत मोने आप,
ते अब छेड़यो कालो सांप ॥तूं तो०॥
२— पांडव जीत माथो मति धूण,
पिण हूँ तोने करसूं आटे लूण ॥तूं तो०॥
हूं तो आयो द्वारिका केरो नाथ,
मो आगे तूं कित्तरीक बात ॥तूं तो०॥
३— तूं तो जाणे करूं मन री मोज,
तो देखतां देखतां बिखेर देऊं फोज ॥तूं तो०॥
मो आगे थारो नही चाले गोर,
निपट नेम पर-त्रिया रो चोर ॥तूं तो०॥
४— तूं तो जाणे म्हारे किल्ला ने कोट,
हूँ तो उडाय देसूं एकण चोट ॥तूं तो०॥
तूं तो जाणे करूं मन री लेर,
नगरी कर देसूं ढम ढेर ॥तूं तो०॥

ढाल—२१

(राग—खड़का)

१— देखजे हूँ हिवे, जय पामीस सही,
नही तूं पदमनाभ रायो ।

एम कही कृष्ण साहमां मंड्या,
तत्खिण शंख हाथे संभायो ॥

२— प्रबल प्रताप करि कोप केशव चढ्यो,
जाणे पद्मोत्तर काल लागो ।
धरण धसकी चल्यो, शेप पिण सल सल्यो,
कटक पिण खलबल्यो, भूप भागो ॥प्रबल०॥

३— पराक्रम फोड़ियो, शंखज पूरियो,
शबद सुण ताही – फोज भागी ।
तीजा भाग री न्हास आगी गई,
पूणि जिम उड मार्ग लागी ॥प्रबल०॥

ढाल–वही

१— शंख शब्द कियो महादूठ,
दश लाख मिनखां रा पग जावे छूट ॥तूं तो०॥
पछे सारंग धनुष री पकड़ी मूंक,
टंकारे मे राम रा गया पग छूट ॥तूं तो०॥

२— ऊभा रहण रो नहीं दीसे थाग,
राजा भागी ने मारग लाग ॥तूं तो०॥
गढ कोट पड्या ठाभोठाम,
देख पद्मनाभ डरियो ताम ॥तूं तो०॥

३— वले कीनी वैक्रिय–समुद्घात,
रूप विकुर्व्यो अति उत्पात ॥तूं तो०॥
नारायण नरसिंह सरूप,
प्रगट थयो तिहां अति अनूप ॥तूं तो०॥

४— नरसिह रूप कीधो तिण वार,
देई पंजा ने भांग्या किंवाड़ ॥तूं तो०॥
धरर धरर धरणी रही धूज,
पद्मोत्तर नृप हुवो अबूज ॥तूं तो०॥

५— गढ पाड़ किधो ढम ढेर,
कांग रा वुरज नांख्यां विखेर ॥तूं तो०॥

थर-हर कंपे कोमल काय,
द्रौपदी रे शरणे नास ने जाय ॥तूं तो०॥

६— तुम शरणे छूटूं निरधार,
द्रौपदी मुझने तूं आधार ॥तूं तो०॥
द्रौपदी कहे घणी करतो मरोड़,
सो अब किहां गयो ताहरो जोर ॥तूं तो०॥

ढाल—२२

(राग—वेग पधारो रे महल थी)

१— पद्मनाभ द्रौपदी कने, कर जोड़ी इम भाख ।
तूं कहती जिके पुरुष आविया, अब शरणे मोने राख ।
मरणो दोरो संसार में ॥
२— तब वलती कहे द्रौपदी, त्रिया रूप बणाय ।
मोने आगल ले करी, लाग हरिजी ने पाय ॥
जो चाहीजे तोने जीवणो ॥
३— भीनी साड़ी पहिरने, वनिता रूप बणाय ।
च्यारूं पल्ला घींसती, भद्रा जिम चलि जाय ॥मरणो०॥
४— थाल भर माणक मोतियां, लारे लुगायां गीत गाय ।
आल्यो थांरी द्रौपदी, कर जोड़ी शीस नमाय ॥मरणो०॥
५— पराक्रम दीठो मैं आपरो, खमो म्हारो अपराध ।
रे मूरख ! जा इहां थकी, मेटी क्षत्रिय-मरजाद ॥मरणो०॥
६— बुलाय पांडवां ने इम कहे, आ लो द्रौपदी नार ।
हाथोहाथ ज सूंप दी, मन मे हरख्या मुमार ॥मरणो०॥

दोहा—

१— जंबूद्वीप रा भरत मे, जावा रो मन थाय ।
इतरा में इचरज थयो, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल—२३

(राग—खड़का)

१— चालिया रंग भर लवण समुद्र में,
शंख वर पूरियो तत् खेवो ।

धातकी-खंड में भरत चंपा-धणी,
कंपिल नाम तिहां वासुदेवो ॥
कोप करी केशव जत पाछा वल्या ॥

१— श्री मुनि-सुव्रत स्वामी आगे तदा,
निसुणी शब्द चमक्यो नरिंदो।
द्रौपदी निग्रहण नृप ने करी,
सकल संबंध भाख्यो जिनंदो ॥कोय०॥

ढाल—२४

(राग—कपूर हुवे अति ऊजालो)

१— सुण जिनजी ने वनणा करीजी,
कंपिल बोल्यो वाय।
कृष्णजी मोटा पुरुष ने जी,
देखूं मिलूं हिवे जाय।
जिनेश्वर! धन्य तुमारो ज्ञान ॥

२— 'मुनि-सुव्रत' बलता कहेजी,
हुई न होवे एह।
मांहो मांहे च्यारे जणाजी,
मिल देख न सके तेह ॥जिनेश्वर०॥

३— तो पिण कंपिल सांभलोजी,
जातां समुद्र रे मांय।
धजा रथ नी देखसो जी,
इम सुण उठ्यो राय ॥जिनेश्वर०॥

४— मो सरिखो उत्तम पुरुष जायनेजी,
इम कृष्ण सुण्यो निःशंक।
त्यां पिण शंख पाछो पूरियोजी,
उत्तर पडुत्तर शंखो-शंख ॥जिनेश्वर०॥

५— कंपिल अमर-कंका आवियोजी,
कहे भागो नगर गढ़ केम।
पद्मनाभ वलतो कहे जी,
बात कहूं हुई जेम ॥जिनेश्वर०॥

दोहे—

१— जंबू द्वीप ना भरत नो, कृष्ण वासुदेव [illegible]
तुम आज्ञा परिलोप ने, थिरत पाड़ो [illegible]

२— कहे कंपिल भूठी कहे, बोल्यो ताम [illegible]।
काली अमावस रा जण्या, एह्यो करे [illegible]॥

३— मो जिसा उत्तम पुरुष ने, ते आज्ञाई गेह।
नीकल म्हारा देश थी, ऐसो कियो निर्गेह॥

४— पद्मनाभ ना कुंवर ने, ले थेमाएयो गाड़।
काछ-लंपटी पुरुष नी, इम जावे छे लाड़॥

५— कृष्ण समुद्र उलंघ ने, गयो गंगा-[illegible]
पांच पांडव ने इम कहे, थे तो [illegible]।

६— गंगा नदी थे ऊतरो, हूँ स्वस्तिक [illegible]
आज्ञा पाछी सूंप ने, मिल सूं [illegible]।

७— वचन कृष्ण नो सांभली, बैठा [illegible]
गंगा नदी ऊतर गया, खोटो [illegible]

ढाल—२५

(राग—चढो चढो लाडा वार म [illegible])

१— चित चिंते हिवे नाथो,
एक मतो छे सगले साथो।
होणहार मेटयो नवि जाये,
सगलां री मती सरिखी न थाये॥[illegible]

२— कुंड कुंड रो न्यारो पाणी,
मुंड मुंड नी न्यारी वाणी।
मस्तक मस्तक मति छे जुई,
पिण ए सहू नी एकज हुई।[illegible]

३— सहू सयाणा सोचो कांई?
भावी जोर सके न मिटाई।
पांडवजी सरीखा जो चूका,
समित सरोवर तो कुण ढूका।[illegible]॥

४— हांसी मिस उपाय उठावे,
शांति कर्म बेताल जगावे।
एह अयाणपणो जग मोटो,
जाणी बुझी खाते खोटो ॥होणहार०॥

५— हासो काज विणासण-हारो,
राड़ हुतां नहीं लागे वारो।
जो बल तो गंगा बिन नाई,
उतरसी इम जाण छिगाई ॥होणहार०॥

दोहा--

१— देखां पराक्रम कृष्ण नो, गोपे राखी नाव।
बाट जोवे छे कृष्णजी, द्वेष करी स्वभाव॥

ढाल—२६

(राग—नीदड ली हो वेरण)

१— कृष्ण स्वस्तिक ने आज्ञा सूंप ने,
एतो गंगा रे तट आयो रे।
फिर फिर ने जोई घणी,
पिण नावा नहीं दिसे कायो रे॥

२— होण पदारथ ना मिटे,
जोवो करमां रो वालो रे।
पांडवां रा कारज सारिया,
नावा बिन चाल्या गोपालो रे ॥होण०॥

३— एकण भुजा ए रथ लियो,
दूजी उतरे गंगो रे।
एतो मध्य विचे आया थकां,
अठे थाका कृष्ण अभंगो रे ॥होण०॥

४— जद थाका कृष्ण मन चिंतवे,
भुजाए तिर गया आगा रे।
वडा वल पराक्रम ना धणी,
पद्मोत्तर सूं किम भागा रे ॥होण०॥

- भूवा ! किसो मुझ रोप, कुंती कहे तूं साचो ।
पिण होणी पदारथ होय, फिरे किम ही पाछो ॥

७— ओरू कुओरू होय, विणासे बातड़ी ।
पिण माविता रो रोष, उतरे इक लातड़ी ॥

८— तूं साचो सा-पुरुष, जिण सूं टालो कियो ।
दीन दयाल कृपाल, पांडव जीतब दियो ॥

९— वीरा नी आशा, भूवा ने घणी रहे ।
जाणे के दीधो वेश, हिवे ज्यूं जाणे तिम कहे ॥

१०—अपणायत जाणी, करो कोई विचारो ।
अवगुण याद कियां, नाश होय हमारो ॥

११—भूवा ना दीन वचन, सुण हरि जीव दे ।
पांडव छे मुझ पूज्य, अपूज्य न हुई कदे ॥

१२—दक्षिण दिशी ने जाय, थे नगरी वसाव जो ।
पांडव-मथुरा नाम, नगरी रो दिराव जो ॥

१३—चिर लग करजो राज, पांडव ने या वायका ।
माहरी करजो सेव, अदृष्ट ऊठे थका ॥

१४—ऊनो पाणी ठार, पिण स्वाद वो ना रहे ।
डोरो तोड़ी फेर, जोड़यां गांठ ना मिटे ॥

१५—कुंती फिर घर आय, ऊचालो घालियो ।
ले अपणो परिवार, पांडु नृप चालियो ॥

दोहे—

१— आग्या मांग श्रीकृष्ण री समुद्र समीपे जाय ।
पांडव-मथुरा वसाय ने, राज करे सुख-दाय ॥
२— तिण अवसर द्रौपदी तणे, गर्भ रयो तत्काल ।
पूरे मासे जनमियो, रूपवंत सुकुमाल ॥
३— पांच पांडव रो दीकरो, पांडव-सेन दियो नाम ।
आठ वरस जाझो थयो, युवराज पदवी पाम ॥
`— सुखे समाधे पांचूं जणा, विलसे संसार ना भोग ।
एक मना थई सांभलो, किण विध लेवे जोग ॥

मैं जीत कीनी उण राय सूं,
जद पराक्रम नहीं दीठो रे ॥होण०॥

५— थे म्हारो बल हिवे देख जो,
लोह — दंड संभायो रे।
रथ पांचे ही पांडवां तणां,
भांज किया चकचूरो रे ॥होण०॥

६— देश बाहिर काढी दिया,
मत रहो म्हारी आज्ञा मांयो रे।
पछे कृष्ण कटक भेला थई,
सुखे नगरी द्वारिका आयो रे ॥होण०॥

दोहे—

१— पांडव प्रभु सोचे घणो, कियो किसो करतार।
बिगड़ी बात विशेष थी, खीज्यो देव मुरार॥
२— जिम तूठ्यां जग तूठियो, जिण रूस्यां जग रोष।
सो तो प्रभु रूसी गयो, ए कर्म रो दोष॥
३— हथणापुर आया चली, मात-पिता ने एह।
बात जणायां ऊनो, मन मे दुःख अछेह॥

ढाल—२७

[राग—नदी जमुना के तीर उडे दोय पंखिया]

१— पांडवां सुं पांडु नृप कहे, तुमे स्यूं कियो।
श्री यादव राय भणी, दुख कां दियो॥
२— दूध तणो दही थाय, जावण घाल्यां थको।
दूध सो कांजी मिलाय, पछे किण काम को॥
३— कुंती सूं पांडु नृप, कहे हरि छे साचो।
हिवे दूजो कहो कुण, उण हीज पासे जाय जाचो॥
४— कुंती गई हरि पास, लही भेव हरि भासे।
भूवाजी आया केम, सा तव उत्तर दाखे॥
५— त्रिखंड पृथ्वी मांय, तूं हीज तूं कही जे।
रहवा ठांम बताय, वीरा! जिहां जई रहीजे।

६— भूवा ! किसो मुझ दोष, कुंती कहे तूं साचो ।
पिण होण पदारथ होय, फिरे किम ही पाछो ॥

७— छोरू कुछोरू होय, विणासे बातड़ी ।
पिण मावितां रो रोष, उतरे इक लातड़ी ॥

८— तूं साचो सा-पुरुष, जिण सूं टालो कियो ।
दीन दयाल कृपाल, पांडव जीतब दियो ॥

९— वीरा नी आशा, भूवा ने घणी रहे ।
जाणे के दीधो वेश, हिवे ज्यूं जाणे तिम कहे ॥

१०—अपणायत जाणी, करो कोई विचारो ।
अवगुण याद कियां, नाश होय हमारो ॥

११—भूवा ना दीन वचन, सुण हरि जीव दे ।
पांडव छे मुझ पूज्य, अपूज्य न हुई कदे ॥

१२—दक्षिण दिशी ने जाय, थे नगरी वसाव जो ।
पांडव-मथुरा नाम, नगरी रो दिराव जो ॥

१३—चिर लग करजो राज, पांडव ने या वायका ।
माहरी करजो सेव, अदृष्ट ऊठे थका ॥

१४—ऊनो पाणी ठार, पिण स्वाद वो ना रहे ।
डोरो तोड़ी फेर, जोड़्यां गांठ ना मिटे ॥

१५—कुंती फिर घर आय, ऊचालो घालियो ।
ले अपणो परिवार, पांडु नृप चालियो ॥

दोहे—

१— आग्या मांग श्रीकृष्ण री समुद्र समीपे जाय ।
पांडव-मथुरा वसाय ने, राज करे सुख-दाय ॥
२— तिण अवसर द्रौपदी तणे, गर्भ रयो तत्काल ।
पूरे मासे जनमियो, रूपवंत सुकुमाल ॥
३— पांच पांडव रो दीकरो, पांडव-सेन दियो नाम ।
आठ वरस जाभो थयो, युवराज पदवी पाम ॥
४— सुखे समाधे पांचूं जणा, विलसे संसार ना भोग ।
एक मना थई सांभलो, किण बिध लेवे जोग ॥

ढाल-२८

[राग—नारद चरितालियो]

१ एक दिन थिवर समोसर्या,
पांडव वांदण जाय रे।
देशना सुण वैरागिया,
भाई ! समे समे आयु जाय।
पांडव पांचूं वांदतां मन मोह्यो रे॥

२— इंद्र चक्रवर्ती जे हुवा,
थिर नहीं रह्या भूप रे।
ओ जग छे सुपना समो,
संसार नो विषम सरूप रे ॥पांडव०॥

३ — संसार मांहि पलेवड़ो,
भाई ! लागो किम बुझाय रे।
जिनवर - वाणी सींचता,
म्हारा भव भव ना दुख जाय रे ॥पांडव०॥

४— पांच पांडव मन चिंतवे,
अमे लेसां संजम-भार रे।
पुत्र ने राज थापी करी,
द्रोपदी सूं करे विचार ॥पांडव०॥

५— तब बलती कहे द्रौपदी,
हूं तो छोड सूं ससार नो पास रे।
कंत विहुणी कामणी,
मुझ भलो नहीं घर-वास ॥पांडव०॥

६— संजम - मारग आदर्यो,
मुनि पाले निरतिचार रे।
दोष बेयांलिस टाल ने,
मुनि लेवे शुद्ध आहार रे ॥पांडव०॥

७— तप जप संयम पालता,
भाई मास-खमण मन रंग रे।
जब लग नेम वांदा नहीं,
अभिग्रह किस्रो अभंग रे ॥पांडव०॥

८— हरित - कल्प पुर आविया,
पारणा नो जाण्यो प्रमाण रे।
नगर फिरतां गोचरी,
सुण्यो नेमजी रो निर्वाण रे ॥पांडव०॥

६— गुरां ने जाय इम कहे,
नेम पहुंता शिवपुर सार रे।
आहार करवो जुगतो नहीं,
आपण पे अणसण धार रे ॥पांडव०॥

१०— मन रा मनोरथ मन मे रह्या,
नेम पहुंता मुक्ति मझार रे।
आहार परठ्यो कुंभ-शाल में,
ऋषि पोहतो विमल-गिरि सार ॥पांडव०॥

११— मास एक संलेखणा,
कीधो पाओगमन संथार रे।
पांच पांडव मुगते गया,
तब वरत्या जय-जय-कार ॥पांडव०॥

१२— द्रौपदी पिण साधवी,
संजम पाल्यो मन रंग रे।
गुरणी साथे विचरती,
आतो भणी इग्यारे अंग ॥पांडव०॥

१३— अंत समे अणसण करी,
पहुंची पंचम देव-लोक रे।
महाविदेह में मुक्ति जावसी,
टाली ने आतम - दोष ॥पांडव०॥

१४— सपूतां रा सिरी सहू,
ज्यांरी कथा घणी छे एन रे।
रिख 'जयमल्लजी' इम कहे,
चावा मुसलमान शिव जैन रे ॥पांडव०॥

———

(११)

❀ देवदत्ता ❀

दोहा—

१— ओंकार अरिहंत सिद्ध, आचारज सूत्र-धार।
सर्व साध नमियां थकां, वरते मंगलाचार॥
२— इग्यार मां अंग ने विसे, दश कह्या दुख-विपाक।
भवि जीवां के सांभलो, चाहे पाप डर धाक॥
३— नवमां अध्ययन तणो, 'देवदत्ता' नाम भाव।
ज्ञानी देव प्ररूपिया, चतुर सुणो धर चाव॥
४— तिण काले ने तिण समे, 'जंबू' निश्चय जाण।
'रोहीड़ा' नाम नगर हुँतो, रिध-समरथ प्रमाण॥
५— 'पुढवी-वड़स' उद्यान थो, धरण हुतो तिहां यत्त।
'वैश्रमण–दत्त' राजा हुँतो श्री देवी प्रत्यत्त॥
६— 'फूस–नंदी' नामे कुमर, पदवी हुँती–युवराज।
तिहां 'दत्त' गाथापति, वसे ऋद्ध सताज॥
७— 'कृष्ण सिरी 'तेहने भारिया, देवदत्ता तेहनी बाल।
शरीर उत्कृष्टो हुंतो, रूप – कला असराल॥

ढाल–१

[राग—तिण अवसर मुनिराय]

१— तिण अवसर वर्द्धमान,
रोहीड़ा नगर उद्यान–जिनेश्वर राय–
साधां संगाते परवर्या ए।
२— परिषदा वांदण जाय,
देशना दीधी जिनराय–जिणसर राय–
सांभल ने पाछी गई ए।
३— तिण अवसर तिण वार,
'इन्द्रभूति' अणगार–जिणेसर राय–
छठ खमण ने पारणे ए।

४— प्रभुजी नी आज्ञा भंग,
तीजे प्रहर उछरंग-जिणेसर राय-
भमता दीठा हाथी घोड़ला ए।

५— पुरुषां री भीड़ न माय,
एक स्त्री ने वध ले जाय-जिणेसर राय-
देखण भीड़ घणी मिली ए।

६— अवली मसकां बांध,
चवड़े चच्चर सांध-जिणेसर राय-
राज पुरुष जावे घेरियां ए।

७— कान नाक काटे जोर,
संडाशां मांस तोड़-जिनेसर राय-
खवरावे नारी भणी ए॥

८— इसी विटम्बना कीध,
ले जाए शूली दीध-जिनेसर राय-
गौतम निजरां देखने ए॥

९— मनमां करे विचार
अहो अहो कर्म निरधार-जिनेसर राय-
इण पाछला पाप कैसा किया ए॥

१०— वीर समीपे आय,
सर्व कही जिम थाय-जिनेसर राय-
एक शूली दीधी असतरी ए॥

११— मोने कहो प्रभु आप,
एह ने किसा पेलतर पाप-जिनेसर राय-
पाछले भव ए कुण हुँती ए॥

१२— किसा नगर खेड़ा मांय,
इण कुण सा पाप कराय-जिनेसर राय-
एसा पाप उदे हुवा ए॥

१३— वीर कहे इम वाण,
गौतम निश्चय जाण-सुणो चित्त लाय-
इणहीज जंबू-द्वीप मे ए॥

१४— हुंतो 'सुप्रतिष्ठ' नगर नाम,
रिध भवन-बहु धाम-सुणो चित्त लाय-
'महासेण' राजा हुँतो ए॥

१५— तेहने धारिणी प्रमुख नार,
हुंती एक हजार-सुणो चित्त लाय-
धारणी नो पुत्र हुँतो ए॥

१६— 'सिंहसेण' नामे कुमार,
रूप कला उदार-सुणो चित्त लाय-
युव राजा की पदवी हुँती ए॥

१७— तेहने बाप ने माय,
'श्यामा' प्रमुख नार कहाय-सुणो चित लाय-
परणावी छे पांच से ए॥

१८— पांच से महल कराय,
एक दिवस परणाय-सुणो चित्त लाय-
पांच से दत्त दायजो ए॥

१९— 'सिंहसेण' नामे कुमार,
राण्यां संगे उदार-सुणो चित लाय-
महलां ऊपर सुख भोगवे ए।

२०— तेहने 'महासेण' राय,
काल गयो तिण ठाय-सुणो चित लाय-
निहरण कियो आडंबरे ए।

२१— राज बैठो सिंहसेण,
करि अभिषेक बहु जेण-सुणो चित लाय-
राज तणा सुख भोगवे ए।

दोहा—

१— सिंहसेण राजा तिहां, एक 'श्यामा' सूं मूर्छाय।
उण ही में चित्त बस रह्यो, बीजी नहीं बतलाय॥

२— च्यार से नीनाणूं राण्यां भणी, नहीं आदर सन्मान।
सार संभाल बतलावणो, एक 'सामा' ऊपर तान॥

३— अवर राणी मन चिंतवे, जिहां निज धाय मात ।
'श्यामा' सूं द्वेष घणो करे, चिंतवे छिद्र बहु घात ॥

४— राजा इण सूं मूर्छित घणो, म्हारा शम्न विण जोग ।
'श्यामा' जो पूरी पड़े, तो मिट जावे दुख ने सोग ॥

५— शोक तणा छिद्र जोवती, विचरत है इण भांत ।
एक-मना थई सांभलो, पड़े अपूठी रात ॥

ढाल—२

(राग—चंद्रगुपत राजा सुणो)

१— श्यामा राणी बात सांभली,
सोकां रखे मोने मारे रे ।
डरती आवी कोए घर मझे,
आंख्यां आंसूड़ा झरे रे ॥

२— जोयजो रे शाल शोकां तणो,
शोकां शूली सिरखी रे ।
शोकां काम जिके किया—
ते निजरां लीधा निरखी रे ॥जो०॥

३— श्यामा सोच करती थकी,
बैठी आरत-ध्यानज ध्यावे रे ।
सिंहसेण बात सांभली,
श्यामा पासे आवे रे ॥जो०॥

४— आरत ध्यान करती थकी,
राजा निजरां देखी रे ।
देवानुप्रिये इम किम करे,
मीठा वचन कह्या विसेखी रे ॥जो०॥

५— राय बतलाई राणी भणी,
रोवती बोले वायो रे ।
सोकां चार से निनाणवे,
इतरी ज्यांकी धाय मायो रे ॥जो०॥

६— थां को मोह मो ऊपरे,
शोकां ने लागे दोरो रे ।

घात माहरी चिंतवे सहू—
जाणूं रखे मरणो आवे म्हारो रे ॥जो०॥

७— सहू माहरा छिद्र जोती रहे,
जाणू किण कुमोते मारे रे ।
तिण सूं त्राम पामी घणी,
सहू वात कहो विस्तारे रे ॥जो०॥

८— सिंहसेण श्यामा भणी,
इसड़ी बोल्यो बायो रे ।
सोच फिकर करजे मती,
हूं करसूं तोने सुख पायो रे ॥जो०॥

९— थारे शरीर-बाधा नहीं ऊपजे,
हूं इसड़ो करसूं विचारो रे ।
आसासना दीधी घणी,
विश्वास बारं-बारो रे ॥जो०॥

१०— मेहलां सू राय बारे नीकली,
सेवग पुरुष बुलायो रे ।
जा तूं शहर ने बाहिरे,
एक कुड़ाग-शाला करायो रे ॥जो०॥

११— अनेक थांमा लगाय ने,
कर चतुराई चूंपो रे ।
लाख सेती रे लपेटिजे,
कर आज्ञा पाछी सूंपो रे ॥जो०॥

१२— सेवग वचन प्रमाण करी,
पछिम दिश नगर बारे रे ।
एक कुड़ागार-शाला करे,
अनेक थांभा लगाड़े रे ॥जो०॥

१३— 'सिंहसेण' राजा भणी,
आज्ञा पाछी सूंपी सेवग आयो रे ।
राजा सुण राण्यां धाय नेहतरी,
आयजो माहरे पायो रे ॥जो०॥

१४— चार से नीनाणु राणियां,
तेहनी धाय माई रे।
न्हाय धोय सिणगार करी,
राय ने हजूरे आई रे ॥जो०॥

१५— जाणो तूठो म्हांसूं राजवी,
आज मोने बतलाई रे।
कर्मा रे वश सूझे नहीं,
मोतड़ी नेड़ी आई रे ॥जो०॥

१६— वारे जावो नवा महल मां,
धाय वडारण थाटो रे।
विचरो खावत पीवती,
माहरी जोयजो बाटो रे ॥जो०॥

१७— वचन सुणी हर्षित थकी,
जाय महलां वासो लीधो रे।
हिवे कर्मां के वश राजवी,
केहवो अकारज कीधो रे ॥जो०॥

१८— सेवग ने राजा इम कहे,
च्यारूं आहार पोहचावो रे।
फल फूल गंध वस्त्र आद दे,
राण्यां धाय ने सुंपावो रे।

१९— सेवग सूंप्या ले जायने,
राण्यां जीमे च्यार आहारो रे।
छ जात ना दारू पीवती,
पड़े नाटिक-धुंकारो रे ॥जो०॥

२०— रंग राग करती थकी,
गंधर्व-गीत गाती रे।
खाती पीती विलसती,
रंग मां राती माती रे ॥जो०॥

२१— दोय कम सहस जणी,
इतरी सूत्र में दाखी रे।
गायक वडारण हुती जिका,
सूत्र मे निरत न भाखी रे ॥जो०॥

दोहे--

१— सिंहसेण राजा तिहां, एहवो अनरथ कीध ।
एक राणी रे कारणे, नरकां हाथ ज दीध ॥
२— श्यामा ने हेते करि, बीजी राण्यां सूं द्वेष ।
राग द्वेष रा फल बुरा, अरु बरु लीजो देख ॥
३— कदाच अधिको द्वेष हुवे, तो मूंडे नहीं बतलाय ।
के पीहर पहुँचाय दे, के सार न पूछे काय ॥

ढाल-३

(राग—आवे काल लपेटा लेतो रे)

१— तिण अवसर सिंहसेण रायो रे,
साथे केई चाकर लायो ।
आधी रात का आयो रे,
कुडागार-बार जड़ायो ॥
२— दोलो चोफेर फिरायो रे,
राण्यां ने दीधी लायो ।
सर्व दोली लाय लगाई रे,
न्हासण ने सेरी नहीं कांई ॥
३— राण्या दीठा धुवां-धोरो रे,
रोवे हेला करे सोरो ।
रोवे पीटे करे आक्रंदो रे,
राजा कपटी वणाव्यो फंदो ॥
४— केई आफच करवा लागी रे,
केई दोड़े पाछी आगी ।
तारण शरण नवि कोई रे,
भरतार जे दुपसण होई ॥
५— कोई न्हासण ने नहीं सेरी रे,
वले आधी रात अंधेरी ।
आया आऊखे रा सूतो रे,
हुवा काल-समण-मंजुत्तो ॥

६— न्यारसे निनाणू राणी रे,
धाय माता इमहिज जाणी ।
बल ने कर गई कालो रे,
लाख-महल कुड़ाग नी सालो ॥

७— चोथा आरा ने मायो रे,
इसड़ो संहार करायो ।
पंचमा काल रो स्यूं केहणो रे,
इम जाणी ने सुध वेहणो ॥

८— राजा इमडा कर्म बांध्या भारी रे,
चउतीस से बरस आऊ विचारी ।
राजा सिंहसेण कर कालो रे,
पड़ियो छट्ठी नरक विकरालो ॥

९— बावीस सागर नी थितो रे,
दुख भोगवे नित नितो ।
तिहां माहो-मांहिनी मारो रे,
पाड़े तिहा बूब पुकारो ॥

१०— एक बार किया पापो रे,
बहु काल पड़े संतापो ।
इम जाणी ने पाप सूं डरसी रे,
जिके राग-द्वेष परिहरसी ॥

दोहे—

१— छठी नरक सूं नीसरी, रोहिड़ा नगर ने माय ।
दत्त स्वार्थवाह घरे, कृष्णसिरि भार्या थाय ॥
२— जेहनी कूख मां ऊपनी, छठी नरक थी आय ।
पूरे मास जनम थयो, जाव रूपवन्त कहाय ॥
३— मात पिता दिन बार मे, निपजाया चऊ आहार ।
न्याती गोती जिमाय ने दियो 'देवदत्ता' नाम सार ॥
४— पांच धायां कर वाधती, लेतां हाथोहाथ ।
सुखे समाधे वध रही, जिम चंप-लता साक्षात ॥

१६— सीख दियां थी आवियो,
'वैसमण' राय ने पासो रे।
विवाह मान्या की बातड़ी,
सर्व कियो पुरुष प्रकासो रे ॥गोयम०॥

१७— तिवारे दत्त गाथापति,
निपजाया च्यार आहारो रे।
मित्र जाति कुटुंब जिमाय ने,
सहू ने वस्त्र-सत्कारो रे ॥गोयम०॥

१८— शुभ लगन करण थित जोय ने,
कन्या ने न्हाय धोय सिणगारो।
सहस्र वाहिनी शीविका मे बेसाण ने,
साथे कर बहु परिवारो रे ॥गोयम०॥

१९— बहु भेरी मादलादिक बाजतां,
जाव गावतां मंगल-गीतो रे।
'रोहिड़ा' नगर ने मझ थई,
आया राजा कन्हे इण रीतो रे ॥गोयम०॥

२०— हाथ जोड़ी राय ने वधावियो,
देवदत्ता ने सूंपी आणी रे।
राजा आई देख हर्षित थयो,
मांड्यो विवाह तणो मंडाणो रे ॥गोयम०॥

२१— च्यारे ही आहार निपजाय ने,
सहू न्यात कुटुम्ब जिमारी रे।
सतकारी सनमान दे
कुमर 'फूसनंदी' ने सिणगारी रे ॥गोयम०॥

२२— कियो अगन होम चंवरी मझे,
कुंवर ने पाणि-ग्रहण करावे रे।
दान दियो जाचकां भणी,
लोग कीरत बहुली गावे रे ॥गोयम०॥

२३— तात मात मंडाण सूं,
परणाव्यो रंग रलियां रे।
जाचकां ने दान दियो बहु,
पहिरावणी सगां ने वलियां रे ॥गोयम०॥

२४— देवदत्ता ना तात मात ने,
न्यारे ही आहार जिमारी रे।
सीख दीधी सतकार ने,
सिर-पाव गहणा दे भारी रे ॥गोयम०॥

२५— हिवे 'फूसनंदी' देवदत्ता सूं,
विलसे तिहां भोग उदारो रे।
ऊपर महलां छऊ ऋतु तणा,
बाजे मादल ना धुंकारो रे ॥गोयम०॥

दोहे—

१— हमे ते राजा 'वैश्रमण', काल समे कर काल।
मोटे मंडाणे निहरण कियो, सोग थित कांई पाल॥
२— 'फूसनंदी' राजा थयो, तेज प्रताप-पंडूर।
राज ऋध सुख भोगवे, पूर्व पुण्य अंकूर॥
३— 'देवदत्ता' सुख भोग, जिहां लग पुण्य नी छाप।
एक चित्त थई सांभलो, उदय हुवे किम पाप॥

ढाल—५

(राग - जम्बूद्वीप मंझार)

१— 'फूसनंदी' राजान,
सिरिदेवी मायनी-
भगती करे अति घणी ए॥

२— प्रथम ऊठ प्रभात,
माय ने पगां पड़े-
विनय भाव लुल लुल करे ए॥

३— पछे सहस्र-पाक शत-पाक,
सुगंध तेले करी-
माय तणो मर्दन करे ए॥

४— हाड त्वचा रोम सुहाथ-
केश तूटे नहीं-
पछे पाणी सूं न्हवराय ने ए॥

५— ऊनो शीतल सुगंध,
ए तीनूं जात रा–
सिनान करावे दीकरो ए ॥

६— पछे जीमावे, पंखी उडाय,
ढोले वायरो आप,
खुद सिनान वलि करे ए ॥

७— पछे भोजन करे आप,
भजतो मायने–
इम करने भोग भोगवे ए ॥

८— हिवे 'देवदत्ता' नार,
आधी रात रा–
कुटुम्ब जागरण जागती ए ॥

९— अध्यवसाय मन मांय,
इसड़ा ऊपना–
हुवो राजा भगतो मायनो ए ॥

१०— तेहने करी व्याघात,
मोड़ो संचरे–
माहरे भोग तणो विघन पड़े ए ॥

११— एहवो मन मे धार,
सिरी राणी तणा–
छिद्र विवर तकती रहे ए ॥

१२— सिरी राणी तिण वार,
भोजन मद करी–
सुखेज सूती नींद मे ए ॥

१३— देवदत्ता तिहां आय,
सासू ना महिल मां–
सूती दीठी सेजमां ए ॥

१४— अठी उठी दिस देख,
रसोड़े आय ने–
लोह दंड लियो हाथ में ए ॥

१५— ताती अगन ने मांहि,
डांडो लोह तणो-
फूल्या केशुला नी परे ए ॥

१६— संडाशा में झाल,
लाई लुकाय ने-
आई सिरी देवी कने ए ॥

१७— शरीर विवर अधो भाग-
मांहे प्रखेपियो-
बलतो डांडो लोह तणो ए ॥

१८— मोटा मोटा शबद,
सिरी देवी किया-
वेदन थी काल कर गई ए ॥

१९— असी वरस नी नार,
देवदत्ता हुई-
विषय कर्म इसड़ा किया ए ॥

२०— तिण अवसर ने गम्य,
श्री देवी तणा-
दासी शब्द्ज सांभल्या ए ॥

२१— आई श्री देवी ने पास,
देवदत्ता भणी-
दीठी पाछी निकलती ए ॥

२२— पासे दासी आय,
श्री देवी भणी-
मूई देख हा हा करे ए ॥

२३— मोटो अकारज होय,
आवी रोवती-
फूसनंदी राजा कने ए ॥

२४— राजा ने कहे एम,
श्री देवी भणी-
अकाले मारी सही ए ॥

२५— देवदत्ता पटनार,
मार ने नीकली-
सांभल राय धरणी ढले ए ॥

२६— जिम चंपा नी डाल,
फरसी छेदियां-
वेग थकी धरती पड़े ए ॥

२७— तिम पड़ियो राजान,
माय मूई सुणी-
सावधान बैठो कियो ए ॥

२८— राजा ईसर लोय,
सार्थवाह मन्त्री-
न्याती गोती बहु मिल्या ए ॥

२९— सर्व मिली लोकाचार,
रोवतां थका-
मोटे मंडाणे निहरण कियो ए ॥

३०— पाछो आय राजान,
देवदत्ता ऊपरे-
द्वेष भाव घणो ऊपनो ए ॥

३१— सेवग ने कहे राय,
देवदत्ता भणी-
लेई जावो आपड़ी ए ॥

३२— मांस संडाशां तोड़,
एहने खवायजो-
शूली जाय चढाय दो ए ॥

३३— राजा आज्ञा दीध,
मारवा भणी-
तूं आयो गोयम देखने ए ॥

३४— प्रभु ! राणी देवदत्ता,
आयु पूरो करी-
किण गत मे ए जावसी ए ॥

३५— अरसी वरस नी आव,
भोगव गोयमा-
रतन-प्रभा नरक जावसी ए ॥

३६— एक सागर नी थित-
मृगा लोढा नी परे-
जाव संसार भमसी घणी ए ॥

३७— भम ने गंगापुर मांय,
उपजस्ये हंस पणे-
जे पंखी ने मारसी ए ॥

३८— मार्यो गंगापुर मांय,
सेठ तणे कुले-
पुत्र पणे ए उपजसी ए ॥

३९— बोध बीज चारित्र पाय,
प्रथम देवलोके-
जाव महाविदेह में सीझस्ये ए ॥

४०— नवमों ए अध्ययन,
दुःख विपाक नो-
सुधर्म स्वामी जंबू ने कहे ए ॥

४१— संवत अठारे पचवीस,
कार्तिक वद तीय-
'नागोर' रिख 'जयमलजी' कहे ए ॥



(१२)

❀ तेतली पुत्र ❀

दोहा—

१— 'तेतली-पुत्र' प्रधान रा, भाख्या भगवन्त भाव ।
सूत ज्ञाता ते विसे, ते सुणजो करि चाव ॥

ढाल—१

(राग—कपूर हुवे अति ऊजलो रे)

१— कनक-धज राजा हुतोजी, पद्मावती पटराण ।
प्रधान तिण रो तेतली जी, च्यारूं बुद्धि नो जाण हो-
जंबू भाखे सुधर्मा साम ॥

२— तिण 'तेतलीपुर' ने विसेजी, 'कलाद' सोनार नो पूत ।
वसतो भद्रा भारजा जी, धन विनय अद्भूत ॥हो जंबू०॥

३— 'पोटिला' जिण रे दीकरी जी, जोवन रूप उदार ।
न्हाय धोय गहणा पहरने जी, दास्यां सूं रमे महल मझार॥हो जं०॥

४— सोनार नी कुंवरी देखने जी, मोह्यो तेतली प्रधान ।
सेवके मन अटकल्यो जी, अछे स्वामी चतुर सुजाण ॥हो जंबू०॥

सोरठा

१— कहे प्रधान इम वाय, जावो सोनी ने कहो ।
पुत्री पोटिला थाय, सो परणावो प्रधान ने ॥

२— सोनी सुणिया वेण, मन मांहे हरख्यो घणो ।
थे छो म्हारा सेण, परणाऊं पुत्री माहरी ॥

३— मोटे मंडाणे तेह, मझ बजारे चालियो ।
जिहां तेतली नो गेह, परणाई हरखे घणी ॥

४— सोनी पुत्री परणाय, पोहतो आपण रे घरे ।
तेतली पोटिला हर्षित थाय, संसार ना सुख भोगवे ॥

५— हिवे 'कनक-ध्वज' राय, मुरझ्यो राज मे अति घणो ।
करे कुण अन्याय, ते सुणजो चित थिर करी ॥

ढाल—२

(राग—राजवियां ने राज पियारो)

१— एक एक पुत्र नो हाथ अगूठो
इमहिज आंगुली-पाया ।
इमहिज कान ने अंगुली छेदे,
इमहिज नाक छेदाया ॥
राजवियां ने राज पियारो ॥

२— अंग उपांग एक एक छेदे,
खंडन वंडन कराया ।
तिण कारण इण ने राज न आवे,
कह्यो केहनो न मनाया ॥राज०॥

३— 'पद्मावती' राजा ने इम जाणे,
मरणो कदे नहीं आसी ।
काल तणो कदे नहीं भरोसो.
किण विरियां चल जासी ॥राज०॥

४— इसो विचार 'तेतली' ने तेड्यो,
सरव बात परकासी ।
राज-गृद्ध पुत्र-खोड़ लगावे,
कहो राज-धणी कुण थासी ॥राज०॥

दोहा—

१— प्रधान कहे राणी भणी थांरे हुवे जब पूत ।
म्हांने छाने तेडजो, राज रो बांधू सूत ॥

ढाल—वही

५— राणी बुलायो ने प्रधान आयो,
कारण किसे बुलायो ।
राणी कहे म्हे पूरे मासे,
आज पुत्र मै जायो ॥राज०॥

६— तहत्त करि कुमर हाथे झाल्यो,
दियो 'पोटिला' ने कहे राणी जायो ।

'ककन-ध्वज' राज रो गुद्धि हुवो,
सर्व संकेत सुणायो ॥राज०॥

७— ते बेटी पोटिला री राणी ने दीधी,
मूई बेटी राणी जाई।
राजा सुण ने सोग ज कीनो,
बेठो तापड़ बिछाई ॥राज०॥

ढाल–३

(-कपटी मिनख रो विश्वास न कीजे)

१— प्रधान रा बेटा री बधाई आई,
तब राजा हर्षित थायो जी।
भाखसी रा बंदीवान छुडावो,
नोपत शुरु करायो जी॥
दश दिन रो राजा मोछव मांडयो॥

२— तोला गज ने माप वधारो,
थे नगर ने जाय सिणगारो जी।
अणगिणी वस्तां देवो,
गीत नादे करि सिणगारो जी ॥दश०॥

३— घर घर वंदर-माला बांधो,
चंदन रा हाथा दिरावो जी।
थाल भरी भरी गुड़ बांटो,
इसड़ो मोछव करावो जी ॥दश०॥

दोहे—

१— प्रधान दिवस ग्यारमे, घर नी अशुचि टाल।
दिन बारमे कुटुम्ब ने, जीमाडयो ते सुविशाल॥
२— कवीला में मन्त्री कहे, 'कनक-ध्वज' राजा रे छांय।
जनम लिया-तिण ही गुणे, 'कनक-रथ' नाम कहाय॥
३— पांच धायां पालीजतो, वध्यो जोवन वय आय।
कला शिल्प आचार्य कने, बहोनर कला भणाय॥

ढाल-४

(राग—चढो चढो लाड़ा वार म लावो)

१— तेतली ने पोटिला मन मे न मानी ,
हिवे जाय न फिरे तिहां कानी ।
जोइजो सभाव इण मन केरो ॥

पहिलां लागती प्यारी ने ईठी ,
अवे नहीं सुहावे आंख्या दीठी ॥जोइजो०॥

२— न सुहावे मा बाप गोत नो नाम,
तो काम-भोग सूं केहवो काम ॥जोइजो०॥
किण विध सुं पड़ गई अंतराय,
सूत्र मे बात चाली नहीं काय ॥जोइजो०॥

३— आरत-ध्यान करे दिन रात,
बैठी देई गलोथे हाथ ॥जोइजो०॥
सोच देखी तेतली बतलावे ,
देवाणुपिया आरत किम ध्यावे ॥जोइजो०॥

४— घर मे आवे तिण ने भिक्षा घाली ,
किणहीने मत मेले खाली ॥जोइजो०॥
तब 'सुव्रता' आर्या आई ,
विनय करी बोले 'पोटिला' बाई ॥जोइजो०॥

५— धणी ने हुँती हूं कंता इट्ठी ,
अवे नहीं सुहावूं निजरां दीठी ॥जोइजो०॥
थे फिरो नगर पुर पाटण मांय ,
थांरो प्रवेश बडा घरां थाय ॥जोइजो०॥

६— थे कांई छानो निमत्तज जाणो ,
चूर्ण जोग तणो प्रमाणो ॥जोइजो०॥
वशीकरण .कोई राखड़ी डोरो ,
यंत्र मंत्र ने जोग निचोड़ो ॥जोइजो०॥

७— जड़ी बूंटी कांई गोली कर जाणो ,
म्हारा धणी ने म्हारे वश आणो ॥जोइजो०॥

विद्या फोड़ कर देवो कामण दूमण ,
हूँ बेठी छूं आमण - दूमण ।।जोइजो०।।

८— थे किसो इसो सुणायो रोग ,
म्होने कानांई सुणवा नहीं जोग ।।जोइजो०।।
इण बात री मैं नहीं अर्थी ,
म्हां बाजां श्रमणी निग्रंथी ।।जोइजो०।।

९— इण बात रो थांरो नहीं कोई दावो ,
तो केवली-परूप्यो धर्म सुनावो ।।जोइजो०।।
साधवियां विचित्र धर्म सुनायो ,
बारे व्रत लियां सुख पायो ।।जोइजो०।।

१०— तेतली ने कहे-पोटिला मुज आपो शिक्षा ,
'सुव्रता' आर्याजी पे हूं लेसूं दीक्षा ।।जोइजो०।।
प्रधान कहे हूं आज्ञा देसूं ,
एक वचन तो पहले लेसूं ।।जोइजो०।।

११— तूं तपस्या कर देव-लोक मे जावे ,
केवल धर्म प्रति-बोध लगावे ।।जोइज०।।
तब 'पोटिला' कोल बोल बंध कीधो ,
लीधी दीक्षा 'पोटिला' रो कारज सीधो ।।जोइजो०।।

१२— निःशल्य थई ने कीधो काल ,
देवलोक पहुँती तेतली ने भाल ।।जोइजो०।।
हिवे तेतली केवली किम थाय,
एक मना सुणजो चित्त लाय ।।जोइजो०।।

दोहे—

१— 'कनक-ध्वज' काल कर गयो, लोग कहे सहू एम ।
अंग-हीण कुंवर किया, यांने राज्य आवे कहो केम ।।
२— सहू कहे 'तेतली' भणी, च्यार बुद्धि बहु थांरो लाढ ।
कोई छांनो कुंवर रह्यो साबतो, इण विरिया में काढ ।।
३— तेतली कहे सहू भणी, 'पद्मावती' सारसी काज ।
छानो कुमर होसी जठे, ले वेसाणो राज ।।
४— 'पद्मावती' कहे राज-कुंवर रो, 'कनक-रथ' नाम उदार ।
मैं छानो सूंप्यो तेतली भणी, राज नो करो विचार ।।

ढाल—5

(राग—गतनी)

१— 'तेतली-पुत्र' सांभल इम वाणी ,
मिणगार सूंप्यो कुंवर आणी ।
लोग कहे ए पुत्र साक्षात ,
'कनक-रथ' राय नो अंग-जात ॥

२— कहे तेतली एह कुमार ,
राज – लक्षण जोग उदार ।
'कनक-ध्वज' थी अमे छानो राख्यो,
सहू राणां ने भेद भाख्यो ॥

३— इम सुण ने सहू हर्षित थाय ,
कुंवर ने अभिषेक कराय ।
सहू करी मोटे मंडाण ,
हर्ष करी ने राज्य बेसाण ॥

४— 'कनक – रथ' नाम कुमार ,
राज थाप्यो मिल परिवार ।
विचरे छे राज्य करंतो ,
हुवो पर्वत जेम महंतो ॥

५— 'पद्मावती' पुत्र ने तेड़ी ,
दे भोलावण प्रधान केरी ।
एह राज कोठार भंडार ,
देश मुलक अतेवर सार ॥

६— एह छे तेतली नो उपगार ,
मोटो कीधो छाने वधार ।
तिण सूं आदर घणो दीजे ,
तेतली सूं मन माने जेम कीजे ॥

७— मीठो बोले लाज पाले ,
इण ने विसारो मत घाले ।
इण री कुरब घणो वधारे ,
इण री बिगड़ी बात सुधारे ॥

८— इण आयां थी ऊभो थाईजे,
वले जातां ने पहुंचाईजे।
मनवारां करीजे अति जादी,
तूं इण ने धामजे आधी गादी॥

६— मोड़ो आयां री खबर ज कीजे,
गहणा सिर–पाव धन दीजे।
प्रमाण करी बोल्यो माजी।
हूं तो पहिली इण सूं थो राजी॥

दोहे—

१— कोण कुरब वधियो घणो, चाकर नफर करे सेव।
तिण अवसर वचन रो बांधियो, आयो पोट्टिल देव॥
२— समझावे घणूं तेतली, कहेज वारं – वार।
राज – अंध छकियो घणो, बूझे नहीं लिगार॥

ढाल–६

(राग—वीर सुणो मोरी बीनती)

१— तब पोटिला देव मन चिंतवे,
समजाऊं ओ हूँ तो किण विध घेर।
तो मुज ने सिरे अछे,
'कनक-रथ' नो हो देऊं मन फेर।
देव समजावे तेतली॥

२— राजा वधार्यो मुलायजो,
इण ने पूछी हो करे राय वाय।
राज – धुरंधर थापियो,
तिण सूं धर्म हो नहीं आवे दाय॥देव०॥

३— प्रभाते तेतली न्हाय ने,
गहणा हो सिर – पाव वणाय।
घोड़े चढ़ ने नीसर्या,
घणा वृन्दे हो राय-मुजरे जाय॥देव०॥

४— मिरे बजार मां तेतली,
चाल्यो हो नरां रे थाट।
आदर सन्मान देवे घणा,
विरुदावली हो बोले चारण भाट ॥देव०॥

५— घणे आडंबरे नीसर्यो,
केई चाले हो आगे ने पूठ।
मांडवी सेठ साह वाणिया,
मुजरो करे हो सहू ऊठ ऊठ ॥देव०॥

६— शहर मांहे इण पर कहे,
कुण छे हो तेतली सम आज ।
रांक करे हो रूठो थको,
पूठो हो सारे वंछित काज ॥देव०॥

७— आयो राजा रे पाखती,
'कन-करथ' हो नहीं बतलाय ।
भलो पण जाण्यो नहीं,
मुख फेरी हो बेठो छे राय ॥देव०॥

८— रूठो जाण मुजरो कियो,
नही दीधो हो पाछो जबाब ।
तब देखी ने डरफियो,
सही गमावे हो माहरी आब ॥देव०॥

दोहा--

१— तब तेतली मन चिन्तवे, राजा रूठो आज ।
छाती में धसको पडयो, किण विध रहसी लाज ॥

ढाल-७

(राग—जीव दयाधर्म पालो रे)

१— राणी दीधी भोलावण वाचा रे।
पिण राजा कान रा काचा।
कोई दुषमण काने लागो रे,
मोसूं राजा रो मन भागो ॥

२— मोने किण ही कुमोतज मारे रे,
डरतो प्रधान विचारे ।
हलुवे हलुवे पाछो गिरियो रे,
आय घोड़े ऊपर चढियो ॥

३— तेतली-पुर में विचाले रे,
कोई खातर में नहीं घाले ।
घणा विसर गया लोग पूठे रे,
कोई चोहठे रा लोग नही ऊठे ॥

४— कोई विरुदावली नहीं बोले रे,
सूने चित्त सूं मारग डोले ।
चलि आंपणे घरे आयो रे,
पोले चाकरां नहीं बतलायो ॥

५— मांहिली परीषदा मे आयो रे,
बहिन भाई नही बतलायो ।
सगला देखे आदर नहीं दीधो रे,
किण ही लटको नही कीधो ॥

६— सेजां आय ने मन में विचारी रे,
आपदा पड़ी मो मे भारी ।
जातां कारण सात्ताता रे,
आवतां री बिगरी बातो ॥

७— तो राजा बूरे हवाले मारे रे,
तो हूँ किसो पडूं राय ने सारे ।
तेतलीपुत्र इम विचारी रे ।
तालपुट विप मन में धारी ॥

ढाल—८

[राग—जगत गुरु त्रिसला नंदन वीर]

१— तालपुट जहर भालनेजी,
चांप्यो तालवे मांय ।
तो पिण जहर पायो नहीं जी,
अमृत होय जाय ॥
तेतली करवो कवण विचार ॥

२— इमो विष खाधां थकांजी,
मरे तीन ताली रे मांय।
किण विध मोक्ष सिधावसीजी,
देव कर रयो साय ॥तेतली०॥

३— वीजल-सार तरवार ने जी,
मेली गले पूरे काढ।
बोदो लाकड़ होय गयोजी,
घणो लगायो छे वाढ ॥तेतली०॥

४— आसोग-वाड़ी में आयने जी,
गले पासी लीधी ऊठ।
बांधी डाल सूं लट कियो जी,
ते पिण गई तूट ॥तेतली०॥

५— तब मोटी शिला बांधने जी,
बावड़ी जल मे पडियो जाय।
तो पिण मोत आई नहीं जी,
शिला तूटी बाहिर आय ॥तेतली०॥

६— आग लगाई जुगत सूंजी,
पड़ियो तामे जाय।
आग बुझी वा ततक्षणेजी,
टलियो एह उपाय ॥तेतली०॥

दोहा—

१— आरत ध्यान तेतली करे, आई न पांचों मोत।
किण विध जागी तेहनी, जीवन केरी जोत॥

ढाल—६

[राग—राणी मांड्या ढपला ने सोगो ए]

१— तेतली बैठो आरत ध्याई रे,
पांच मोत तिके नहीं आई।
मैं तो पांच मोत करी छाने रे,
जिका समण माहण नही माने॥

२— न्याती गोती लोक करसी हांसो रे,
जो जो 'तेतली' नो तमासो।
इम चिंतवी आरत ध्यावे रे,
एतले 'पोटिला' देवज आवे॥

३— रूप वैक्रिय बनाई रे,
प्रधान ने बोले आई।
बाघ अठी ने आगे खाई रे,
विच में रहणो है दुख-दाई॥

४— सूझे नहीं घोर अंधारो रे,
तिण में किम हुवे छुटकारो।
गांव बले ते रन में जावे रे,
रन बले तो गामड़े आवे॥

५— दोनों में लायज लागी रे,
अब कहां जायगो भागी।
इण संसार मे मती मुरझो रे,
तेतली प्रधान ते बूझो॥

६— तेतली कहो नीं स्यूं करणो रे,
बीहतां ने दीक्षा रो शरणो।
भूखा ने भोजन तिरसा ने पाणी रे,
रोगिया ने औषध जाणी॥

७— थाका ने वाहण असवारी रे,
तिरवाने वाहण आधारी।
इत्यादिक कह्या विचारी रे,
सूत्र मे घणो अधिकारी॥

८— बीहतां ने दीक्षा नो शरणो रे,
क्षमा दया सूं पार उतरणो।
पोटिला देव कहे बुध धारी रे,
दीक्षा री भली विचारी॥

९— दियो तीन वार काना वाली रे,
देव आयो निज थान चाली।
तब तेतली ध्यायो शुभ ध्यानो रे,
ऊपनो जाति – समरण ज्ञानो॥

दोहे—

१— तिण अवसर 'तेतली' तणा, आया शुभ परिणाम ।
जाति-समरण ऊपनो, पूरब भव देख्यो ताम ॥

२— इणहिज जंबूद्वीप मां, महाविदेह ने मांय ।
'पुखलावती' विजय ने विषे 'पुंडरीकनी' नगरी कहवाय ॥

३— 'महापद्म' राजा हुवो, थिवरां पासे ली दीख ।
चवदे पूरब भणी करी, पाली गुरु नी सीख ॥

४— इक मासनी सलेखना, 'महाशुक्र' देव लोक ।
काल करीने ऊपनो, आऊ सतरे सागर थोक ॥

ढाल—१०

[राग—विरागी थयो]

१— सातमां स्वर्ग थी चव करी रे,
तेतलीपुर ने रे मांय ।
तेतली मुहतां ने घरे रे,
सुभद्रा नी कूखे ऊपनो आय रे ॥

२— धन धन जिन धर्म ने रे,
धर्म थकी सीझे काज रे ।
सुख संपदा मिले घणी रे,
पामे शिवपुर राज रे ॥धन०॥

३— तो सिरे मोने साधुपणो रे,
एहवो कीध विचार रे ।
स्वयमेव लोचन करी रे,
पच महाव्रत धार रे ॥धन०॥

४— आयो प्रमदा उद्यान मे रे,
अशोक वृक्ष ने हेट ।
पुढवी-शिला-पट ऊपरे रे,
जिहां वेठो चिंता मेट रे ॥धन०॥

५— शुभ विचार करतां थकां रे,
पाछला भव रे मांय ।

चवदे पूरब भणिया हुँता रे,
ते सहू याद कराय रे ॥धन०॥

६— तेतलीपुत्र अणगार ने रे,
आयो रूड़ो ध्यान।
आवरण सब खपाय ने रे,
उपनो केवल ज्ञान रे ॥धन०॥

७— तिण अवसर तेतलीपुत्र नो रे,
व्यंतर देवी आय।
केवल नी महिमा करी रे,
देव – दुंदुभी बजाय रे ॥धन०॥

८— पांच वरण फूलां तणी रे,
विरखा कर तिण वार।
बाजित्र गीत नाटक करी रे,
महिमा करे अपार रे ॥धन०॥

९— 'कनकरथ' राजा सांभली रे,
तेतली थयो अणगार।
केवल – महिमा सुर करे रे,
जाय वन्दू बारंबार रे ॥धन०॥

१०— आदर सनमान मैं ना दियो रे,
जाय खमाऊं इण बार।
इम विचारी राजा चालियो रे,
चतुरंग सेना लार रे ॥धन०॥

११— प्रमदा – वन उद्यान मे रे,
तिहां आयो महाराय।
तेतलीपुत्र अणगार ने रे,
वंदना करी खमाय रे ॥धन०॥

१२— राजा बेठो सेवा करे रे,
मुनिवर दे उपदेश।
आगार ने अणगार नो रे,
बतायो धरम रो रेश रे ॥धन०॥

१३— कनकरथ धर्म सांभली रे,
ले श्रावक ना व्रत बार।
जाण हुओ नव-तत्व नो रे,
तेतलीपुर - सरदार रे ॥धन०॥

१४— सामायिक पोसह करे रे,
कनकरथ बहु भाव।
रागी हुवो जिन-धर्म नो रे,
मुगत जावण रो चाव रे ॥धन०॥

१५— घणा बरस संयम पालने रे,
तेतलीपुत्र मुनिराय।
आठ करम खपाय ने रे,
मुगती विराज्या जाय रे ॥धन०॥

१६— सुधर्म कहे जंबू ! सुणो रे,
एह 'ज्ञाता' ना भाव।
भगवन्त निश्चय भाखिया रे,
भवि सुणो धर चाव रे ॥धन०॥

१७ — संवत अठारे पच्चीस मे रे,
नागोर कियो चौमास।
ऋषि 'जयमलजी' जोड़ करी रे,
सूत्र अनुसारे भास रे ॥धन०॥



(१३)

❀ सद्दाल पुत्र ❀

दोहे—

१— वीर नमूं शासन - धणी, गणधर गौतम सार।
मोटी पदवी ना धणी, लब्धि तणा भंडार॥

२— सुधर्म स्वामी रा पाटवी, जेहना अंतेवास।
जंबू साम पूछा करे, उपासगदसा-प्रकाश॥

३— कुंभकार सद्दाल ना, भाव कह्या भगवान।
तिण अणुसारे जोड़कर, कहूँ सुणो धर ध्यान॥

ढाल—१

(राग—जगतगुरु)

१— तिण काले ने तिण समेजी,
इण भरत क्षेत्र ने मांय।
'पोलास - पुर' नगर हुतो जी,
'सहसंब' बन कहाय॥
जंबू ! भासे सुधर्मा स्वाम,
ज्यांरो ज्ञान प्रकाशियोजी।
आवे घणा रे काम॥

२— सद्दाल नाम कुंभार थो जी,
पोलासपुर रे मांय।
तीन कोड़ सोवन धणी जी,
जिण रे एक गोकुल री गाय॥जंबू०॥

३— तीन भाग आणंद नी परे जी,
पांच सौ जिण रे हाट।
लागे मजूर अति घणा जी,
रोजगार रो ठाठ हो॥जंबू०॥

४— दिन दिन प्रते वासण घड़े जी,
भांति भांति बहु भेद।

घड़िया माटा माटली जी,
बेचण तणो उम्मेद हो ॥जंबू०॥

५— घी तेल री मूणा घड़ेजी,
कोठ्यां बहु परमाण।
करवा ढाकण कूंडला जी,
इत्यादिक सब जाण हो ॥जंबू०॥

६— दिन प्रते विकरो करे जी,
पोलासपुर रे मझार।
आजीविका करे इण परेजी,
विंभो जिणरे अपार हो ॥जंबू०॥

७— गोशालक ना साधां प्रतेजी,
देवे अटलक दान।
उणां ने वंदन करेजी,
सेवा पूजा दे सनमान हो ॥जंबू०॥

८— जिण सद्दाल तणे हुती जी,
'अग्निमित्रा' नामे नार।
प्रीतम सूं अति रागिणी जी,
जोवन रूप उदार हो ॥जंबू०॥

दोहे—

१— एक दिवस 'सद्दाल' ते, जाय पाछले पोर।
अशोक-वाडी ने मझे, ध्यान करे दिल खोल॥
२— ध्यान गोशाला नो ध्यावतां, देव आयो तिण ठाय।
आकाशे ऊभो थको, गुग्घरिया घमकाय॥
३— वचन कहे 'सद्दाल' ने, मीठा और विशाल।
महा-माहण पधार से, वांदण जाजे काल॥

ढाल--२

(राग--जगत गुरु०)

१— इन्द्रों ना पुजनीक,
मोटा जिनवरू—
मुक्ति नगर ना दायका ए।

२— तीन काल ना जाण,
भव–जीव तारक–
उत्पन्न नाण दंसण धरा ए।

३— अतिशय गुण चौतीस,
वाणी पेंतीस–
बारह गुणे करी दीपता ए।

४— म हणो जीव छकाय,
उपदेश एह्वो–
तारण जिनराय नो ए।

५— तपस्या करण जुगत,
और कराविवा,
जिण पुरुषां ने जायने ए।

६— वन्दना कर सत्कार,
थानक पाटला–
भाव सहित तूं धाम जे ए।

७— दोय बार त्रण बार,
इम भाखी करी देव–
आयो तिण दिश गयो ए।

८— इम चितवे सद्दाल,
गुरु छे माहरो गोशाल।
सही आवसे ए।

९— देवराज पुजनीक,
महा–माहन सही—
धर्म आचार्य माहरा ए।

१०— इम करतां विचार,
जिण चौवीस मां,
वाग मांहे समोसर्या ए।

११— सांभल ने सद्दाल,
ए गुरु नहीं माहरा—
ए तो वीर समोसर्या ए।

१२— एह विचार्यो तेह,
वीर समोसर्या।
वांदण ने अब जावणो ए।

१३— आभरण सज शिर-पाव,
वांदण ने चाल्यो-
जाय ने वन्दणा करी ए।

१४— वीर लियो बतलाय,
तूं वाडी मज्के ध्यान-
कर बैठो हुतो ए।

१५— देव कही तुझ वात,
मुझ वांदण भणी-
तूं गोसालो जाणियो ए।

१६— माने आया जाण,
तूं देव तणे कह्यो-
वांदण इहां आवियो ए।

१७— ए अर्थ समर्थ,
हंता साच है-
देव कह्यो - मुझ आसरे ए।

१८— श्री जिन अवसर देख,
धर्म कथा कही-
सुण सद्दाल हर्षित थयो ए।

१९— वन्दना कर कहे एम,
हाटां पांच से-
तिहां तुम आय समोसर्या ए।

२०— सेजा पाट संथार,
लीजे माहरा-
मन शुद्ध करने कहे ए।

दोहे—

१— सुणी बात मानी करी, वीर आया तिण ठाय ।
हेतु करी सद्दाल ने, किण विध दे समझाय ॥
२— सद्दाल ने इसड़ी कहे, थारे वासण नीपजे केम ? ।
बलतो सद्दाल इम कहे, ते सुणजो धर प्रेम ॥

ढाल—३

(राग—यंतनी)

१— स्वामी पेलां मैं माटी आणी,
पछे पाणी सुं छड़काणी ।
छार छाण गुंदाणी,
पींडो बांध ने चाक चढाणी ॥

२— पछे लकड़ी सूं चाक भमारी,
पछे हाथां सूं पछारी ।
छड़की पाणी सुंस बारी,
पछे डोरी सूं चाक उतारी ॥

३— छार दे हाथां सूं आधारा,
थापा दे दे ने वधारा ।
पछे ले बायरे मूकी,
तावड़े गया वासण सूकी ॥

४— पछे खिड़की निहाव मे जाई,
फूस देई ने आग लगाई ।
पकाई ने कीधा त्यारे,
पछे हांडा नीपना म्हारे ॥

५— वीर कहे ते उद्यम कीधो,
एतो बात दीसे परसीधो ।
तद सद्दाल बोल्यो आम,
स्वामी उद्यम रो स्यूं काम ॥

६— एतो हूंण पदारथ हुतो,
स्वामी ! ऊद्यम तो रह्यो जुदो ।
गोशाला री सरधा खोटी,
प्रभु भूल काढे ग्रही चोटी ॥

दोहे—

१— प्रभु तीन काल ना जाण छे, छानी नहीं कोई बात ।
हेतु जुगत दृष्टांत दे, समजावे साक्षात ॥
२— वीर सरीखा गुरु मिल्या, अतिशय-धारी आप ।
वचन जिणा रा सरधियां, कटे अभ्यंतर पाप ॥

ढाल—४

[राग—अधर्मी अवनीत]

१— सुण सद्दाल ! तूं वाय ,
कोई सोटो ले नर आय ।
वासण ताहरे ए ,
बटका बटका करे ए ॥

२— कर कर अधिको जोर ,
पड़ पड़ नांखे फोड़ ।
अस्त्री ताहरी ए ,
अग्निमित्रा परी ए ॥

३— पहिर ओढ़ जल—न्हाय ,
सज सिणगार बणाय ।
शोभा गहणा तणी ए ,
जलुसायत घणी ए ॥

४— कोई पुरुष अनेरो आय,
काम—भोग विलसाय ।
निजरे थारी पड़े ए ,
दंड कुण सो करे ए ॥

५— मांरू कूटूं स्वाम ,
पाडूं तिण री माम ।
शिर काटी धरूं ए ,
जीव—रहित करूं ए ॥

६— रावले मांहि रुकाय ,
धन लूं सर्व लुटाय ।

नाक काटूं सही ए।
न करूं कांई गई ए?॥

७— वीर कहे इम वाय,
थने न कल्पे कांय।
जिण पुरुष ने सही ए,
मारणो नहीं ए॥

८— थारे होणं पदार्थ होय,
इसड़ी सरधा जोय।
तूं राह पकड़े जूवो ए,
आखतो क्यूं हुवो ए॥

९— जो तूं पुरुष ने जाय,
जीविया ववरोविया कराय।
सरधा ताहरी ए,
मिथ्या जाणे खरी ए॥

१०— सद्दाल सुणिज वाय,
वेस गई दिल मांय।
सरधा प्रभुजी कही ए,
तेहिज साची सही ए॥

दोहे––

१— इतरा दिन आंधो हुवो, अब उघड़िया नेण।
कृपा करी ने सुणायदो, केवल हदा वेण॥

२— प्रभुजी दीनी देशना, इसड़ो अवसर जोय।
आगार ने अणगार नो, धर्म परूप्या दोय॥

३— सद्दाल सुण हर्षित थयो, सरधा वचनज सार।
साधपणा री सगति नहीं, श्रावक ना व्रत बार॥

ढाल–५

(राग—धर्म दलाली चित करे)

१— जाणी पूछी आकूट ने,
त्रस जीव नहीं मारूं जी।

मन वचन काया करी,
पहिलो व्रत इम धारूं जी ।
वृत्ति करावो श्रावक तणी ॥

२— थापण हूँ राखूं नहीं,
कन्या धरती ने गायो जी ।
मोटो झूंठ बोलूं नहीं,
कूडी साख न भरायो जी ॥वृत्ति०॥

३— ताले ऊपर कूंची नहीं,
गांठ ने खातर फोड़ी जी ।
लाधी वस्तु नट्टूं नहीं,
लाऊं न धाड़ो पाड़ी जी ॥वृत्ति०॥

४— अग्निमित्रा नारी मोकली,
बीजी रो पचखाणो जी ।
बीजा ही त्याग तेविध किया,
आनंद नी परे जाणो जी ॥वृत्ति०॥

५— बारे ही व्रत इम लिया
नव तत्व भेदज धारो जी ।
वीर जिनंद ने छोड ने,
आयो नगर मजारो जी ॥वृत्ति०॥

६— इण परे आणे वीर पे,
अग्निमित्रा नारी जी ।
धर्म तणी अणुरागिणी,
पति नी आज्ञा-कारी जी ॥वृत्ति०॥

दोहा —

१— नव तत्व हिवड़े मे धरी, कर वन्दणा सन्मान ।
धणी धणियानी व्रत लिया, देवे सुपातर दान ॥
२— वीर सरीखा गुरु मिल्या, म्हांरा मोटा भाग ।
बात गोशाले सांभली, जाणे लागी छाती मे आग ॥
३— पोलासपुर मे जाय ने, लाऊं पाछो घेर ।
वीर नी दृष्टि भमाय ने, म्हारे लाऊं लेर ॥

४— इम चिंतव आयो चली, सभा आपणी मांय ।
कितरायक साथे करी, सद्दाल ने घर जाय ॥

ढाल—६

(राग—वधावा की)

१— सद्दाल गोशालक ने देख ने,
नहीं बोल्यो वाणी हो ।
ऊठ ने ऊभो हुवो नहीं,
आयो भलो नहीं जाणी हो ॥

२— जब गोशालक जाणियो,
सेठा सूतज लागा हो ।
माहण माहण आविया,
कहे जांचण जागा हो ॥

३— पाछो सद्दाल इम कहे,
कुण माहण सधीर हो ।
गोशालो बलतो कहे,
भगवन्त श्री महावीर हो ॥

४— ते वीर ने माहण किम कहे,
मोने अर्थ बताय हो ।
बलतो गोसालो इम कहे,
माहण वीरज थाय हो ॥

५— उप्पन्न-नाण-दंसण-धरा,
तिहूं काल ना जाणी हो ।
अतिशय पराक्रम ना धणी,
पूजे इन्द्र इन्द्राणी हो ॥

६— माहण माहण उपदेश ए,
करे इन्द्र सेवा हो ।
तपस्या करि कर्म ढाय ने,
वंदनीक नित - मेवा हो ॥

७— कुबुध मिथ्या पड़तां थकां,
दुग्गत जातां पाले हो ।

म्हामता आमता जीव ने,
मुगत नगरे घाले हो ॥

८— इण अर्थे माहण कह्या,
मद्दाल सुण वाया हो ।
दूजो परसन पूछूं इहां,
'महा-गोप' ज आया हो ॥

९— उत्तर रीतज पाछली,
गोहरी जंगल जाय हो ।
गायां रा जतन बहु करे,
रखे कोई ले जाय हो ॥

१०— मोटो डांडो हाथ मे,
गायां ने चार हो ।
चोर नाहर सूं राख ने,
आण वाड़े दे वार हो ॥

११— इण रीते श्री वीरजी,
भव जीवज गाय हो ।
गोहरी जिम रक्षा करे,
घाले मोख मांय हो ॥

१२— महा-गोवाल इण कारणे,
वले स्वार्थ - वाह हो ।
गोसालो कहे आया हुँता,
अर्थ उणहीज राह हो ॥

१३— कोई सथवाड़ो साथ ले,
पाटण जाण उमावे हो ।
कोई क्रियाणा व्योपार ने,
मो साथे आवे हो ॥

१४— टोटो तो थांने नही छे,
नफा रे मांय हो ।
इण रीते करार करी,
पाटण ले जाय हो ॥

१५— सार्थ-वाह ज्यूं वीरजी,
पाटण जिम मोख हो।
सुखे समाधे पहुंचाय दे,
टाली सगला दोष हो॥

ढाल-७

(राग—स्वामी म्हारा राजा ने धर्म)

१— आया देवानुप्पिया !
धर्म-देशना-दायक हो-भवियण।
सद्दाल कहे कुण एहवा—
वीर जिणेसर लायक हो-भवियण।
वीर जिणेसर वंदिये॥

२— संसार भमता जीव ने,
आठ करम नो भार हो-भवियण।
हेतु जुगत दृष्टांत दे,
देवे पार उतार हो-भवियण॥वीर०॥

३— आप तणे हाथे करी,
देवे मोक्ष पहुँचाय हो-भवियण।
इण अर्थे तोने कह्यो,
उपगारी जिनराय हो-भवियण॥वीर०॥

४— पांचमो परसन इम कहे,
आया महा-निर्याम हो-भवियण।
सद्दाल कहे किण ने कहो,
वीर जिणेसर स्वाम हो-भवियण॥वीर०॥

५— वीर ने निर्याम किम कहे,
पाछो गोशालो भाखे हो-भवियण।
संसार समुद्र मे डूबता,
धर्म री नांव सूं राखे हो-भवियण॥वीर०॥

६— जिम निर्याम नावा सहू,
समुद्र पार उतारे हो-भवियण।
तिम अव्रत नाला रोक ने,
भव जीवां ने तारे हो-भवियण॥वीर०॥

७— सद्दाल कहे थांरी वुध घणी,
चतुराई सरसी हो-भवियण।
माहरा धर्माचारज वीरजी,
ज्यां सूं चरचा करसी हो-भवियण ॥वीर०॥

८— एह अरथ समरथ नहीं,
थाहरा गुरु छे भारी हो-भवियण।
वाद विवाद कर ना सकूं,
सुण एक बात हमारी हो-भवियण ॥वीर०॥

९— कोई बलवन्त तरुणो पराक्रमी,
जिण मे बहु चतुराई हो-भवियण।
छालो सूयर कूकड़ो,
तीतर बटेरो थाई हो-भवियण ॥वीर०॥

१०— चीडी कबूतर कागलो,
सिंचाणो वली थाय हो-भवियण।
हाथ पांव पांख पूंछड़ी,
सींग लेवे समाय हो-भवियण ॥वीर०॥

११— रोम झाल सेठो ग्रहे,
उड़ न सके चाल हो-भवियण।
तरुण पुरुष निबलां प्रते,
सेठो राखे झाल हो-भवियण ॥वीर०॥

१२— इण दृष्टांते वीरजी,
हेतु जुगत सूं जकड़े हो-भवियण।
हूंतो बोली ना सकूं
कष्ट करी मोने पकड़े हो-भवियण ॥वीर०॥

१३— तिण कारण समरथ नहीं,
प्रभु सुं करवा चरचा हो-भवियण।
कुसामदी इसड़ी करी,
लगाया ते परचा हो-भवियण ॥वीर०॥

१४— सद्दाल कहे मुझ गुरु तणा,
भाव साचा सुणाया हो-भवियण।
ले थानक ने पाटला,
उतर इणविध ठाया हो-भवियण ॥वीर०॥

१५— न धर्म भणी, न तप भणी,
मैं थानक नहीं दीध हो–भवियण।
म्हारा धर्माचार्य वीर ना,
ते छता गुण कीध हो भवियण ।।वीर०।।

दोहे––

१— सद्दाल आज्ञा दियां थकां, थानक उतर्यो जाय।
जिनवर धर्म चलायवा, कीधा बहुत उपाय।।
२— पिण सद्दाल चल्यो नहीं, खोभ्यो नहीं लिगार।
मन पिण फेर सक्यो नहीं, थाक गयो तिण वार।।
३— पोलासपुर थी नीकली, बाहिर करे विहार।
विचरे जनपद देश मे, कपट तणो भंडार।।

ढाल–३

(राग – मेड़तिया भंवरजी रो करहलो ए :)

१— तिण अवसर सद्दाल ते,
श्रावक ना व्रत पालेजी।
चवदे वरस पूरा हुवा,
पनरमां वरस ने कालेजी।।

२— एहवो श्रावक वीर नो,
बैठो पोसा मांयो जी।
आधी रात तणे समे,
धर्म ध्यान शुद्ध ध्यायोजी ।।एहवा०।।

३— एक देव परगट थयो,
हाथे खड़गज झालो जी।
उपसर्ग कीधो आकरो,
चूलनीपिया जिम भालोजी ।।एहवा०।।

४— तीनूं ही पुत्रां तणा,
नव नव बटका कीधा जी।
कल कल तो तेल सींचियो,
पिण धर्म सूं छेह न दीधा जी ।।एहवा०।।

५— धर्म - ध्यान विचारतां,
डरप्यो नहीं लिगारो जी।
देव जाण्यो सेंठो घणो,
तब बोल्यो चोथी वारोजी ॥एहवा०॥

६— हंभो अपत्थ-पत्थिया,
काली अमावस रा जायाजी।
जाव तोने धर्म न भांजवो,
पिण हूँ भंजावसूं भायाजी ॥एहवा०॥

७— अग्गिमित्ता थारी भारजा.
धर्म-साज देवण-हारी जी।
डिगता ने सेंठो करे.
सम सुख दुख सहन-वारीजी ॥एहवा०॥

८— थारे आगे मारसूं,
ते घरमां सूं लायो जी।
नव सुला कर मांस ना,
कडायला मांय तलायोजी ॥एहवा०॥

९— थारो गातज सींचसू,
मांस लोही कर चालो जी।
आहट दोहट वशे पड्यो,
तूं करजासी कालो जी ॥एहवा०॥

१०— पिण सद्दाल डर्यो नही,
धरम-ध्यान में सेंठो जी।
दूजी तीजी वार जाणियो,
एतो म्हारे छे बेठो बेठो जी ॥एहवा०॥

११— इण तीन पुत्रां ने मारिया,
दुख दीधो तिण ठायो जी।
मारी चाहे मुझ नार ने,
धर्म नो साहज दिरायो जी ॥एहवा०॥

———

ढाल-११

(राग—अनोखा भंवरजी हो सा०)

१— तिण कारण सिरे मो भणी हो-भवियण,
इण पुरुष ने लेऊं झाल ।
एम विचारी उठियो हो-भवियण,
देव गयो उड चाल ॥
धन धन वीर ने हो-भवियण,
दृढ धर्मी सद्दाल ॥

२— धेंहल पड़ी सद्दाल ने हो-भवियण,
थांभो पकड्यो जाय ।
देव वली चलतो रह्यो हो-भवियण,
शब्द कोलाहल कराय ॥धन०॥

३— 'अग्निमित्रा' भार्या सुण्यो हो-भवियण,
हेलो कीधो केम ।
अर्ध निशा में किम बक्या हो-भवियण,
तो नही कुशल ने क्षेम ॥धन०॥

४— आवी ने नारी कहे हो-भवियण,
कोलाहल केम कराय ।
बेटा नारी तणो हो-भवियण,
सहू दी बात सुणाय ॥धन०॥

५— नारी कहे पुत्र तीनूं सुखी हो-भवियण,
सूता छे घर मांय ।
हूँ आई थांरे कने हो-भवियण,
दियो उपसर्ग सुर कोई आय ॥धन०॥

६— तिण कारण देवाणुप्पिया हो-भवियण,
नेम ने पोसह भाग ।
आलोयण लो मल काढ़ ने हो-भवियण,
म्हारे थासूं धर्म नो राग ॥धन०॥

७— न्याय जाण प्रायछित लियो हो-भवियण,
श्रावक प्रतिमा आराध ।

बीस बरस व्रत पालने हो–भवियण,
निज आतम ने साध ॥धन०॥

८— एक मास अणसण करी हो–भवियण,
गयो प्रथम देवलोक ।
च्यार पल्योपम आऊखे हो–भवियण,
चवने जासी मोख ॥धन०॥

९— उपासक दशा मध्ये हो–भवियण,
अध्ययन सात में भाख ।
तिण अनुसारे ऋषि 'जयमलजी' कही हो–भवियण,
वाचजो जयणा राख ॥धन०॥

१०— संवत अठारे पचीस मे हो–भवियण,
नागोर शहर चौमास ।
जोड़ करी ए जुगत सूं हो–भवियण,
श्री जिन वचन प्रकाश ॥धन०॥

———

(१४)

❀ श्रावक-महाशतक ❀

दोहा—

१— अरिहंत देव आराधिये, गुरु गिरवा गुणधार ।
अज्ञान – तिमिर दूरे हरे, पहुंचावे भव-पार ॥

२— राजगृही नामे नगर, श्रेणिक नामे राय ।
'महाशतक' श्रावक वसे, रिद्धे दीपतो थाय ॥

३— आठ कोटी धरती मभे आठ कोटि व्यापार ।
आठ कोड़ घर-बीखरो, गायां अस्सी हजार ॥

४— तेहरे तेने भारिया, रेवती देई आद ।
पीहर थी तेरह जणी, ल्याई गायां जाद ॥

ढाल-१

१— रेवती नामे नार,
निज पिहर थकी ल्याई।
आठ कोड़ी सोवन तणी ए।

२— गायां अस्सी हजार,
ल्याई पीहर थी।
शेष नार कोड़ि ही ए॥

३— गायां दश हजार,
ल्याई एकीकी—
पीऊ सेती सुख भोगवे ए।

४— तिण काले महावीर,
राजगृही तणे,
गुण-शिल चैत्य समोसर्या ए॥

५— महाशतक वांदण जाय,
आणंद नी परे,
श्रावक धर्म सरध आदर्यो ए॥

६— बारह व्रत लीना सार,
शुद्ध नव तत्व व्रत धारने—
पोषह पड़िकमणो करे ए॥

७— विमणी रिध विसतार,
कहीजे आणंद थी—
सावधान करणी करे ए॥

८— नित प्रति कल्पे दोय,
द्रोण सोनैया भणी।
करूं व्यापार, मुझ मोकलो ए॥

९— महाशतक हुवो श्रावक,
चवदे प्रकार नो—
देवे दान सुपात्रां ए॥

१०— भगवन्त श्री महावीर,
विहार बाहिर कियो,
भव जीवां उपगार ने ए॥

११— हिवे रेवती नार,
आधी रात रा-
कुटुम्ब-जागरण जागतां ए॥

१२— संकल्प विकल्प भाव,
मन में ऊपना-
शोकां बारह म्हारे सांवठी ए॥

१३— म्होने पड़े व्याघात,
भोग जे भोगवूं-
वारो मोडो आवही ए॥

१४— तो सिरे मोने ए शोक,
शस्त्र जहर थी-
जीविया ववरोविया करूं ए॥

१५— एहवी सोनैयां नी कोड़,
गोकुल गायां ना-
हूँ स्वयमेव लेई विचरसूं ए॥

१६— एहवो मन मे धार,
छल छिद्र जोवती-
विचरे झाकती ताकती ए॥

१७— एक दिन अवसर देख,
छऊ शस्त्रे करी-
छऊ ए मारी जहरे करी ए॥

१८— बारह सोवन कोड़ि,
गोकुल बारह सार-
रेवती आपण लिया ए॥

१९— महाशतक श्रावक साथ,
भोग संसार ना-
भोगवती विचरे सही ए॥

२०— श्रावक ऐसो गम्भीर,
मरम नारी तणो ए-
बाहिर बात फैली नहीं ए॥

२१— श्रेणिक सरीखा राय,
चोथा आरा मां-
अनरथ इसड़ा ऊपना ए ॥

दोहे—

१— तिण अवसर ते 'रेवती', मांस नी लोलुप थाय ।
वेसवार घाल रांध ने, शंका शूला खाय ॥
२— पीवे दारू छ जात ना, छाकी रहे दिन रात ।
डर नहीं पर-भव तणो, विचरत है इण भांत ॥
३— तिण काले श्रेणिक तणो, कियो ढिंढोरो सोय ।
राजगृही नगरी मझे, जीव म मारो कोय ॥
४— 'रेवती' ने मांस विन, खाधां रह्यो न जाय ।
अध्यवसाय तेहिज रहे, तृपत हुवे जब खाय ॥

ढाल—२

(राग—कोप्यो रे चंपापुर धणी)

१— सेवक पुरुष ने तेडने,
'रेवती' हुकम करायो रे ।
पीहर ना गोकुल मझे,
दोय बछडा वध लायो रे ॥
२— जोयजो रे करम विटंबना,
छे श्रावक ने घर नारी रे ।
संगत सूं सुधरी नही,
पोते करम छे चीकणा भारी रे ॥जोयजो०॥
३— मुझ ने वेगा आण दे,
सेवक करे प्रमाणो रे ।
नित नित दोय वाछड़ा मारने,
सूंपे रेवती ने आणो रे ॥जोयजो०॥
४— मांस तणा शूला करी,
तले सेक ने खावे रे ।
छ प्रकार ना दारू पीवती थकी,
इण पर काल गमावे रे ॥जोयजो०॥

५— हिवे महाशतक साहसिक घणूं,
व्रत पाले मन रलिया रे।
क्रिया करतूत करतां थकां,
चवदे बरस नीकलिया रे ॥जोयजो०॥

६— बरस पनरमें वरत तां थकां,
न्यात जीमाय धन आपी रे।
काम काज भोलावियो,
घर-भार पुत्र ने थापी रे ॥जोयजो०॥

७— इग्यारे पड़िमां बहतां थकां,
बैठो पोसह ठाई रे।
धरम-ध्यान धरतां थकां,
हिवे रेवती किण विध आई रे ॥जोइजो०॥

८— मद पीई ने छाकी थकी,
विखर्या मस्तक ना केशो रे।
आधे माथे ऊटणो,
पोपध-शाल कियो प्रवेशो रे ॥जोयजो०॥

९— जिहां 'महाशतक' श्रावक हुँतो,
आई है चलायो रे।
मोह माया फन करती थकी,
टिमकारी आंख बोले वायो रे ॥जोयजो०॥

१०— हलो महाशतक श्रावक,
तूं धर्म पुण्य नो कामी रे।
वले कामी स्वर्ग मोक्ष नो,
इम सारां नो इच्छुक नामी रे ॥जोयजो०॥

११— जो मो सूं भोग न भोगवे,
तो किस्यूं देवानुप्रिया रे।
धर्म पुण्य स्वर्ग मोक्ष छे,
जो मोसूं भोग न किया रे ॥जोयजो०॥

१२— इम सुण 'महाशतक' श्रावके,
नो अद्वाई नो परजाणी रे।
दुष्ट भाव देखी करी,
मुख थकी न बोल्यो वाणी रे ॥जोयजो०॥

१३— धर्म-ध्यान ध्यातो रह्यो,
जब दूजी तीजी बार बोली रे।
तो पिण गम खाई रह्यो,
मन न कियो डावा-डोली रे ॥जोयजो०॥

१४— आदर सन्मान न दीयो जाणने,
आई ज्यूं चाली पाछी रे।
उपसर्ग मे सेठा रह्या,
जो श्रावक नी गाथा नहीं काची रे ॥जोयजो०॥

दोहे—

१— हिवे ते महाशतक श्रावके, इग्यारे ही पड़िम आराध।
सूत्र मांहि कही जिसी, सरब भाव सूं साध ॥
२— उदार तप मोटो करी, देही की ककर-भूत।
अध रात धर्म जागतां, हुया संथारा ना सूत ॥
३— देह हुई मम दूबली, विचरत है जिन-राय।
धर्माचार्यजी माहरा, तो दूं रे संथारो ठाय ॥
४— इम करी विचारणा, पोपध-शाला आय।
डाभादिक बिछायने, पल्यंकासन बेसाय ॥

ढाल—३

१— नमोत्थु णं दीध अरिहंत ने,
बीजो सिद्धांने दीधो जी।
च्यारूं आहार जाव जीव पचखिया,
त्रिविध त्रिविध व्रत लीधो जी ॥

२— धन धन करणी धन जिन-धर्म ने,
जिण थी पामे मोखोजी।
वावे जेवा सो रहे, देखो लोक मे,
टल जाय सगला दोखोजी ॥धन०॥

३— इट्ठ कांत काया ने परीहरी,
छेले सास ऊसासो जी।
आलोई शुद्ध निःशल्य थई,
एक मुगत नी आसोजी ॥धन०॥

४— इण रीते संथारे विचरंता,
ध्यावत रूड़ो ध्यानों जी।
ईहापोह करत विचारणा,
ऊपनो अवधि – ज्ञानोजी ॥धन०॥

५— हजार जोजन देखे पूरब दिसे,
दक्षिण पश्चिम एमोजी।
उत्तर चूल-हेमवंत पर्वत लगे,
प्रथम देवलोक-ध्वजा तेमोजी ॥धन०॥

६— हेठे देखे रतन – प्रभा तणो,
लोलुच्चय नरकावासो जी।
चौरासी सहस्र बरस ने आऊखे,
इतरो दीठो प्रकाशोजी ॥धन०॥

७— इण अवसर वली नारी रेवती,
आई महाशतक पासोजी।
वचन बोली जे पहले नी परे,
सर्व कह्या ते प्रकाशोजी ॥धन०॥

८— एक बोल्यां क्षमता करी,
बोली दोय त्रण बारोजी।
महाशतक वचन ए सांभली,
ऊपनो क्रोध अपारोजी, ॥धन०॥

९— अवधि – ज्ञान प्रयूंजी ने कहे,
दुष्ट निलज सुण नारी ए।
धणियाणी माठा लखण तणी,
अकृत-पुण्यनी अपारी ए ॥धन०॥

१०— अलस तणो रोगे व्यापी थकी,
सात दिवस ने मांह्योजी।
काल ने अवसर काल पूरो करी,
पड़सी रतन-प्रभा नरक जायोजी ॥धन०॥

११— लोलुच्चय नरकावास मझे,
वरस चोरासी हजारो जी।
एहवी थिति ना दुख भोग से,
इम भमसी संसारोजी ॥धन०।

दोहे—

१— एहवा वचनज सांभली, घणीज डरपी नार ।
मद सारो उत्तर गयो, रूठो श्रावक अपार ॥
२— हाय खेद करती थकी, चिंतातुर हुई अपार ।
किण विध मरणो आवसी, श्रावक दीध सराप ॥
३— डरपी त्रास पामी घणी, पाछी हलवे जाय ।
आई निज आवास मे, बैठी चिंता मांय ॥
४— तिण अवसर रेवती ने, अलस नाम महारोग ।
सर्व द्वार रूधां थका, आहट्ट-वसट्ट धरि सोग ॥
५— काल करी वा रेवती, रतनप्रभा रे मांय ।
सहस चौरासी वरस आऊखे, लोलुच्चय में उपजाय ॥

ढाल—४

(राग—कपूर हुवे अति ऊजलो रे लाल)

१— राजगृही रा बाग मे,
भगवन्त श्री महावीर हो भवियण ।
समोसर्या जिनराज जी,
परिषदा गई तिहां, जिहां वीर हो भवियण ।

२— उपगारी इसड़ी कहे,
शल्य काटण ने हेत हो भवियण ।
कुण साधु ने कुण श्रावक,
हित सिखामण देत हो भवियण ॥उप०॥

३— गौतम ने तेड़ी कहे.
इण राजगृही ने मांय हो गौतम ।
अंतेवासी श्रावव माहरो,
महाशतक श्रावक वसाय हो गौतम ॥उप०॥

४— छेले काल संलेखणा,
पचख्या च्यारूं ही आहार हो गौतम ।
अवधिज्ञान तेहने ऊपनो,
सर्व कह्यो विस्तार हो गौतम ॥उप०॥

५— रेवती उपसर्ग कियां,
खमियो पहली बार हो गौतम ।
दूजे उपसर्गे क्रोध ऊपनो,
कह्यां छतां आंख्यां फाड़ हो गौतम ॥उप०॥

६— छता भाव कह्या तिणे,
पिण लागा मरम प्रहार हो गौतम ।
जा तूं महाशतक ने घरे,
सर्व कहे इम बार हो गौतम ॥उप०॥

७— इंद्रभूति प्रणाम कर,
गया महाशतक आवास हो भवियण ।
देखी ने हरस्यो घणो,
वंदणा करी उल्लास हो भवियण ॥उप०॥

८— गौतम कहे देवाणुप्पिया !
क्रोधे बोल्यो सथारे ने मांय हो भवियण ।
रेवती ने करड़ा लगा,
जेहनो प्रायछित लिराय हो-भवियण ॥उप०॥

९— गौतम ना वचन प्रमाण कर,
महाशतक प्रायछित लीध हो-भवियण ।
गौतम पाछा वल्या,
आय वीर ने वदणा कीध हो-भवियण ॥उप०॥

१०— वीस वरस श्रावक पणे,
इग्यारे पडिमा आराध हो भवियण ।
संथारो इक मास नो,
सरधा वेराग जाद हो भवियण ॥उप०॥

११— साठ भगत अणमण छेद ने,
काले अवसर कर काल हो भवियण ।
प्रथम देव लोगे ऊपनो,
अरुणावतंसक विशाल हो-भवियण ॥उप०॥

१२— च्यार पल्योपम आऊखे,
चवि महाविदेह क्षेत्र मांय हो भवियण ।

भर्या भंडारां मे ऊपजे,
सीझसी कर्म खपाय हो-भवियण ॥उप०॥

१३— 'उवासग-दसा' सूत्र में,
आठमें अध्ययन रा भाव हो भवियण।
ते अनुसारे पूज्य जयमलजी कहे,
चतुर सुणो धरि चाव हो भवियण ॥उप०॥



(१५)

❀ अर्जुनमाली ❀

दोहे—

१— वर्धमान जिनवर नमूं, सर्व-जीव-सुखदाय ।
नामे दुख दोभाग टले, भूख भवानी जाय ॥

२— जंबूद्वीप रे भरत मे, मगध - देश मझार ।
'राजगृही' रलियामणी, रिद्धि तणो विसतार ॥

३— 'अर्जुन' मालाकर तणो, कहस्यूं चरित विशेष ।
एक - मना थइ सांभलो. छोडो राग ने द्वेष ॥

४— राजगृही नगरी हुती, 'श्रेणिक' नामा राय ।
तेहने राणी 'चेलणा' 'गुणशिल' बाग कहाय ॥

५— 'अर्जुन' मालाकर वसे, ऋद्धिवत धनवंत ।
बंधुमती है भारजा, रूपवती गुणवंत ॥

६— नगर बाहिर वाड़ी भली, अर्जुन तणी थी एक ।
पांच वरण फूलां करी, शोभ रही अतिरेक ॥

७— तिण पासे देवल हुतो, 'मोगर' जख नो जाण ।
अर्चा पूजा जोग थो, साचो देव प्रधान ॥

८— दादा परदादा करी, दूर पीढ्यां लग जोय ।
अर्जुन पिण इमहिज करे, विविध फूल चुण सोय ॥

ढाल-१

(राग—पुण्य तणा फल मीठा जाणो)

१— राजगृही नगरी अति सुन्दर,
माथा रा तिलक समान री माई।
एक कोड़ ने छरासठ लाख गांव,
लागे ज्यांरी धूम री माई ॥पुण्य०॥

२— श्रेणिक राजा राज करे छे,
सुखिया वसे बहु लोग री माई।
'अंतगड' सूतर मांही चाल्यो,
तिण रो बहु विसतार री माई ॥पुण्य०॥

३— तिण मांही नालंदो पाड़ो,
तिण रो छे बहु मान री माई।
चवदे तो चौमासा कीधा,
भगवन्त श्री वर्धमान री माई ॥पुण्य०॥

४— श्रेणिक राजा, चेलना राणी,
भलो ज्यांरो अधिकार री माई।
तिण रे मूंडा आगल हुता,
मंत्री 'अभय' कुमार री माई ॥पुण्य०॥

५— लाखां घर ने घणा कोड़ी-धज,
एहवी रिध विस्तार री माई।
सेठ सेनापति वसे तिण ठामे,
शालिभद्र परिवार री माई ॥पुण्य०॥

६— पूरब भव गवालज केरे,
दियो दानज खीर री माई।
तिण सूं पुण्यज इसड़ा वधिया,
घाली 'गोभद्र' सेठ घरे सीर री माई ॥पुण्य०॥

७— सेठ सुदर्शन वसे तिण मे,
धरम करण ने धीर री माई।
उण उपसर्ग मे वांदण जासी,
भगवंत श्री महावीर री माई ॥पुण्य०

दोहे—

१— तिण काले ने तिण समे, छे गोठीला जाण।
राज हुकम दीधां पछे, न माने किण री काण॥

२— धन जोवन अरू राजपद, पामी ने बहुला साज।
करे अकारज नगर मे, छोडी सगली लाज॥

ढाल–२

(राग—जतनी)

१— हजार पलां नो करियो,
जठे मुग्दर रहे छे धरियो।
जाय करे नित अर्जुन पूजा,
पछे काम करे कोई दूजा॥

२— देव ने फल फूल चढाय,
पीछे शहर में बेचण जाय।
छहू पुरुष छे गोठीला,
वसे छे छेल छबीला॥

३— 'ललिता' नाम मांहोमाही,
छहू मिल ने एको कराई।
छहू आपणे छांदे चाले,
श्रेणिक राजा नही पाले॥

४— श्रेणिक पिण आज्ञा आपी,
तिण सूं विचरे आपी थापी।
काछ–लंपटी करे है अकाज,
छांडी माय बाप नीं लाज॥

५— एकदा राजगृही ने मांय,
प्रमोद महोच्छव मंडाय।
तिण अवसर अर्जुन माली,
गयो पूजा ने दिन ऊगाली॥

६— बंधुमती नामा नारी,
फल फूल किया तैयारी।

वेहूँ जणा छाव भराई ,
जख देवल समीपे आई ॥

७— छऊं गोठीला आई ,
बैठा जाव देवल मांई ।
माली मालण जातां दीठा ,
विषय जाणे आंख्यां अदीठा ॥

८— माहोमांही बात बनावे ,
जख ने ओ जद फूल चढावे ।
हाथ लांबा कर देसी धोक ,
जब कर लेस्यां दोनूं रोक ॥

९— पछे भोगस्यां भोग उदारा ,
सगला मिलने इम धारा ।
छिप रहो छाने इण ठोरो ,
छींक खांस रो रहे न जोरो ॥

१०— इम कही ने लुक बैठा ,
माली मालण देवल मे पैठा ।
जख ने फल फूल चढाय ,
घणी नीची नमाई काय ॥

११— जख रो विनय कियो बहु भांतो,
छहू निकल पकडया हाथो ।
बांधी ने अपूठो लीधो ,
इसड़ो अकारज कीधो ॥

१२— बंधुमती नामे नारी ,
छहू भोगवे भोग उदारी ।
जे सेठी होती नारी ,
तो कर न सकता जारी ॥

१३— छऊं मिल एको कीधो ,
तिहां जोर परीषो दीधो ।
वारी देखे छे आ नारी
नहीं राखी शील नी वाड़ी

१४— धन मयणरेहा सती तारा,
ज्यांरो जस फैल्यो संसारा।
शीलज पाल्यो सवाई,
तिण सूं सतियां कहलाई ॥

१५— द्रौपदी में पड गयो जोखो,
सती शीलज पाल्यो चोखो।
ज्यांरा परिणाम हुता रोंठा,
ज्यांसू किया देवता भेटा ॥

१६— राणो रावण बोली वाणी,
तोने करसूं म्हारी पटराणी।
सती सीता वचन न मान्या,
तूं तो भरम भूल्यो छे सान्या।

१७— मोसूं दूर रहीजे भाई,
म्हे तो मरूंली विष ने खाई।
तोसूं नेह न करसूं लीगारो,
हूं तो पालसुं शील सरगारो ॥

१८— अर्जुन माली रह्यो छे देखो,
मन में दुख पायो अतिरेको।
ज्यांरा परिणाम हुवा लूखा,
"ए मरजाद तजीने ढूका ॥"

१९— इत अर्जुन तूं नित आयो,
इतरा दिन पत्थर सेवायो ॥
इण देव में नहीं दीसे वाकी,
म्हारी केन गमावतो नाकी ॥

२०— म्हें तो सेवा करी चित्तलाई,
म्हारी इण विध इज्जत पड़ाई ॥
जब देवां ने गीपज आई,
म्हारी कांण न रांकी कांई ॥

२१— म्हारे देवल मां आो कामो,
मोने कुण करसी सलामो ॥
म्हारी जस महिमा घट जासी,
मोने कुण पूजण ने आसी ॥

२२— हूँतो थांने नजर दिखाऊं ।
इण काची बात न जाऊं ॥
देव क्रोध तणे वश थायो ,
पैठो अर्जुन रा डील मांयो ॥

२३— जख परतख कीधी सहाय ,
इण रे पेस गयो दिल मांय ॥
सबलो कीधो जारो ,
तड़क नाख्या बंधण तोड़ो ॥

२४— सहस पल नो सस्माय ,
छऊं पुरुसांने नाख्या ढाय ॥
सातमी नारी ने मारी ,
मरने रुलिया संसारी ॥

२५— छऊ पुरुप सातमी नारी ,
इमी 'श्रेणिक'ने गई पुकारी ॥
श्रेणिक नो जोर न लागे ,
इण जख अर्जुन रे आगे ॥

दोहे—

१— बंधण तो तूटां थकां अर्जुन वो तिण वार ।
मुद्गर लीधो हाथ से, निकल्यो देवल बार ॥
२— राजगृही डोलो फिरे, घणाज मारग जाण ।
नरनारी बेहूं तणी, फिरेज करतो हाण ॥
३— गोठीलां ने बरज तो, श्रेणिक नामा राय ।
तो इतरा मिनखां तणो, कोने अनरथ थाय ॥
४— होण पदारथ ना मिटे, परतख देखो जोय ।
मोत आई मिनखां तणो, राख न सकिया कोय ॥
५— जाय राजा ने वीनव्यो, सांभलजो नृप ! बात ।
अर्जुन माली एहवो, करे घणां री घात ॥
६— श्रेणिक राजा साभली, बीनो अथग अपार ।
लोगों ने बरजो परा, मती निकलजो बार ॥

७— श्रेणिक सेवक ने कहे, राजा गृही मे जाय ।
इसी करो उद्घोषणा, सावधान सब थाय ॥

८— काम काज फल फूल ने, पाणी तण कठ-भार ॥
नगर बार जो जावसो, अर्जुन लेसी मार ।

६— इसी करो उद्घोषणा, दोय और त्रण बार ॥
आज्ञा पाछी सूंपजो, लेवो दिल मे धार ।

१०—कर उद्घोषण नगर मे, कहि श्रेणिक ने आय ।
भाव सुदर्शन सेठना, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल—३

(राग—चन्द्र गुपत राजा सुणो)

१— राजगृही नगरी मझे,
वसे 'सुदर्शन' सेठो रे ।
ऋद्धि दान करि दीपतो,
घणा जणा उण हेठो रे ॥

२— श्रावक-करणी नो धणी,
जिण वयणे अणुरत्तो रे ।
समकित मां सेठो घणो,
छोडी पाखंडी नो मत्तो रे ॥श्रावक०॥

३— साधां रो सेवग हुतो,
श्रावक नव तत्व धारी रे ।
जीव अजीव ने ओलख्या,
पुण्य पाप सुविचारी रे ॥श्रावक०॥

४— आस्रव संवर निर्जरा,
बंध मोक्ष रो जाणो रे ।
नव तत्व धारी निर्मलो,
खरी रुचि जिण वाणी रे ॥श्रावक०॥

५— सुरासर सब आयने,
धरम सेती चलावे रे ।
पिण ते डिगाये ना डिगे,
शूर वीर कहलावे रे ॥श्रावक०॥

६— छिटो फिटक थी ऊजलो,
पोमा पडिकमणा सारा जी।
दान दे चवदे प्रकारनों,
खुला राखे अभंग दुवाराजी ॥श्रावक०॥

दोहे—

१— तिण अवसर वर्धमान जिन, समोसर्या तिण ठाम।
उतर्या गुणशिल बाग मे, सुण हर्ष्या जन ताम ॥
२— नगरी मे बातां करे, नाम लिया निसतार।
दरसण नो कहिवो किसो, इसड़ो करे विचार ॥
३— सुदर्शन लोगां कने, सुणी वीर नी बात।
समोसर्या है बाग मे, एम सुणी हरसात ॥
४— मन मे ऐसी ऊपनी, वांदूं वीर-सुपाय।
किण विध लेऊं आगन्या, मात तात सूं जाय ॥

ढाल—४

(राग—तुम जोयजो रे स्वारथ नी सगाई)

१— वचन सुणी राय पुरुष ना, बीना लोग असापो जी।
बारे कोई जावो मती, मांहे रहो चुप-चापो जी ॥
तुम जोयजो रे भय मरवा तणो ॥

२— तिण काले ने तिण समे, भगवन्त श्री वर्धमानो जी।
राजगृही समोसर्या, पूरो ज्यांरो ज्ञानो जी ॥तुम०॥
३— गौतम स्वामी आदि दे चवद सहस अणगारो जी।
चंदनबाला आदि दे, छत्तीस सहस परिवारो जी ॥तुम०॥
४— इत्यादिक परिवार सूं, उतर्या बाग रे मांयो जी।
नाम गोतर सुणियां थकां, पातक दूर पलायो जी ॥तुम०॥
५— मांहोमांही बातां करे, वीर पधार्या बागो जी।
बाहर न जावे वांदवा, मरण तणो भय लागो जी ॥तुम०॥
६— सेठ सुदर्शन सांभल्यो, वीर पधार्या आजो जी।
हरस हिये में ऊपनो, तारण-तिरण-जहाजो जी ॥तुम०॥

७— भाव-सहित वंदन कियां, निर्मल हुसी कायो जी ।
जनम मरण दुख टाल ने, मुगत विराजे जायो जी ॥तुम०॥

दोहा—

१— भगता देव गुरु तणो, वीर वांदण री चाय ।
किण विध वांदे वीर ने, हरष घणो मन मांय ॥
२— इम मन मां ही चिंतवी, आसण सेती सेठ ।
झट ऊठी माता कने, आवे छे तिहां ठेठ ॥

ढाल—५

(राग—मेघकुमार किस ········)

१— हाथ जोड़ी इम कहे जी, भगवन्त श्री महावीर ।
बाग मांहे समोसर्या जी, मोटा साहस धीर ॥
री मायड़ी अनुमत दे आदेश ॥

२— वीर जिनंद ने वांदवा ए, जासूं बाग रे मांय ।
आज्ञा दे मोने हरस सूं ए, भेटूं वीर ना पाय ॥री मा० अ०॥

३— जो थारे मन में आवसी रे, वीर वांदण रो कोड़ ।
ज्ञानी तो देखी रह्या रे, राज चवद ही ठोड़ ॥
रे जाया अठे ही बेठो रे वांद ॥

४— वलतो कुंवर इम कहे ए, सांभल मोरी ए माय ।
घर बेठो वनणा करूं ए, मोने जुगत नही कहवाय ॥री मा० अ०॥

५— वलती माता इम करे रे, नित नित मारे रे सात ।
घर बाहर जावां तणी रे, रखेज काढ़ बात ॥रे जा० अ०॥

६— थारा मन मां जो इसी रे, वीर वांदण रो चाव ।
ज्ञानी तो देखी रह्या रे, थारा घर बेठे रा भाव ॥रे जा० अ०॥

७— नाम सुणी हरपत घणूं रे, जके आया माचान ।
हिव मैं घर में वन्दूं रे, जुगत नहीं आ वात ॥री मा० अ०॥

८— ए मंदिर ए मालिया रे, ए सुख सेज विलास ।
इनगा ने छिटकाय ने रे, राखे मरण गी आस ॥
है थारो किस्यो रे स्वभाव ॥

९— ए मंदिर धन गोलिया री, पाम्यां अनंती बार।
दरसण दोरो वीर नो रे, म्हारा जीव तणो आधार ॥रे मा० अ०॥

१०—आसता जिण धरम री ए,
जे मन मे निश्चल होय।
देव दाणव कोई मानवी रे,
गंज न सके कोय ॥री मा० अ०॥

११ · उत्तर पडुत्तर हुआ घणा जी, बाप ने बेटा जी मांय।
जाव शबद आयां पछे रे, कहे तुझ सुख थाय॥
रे जाया मायड़ी दियो रे आदेश॥

दोहे—

१— मा बाप नी आज्ञा थकि, हरख्यो मन रे मांय।
वीर प्रभू ने वांदवा, चाह लगी दिल मांय॥

२— सीनान संपाड़ो कियो, भारी कपड़ा पहर।
गहणा पहर्या बहुविधा, निकल्यो मध्य शहर॥

३— उर दिन जातां सेठ रे, लारे हुता विशेष।
आज प्रभु ने वांदवा, चाल्यो एकाएक॥

४— बीजो कोई न निकल्यो, वीर वांदवा आम।
लोक सहू देखी रहा, बोले वाणी ताम॥

ढाल—६

(राग वे बे तो मुनिवर वहरण पांगुर्या रे)

१— कोई नर-नारी मुख सूं इम कहे रे।
नाम करम को भूखो सेठ रे।
खबर पड़ेली बाहिर नीकल्यां रे,
पड़सी ओ अंजुन माली री फेट रे॥

२— जोयजो रे अवगुण-गारा एहवा रे,
गुण ने तो कर देवे छे दूर रे।
पिण साता बरतासी सारा नगर मे रे,
पिण निन्दा सूं विगड़े मुख नो नूर रे॥जं

३— नर-नारी सुलभ-बोधी इम कहे रे,
सेठ नी निंदा म करो कोय रे।
इण विरिया मे वांदण नीसर्यो,
दीजे इण सेठ भणी साबास रे ॥जो०॥

४— सेठ तो चाल्यो उज्वल भाव सूं रे,
जख रा देवल मामो जाय रे।
वीर वांदण री मनमा करी रह्यो रे,
सेठो दीसे सेठ तणो भाव रे ॥जो०॥

५— के नर-नारी मंदिर मालिये रे,
केई दरवाजा ऊभा जाय रे।
के नर-नारी मुख सूं इम कहे रे,
चालो तमासो जोवां जाय रे ॥जो०॥

६— के नर-नारी मुख सूं इम कहे रे,
जस रो भूखो ओ धनवान रे।
खबर पड़ेली अर्जुन मिल्यां रे,
गाल देमी सगलो मान रे ॥जो०॥

७— वातां मूंडा सूं करणी सोयली रे,
मरणो तो दीसे घणो दूर रे।
इसड़ी विरिया में वांदण नीसर्यो रे,
ओ सेठ बडो हे शूर रे ॥जो०॥

८— मुद्गर लोह तणो मोटो घणो रे,
मारण वालो अर्जुन जाण रे।
पल हजार रो जिनवर कह्यो रे,
डेढ़ मण पका रो प्रमाण रे ॥जो०॥

९— पांच महीना दिन तेरह लगे,
मार्या इग्यारे सौ ने इकताल रे।
राजगृही में आवतां जावतां रे,
तरुण ने वृढा केई बाल रे ॥जो०॥

१०— नवमो ने अठन्तर पुरुष जन मारिया रे,
एकमो ने तरेसठ मारी नार रे।
किण विध छुटकारो होवे जक्ख सूं रे,
प्रभुजी रा किम विध जोय दीदार रे ॥जो०॥

११— अर्जुन सेठ आवतो देखने रे,
क्रोध में धम धमियो तिण वार रे।
सहसपल नो मुद्गर हाथे लई रे,
आयो छे राता लोयण काढ़ रे ॥जो०॥

१२— सूरो सुदर्शन अर्जुन देखने रे,
तरास्यो न डरप्यो एक लिगार रे।
साह करूं हिव मारी देहनी रे,
रखे अणचिंत्यो नाखे मार रे ॥जो०॥

दोहे—

१— एहो मुद्गर झाल ने, सामो आयो धाय।
सेठ अडिग रेयो किकर, ते सुणजो चित लाय ॥
२— उपसर्ग आयो एहवो, करड़ो बण्यो छे काम।
सागारी अणसण करूं, मन राखी निज ठाम ॥
३— ज्ञानी जन ते जानिये, चेते अवसर पाय।
किण विध संथारो करे, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल–७

(राग—कपूर हुवे अति ऊजलो)

१— कपड़ा सूं धरती पूंजने रे,
ऊभो रह्यो तिण वार।
मुजने उपसर्ग आवियो रे,
देख रया जिण-राय ॥
जिणेसर आप तणो आधार ॥

२— इण उपसर्ग थी जो बचूं जी,
तो लेणो अन-पाण।
नहिंतर मुझ ने आजथी जी,
जाव-जीव पचखाण ॥जि०॥

३— हिवड़ां व्रत म्हें आदर्या जी,
थांरे मूंडे सार।
हिवड़ा व्रत म्हारे इमीज छे जी,
त्रिविध त्रिविध प्रकार ॥जि०॥

४— नमोत्थु णं सिद्धा भणी रे,
दूजो वीर ने दीध ।
भाव भगत वेराग मे जी,
जिन सन्मुख मन कीध ॥जि०॥

५— सागारी अणसण कियो जी,
सेठो धरम में होय ।
मुद्गर उछालतो थको जी
आयो सेठ ने जोय ॥जि०॥

६— अर्जुन जख इम तड़फड़यो जी,
करूं सेठ नी घात ।
सुदर्शन ने मारवा जी,
ऊंचो हाथ न थात ॥
भविक जन धर्म तणो प्रभाव ॥

७— सेठ ने अर्जुन तेज करी जी,
थाकी पीछो जाय ।
आयो जठी ने चलतो रयो जी,
माली पड्यो धरती जाय ॥जि०॥

दोहे—

१— सेठ सुदर्शन जाणियो, उपसर्ग टलियो मोय ।
जिन-धर्म अतिशय करी, गंजन सकियो कोय ॥
२— जितणे नेम कियो हुतो, जितरो लीधो पाड़ ।
सावचेत अर्जुन थयो, मुहूर्त-मात्र तिवार ॥
३— अर्जुन त्यां थी ऊठ ने, आय सेठ ने पास ।
मधुर वचन थी बोलियो, सेठ भणी हुल्लास ॥

ढाल–८

(राग—सामी म्हारा राजा ने धरम सुणावजो)

१— देवाणुप्रिया ! तुमें,
कुण छो चाल्या केत हो ।
मायव इण विरिया मांय नीसर्या,
वात पूछे धरि हेत हो ॥
साहिब अर्जुन करे थांसू वीनती ॥

२— भव-थित पाकी हो भव तणी,
रूड़ी समकित थाय हो ।
सा० तिणसूं बिगड्यो सूधरे,
होवे अमरापुर जाय हो ॥सा०॥

३— बलता सेठजी इम कहे,
सुदर्शन म्हारो नाम हो ।
साहिब-धरम-आचारज माहरा,
म्हैं जाऊं उण ठाम हो ॥सा०॥

४— गुणसिल नामा बाग मे,
भगवन्त श्री वर्धमान हो ।
अर्जुन ! ज्यां ने जी वांदण जावणो.
पूरो ज्यांरो ज्ञान हो ॥सा०॥

५— वंदन करसूं प्रभूजी ने,
सुण अर्जुन म्हारी बात हो ।
सा० वांछूं देवाणुप्पिया !
वीर वांदूं तुम साथ हो ॥सा०॥

६— सेठ कहे ढील मत करो,
जिम सुधरे सारो काज हो ।
अ० जेज मत कर वीर वांदवा
साथे चलो मम आज हो ॥

७— सेठ अर्जुन दोन्यूं जणा.
चाल्या जाय संतुष्ट हो ।
सा० राजगृही नगरी मझे,
हुई छूटा छूट हो ॥सा०॥

८— सेठ सुदर्शन एहवो,
नांख्यो संकट खोय हो ।
सा० लोगां मे हुवो दीपतो,
दृढ धरमी विरला होय हो ॥सा०॥

दोहा—

१— गुणसिल नांमा बाग मां, वांद्या श्री जिन वीर ।
भाव – सहित दोन्यूं करे, सेवा साहस धीर ॥

२— सेठ सुणी पाछो गयो, ऊभो अर्जुन आय ।
हाथ जोड़ ने इम कहे, अंतर बात बताय ॥

३— भय लागो संसार थी, लेसूं संजम भार ।
भवोदधी सूं काढ़ दो, मोटा गुण – भंडार ॥

४— वीर कहे जल्दी करो, सुणने हर्षित थाय ।
स्वयं एव लुंचन करी, दिश ईसाणे जाय ॥

५— जिण दिन दीक्षा आदरी, वजणा करी अतीव ।
वेले वेले पारतणो, करायद्यो जाव – जीव ॥

ढाल–६

[राग—चतुष्पदी]

१— वीर कहे जिम तुम सुख थाय,
छठ छठ पारणो दियो कराय ।
पारणे वीर समीपे आय ।
आज्ञा देवो जिम गोचरी जाय ॥

२— आज्ञा दीधां गोचरी जाय,
तीजे पहर जिम गौतम मुनिराय ।
ऊंच नीच मझम कुल मांय ।
राजगृही मे अटण कराय ॥

३— गोचरी करतां लोग लुगाई,
बाल जवान वृद्ध मिल आई ।
इण मार्या मुझ पिता ने माई,
बहन भारजा पुतर ने माई ॥

४— बेटा गी बहू ने इण मारी,
बीजा सेण सगा परिवारी ।
इम कही ने आकना हूवा .
निंदा कर कर जात विगोवा ॥

५— अवगुण बोल करे बहु कष्ट,
ताज ताजणा बहु दे कष्ट।
लोग लुगाई बोले करड़ा।
अर्जुन भाव रक्खे सरला॥

६— भात लाभे न लाभे पाणी,
पाणी मिले तो अन्न न जाणी।
मन वचन वश राखे काया।
ले गोचरी बाग मे आया॥

७— मैं तो जीव सूं मार्या इम जाणे,
गाल मार सूं समता आणे।
राग-द्वेष रहित सिख वाणी,
नगरी मे भिक्षा को समुदानी॥

८— आण गोचरी वीर ने दिखावे,
आज्ञा दीधां मूरछा रहित खावे।
आहार करता न लगावे पाप,
बिल मांहे ज्यूं धस जावे सांप॥

९— अर्जुन इस्यो उग्र तप कीधो,
'अंतगड' मांहे कह्यो प्रसिद्धो।
छ महिनां लग चारित्र पाल्यो,
अर्धमास रो संथारो संभाल्यो॥

१०— तीस भत्तग रो अणसण कीधो,
आठूं करमां ने निसिद्धो।
केवल लई गया शिवपुर मांही,
जरा-मरण नो अंत कराई॥

११— 'अंतगड' मांय कयो निचोड़ो,
तिण अनुसारे रिख जयमलजी' जोड़ो।
अट्ठारा सातविसा मांय,
काती सुद पूनम शुभ टाय॥

———

(१६)

❀ दारिद्रय लक्ष्मी संवाद ❀

दोहे—

१— 'वसन्तपुर' नगरी तिहां, सेठ 'सागरदत्त' थाय ।
पाप पूर्वला परगट्या, दारिद्र घर में आय ॥

२— घर रो धन खूटी गयो पेट न पूरो भराय ।
दारिद्र लीधो खाख मे, नगर 'उजेणी' जाय ॥

ढाल–१

१— आयो सेठ 'उजैणी' धार,
दारिद्र ने वेचे तिण वार ।
सगले बाजारे फिरियो जाय,
तो पिण सोदो कठे हि न थाय ॥

२— वहतो वहतो मारग वाट,
आयो 'धनदत्त' सेठ नि हाट ।
वलतो धनदत्त बोले वाय,
कासु लोक नो सोदो थाय ॥

३— वलतो बोले वाणियो वाय,
म्हारो दलद्र नो सोदो थाय ।
फिरियो सारा नगर मझार,
किण रे नहि आयो दाय लिगार ॥

४— कासु दलिद्र नो लेसी मोल,
थारे मूंडे तूंहिज बोल ।
जो म्हारा दालिद्र सूं थारे काम,
तो सवा लाख गिण दे दाम ॥

५— सेठजी चिंतवे मन रे मांय,
एक सोदो ओहिज जुड़ियो आय ।
कांई न गम्यां सेठजी गाढ़,
सवा लाख धन दियो काढ़ ॥

६— भाग्य-परीक्षा सेठजी कराय,
दालिद्र ने नांख दियो घर माय।
जिहां लिछमी भण्डारज होय,
तिण मे सेठजी मेलियो जोय॥

७— सेठजी रुपिया लीना तिण ठाय,
चल्यो आपणे घर ने जाय।
दिन वीतो ने रातज जाय,
सेठ सूतो मेलां रे मांय॥

ढाल—२

१— लिछमी आई तिण समे,
बोले इसड़ी वाय हो।
सेठ सूतो के जागे छे,
सांभलजो चित्त लाय हो॥

२— अकल गई सेठ ताहरी,
दालिद्र दियो मो पे राली हो।
म्हारे दलद्र रे बणे नही,
हूँ तो थारा घर थी चाली हो॥

३— वलतो सेठ इसी कहे,
सांभलजो चित्त लाय हो।
दलद्र ने तो हूँ कोई छोडूं नहिं,
तूं तो नचिंत सिधाय हो॥

४— इतरा दिन मै ताहरी,
सेवा घणी कराई हो।
अबे दलद्र सेवसां,
पाने पड़ियो आई हो॥

५— लक्ष्मी उठा सूं नीकली,
आई शहरज मांय हो।
इसो पुण्यवन्त दीसे नहीं,
वसूं जिण घर जाय हो॥

६— सारा नगर मे फिर करी,
लक्ष्मी पाछी आई हो"

पुन्य विना रे प्राणिया,
नहिं पेसे घर मांई हो ॥

७— पाछी लछमी आई सेठ कने,
बोले इसड़ी वाय हो ।
थारे घर में हूँ आवसूं,
बीजो घर नहिं काय हो ॥

८— वलतो सेठजी इम कहे,
सांभलजो चित्त लाय हो ।
सात पीढ़यां लगे जावे नही,
तो घालूं घर मांय हो ॥

९— लक्ष्मी करार करी तिहां,
पाछी आइ घर मांय हो ।
दलद्र आयो सेठ कने,
हूँ तो परोहिज जाय हो ॥

१०— वलतो सेठजी इम कहे,
सांभल जो चित्त लाय हो ।
चवदे पीढयां लग आवे नही,
तो नचिंत सिधाय हो ॥

११— दलिद्र तो चलतो रह्यो,
लक्ष्मी रही घर मांई हो ।
ज्यांरा पुन्य पोते घणा,
माडाणी घर में आई हो ॥

१२— पुन्यवन्त प्राणी जगत मे,
लागे सहू ने दाय हो ।
रिख जयमलजी इम कहे,
मदा पुन्य माहाय हो ॥



(१)

❀ प्रतिमा-चर्चा ❀

१— भगवन्त पर उपकार ने हेते,
कोरो सारज काप्यो रे।
सूत्र ना अर्थ कर ने अवला,
मूढ़, हिंसा धर्म थाप्यो रे॥

२— कुगुरू तणे उपदेशे भूला,
ए भगति न जाणे भोला रे।
भगवन्तां नो नाम लेई ने,
पाप ना करे दंदोला रे॥

३— धर्म ठिकाणे जीव हणे ने,
जिके न माने पापो रे।
सो तो वचन अनारज केरो,
कह्यो जिनेश्वर आपो रे॥

४— भगवन्त नी चैत्य प्रतिमा हुवे तो,
अन्य तीर्थी लेई जायो रे।
ते प्रतिमा आणन्द न वांदे,
इसी परूपे वायो रे॥

५— साधु ने किण पकड्यो देखे तो,
श्रावक वांदे धरि रागो रे।
अन्य तीर्थी ग्रही प्रतिमा न वांदे,
किसो व्रत जदां भागो रे॥

६— चैत्य शब्द जिणना साधु हुआ,
चाल्या छे आपणे छंदे रे।
'जमालि' परमुख सु मिलिया,
ज्यांने 'आणन्द' न वंदे रे॥

७— प्रतिमा हुवे तो किम बतलावे,
किम वहिरावे अन पाणी रे।
चैत्य शब्द ते साधु कही,
इम ही 'अंवड़' जाणी रे॥

८— कल्पे 'आणन्द' भणी वांदवा,
साक्षात् अरिहंत देवो रे।
केलो श्री अरिहन्त ना साधु,
वहिरावे करे सेवो रे॥

९— 'उल्लणियादिक' बोल सहूनो,
नेम अभिग्रह लीधो रे।
नित प्रति देहरे प्रतिमा ने,
वन्दु एहवो नेम न कीधो रे॥

१०— 'ज्ञाता' सूत्रे प्रतिमा पूजी,
एक द्रौपदी भाखे रे।
कंवारी जो श्रावक हुवे तो,
पांच धणी किम राखे रे॥

११— कहे नारद आयां किम नहीं ऊठी,
ऐसी चरचा आणे रे।
पछे द्रौपदी हुई है श्रावका,
ते पिण ज्ञानी जाणे रे॥

१२— पूजी स्वयंवर मण्डप जातां,
वर नो जोग प्रयुंजी रे।
मोक्ष हेतु निर्जरा जाणे तो,
पछे नहीं छे पूजी रे॥

१३— वार वार द्रौपदी मुख आणो
सो तो हुवो है अछेरो रे।
'दशवैकालिक' न 'आचारंग' री,
चरचा कांय न छेड़ो रे॥

१४— प्रतिमा शरण करें चमरिन्द्र प्रथम,
देवलोके गयो आयो रे।
सासती प्रतिमा उहां पिण हूती,
तो पाछो किम भागो रे॥

१५— शरण करे तो श्री अरिहन्त नो,
छद्मस्थ तीर्थङ्कर माधो रे।
अथवा अरिहन्त भगन्त सेला,
गयो पतलां ने प्रमादो रे॥

१६— चेइअ अट्ठे निज्जर अट्ठे,
तिहां पण प्रतिमा ठायो रे।
चेइअ अर्थ जे प्रतिमा हुवे तो,
श्रमणादिक किम न्यायो रे॥

१७— ज्ञानवन्त साधां नी सेवा,
कियां निरजरा थायो जी।
तेहनो अर्थ पाधरो बोलो,
भोला क्युं कु-हेतु लगायो रे॥

१८— चारण-समण प्रतिमा वांदी,
इसा भाव कोई वंदे रे।
तो मान-देवे नहीं चाल प्रतिमा,
तिहां कहोनी स्यूं वंदे रे॥

१६— ज्ञानी देव भाव परूप्या,
पर्वत कूट द्वीप ठामो रे।
जिहां दीठां तिहां जाय किया,
ज्ञान तणा गुण ग्रामो रे॥

२०— व्यारुंइ छेद आचारंग मांहे,
ठाम ठाम प्रायश्चित चाल्यो रे।
प्रतिमा विण वांधां दंडज आवे,
इसड़ो किहांई न घाल्यो रे॥

२१— आलोयणा सुणावा कोई जो न हुवे तो,
ज्ञानी साख होय सूधो रे।
के कहे प्रतिमा पास आलोवे,
ते तो दीसे विरुद्धो रे॥

२२— तिहोत्तर फलां नो लाभज ज्ञानी,
न्यारो न्यारो बतायो रे।
देहरो प्रतिमा वांद्या लाभ,
इसड़ो कांहि न जतायो रे॥

२३— श्रावक भगवन्त वदन आवे,
जद सचित्तज अलगा काढ़े रे।
एकेक अरिहंत नाम लेई ने,
सिर ही ऊपर चाढ़े रे॥

२४— 'विजय' देव 'सूर्याभे' पूजी,
ऊपजतां एक वारो रे।
सो तो थित ए राज बेसतां,
नाटक नो विसतारो रे॥

२५— भगवन्त आगल नाटक मांड्यो,
सूर्याभ भगति करी जाभी रे।
भगवन्त आगे हुकमज मांगे,
पिण आरम्भ जाण मून साभी रे॥

२६— दीवा करे धूपणा खेवे,
तोड़े फूल नी कलियां रे।
पाणी ढोल भगवन्त ने न्हवाड़े,
मन मे माने रलियां रे॥

२७— जिण पुरुषां रा नाम भज्यां थी,
कटे पाप अद्भूतो रे।
तिण पुरुषां रा मेल उतारे,
ते कुण मा जायो पूतो रे॥

२८— देहरा सामे पगला देतां,
तेलानो फल बतावे रे।
तो लांबा फल तप कष्ट सही ने,
असाता कुण पावे रे॥

२९— भगवन्त ना हुवा साध साधवी,
भांत भांत तप कीधा रे।
देहरो प्रतिमा किण ही न वांदी,
करी संथारो ने सीधा रे॥

३०— सगलाई देहरा ने प्रतिमा,
आश्रव द्वार मे चाल्या रे।
आरंभ समारंभ वध तो जाणे,
संवर द्वार में न घाल्या रे॥

३१— सगलाई सूत्र शुद्ध देखो,
कथा अरथ विसतारो रे।
जीव-दया सगले मुख बोली,
ज्ञान तणो ए सारो रे॥

३२— सूत्र न्याय परूपणा करि ने,
कर्म उड़ावे जाड़ा रे।
जिहां पुरुषां सूं हीणाचारी,
उलटा खड़े जे आड़ा रे॥

३३— रुधिर तणो जे खरड्यो वस्त्र,
रुधिर उज्वल न थायो रे।
इम ए जीव न हुवे ऊजलो,
हिंसा धर्म करायो रे॥

३४— करणी करतूतज मांहे,
पोलां नहीं पाप नी संको रे।
धर्मी पुरुष ने निजरे दीठां,
उलटी बलेज आंखो रे॥

३५— अति दुष्ट हुवे हिंसा – धर्मी,
लाग रह्यो मत भूठे रे।
कोई खेंचा तांण साधां पे आवे,
तो अवगुण लेने ऊठे रे॥

३६— 'कमलप्रभ' नामे आचारज,
कह्यो परषदा मांयो रे।
जिण तो पाप ना आला परूप्या,
तीर्थंकर गोत उडायो रे॥

३७— लिंगड़ा लिंगड़्या वले बुलायो,
डरते वचन ज फेर्यो रे।
उत्सर्ग ने अपवाद परूप्यो,
तीर्थंकर गोत विखेर्यो रे॥

३८— देहरा प्रतिमा पूज्यां सिद्ध हुआ,
एह सरधा छे जांकी रे।
ते देव तणा पूजा रा भोगज,
इहां महा-निसीथ छे साखी रे॥

३९— केतला एक कहे भगवत वांदण,
आडम्बरे क्यूं आयो रे।
सो तो छे आपणी ए इच्छा,
भगवंत कदे बुलायो रे॥

४०— रात्रे भूला तो राखे आसा,
दिहां सूजसी सूला रे ।
कहोनी आसा राखे किण विधि,
ते दिहां दोपहर्यां ना भूला रे ॥

४१— केई मानव कर्म तणे वस,
इसड़ी चर्चा लावे रे ।
पापारंभ ने विण कीधां सूं,
साधां ने स्यूं वहिरावे रे ।

४२— एहवी खोटी रूढज ताणे,
वचन में बोलो चूका रे ।
सगला घर में दयाज पाले,
तो साध रहे किसा भूखा रे ॥

४३— लाधे- अलाधे सुख-दुःख मांहे,
सदा रहे मुनि सेठा रे ।
असणादिक कहीं विण मिलियां सूं,
किण घर अड़ने बेठा रे ॥

४४— जो थांरे दिल कार्य मे वेसे तो,
सगलो ही झगड़ो चूको रे ।
बहु मुनि आयां अन पाणी नो,
केने पड़े नहीं चूको रे ॥

४५— पर ना हित भणी साधु कहे,
सूत्र सिद्धान्ते जोयो रे ।
तिण कारण कहे रिख 'जयमलजी',
द्वेष म करजो कोयो रे ॥

(१)

❀ दोहावली ❀

जयमल्ल-बावनी

नमस्कार

१– नमो सिद्ध निरंजनं, नमूं श्री सत-गुरु-पाय ।
धन वाणी जिन-राज री, सुणियां पातिक जाय ॥

सब प्रकार के दोष-कालुष्य से रहित सिद्ध भगवान् को नमस्कार। श्री सद्गुरु के चरणों मे नमस्कार। जिनेन्द्र देव की वाणी धन्य है जिसके सुनने से पाप टल जाते है।

महा-व्रत-विचार

२– पहलो तीजो ने चोथो, देश द्रव्य महाव्रत ।
सर्व-द्रव्य द्विक पांचमो, चाल्या 'कर्म-ग्रन्थ' ॥

कर्म-शास्त्र मे यह प्रकरण चला है कि पहला, तीसरा और चौथा महाव्रत एक देश द्रव्याश्रयी है और दूसरा तथा पांचवां महाव्रत सर्व द्रव्याश्रित है।

तात्पर्य यह है कि प्रथम अहिंसा महाव्रत सिर्फ जीव की अपेक्षा रखता है, क्योंकि उसमे जीव हिंसा का त्याग किया जाता है। तीसरा महाव्रत अस्तेय इच्छापूर्वक ग्रहण करने योग्य द्रव्यो से ही संबंध रखता है और चौथे महाव्रत ब्रह्मचर्य का संबंध मनुष्य, देव और तिर्यञ्च से ही होता है। परन्तु दूसरा सत्य महाव्रत सर्व द्रव्याश्रयी है और पांचवां अपरिग्रह महाव्रत भी समस्त द्रव्यो से सम्बन्ध रखता है, क्योकि उसमे सब की ममता का त्याग किया जाता है।

गुण-स्थान-विचार

३– तेरे बारे तीसरे, नहीं करे गुण-ठाणे काल ।
चतुर पंच छठ सात में, गोत्र बांधे दीन दयाल ॥

तेरहवे (सयोगी केवली) बारहवे (क्षीण-कषाय) और तीसरे मिश्र गुण-स्थान मे जीव की मृत्यु नही होती। चौथे, पांचवे, छठे और सातवें गुण-स्थान मे ही तीर्थङ्कर नाम कर्म का बंध होता है।

४— पहलो बीजो ने चोथो, चाले गुण ठाणा लार ।
पहलो चोथो पंच छठ तेरमो, सदा शाखता धार ॥

पहला, दूसरा और चौथा गुण-स्थान मृत जीव के साथ जाता है, है, अर्थात् मिथ्या-दृष्टि, सास्वादन सम्यग्दृष्टि और अविरत सम्यग्दृष्टि जीव मर कर पुनः उसी अवस्था मे उत्पन्न हो सकता है।

प्रथम, चौथा, पांचवां, छठा और तेरहवां गुण-स्थान शाश्वत है। अर्थात् ऐसा कोई समय नहीं होता, जब इन गुण-स्थानों में कोई जीव न हो।

५— द्विक त्रिक सत अठ नव दश, एकादश चवदे बार ।
नव गुण ठाणा अशाश्वता, शास्त्र में अधिकार ॥

दूसरा, तीसरा, सातवां, आठवां, नवां, दशवां, ग्यारहवां, बारहवां और चौदहवां गुण-स्थान अशाश्वत है, अर्थात् कभी ऐसा भी काल आ जाता है कि इन गुण-स्थानो मे से किसी एक मे कोई भी जीव न हो ऐसा शास्त्र मे अधिकार है।

६— नियट्ट—बादर घण जीव ना, सरिखा नहीं परिणाम ।
अनियट्ट—बादर सब सरिसा, ए गुण ठाणा नाम ॥

नियट्टि—बादर नामक आठवे गुणस्थान के बहुत-से जीवो के परिणाम सरीखे नही होते विसदृश होते हैं। परन्तु नौवे गुणस्थान-वर्ती जीवो के परिणाम समान होते है।

श्रद्धा-प्रतीति-रूचि

७— श्रद्धया भाव षट् द्रव्य ना, आई प्रतीति पुण्य पाप ।
रूच्या व्रत साधु श्रावक तणा, करावो जिन आप ॥

हे जिन देव! मैंने छह द्रव्यो के भाव—यथार्थ स्वरूप पर श्रद्धा की है, पुण्य और पाप तत्व पर मुझे प्रतीति हो गई है और साधु तथा श्रावक के व्रतो पर रूचि उत्पन्न हुई है। अब आप मुझे अपना-सा कर लीजिए।

पुग्दगल-विषयक विचरणा

८— विस्सा हाथ आवे नहीं, मिस्सा जीव-रहत ।
जीव-सहित ते योगसा, श्री जिन-वाणी तहत्त ॥

विस्रसा पुद्गल धूप, छाया आदि हाथ नहीं आते, मिश्र पुद्गल जीव के द्वारा त्यागे हुए होते हैं। जो पुद्गल जीव सहित हैं प्रयोगसा, कहलाते हैं। यह जिनेन्द्र की वाणी तथ्य सत्य है।

केवली - समुद्घात

९– [१]जोग उदारिक पहले आठ में, तूजे छठे सात में मिश्र जाण।
बाकी तीन कार्मण कह्या, समा आठ परमाण ॥

केवली समुद्घात आठ समयों मे पूर्ण होता है। उसके प्रथम और आठवे समय मे औदारिक काय-योग होता है, दूसरे छठे और सातवे समय मे औदारिक मिश्र काय योग और शेप अर्थात् तीसरे, चौथे और पांचवें समय मे कार्मण योग होता है।

केवली-समुद्घात और आहारिक लब्धि

१०– [२]प्रत्येक सौ एकण समें, फोरवे समुद्घात।
प्रत्येक सहस आहारिक लब्ध, एक समा री बात ॥

एक समय मे पृथक्त्व सौ जीव समुद्घात कर सकते हैं और पृथक्त्व सहस्र जीव आहारिक लब्धि का प्रयोग कर सकते है।

लोक-त्रय का मध्य भाग

११– [३]मझ ऊंचा ते लोक नो, स्वर्ग पांच में जाण।
तीजा प्रतर ने विसे, चाल्यो अरिष्ट–विमाण ॥

पांचवे ब्रह्मलोक नामक देवलोक के तीसरे प्रतर मे अरिष्ट विमान मे ऊर्ध्वलोक ना मध्य भाग है।

१२– मेरु रुचक प्रदेश में, तिरछा रो मझ थाय।
चोथी नरक नीचे, नीचा तणो, जोजन असंख्याकाश लग जाय।

---

१. प्रज्ञापना पद ३६ सू० २७। २ प्रत्येक-पृथक्त्व—दो से लेकर नौ तक की संख्या। ३. भगवती श० १३ उ० ४ सू० ४७६

मेरु पर्वत के मध्य–वर्ती रुचक–प्रदेशो मे मध्यलोक का मध्य भाग है और चौथे नरक के नीचे असंख्य आकाश तक जाकर अधोलोक का मध्य भाग है।

सम्पूर्ण लोक का मध्यभाग

(१४ 'रज्जु' का मध्य)

१३–*पहली नरक ते लांधवे, जोजन असंख्याकाश ।
चवदे राज तणो मभ्क, सूत्र भगवती भास ॥

प्रथम नरक को लांघकर असंख्यात योजन आकाश को पार करने पर चौदह राजू लोक का मध्यभाग आता है। ऐसा भगवती सूत्र में प्रतिपादन किया गया है।

इन्द्रिय–विचार

१४–इन्द्रिये रुचि पोग्गली, जीव में रुच पोग्गल थाय ।
शतक आठ उद्देसे दशवें चाल्यो भगवती मांय ॥

भगवती सूत्र के आठवे शतक के दसवे उद्देशक में यह विषय चला आ रहा है कि—जीव श्रोत्र आदि इन्द्रियो वाला होने से पुग्गली (पुद्गलवान्) है और जीव की अपेक्षा पुद्गल है।**

भगवान् के ज्ञान की विशालता

१५–अेक अक्षर कैवली तणो, कीजे, पज्जवा अनंत ।
एक पज्जवे अनंत गमा, भाख्या श्री भगवंत ॥

केवली भगवान् के एक एक अक्षर के अनन्त पर्याय होते हैं और एक-एक पर्याय के अनन्त-अनन्त गम होते हैं, ऐसा श्री भगवान् ने फर्माया है।

१६–एक गमो तिण मांयलो, कीजे असंख्या भाग ।
एक भाग अनंता खंड, अहो अहो ज्ञान अथाग ॥

---

*भग० शत० १३ उद्दे० ४ सू० ४७६

** देखो-सूत्र ३६०

उन अनन्त गमों में से एक गम के असंख्यात भाग होते हैं और उन भागों में से एक एक भाग के अनन्त-अनन्त खंड होते हैं। अहा ! केवली भगवान् का ज्ञान अथाह है !

१७--एक खंड तिण मांयलो, भाग संख्याता जाण ।
एक भाग तिण मांयलो, तेहनो सुनो प्रमाण ॥

उन अनन्त खंडों मे से एक खंड लिया जाय और उसके भी संख्यात भाग कर दिये जाएं तो उस ज्ञान का कितना परिमाण होगा सो सुनो--

१८--चार ज्ञान पूरब चवद, अंग उपांग सब जाण ।
मावे भागज एक में, धन धन भगवन्त रो ज्ञान ॥

चारो ज्ञान, चौदह पूर्व और सब अंग, उपांग उस एक ही भाग मे समा जाएंगे। केवली भगवान् का ज्ञान धन्य है धन्य है।

विशेष—केवली भगवान् के एक ही अक्षर मे कितना विशाल ज्ञान निहित है, यह बात इन चार पद्यों मे प्रदर्शित की गई है।

आठ अनन्त

१९–सिद्ध अलोक काल ज्ञान ते, जीव पुद्गल वणसई काय ।
निगोदिया जीव अनंता कह्या, ठाणे आठमें मांय ॥

स्थानांग सूत्र के आठवे स्थानक मे आठ वस्तुएं अनंत कही गई हैं—(१) सिद्ध भगवान् (२) अलोकाकाश (३) काल (४) ज्ञान (५) जीव (६) पुद्गल (७) वनस्पतिकाय (८) निगोद के जीव।

अष्टधा लोक-स्थिति

२०—आकाश वायु दग पृथ्वी तस, थावर जीव होय ।
अजीवा जीव-पइट्ठिया, जीवा कम्म-पइट्ठिया सोय ॥

२१–अजीवा जीव--संगहिया, जीवा कम्म--संगहिया तास ।
आठ बोल थित लोक नी, ठाणायंग इम भास ॥

ठाणांग सूत्र मे आठ प्रकार की लोक–स्थिति कही गई है, जो इस प्रकार है—

आकाश बिना किसी दूसरे के आधार पर है। उसके आधार पर वायु अर्थात् तनु वात और घन वात ठहरे हुए है। वायु के आधार पर पानी (घनोदधि) स्थित है। घनोदधि के आधार पर रत्न–प्रभा आदि पृथिवियां स्थित हैं। पृथिवियो के आधार पर त्रस और स्थावर जीव स्थित है। शरीरादि रूप अजीव, जीव के सहारे स्थित है और कर्म–रूप अजीव–पुद्गल जीव के आश्रित है, या जीव पुद्गल कर्मों के आधार से ही नरक गति आदि मे जाते है।

मनो–वर्गणा तथा भाषा–वर्गणा आदि के पुद्गल रूप अजीव, जीव के द्वारा ग्रहण किये हुए है और जीव कर्मों के द्वारा संग्रहीत अर्थात् बद्ध है।

महाव्रत, अणुव्रत और वर्ण पर विचार

२२–ठाणायंग सूत्र मध्ये, ठाणे पांचवें मांय।
पहिले उद्देसे चालिया, ते सुणजो चित्त लाय॥
२३–पंच महाव्रत साधु ना, अणुव्रत पांचज होय।
पांच वरण ते चालिया, इण अर्थे उद्यम करे छे लोय॥

स्थानाङ्ग सूत्र के पांचवे स्थानक के प्रथम उद्देशक मे जो प्रकरण चला है, उसे चित्त लगा कर सुनिए—

साधु के पांच महाव्रत है और अणुव्रत भी पांच ही है। काला, नीला, पीला आदि वर्ण भी पांच है। लोग इनके लिये उद्योग करते है।

इन्द्रिय–विषय

२४–शब्द रूप रस गंध स्पर्श, ए राखे जतन कराय।
मूर्छा-गिरध न तेने विषे, एकचित वरुं थाय॥
२५–पंच थानके जीवड़ो, पामे मरणज घात।
मृग पतंग भ्रमर मच्छ, कुंजर केरी जात॥

शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श यह पांचों इन्द्रियो के विषय है। अगर यत्न करके इनसे इन्द्रियो की रक्षा की जाय–इन विषयो मे ममता एवं आसक्ति धारण न की जाय तो चित्त एकाग्र हो जाय।

उपर्युक्त शब्द, रूप आदि पांच स्थानों मे आसक्ति के फलस्वरूप जीव को मरण और घात का शिकार होना पड़ता है। यथा-शब्द सम्बन्धी आसक्ति से मृग को, रूप की आमक्ति से पतंग को, गंधासक्ति से भ्रमर को, रसासक्ति से मत्स्य को और स्पर्श सम्बन्धी आसक्ति से हाथी को।

प्राण-भूत आदि विचार

२६-प्राण-विकलेन्द्रिय भूत-वनस्पति, जीव पंचेन्द्रिय जात।
चार स्थावर सत्वज कह्या, भगवन्ते साक्षात॥

विकलेन्द्रिय (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय) जीव 'प्राण' कहलाते है। वनस्पतिकाय को 'भूत' कहते है, पचेन्द्रिय प्राणी जीव' कहलाते हैं और पृथ्वीकाय आदि चार स्थावर 'सत्व' कहलाते है।

शब्दादि ५ विषयों पर विचार

२७-पांच बोल जाण्यां विना, अह न अशुभ पचखाय।
अश्रेय आगल जाणिये, रुले चऊ-गति मांय॥
२८-शब्दादिक जाण्यां थकां, सुलटा चारों बोल।
करे परत संसार ने, पामे मुगति अमोल॥

पांच बोलो को न जानने से और अशुभ का प्रत्याख्यान न करने से भविष्य मे अश्रेयस् होता है और जीव चार गतियो मे भटकता है।

शब्दादिक पांचो को ज्ञ-परिज्ञा से जान लेने और प्रत्याख्यान-परिज्ञा से त्याग देने पर चारो बोल सीधे हो जाते है—चारो गतियो मे भटकना बंद हो जाता है। ऐसा जीव ससार को परीत करके अमूल्य मोक्ष-पद प्राप्त कर लेता है।

आस्रव और संवर

२९-आश्रव पांचे सेवतो, जीव पामे दुरगत्त।
पांचे संवर सेवतो, पामीजे सद्गत्त॥

हिंसा आदि पांच अथवा मिथ्यात्व, अविरति आदि पांच आस्रवों को सेवन करने वाला जीव दुर्गति प्राप्त करता है। परन्तु जो इन पांच आस्रवों के

निरोध रूप पांच संवरों (अहिंसा आदि या सम्यक्त्व आदि) का सेवन करता है वह सद्गति पाता है ।

लोक-संस्थान

३०—कर दोनों कटि ऊपरे, पुरुष फिरे चोफेर ।
ओ आकार तिहुँ लोक नो, काढ्यो ग्रन्थ निहेर ॥

कमर पर दोनो हाथ रख कर चारों ओर फिरने वाले अर्थात् नाचने वाले पुरुष का जो आकार होता है, वैसा तीन लोक का आकार है। ग्रन्थों का अवलोकन करके यह बात खोजी गई है ।

अति-क्रमादि-विचार

३१—अति क्रम इच्छा जाणिये, व्यतिक्रम वस्तु–प्रसंग ।
अतिचार देश भंग है, अनाचार सब भंग ॥

व्रत को भंग करने की इच्छा अतिक्रम है. व्रतभंग की साधनभूत वस्तुओं को ग्रहण करना व्यतिक्रम है, व्रत को आंशिक रूप से भंग करना अतिचार है और पूरी तरह भंग कर देना अनाचार है ।

पांच स्थावरों के ५ नाम

३२—इंद ब्रह्म शिल्प समित, प्रजापति कहिवाय ।
स्वामी पांच स्थावर तणा, कह्या ठाणायंग मांय ॥

ठाणांग सूत्र मे पांच स्थावरो के नाम इस प्रकार कहे गये हैं—(१) इन्द्र–स्थावर काय (पृथ्वीकाय), (२) ब्रह्म-स्थावरकाय (अपकाय) (३) शिल्प-स्थावरकाय (तेजस्काय), (४) सम्मति स्थावर काय (वायुकाय), (५) प्रजापति-स्थावरकाय (वनस्पतिकाय) ।

सद्यः उत्पन्न अवधि दर्शन (ज्ञान) के सद्यः विनाश के ५ कारण

३३—उपजवो दर्शन अवध, पांच थानके जाय ।
उपजवाने पहले समे, खलना खोभ पमाय ॥

पांच कारणों से अवधिदर्श (और ज्ञान) उत्पन्न होते ही, प्रथम समय में जीव स्खलना (चंचलता) को प्राप्त होता है। (उनका कथन आगे-किया गया है)

३४—देखे अलप पृथ्वी, तिहां भरी घणे जीव देख।
आ किम छे सांसे पड़यो, खलना पहली रेक॥
३६—कुंथुवा सर्पज मोटका, इन्द्र तणो किलोल।
ठाम ठाम धन देखने, ए थया पांचूं बोल॥

(१) अवधिज्ञानी अपने क्षयोपशम के अनुसार अनेक जीवों से संभृत थोड़ी—परिमिति पृथ्वी देखकर सोचता है—अरे यह क्या ? इस छोटी सी पृथ्वी में इतने जीव ? यह उसकी पहली स्खलना है। स्पष्टीकरण पहले सुन रक्खा था कि पृथ्वी बहुत विशाल है, पर अवधिज्ञान मे थोड़ी दिखाई देती है अतः क्षोभ होता है। (२) कुंथुंवा जैसे सूक्ष्म जीवों की राशि देख कर स्खलना होती है।

(३) बाहर के द्वीपों मे बड़े-बड़े (एक हजार योजन तक के लम्बे) सर्प देखकर चलायमान होता है।

(४) इन्द्र (आदि देवो) की क्रीड़ा देखकर चकित हो जाता है।

(५) जगह-जगह धन से परिपूर्ण खजाने देखकर विस्मित होता है।

३६—मोह कर्म खीण नवि गयो, तिणसूं खलना पाम।
केवल ज्ञान दर्शन, लह्या सुलटा पांचू नाम॥

इस स्खलना का कारण मोहनीय कर्म का क्षय न होना है। जब मोह क्षीण होने पर केवल-ज्ञान-दर्शन उत्पन्न होते है तो पूर्वोक्त पांचो कारणों से स्खलना नही होती।

प्रथम, चरम व २२ तीर्थङ्करों का समय

३७—वारे प्रथम चरम ने, सीखणो दुर्लभ होय।
पांच बोल श्री जिन कह्या, सांभलजो सहू कोय॥
३८—सूत्र कहवाये दुखे, दुखे समझे भेद-विज्ञान।
जीवादिक देखाड़वा, दुखे कह्या भगवान॥
३६—परीषहादिके सहिवा, दुखे दुखे पाले आचार।
सुलटो बावीसों तणे, पांचे ई इम धार॥

प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर के समय पांच बाते दुर्लभ कही गई हैं। उन्हे सब सुनो—

(१) श्रुत का कथन करने मे कठिनाई और समझने मे कठिनाई (२) भेद विज्ञान–आत्मा अनात्मा का ज्ञान होने में कठिनाई (३) जीव आदि को दिखलाने मे कठिनाई (४) परीषह उपसर्ग सहन करने मे कठिनाई और (५) आचार पालने मे कठिनाई। लेकिन बीच के बाईस तीर्थङ्करों के काल मे यह पांचो बातें सुलभ होती है।

दश यति धर्म

४०—खंति मुति अज्जव मद्दव, लाघव पांचमो जाण ।
नित बखाण्या मुनिराज ने, भगवंत श्री वर्धमान ॥

४१—सत संजम तपस्या तणी, संवेग ने ब्रह्मचरज्ज ।
आज्ञा छे जिन राज री, सेवत सारे कज्ज ॥

क्षान्ति, मुक्ति (निर्लोभता), आर्जव (सरलता), मार्दव (नम्रता) और लाघव तथा सत्य, संयम, तपस्या, संवेग और ब्रह्मचर्य, यह पांच-पांच (दस) धर्म श्री वर्धमान भगवान् ने मुनिराज के लिए कहे है। इनका सेवन करने से सब कार्य सिद्ध हो जाते है।

पांच अभि-ग्रह

४२--पांच थानके वीरजी, आज्ञा दीवी एह ।
अभिग्रह धारी साधुजी, करे गवेषणा तेह ॥

अभिग्रह धारी साधु को पांच स्थानो मे आहार की गवेषणा करने की आज्ञा दी गई है।

४३--आप निमित्ते काढयो बाहिर, अथवा न काढ्यो बहार ।
तीजे खाते ऊबरे, पंत बले लुख आहार ॥

गृहस्थ द्वारा अपने लिए जो आहार भोजन के पात्र में से बाहर निकाला हो वही लेना, जो आहार बाहर न निकाला हो वही लेना, तथा अन्त प्रान्त और रूक्ष आहार ही लेना, (यह पांच अभिग्रह है।)

भिक्षा-विचार

४४--अगन्यात कुल मुनिवर तजे, करे गोचरी छांडी काल।
कर खरड़े अणखरड़िये, धन ऋषि दीन दयाल॥

मुनिराज अज्ञात कुल मे गोचरी नहीं लेते, अकाल में गोचरी के लिए नहीं जाते, कोई खरड़े हुए हाथ से और कोई अनखरड़े हाथ से गोचरी लेते हैं। दीन-दयाल मुनि धन्य है।

४५--कांइक रीते आहार आणियो, दोष बेयालिस रेत।
शंका निजरे देखतो पांचमो पठे देत॥

किसी विशेष परिश्रम से बयालीस दोषों से रहित आहार लाया गया हो और उसमें प्रत्यक्ष शंका दिखाई दे तो साधु उसे परठ देता है।

भिक्षा-ग्रहण में भी तपश्चरण

४६ आयंबिल नीवी, पुरिमड्ढ, करे द्रव्य अनुमान।
भिन्न - पिंडवाहए पांचमो, ए आज्ञा भगवान॥

आयंबिल करे, नीवी करे अर्थात् घृत आदि विगयों से रहित भोजन करे, पुरिमड्ढ करे अर्थात् पहिले के दो पहर तक आहार का त्याग करे। द्रव्य आदि का परिमाण करके परिमित आहार ले, और भिन्न-पिण्ड-पालिक हो अर्थात पूरी वस्तु न लेकर टुकड़े की हुई वस्तु ही ले, भगवान् ने इन पांच स्थानकों की आज्ञा दी है।

४७--अरस विरस अंत पंत लुह, ए चाल्या पंच आहार।
ए जीमी जीवे मुनि, धन मोटा अणगार॥

अरस (विना धार का) विरस (पुराने धान्य आदि का) अंत (बची खुची चीजों का) प्रान्त (तुच्छ) और रुक्ष, यह पांच प्रकार के आहार कहे गए है, जिन्हे जीम कर साधु जीवन-यापन करते हैं। ऐसे महान् अनगार धन्य है।

आसन पर विचार

४८--एक आसण अरु ऊकड़ू, पड़िमा काउसग्ग रात।
पद्मासन वीरासणे, रहे छकाया-नाथ॥

षट्-काय जीवों के नाथ मुनिवरों के लिए पांच स्थानक बतलाये गये है-एक आसन से कायोत्सर्ग करे, उकडू आसन से बैठे, एक रात्रि की प्रतिमा अंगीकार करके कायोत्सर्ग में रहे, पद्मासन से बैठे और वीरासन से स्थित रहे।

४६-दांडा नी परे साधुजी, रहे पग पसार ।
सुवे लाकड़ा नी परे, मस्तक भू अलगाड़ ॥

५०-तड़के ले आतापना, शीत खमे शी-रात ।
डीले खाज खिणे नहीं, अहो गुण कह्या न जात ॥

कोई मुनिराज डंडे की तरह पैर फैला कर स्थित रहते हैं, वे 'दण्डायतिक' कहलाते है। कोई लगण्ड-शायी होते है, जो कुवड़े-से होकर मस्तक और कोहनी को जमीन से लगा कर तथा पीठ को अधर रखते हुए सोते है। कोई धूप मे आतापना लेते हैं, वे आतापक कहलाते है। कोई शीतकाल मे वस्त्र न रख कर शीत सहन करते हैं, उन्हे अप्रावृतक कहते है। कोई शरीर मे खुजली चलने पर भी खुजलाते नहीं हैं, उन्हें 'अकण्डूयक' कहते हैं।*

५१-पांच बोले मुनि-राजजी, महा-निर्जरा पाम ।
अंत करे संसार नो, जो राखे सुध परिणाम ॥

उपर्युक्त पांच बातों का सेवन करके मुनिराज महान् निर्जरा प्राप्त करते है और यदि पूर्ण शुद्ध परिणाम रक्खे तो संसार का अंत करते है।**

सात पदवियां

५२-आचारज उवझाय थविर, तपस्वी बहु-श्रुति जाण ।
गणी गणावच्छेदक वली, सात पदवी ये मान ॥

आचार्य उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी, बहु-श्रुती, गणी और गणावच्छेदक, यह मुनियो की सात पदवियां हैं।



---

*विशेष के लिए देखो स्थानाङ्ग सूत्र ठा० ५, उ० १, सूत्र ३८६।

**ग्रंथकार ने यहां सामान्य कथन किया है। स्थानांग सूत्र में महानिर्जरा के पांच कारण आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी और ग्लान (बीमार) मुनि की सेवा करना बतलाया है।